गोल्डन

इंगलैंड का इतिहास

हाई क्लासिज के विद्यार्थियों के लिये

— :o: —

लेखक

पंडित विश्वनाथ, बी० ए०, बी० टी०

तथा

लाला जगन्नाथ ग्रोवर, बी० ए०, बी० टी०

(गोल्ड मैडलिस्ट, पंजाब शिक्षा विभाग)

मुख्य जनरल नालिज अध्यापक आर्य हाई स्कूल, लुधियाना

प्रकाशक

पं० कश्मीरी लाल ऐण्ड सन्ज

प्रिन्टर्ज ऐण्ड पब्लिशर्ज

माई हीरां गेट, जालन्धर

सितम्बर, १९५६] [Price Rs 2-0-0

विषय सूची

वंशावलियाँ

THE PUNJAB UNIVERSITY SYLLABUS

IN

HISTORY OF ENGLAND

Note :—For the purposes of examination the period before the Tudor Sovereigns is not included

I THE TUDOR KINGS—HENRY VII—Establishment of strong Government.

II HENRY VIII—Cardinal Wolsey and Thomas Cromwell—the Renaissance—the Age of Discovery—Martin Luther and the Reformation

III EDWARD VI and MARY—The Catholic reaction in the reign of Mary

IV QUEEN ELIZABETH—The importance of her reign—Church Settlement—Mary Queen of Scots — the Principal Explorers — the Spanish Armada—East India Company

V KING JAMES I—The Gunpowder Plot—The quarrel between the King and his Parliaments

VI CHARLES I—The Petition of Right—The Civil War—Execution of the King

VII. THE COMMONWEALTH—Oliver Cromwell.

VIII THE RESTORATION OF CHARLES II—Clarendon and his Code.

IX TITUS OATES—The Test Act—Habeas Corpus Act—Whigs and Tories

X. JAMES II—The Revolution of 1688, its causes and effects

XI WILLIAM AND MARY—The Bill of Rights-Conquest of Scotland—Conquest of Ireland

XII QUEEN ANNE—Marlborough and the War of Spanish Succession.

XIII GEORGE I—The Establishment of Party System of Government in England

XIV The administration of Walpole—The War of Austrian Succession—The Seven Years War—The Elder Pitt.

XV GEORGE III—John Wilkes—Stamp Act and the War of American Independence.

XVI The Industrial Revolution

XVII. The French Revolution—Its causes and main events—The rise of Napoleon Bonaparte.

XVIII The Younger Pitt—Nelson and Trafalgar—Wellington and Waterloo

XIX. GEORGE IV AND WILLIAM IV The period of reforms—Wilberforce and the abolition of Slavery—Reform of the Penal Laws—Howard and Jail Reform—Roman Catholic Relief Act—The Reform Bill of 1832.

XX QUEEN VICTORIA — The Anti Corn Law League Agitation—The Chartist Movement—The Crimean War and Miss Florence Nightingale—The Second Reform Bill—The Third Reform Bill—Ireland and Home Rule Bill—Sir Robert Peel — Palmerston — Lord Beaconsfield—Gladstone

XXI EDWARD THE PEACEMAKER—Parliament Act of 1911

XXII GEORGE V—The Great War—its causes main events and results—The League of Nations.

—o—

THE BRITISH ISLES
NORTH
SEA
IRISH
SEA
EIRE
ENGLISH CHANNEL
FRANCE

इंगलैंड की संक्षिप्त कहानी

ट्यूडर काल से पूर्व
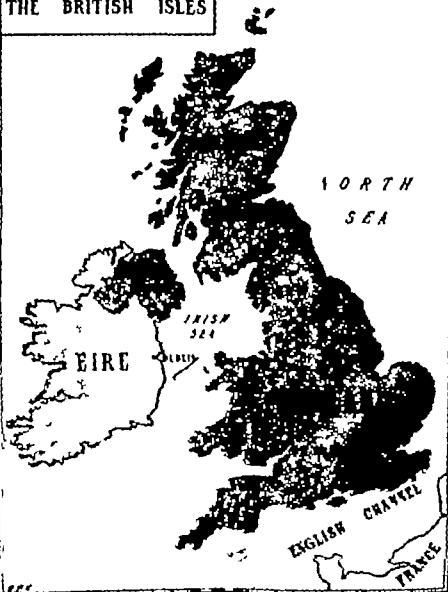
द्वीपसमूह बर्तानिया अर्थात् इङ्गलैंड (England), वेल्स (Wales), स्काटलैंड (Scotland) तथा आयरलैंड (Ireland), सदैव काल से एक ही राजा के अधीन नहीं रहे, प्रत्युत् यहाँ के भिन्न भिन्न भागों में भिन्न भिन्न राज्य स्थापित रहे हैं और अन्य देशीय आक्रमणकारी भी आक्रमण करते रहे हैं। पहले पहल 55 ई० पू० में अर्थात् आज से कोई दो हजार वर्ष पूर्व रोमन साम्राज्य (Roman Empire) के प्रसिद्ध जनरल *जूलियस सीजर* (Julius Caesar) ने इङ्गलैंड पर आक्रमण किया, परन्तु राज्य स्थापित नहीं किया। इस काल में इंगलैंड और स्काटलैंड वाले टापू का नाम बर्तानिया था और यहाँ के निवासी बड़े असभ्य और युद्ध प्रिय थे। जूलियस सीजर की मृत्यु के सौ वर्ष के भीतर भीतर रोम वालों ने इङ्गलैंड को अपने साम्राज्य में मिला लिया और कोई चार सौ वर्ष तक इस देश पर शासन किया। अपने शासन काल में उन्होंने बर्तानिया के लोगों की अवस्था को बहुत सुधार दिया। *लोगों को शिक्षा प्रदान की, देश में पक्की सड़कों का जाल बिछा दिया और सब प्रकार से शान्ति तथा सुख स्थापित रखा।* परन्तु पाँचवीं शताब्दी के आरम्भ में रोम वालों को अपने देश की रक्षा के लिये इस देश को छोड़ जाना पड़ा।

रोमन लोगों के जाते ही योरुप की कई और जातियों ने बर्तानिया पर आक्रमण किये। वे वहाँ बस गईं और राज्य स्थापित कर लिये। इन जातियों में ऐंगल (Angles) और सैक्सन (Saxons) जातियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। *ऐंगल जाति के नाम पर देश का नाम ऐंगललैंड अथवा इंगलैंड हो गया।* अंग्रेज अधिकतर इन्हीं दो

जातियों की सन्तान हैं। इन जातियों ने बर्तानिया के आदिम निवासियों को पश्चिमी पहाड़ियों की ओर भगा दिया और उनको वैल्श (Welsh) अर्थात् असभ्य कहने लगे। इन वैल्श लोगों के देश का नाम वेल्स (Wales) पड़ गया। वेल्स की भाषा आज तक अंग्रेजी भाषा से भिन्न है।

ईसाई मत के प्रवर्तक महात्मा ईसा (Jesus Christ) थे। उनकी

ईसाई धर्म का प्रवेश (Christianity)

मृत्यु के पश्चात् ईसाई लोग भिन्न-भिन्न देशों में प्रचार करने लगे। धीरे धीरे उन्होंने रोम (Rome) में अपना अड्डा जमा लिया। उनका धार्मिक नेता धीरे-धीरे सम्पूर्ण योरुपीय देशों के ईसाई लोगों का शिरोमणि बन बैठा और उसे पोप (Pope) कहने लगे।

एक पोप ग्रेगरी महान् (Gregory the Great) नामक व्यक्ति ने इंगलैंड में भी प्रचारक भेजा। इस प्रचारक ने केण्ट (Kent) प्रान्त (पूर्वी इंगलैंड) के राजा के सम्मुख उपदेश दिया और उसे तथा उसकी प्रजा को ईसाई धर्म में सम्मिलित कर लिया। केण्ट की राजधानी कैण्टरबरी का पादरी इंगलैंड में सब से बड़ा पादरी माना जाता है और उसे Archbishop of Canterbury कहते हैं। केण्ट के राजा की लड़की नार्थम्ब्रिया प्रान्त के राजा के साथ ब्याही गई और वह अपने साथ एक ईसाई प्रचारक ले गई, जिसने नार्थम्ब्रिया की राजधानी यार्क (York) में ईसाई धर्म का प्रचार किया और वहाँ के लोगों को ईसाई बनाया। आर्चबिशप आफ यार्क (Archbishop of York) इङ्गलैंड में दूसरे दर्जे का पादरी माना जाता है।

सैक्सन जाति का प्रसिद्धतम राजा एलफ्रैड था। वह बड़ा योग्य तथा दूरदर्शी शासक था और अपने महान् कार्यों के कारण इतिहास में ऐलफ्रैड महान् (Alfred the Great) के नाम से प्रसिद्ध है। इस के राजत्व काल में योरुप की एक और जाति ने, जिसे डेन्ज (Danes) कहते थे, इङ्गलैंड पर आक्रमण किया और देश का आधा भाग उन्हें मिल गया। उस जाति का एक प्रसिद्ध राजा कैन्यूट (Canute)

हुआ है। धीरे धीरे ये लोग अङ्गरेजों में ही मिल-जुल गये और समस्त इङ्गलैंड पर ऐलफ्रेड के वंश का राज्य हो गया।

इस वंश का अन्तिम राजा ऐडवर्ड था। वह बड़ा पवित्रात्मा तथा साधु स्वभाव था, इसलिये वह इतिहास में *ऐडवर्ड दी कनफैसर* (Edward the Confessor) के नाम से प्रसिद्ध है। 1066 ई० में उसकी मृत्यु पर फ्रांस के उत्तरी प्रान्त नारमण्डी के ड्यूक *विलियम* (Duke William) ने इङ्गलैंड पर चढ़ाई की और उसे विजय कर लिया। इस प्रकार इंगलैंड में नारमन (Norman) वंश का राज्य स्थापित हो गया, जो लगभग एक सौ वर्ष तक रहा। इस वंश के पश्चात् और ट्यूडर वंश आरम्भ होने से पूर्व तीन और वंशों ने राज्य किया, जिनके नाम *आँजू* (Anjou) वंश, *लंकास्टर* (Lancaster) *वंश और यार्क* (York) वंश थे।

बैरन अर्थात् सरदार लोग (Barons)

विलियम जिसे *विजयी विलियम* (William the Conqueror) कहते हैं, अपनी सहायता के लिये कई सरदार नारमण्डी से लाया था। इङ्गलैंड पर अधिकार जमा लेने के पश्चात् विलियम ने उन सरदारों को बड़ी बड़ी जागीरें प्रदान कीं और उनसे शपथ ली कि वे राजा के शुभचिन्तक रहेंगे। इन बड़े-बड़े सरदारों को बैरन्ज़ (Barons) कहते थे। ये सरदार अपनी रक्षा के लिये बड़े बड़े दृढ़ दुर्ग भी बना लेते थे और सशस्त्र सैनिक भी रखते थे। इससे उनकी शक्ति इतनी बढ़ गई थी कि वे कई अवसरों पर राजा के साथ भी उपेक्षा का बर्ताव करते थे। विलियम विजयी तथा उस के उत्तरकालीन राजाओं और बैरनों में अनबन रही। जब कभी राजा शक्तिशाली होता था तो बैरनों को वशीभूत कर लेता था, अन्यथा वे बैरन उसकी अवज्ञा करने लग जाते थे।

1215 ई० में बैरनों ने राजा *जान* (John) को विवश किया कि वह एक प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करे, जिसे *मैगना कार्टा* (Magna Carta) कहते हैं। यद्यपि इस मैगना कार्टा को अंग्रेजी जाति की

स्वतन्त्रता की आधार शिला कहते हैं, परन्तु वास्तव में मैगना कार्टा के द्वारा बैरन्स न केवल अपने सम्बन्धियों के लिये ही सुविधायें प्राप्त कीं। इसी राजा जान के पुत्र हैनरी तृतीय के समय में बैरनों ने एक बार राजा को बन्दी भी बना लिया और उनका नेता साइमन (Simon) स्वयं राज्य-कार्य चलाने लगा। परन्तु थोड़े ही समय पीछे यह युद्ध में मारा गया। इस प्रकार लगभग चार सौ वर्ष पर्यन्त बैरनों और राजाओं में अनबन रही। अन्ततः हैनरी सप्तम ने जो ट्यूडर वंश का पहला राजा था, अपने राजत्व काल में बैरनों की शक्ति का अन्त कर दिया।

नारमन राजाओं के समय में यह रीति प्रचलित थी कि राजा को परामर्श देने के लिये बैरनों की एक कौंसिल (सभा) हुआ करती थी, जिसे ग्रेट कौंसिल (Great Council) कहते थे। परन्तु कुछ काल से राजा लोग इस कौंसिल में प्रजा के प्रतिनिधि भी बुलाने

पार्लिमेंट
Parliament

लग गये और कौंसिल का नाम पार्लिमेंट पड़ गया था। साइमन ने ऐसी पार्लिमेंट 1265 ई० में बुलाई, जिस में बैरनों के अतिरिक्त प्रत्येक ज़िले से दो दो प्रतिनिधि बुलाये गये। आरम्भ में पार्लिमेंट उसी समय बुलाई जाती थी, जब राजाओं को प्रजा पर कर लगाने की आवश्यकता होती थी, परन्तु धीरे धीरे पार्लिमेंट ने बिल भी पेश करने आरम्भ कर दिये, यहाँ तक कि पार्लिमेंट देश की शासन प्रणाली का एक आवश्यक अंग बन गई। साइमन को Father of English Parliament कहते हैं। 1295 ई० में राजा एडवर्ड प्रथम*(Edward I) ने साइमन के ढंग पर पार्लिमेंट बुलाई, जिसे आदर्श पार्लिमेंट (Model Parliament) कहते हैं।

*इसी राजा एडवर्ड प्रथम ने वेल्ज़ को विजय किया और वेल्ज़ वालों की प्रसन्नता के लिये उसने अपने बड़े राजकुमार को प्रिंस आफ़ वेल्ज़ (Prince of Wales) की उपाधि दी। उस समय से लेकर इंगलैंड के युवराज को प्रिंस आफ़ वेल्ज़ कहते हैं।

आरम्भिक काल में बैरन, पादरी तथा जनता के प्रतिनिधि एक ही भवन में बैठते थे। परन्तु तत्पश्चात् बैरन तथा पादरी पृथक् भवन में बैठने लगे, जिसका नाम *हाउस आफ़ लार्डज* (House of Lords) पड़ गया और जनता के प्रतिनिधि पृथक् भवन में बैठने लगे, जिसका नाम *हाउस आफ़ कामन्ज* (House of Commons) पड़ गया। 1832 ई० तक पार्लिमेंट के चुनाव की रीति लगभग वही रही, जो 1295 ई० में एडवर्ड प्रथम ने प्रचलित की थी। इसलिये कई इतिहासकार एडवर्ड को ही *पार्लिमेंट का प्रवर्तक* समझते हैं।

गुलाब के युद्ध (Wars of the Roses)

पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में इंगलैंड पर लैंकास्टर वंश का राजा *हैनरी षष्टम* राज्य करता था। उसके समय में एक युद्ध आरम्भ हो गया, जिसमें एक ओर लकास्टर वंश था और दूसरी ओर यार्किस्ट वंश। कहा जाता है कि लंकास्ट्रियन का चिह्न लाल गुलाब और यार्किस्ट का चिह्न श्वेत गुलाब का फूल था, इसलिये इस युद्ध को इतिहास में *गुलाब का युद्ध* (Wars of the Roses) कहते हैं। यह युद्ध 1455 ई० से लेकर 1485 ई० तक अर्थात् तीस वर्ष होता रहा। इसमें प्रायः सभी बैरन एक अथवा दूसरी ओर सम्मिलित हुये। इस युद्ध में कई उतार चढ़ाव हुये। 1461 ई० में एडवर्ड ड्यूक आफ यार्क ने हैनरी षष्टम को बन्दी बना लिया और स्वयं *एडवर्ड चतुर्थ* के नाम से राजा बन बैठा। इस प्रकार यार्क वंश का शासन आरम्भ हुआ। एडवर्ड चतुर्थ की मृत्यु के पश्चात् उसका अल्पव्यसक पुत्र *एडवर्ड पंचम* राजा बना, परन्तु उसके चचा रिचर्ड (Richard) ने एडवर्ड पचम और उसके छोटे भाई ड्यूक आफ यार्क को जिसका नाम भी रिचर्ड था बन्दी बना लिया और स्वयं *रिचर्ड तृतीय* के नाम से राजा बन बैठा। कुछ समय व्यतीत हो जाने पर उसने दोनों भाइयों को मरवा डाला जिससे गड़बड़ मच गई। अन्ततः 1485 ई० में लैंकास्टर वंश से सम्बन्धित एक पुरुष *हैनरी ट्यूडर* ने इंगलैंड पर चढ़ाई की। *बासवर्थ* (Bosworth) के स्थान पर रिचर्ड तृतीय की हार हुई और

यह मारा गया। अब हैनरी ट्यूडर हैनरी सप्तम के नाम से राजा बना और उसने ट्यूडर वंश की नींव डाली।

इस गुलाब के युद्ध का सबसे बड़ा परिणाम यह हुआ कि बैरनों के कई वंशों का अन्त हो गया और जो शेष बच रहे, उनकी शक्ति का अन्त हैनरी सप्तम न कर दिया। बैरनों की शक्ति घट जाने पर ट्यूडर वंश के शासकों के लिए देश में दृढ़ शासन स्थापित करना सुगम हो गया।

इंगलैंड में अब भी सरदार हैं और वे पार्लिमेंट में हाउस आफ लार्डस में अब भी बैठते हैं। उनकी निम्नलिखित श्रेणियां हैं :—

(१) ड्यूक (२) मारक्विस (३) अर्ल (४) वाईकान्ट (५) बैरन।

नोट—स्मरण रहे कि 1485 ई० में अर्थात् ट्यूडर वंश के आरम्भ के समय स्काटलैंड एक सर्वथा पृथक् देश था और आयरलैंड पर भी इङ्गलैंड का थोड़ा बहुत ही अधिकार था।

—

आवश्यक नोट

पजाब यूनिवर्सिटी के वर्तमान सिलेबस के अनुसार मैट्रिक्यूलेशन परीक्षा के लिये नियत भाग इससे आगे ट्यूडर वश से आरम्भ होता है।

ट्यूडर वंश

(TUDOR DYNASTY)

1485—1603

१—हैनरी सप्तम	1485 से 1509 ई०
२—हैनरी अष्टम	1509 से 1547 ई०
३—एडवर्ड षष्टम	1547 से 1553 ई०
४—मेरी ट्यूडर	1553 से 1558 ई०
५—रानी एलिज़बेथ	1558 से 1603 ई०

ट्यूडर वंशावली

१ हेनरी सप्तम
आर्थर प्रिंस आफ वेल्स
(पिता की जीवित अवस्था में मर गया)
२ हेनरी अष्टम
मारग्रेट = जेम्स चतुर्थ स्काटलैंडाधीश
मेरी
फ्रांसिस (लड़की)
लेडी जेन ग्रे
जेम्स पंचम
४ मेरी ट्यूडर ५ एलिजबेथ
३ एडवर्ड षष्ठम
मेरी रानी स्काटलैंड
जेम्स षष्ठम स्काटलैंडाधीश
और
जेम्स प्रथम इंग्लैंडाधीश
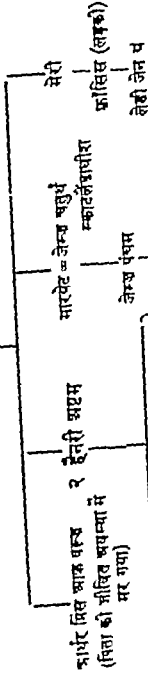
हैनरी सप्तम
HENRY VII
1485—1509

हैनरी सप्तम—हैनरी सप्तम ट्यूडर वंश के एक प्रतिष्ठित सरदार ऐडमंड ट्यूडर (Edmund Tudor) का पुत्र था। उसकी माता लंकास्टर वंश की अन्तिम सन्तान थी। *इसी नाते के कारण हैनरी लंकास्टर वंश की ओर से राजसिंहासन का अधिकारी हो सकता था।* २८ वर्ष की आयु में यह इंगलैंड का राजा बना। यह बहुत गम्भीर, दूरदर्शी, शाँति प्रिय, तथा परिश्रमी शासक था।

Henry VII

हैनरी सप्तम 1485 ई० में सिंहासनारूढ़ हुआ। इंगलैंड की राजगद्दी पर उसका सब से बड़ा अधिकार यह था कि उसने *बासवर्थ* (Bosworth) के युद्ध में *इंगलैंड के राजा रिचर्ड तृतीय* (Richard III) *को परास्त किया था।* अपने इस अधिकार को दृढ़ बनाने के लिये हैनरी ने निम्नलिखित बातें कीं:—

सिंहासन पर अधिकार (Claim)

१—उसने पार्लिमैंट बुलाई, जिसने उसे देश का शासक स्वीकार कर लिया।

२—यार्क वंश के राजकुमार *अर्ल आफ वारिक** (Earl of

---

*यह एडवर्ड चतुर्थ तथा रिचर्ड तृतीय का भतीजा था।

Warwick) का, जो राजगद्दी का निकटतम अधिकारी था, कारागार में डाल दिया।

३—यार्क वंश की राजकुमारी ऐलिज़बैथ (Elizabeth) से जो एडवर्ड चतुर्थ की पुत्री थी और जो सिंहासन की अधिकारिणी हो सकती थी, विवाह कर लिया और इस प्रकार यार्क तथा लंकास्टर वंश परस्पर मिल गये।

४—हैनरी ने अपने राज्यचिह्न में लाल तथा श्वेत गुलाब, जो लङ्कास्टर तथा यार्क वंश के चिह्न थे, दोनों सम्मिलित कर लिए।

५—उसने पोप (Pope) की स्वीकृति भी ले ली।

Q Give an account of the Yorkist Plots and Pretenders during the reign of Henry VII

प्रश्न—*हैनरी सप्तम के राजत्वकाल में यार्किस्ट षड्यन्त्रों और झूठे राज्याधिकारियों का वृत्तान्त वर्णन करो।*

यार्किस्ट के विद्रोह (Plots)

हैनरी सप्तम ने सिंहासनारूढ़ होते ही यार्किस्ट्स को प्रसन्न करने के लिए एडवर्ड चतुर्थ की पुत्री एलिज़बेथ से विवाह कर लिया था और अपने राज चिह्न में यार्किस्ट वंश का श्वेत गुलाब भी सम्मिलित कर लिया था। इस से उसका उद्देश्य यह था कि लङ्कास्टर और यार्क वंश के झगड़े की समाप्ति हो जाय, परन्तु फिर भी कई यार्किस्ट उससे सन्तुष्ट नहीं हुए और वे सिंहासन के झूठे दावेदारों के पक्ष का समर्थन करके षड्यन्त्र रचते रहे। निम्नलिखित षड्यन्त्र वर्णनीय हैं —

१ लैम्बर्ट सिमनल का विद्रोह, 1487—*लैम्बर्ट सिमनल* (Lambert Simnel) आक्सफ़ोर्ड के एक नानबाई का लड़का था। यार्किस्ट्स के फुसलाने में आकर उसने प्रसिद्ध किया कि मैं एडवर्ड चतुर्थ का भतीजा अर्ल आफ़ वारिक (Earl of Warwick) हूँ और इस लिए मैं राजगद्दी का अधिकारी हूँ। वह आयरलैंड में गया जहाँ वहाँ

---

*कई पुस्तकों में इसे लुहार अथवा बरतन का लड़का लिखा है।

शान के साथ उसका राज्याभिषेक किया गया और उसे राजा स्वीकार कर लिया गया। 1487 ई० में उसने इंगलैंड पर आक्रमण किया परन्तु हेनरी ने वास्तविक अर्ल आफ़ वारिक को कारागार से निकाल कर लन्दन नगर में फिरा दिया। इस कारण इंगलैंड के बहुत थोड़े लोगों ने सिमनल की सहायता की। अन्तत स्टोक (Stoke) के स्थान पर उसकी पराजय हुई और वह पकड़ लिया गया। हेनरी ने उसे अपने रसोई घर में नौकर रख लिया।

२ परकिन वार्बेक का विद्रोह, 1492—लेम्बर्ट सिमनल के विद्रोह के कुछ वर्ष बाद 1492 ई० में एक और विद्रोह हुआ जिस का नेता परकिन वार्बेक (Perkin Warbeck) था। यह विद्रोह पहले विद्रोह की अपेक्षा अधिक भयङ्कर था। परकिन वार्बेक नेदरलैंड (वर्तमान बेल्जियम और हालैंड) का एक सुन्दर नवयुवक था। उसने घोषणा की कि मैं एडवर्ड चतुर्थ का छोटा लड़का रिचर्ड ड्यूक आफ़ यार्क (Richard Duke of York) हूँ, (जो वास्तव में वध किया जा चुका था) और राजगद्दी पर मेरा अधिकार है।

फ्रांस और स्काटलैंड के राजाओं ने भी उसकी सहायता की परन्तु उसे कोई विशेष सफलता प्राप्त न हुई। अन्त में 1497 ई० में हेनरी ने उसे टाण्टन (Taunton) के स्थान पर परास्त किया और टावर आफ़ लण्डन* (Tower of London) में उसे बन्दी बना कर रखा। दो वर्ष पश्चात् 1499 ई० में उस ने Earl of Warwick के साथ षड्यन्त्र करके भाग जाने का यत्न किया तो हेनरी ने दोनों को मरवा दिया। इस के पश्चात् *हेनरी को कोई भय न रहा और वह बड़ा शान्तिपूर्वक राज्य करता रहा।*

---

*यह टावर लण्डन में एक बड़ा भारी भवन है। इसे विलियम प्रथम ने बनवाया था। पहले पहल तो यह भवन एक दुर्ग अथवा राज भवन के रूप में प्रयुक्त होता रहा, तत्पश्चात् यह सरकारी कारागार बना दिया गया। आजकल यहाँ कुछ युद्ध सम्बन्धी वस्तुएँ तथा सर्व साधारण के मनोरंजन की वस्तुएँ रखी हुई हैं।

प्रश्न Q Describe the Home Policy and Foreign Policy of Henry VII Or, (Important)

How did Henry VII lay the foundation of England's greatness ? Or, (P U 1947)

What is the importance of the reign of Henry VII in English history ? (P U 1954)

प्रश्न—हैनरी सप्तम की भीतरी तथा बाह्य नीति के सम्बन्ध में तुम क्या जानते हो ? या लिखो कि हैनरी सप्तम ने इंगलैंड के बड़प्पन की नींव किस प्रकार डाली ? या बताओ कि हैनरी सप्तम के राज्यकाल का अंग्रेजी इतिहास में क्या महत्त्व है ?

हैनरी सप्तम का दृढ राज्य

हैनरी सप्तम ट्यूडर वंश का प्रवर्तक था। वह 1485 ई॰ से 1509 ई॰ तक २४ वर्ष राज्य करता रहा। जब वह राजा बना तो देश की अवस्था बहुत बुरी थी। गुलाब के युद्ध के कारण सब ओर अशान्ति फैली हुई थी, व्यापार नष्ट हो चुका था, देश में चोरों तथा डाकुओं की भर मार थी, धन जन अरक्षित थे, बैरनों की शक्ति बहुत बढ़ गई थी व राजा की सर्वथा परवाह नहीं करते थे और सदा विद्रोह तथा उपद्रव के लिये तैयार रहते थे। इंगलैंड तब एक बड़ी साधारण शक्ति था। इसकी सेना दुर्बल और मामूली सी थी।

भीतरी नीति (Home Policy)

हैनरी सप्तम का सब से बड़ा उद्देश्य देश में शक्तिशाली शासन तथा शान्ति स्थापित करना था। इस उद्देश्य में सफल होने के लिये आवश्यक था कि एक तो बैरनों की शक्ति नष्ट कर दी जाय और दूसरे पर्याप्त धन एकत्र किया जाय जिस से पार्लिमेंट पर निर्भर न रहना पड़े। इस लिये हैनरी सप्तम ने बड़ी दृढ़ता से राज्य किया और निम्नलिखित योजनाओं के अनुसार काम किया।

क—बैरनों का दमन

१ लिवरी का कानून—इस समय बैरन लोग अपने पास शस्त्रधारी सिपाही नौकर रखते थे जिन्हें Retainers कहते थे। ये लोग

अपने अपने स्वामी की नियत वर्दी पहनते थे और उसके लिये लड़ने मरने को तैयार रहते थ। बहुत से बैरन वंश तो गुलाब के युद्धों में मारे गये थे, अब शेष बैरनों का वश में करने के लिये हैनरी ने *लिवरी का कानून* (Statute against Livery and Maintenance) पास किया जिसके अनुसार निर्णय किया गया कि कोई बैरन अपने *कर्मचारियों का विशेष वर्दी न पहनाये और न नियत संख्या से अधिक सेवक अपने पास रखे अन्यथा उसे दण्ड दिया जायेगा।* हैनरी ने बड़ी कठोरता से इस नियम पर आचरण कराया यहाँ तक कि उसने अपने परम मित्र *अर्ल आफ़ आक्सफ़ोर्ड* (Earl of Oxford) को इस कानून के विरुद्ध आचरण करने के कारण पन्द्रह हजार पौंड जुर्माना किया। इस से बैरन बड़े भयभीत हो गये और उन्होंने अपने शस्त्रधारी सिपाहियों का हटा दिया।

२ **कोर्ट आफ़ स्टार चैम्बर—**बैरनों की शक्ति का कम करने के लिये हैनरी ने एक विशेष न्यायालय '*कोर्ट आफ़ स्टार चैम्बर*" (Court of Star Chamber) स्थापित किया। इस न्यायालय के स्थापित करने का कारण यह था कि उस समय साधारण न्यायालय बैरनों से डरते थे और यदि कभी कोई बैरन अपराध भी करते थे तो न्यायाधीश उनके आतंक (रोब) में आकर उन्हें छोड़ देते थे। परन्तु इस न्यायालय के न्यायाधीश इतने ऊँचे दर्जे के व्यक्ति होते थे कि वे बैरनों के आतंक में नहीं आते थे, इसलिये बैरनों को भी कड़े दण्ड मिलने लगे और देश में शान्ति तथा सुख की स्थापना हो गई। (जिस कमरे में इस न्यायालय का अधिवेशन होता था उसकी छत पर सितारों की भाँति चित्रकारी की हुई थी इसलिये इस न्यायालय का नाम कोर्ट आफ़ स्टार चैम्बर पड़ गया था †)।

---

†कुछ काल तो इस न्यायालय ने बड़ा उपयोगी कार्य किया परन्तु *चार्ल्स प्रथम* के समय में इसके द्वारा लोगों पर बड़े अत्याचार किये गये अतः लॉंग पार्लिमेंट (Long Parliament) ने इसे 1641 ई॰ में तोड़ दिया। इस प्रकार यह न्यायालय 154 वर्ष रहा।

१ स्पेन से वैवाहिक सम्बन्ध—स्पेन उन दिनों में बड़ा शक्तिशाली देश था। हैनरी सप्तम ने अपने बड़े लड़के आर्थर (Arthur) का विवाह स्पेन की राजकुमारी कैथराइन आफ़ आरागान (Catherine of Aragon) से (1501 ई० में) कर दिया और जब दुर्भाग्य से कुछ महीनों के बाद आर्थर मर गया तो हैनरी ने कैथेराइन की सगाई अपने दूसरे पुत्र हैनरी से (जो पीछे हैनरी अष्टम के नाम से राजा बना) कर दी। ईसाइयों में अपने भाई की विधवा से विवाह करना निषिद्ध था, परन्तु हैनरी सप्तम ने इसके लिये पोप से विशेष आज्ञा प्राप्त कर ली थी। आगे चलकर इस विवाह के परिणाम स्वरूप इंगलैण्ड से पोप का सम्बन्ध टूट गया।

२ स्काटलैंड से वैवाहिक सम्बन्ध—स्काटलैंड का देश इंगलैंड का पुराना शत्रु और फ्रांस का मित्र था। हैनरी ने इस शत्रुता को दूर करने के लिये अपनी पुत्री मारग्रेट (Margaret) का विवाह स्काटलैंड के राजा जेम्स चतुर्थ (James IV) से, जो स्टुअर्ट वंश से था, कर दिया। इस विवाह का बड़ा परिणाम यह हुआ कि एलिज़बेथ की मृत्यु के पश्चात् इंगलैंड और स्काटलैंड एक ही राजा के अधीन हो गये।

३ व्यापारिक उन्नति—हैनरी ने देश के व्यापार को भी उन्नत करना चाहा और इस उद्देश्य के लिये फ्लैंडर्स (Flanders) के साथ जो इंगलिश चैनल (English Channel) के पार एक छोटा सा प्रदेश था, सन्धिपत्र किया (जिसे Great Intercourse कहते हैं)। इस से ऊन (Wool) के व्यापार में पर्याप्त उन्नति हुई। इस के अतिरिक्त उस ने देश की व्यापारिक उन्नति के लिये बहुत से जहाज़ बनवाये। हैनरी ने कई अन्य देशों से भी व्यापारिक सन्धिपत्र किये।

इंगलैंड तथा फ्लैंडर्स

४ आयरलैंड पर दृढ़ अधिकार—आयरलैंड इंगलैंड का एक निकट प्रांत था। उसको पूर्ण रूप से अपने अधिकार में करने के

लिये हैनरी ने अपने एक योग्य मन्त्री *पायनिंग* (Poyning) को आयरलैंड भेजा । उसने कुछ नियम पास करके आयरलैंड की पार्लिमेंट की स्वाधीनता का अन्त कर दिया और आयरलैंड पर अङ्गरेजी अधिकार जमा लिया ।

हैनरी एक बड़ा योग्य शासक सिद्ध हुआ । (1) उस ने भीतरी विद्रोहों का दमन करके और अच्छे नियम बना कर देश में *शांति स्थापित की* । (ii) बैरनों की शक्ति को नष्ट करके और बहुत सा धन उपार्जन करके उसने *ट्यूडरों के दृढ़ शासन की नींव रख दी* । (iii) उस ने कोर्ट आफ स्टार चैम्बर स्थापित करके *अपनी शक्ति को दृढ़ कर लिया* ।

☞ हैनरी के समय का महत्व

(iv) उस ने फ्लैंडर्ज से व्यापारिक सन्धि-पत्र कर के और कई जहाज बनाकर देश के *व्यापार को उन्नत किया* । (v) उस ने बहुत सा धन उपार्जन करके *पार्लिमेंट की पोज़ीशन को कमज़ोर कर दिया* । (vi) *आयरलैंड पर दृढ़ अधिकार किया* और अपनी पुत्री मारग्रेट का विवाह स्काटलैंड के राजा से कर के *इङ्गलैंड और स्काटलैंड की संयुक्ति का बीज बो दिया* । (vii) इसके अतिरिक्त विदेशों से वैवाहिक सम्बन्ध जोड़ कर उसने *इङ्गलैंड को योरुप का एक प्रबल शक्ति बना दिया* । *इस प्रकार हैनरी सप्तम ने न केवल देश में ही सुख और शान्ति स्थापित की वरन् उसने अपने देश का नाम दूसरे देशों में बहुत बढ़ा दिया* ।

Q Write short notes on (a) ☞ Court of Star Chamber (P U 1945-51) (b) Poyning's Law

प्रश्न—*संक्षिप्त नोट लिखो*—(क) *कोर्ट आफ़ स्टार चैम्बर*, (ख) *पायनिंगज़ ला* ।

(क) कोर्ट आफ स्टार चैम्बर के लिये देखो पृष्ठ १३ और फ़ुट नोट ।

(ख) पायनिंगज़ ला—आयरलैंड इङ्गलैंड का एक विद्रोही प्रान्त था । हैनरी सप्तम ने अपने मन्त्री *सर एडवर्ड पायनिंग* (Sir Edward Poyning) को वहाँ शान्ति स्थापना करने के लिये भेजा । पायनिंग ने वहाँ जाकर पार्लिमेंट से दो नियम पास कराये । एक के अनुसार

यह पास हुआ कि आयरलैंड की पार्लिमेंट में कोई बिल पेश न हो जब तक कि उसके लिये इंगलैंड के राजा की स्वीकृति न ली जाय। दूसरे के अनुसार यह पास हुआ कि वे समस्त नियम जो उस समय इंगलैंड में चालू थे, आयरलैंड पर भी लगाये जायें। इन दो नियमों को पायनिंगज़ ला (Poyning's Law) कहते हैं। इन नियमों के पास हो जाने से आयरलैंड की पार्लिमेंट से कानून बनाने का अधिकार छिन गया। ये नियम 1782 ई० में स्थगित किये गये।

☞Q What is meant by the Renaissance or New Learning ? Who were the pioneers of New Learning in England ? What were its effects ? (P U 1948)
(Important)

प्रश्न—रिनेसान्स (नवयुग) से क्या अभिप्राय है ? इंगलैंड में इसके कर्त्ता-धर्ता कौन थे ? इस आन्दोलन का क्या प्रभाव हुआ ?

रिनेसान्स
(RENAISSANCE)

प्राचीन विद्याओं में जागृति (Renaissance)

रिनेसान्स (Renaissance) फ्रांसीसी भाषा का एक शब्द है और इस का अर्थ है 'पुनर्जीवित होना'। परन्तु इतिहास में इस से अभिप्राय वह जागृति है जो पन्द्रहवी तथा सोलहवी शताब्दी में प्राचीन यूनानी (Greek) और लातीनी (Latin) भाषाओं और कला कौशल की योरुप में प्राप्त हुई।

प्राचीन यूनान और रोम की सभ्यता बड़ी शानदार थी। उनकी भाषायें बड़ी प्रफुल्लित और कला कौशल उच्च कोटि के थे। परन्तु धीरे धीरे इन का महत्त्व घट गया और कई वर्षों तक इन का स्थान घटिया दर्जे का हो गया। परन्तु पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में लोगों की रुचि फिर इन की ओर खिंची और यूनानी और लातीनी साहित्य तथा कला कौशल ने भरपूर उन्नति की। विद्याओं और कला कौशल की इसी जागृति या पुनरुत्थान को रिनेसान्स (Renaissance) या New Learning कहते हैं।

आरम्भ—ऐसी जागृति के लिये कोई विशेष सम्वत् तो नियत
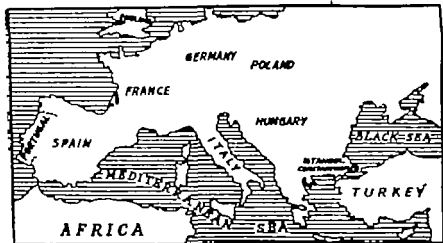
रिनेसान्स का विस्तार

नहीं किया जा सकता, परन्तु साधारणतया 1453 ई० का नाम लिया जाता है। *इस सम्वत् में तुर्कों ने कुस्तुन्तुनिया* (Constantinople) *नगर पर जिसे आजकल इस्तम्बोल* (Istanbul) *कहते हैं, अधिकार कर लिया।* इस्तम्बोल उस समय यूनानी नगर था और यूनानी विद्या तथा कला का सब से बड़ा केन्द्र था। तुर्कों का अधिकार हो जाने के कारण बहुत से यूनानी विद्वान् इस्तम्बोल से भाग कर इटली (Italy) में चले गये जो उन दिनों बड़ा सभ्य देश था। वे प्राचीन यूनानियों की पुस्तकें भी अपने साथ ले गये। वहां पहुँच कर उन्होंने प्राचीन यूनानी साहित्य और कला-कौशल का भली प्रकार प्रचार किया। *इस प्रकार रिनेसान्स का आरम्भ इटली में हुआ।*

विस्तार—धीरे धीरे यूनानी पुस्तकों के स्वाध्याय का उत्साह सब देशों यथा *जर्मनी, फ्रॉस, इंगलैंड* आदि में भी उत्पन्न हो गया। उन दिनों *छापेखाने का आविष्कार हो चुका था,* जिससे पुस्तकें सस्ती होने के कारण साधारण लोगों के हाथों में पहुँच गई। इसके अतिरिक्त राजाओं महाराजाओं, पादरियों तथा धनाढ्य लोगों ने भी इस आन्दोलन में सहायता दी। उन्होंने यूनानी विद्या के विद्वानों का बड़ा मान और

सत्कार किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सम्पूर्ण योरुप यूनानी विद्या के प्रकाश से प्रकाशमान हो गया।

इंगलैंड में रिनेसांस के कर्ताधर्ता—यूनानी भाषा के पुनरुद्धार का आरम्भ तो इटली में हुआ। परन्तु छापेखान के कारण शीघ्र ही यह दूसरे देशों में भी जा पहुँची। *हैनरी सप्तम तथा हैनरी अष्टम के राज्यकाल में विद्या के पुनरुद्धार ने इंगलैंड में भी बहुत उन्नति की।* ये दोनों राजे रिनेसान्स के सहायक थे। उनके समय में इङ्गलैंड से कई विद्वान् इटली गये और वहाँ रह कर उन्होंने नय विचारों का ग्रहण किया और अपने देश में लौट कर उन्हों ने रिनेसान्स का प्रचार किया। इङ्गलैंड में इसके कर्ताधर्ता (Pioneers) निम्नलिखित थे :—

१—जान कालेट (John Colet)

२—टामस मोर (Thomas More)

३—ईरेसमस* (Erasmus)

ये तीनों विद्वान् 'आक्सफ़ोर्ड सुधारक' (Oxford Reformers) के नाम से प्रसिद्ध हैं क्योंकि ये आक्सफ़ोर्ड में काम करते थे। इन के कार्य से इङ्गलैंड में एक नई जागृति आ गई।

प्रभाव (Effects)—इस आन्दोलन के कई प्रभाव हुये (१) एक प्रभाव तो यह हुआ कि योरुप में *यूनानी भाषा का पुनरुद्धार हो गया।* कई नये विषयों का अध्ययन किया जाने लगा और बहुत से स्कूल और कालिज स्थापित हो गये। (२) दूसरे लोगों की आँखें खुल गईं। *उनके विचार अधिक विशाल हो गये* और किसी बात को अन्धाधुन्ध मानने के स्थान में उस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की योग्यता उन में उत्पन्न हो गई। (३) तीसरे उन्होंने धर्म की भी छान बीन करनी आरम्भ कर दी, जिसका परिणाम यह हुआ कि कुछ काल पश्चात् Reformation अर्थात् *धार्मिक सुधार का आन्दोलन आरम्भ हो गया।* (४) चौथे लोगों का ध्यान योरुप के बाहर अन्य देशों को खोजने की

*ईरेसमस हालैंड का एक विद्वान् था, परन्तु इंगलैंड में यूनानी भाषा में शिक्षा दिया करता था।

ओर आकर्षित हुआ और कई *नये मार्ग और देश ढूँढ निकाले गये।* (५) पाँचवें, व्यापार और कला कौशल ने उन्नति करनी आरम्भ की। (६) छटे, साहित्य, गृह निर्माण कला मूर्ति कला और चित्र कला पर इस रिनेसांस का बहुत प्रभाव पड़ा और पुराने काल की अति उत्तम रचनाओं की नकल का जाने लगी।

Q What do you understand by the Age of Discovery? Briefly mention some of the discoveries made during that time.

प्रश्न—खोज काल से क्या अभिप्राय है? इस काल की कुछ एक खोजों का वर्णन करो।

खोज काल

(THE AGE OF DISCOVERY)

खोज काल खोज काल (Age of Discovery) से अभिप्राय *वह काल है जब कि कई नये व्यापारिक राज-मार्ग और कई नये* देश ज्ञात हुए। ये खोजें अधिकतर पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्तिम कुछ वर्षों में हुईं।

इन खोजों का कारण यह था कि भारत तथा योरुप के बीच का पुराना व्यापारिक मार्ग जो अरब सागर (Arabian Sea) और रक्त सागर (Red Sea) से होकर जाता था, तुर्कों के अधिकार में आ गया था और इसलिये इस मार्ग से व्यापार करना भयपूर्ण हो गया। इसी लिये योरुप निवासियों के हृदय में विचार उत्पन्न हुआ कि वे भारत आने का कोई नया मार्ग ज्ञात करें। इस नय मार्ग की खोज में अधिकतर *पुर्तगाल और स्पेन* ने भाग लिया और पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में इस मार्ग को ज्ञात करने के लिये विशेष यत्न किये गये। इसी शताब्दी में *ध्रुवदर्शी* (Mariner's Compass) का प्रयोग अधिक होने लगा। इस से नाविकों का काम और भी सुगम हो गया।

१—1487 ई० में पुर्तगाल का नाविक *बार्थोलोमियो डायज़* (Bortholomeu Diaz) अफ्रीका के दक्षिणी सिरे तक आ पहुँचा

और क्योंकि यहाँ से भारत पहुँचने की आशा उज्ज्वल हो गई थी इसलिये इस सिरे का नाम *आशा अन्तरीप* (Cape of Good Hope) पड़ गया और आज तक इसका यही नाम है।

२—1492 ई० में जैनोआ के प्रसिद्ध नाविक कोलम्बस (Columbus) ने, जिसे स्पेन के राजा ने भेजा था, अमेरिका का महाद्वीप खोज निकाला। उसका वास्तविक उद्देश्य पश्चिम की ओर होकर भारत पहुँचने का था। उस का यह विचार था कि क्योंकि पृथ्वी गोल है इसलिये यदि पश्चिम की ओर चलते जाएँ तो अपने आप पूर्व की ओर पहुँच जायेंगे। वह भारत तो न पहुँच सका परन्तु अमेरिका का महाद्वीप ज्ञात हो गया।

३—1497 ई० में जान कैबट (John Cabot) ने, जो जैनोआ का निवासी था, हैनरी सप्तम के संरक्षण में उत्तर-पश्चिम की ओर से जाकर भारत को ढूँढना चाहा, परन्तु वह केवल Newfoundland ढूँढ पाया। उसके कुछ वर्ष पश्चात् उसके पुत्र ने Labrador को ढूँढा।

४—1498 ई० में पुर्तगाली नाविक *वास्को-ड-गामा* (Vasco-da-Gama) ने आशा अन्तरीप का चक्कर काट कर भारतवर्ष का सामुद्रिक मार्ग ज्ञात किया जिसे आजकल *आशा अन्तरीप मार्ग* (Cape Route) कहते हैं।

Vasco-da Gama

५—1519 ई० में पुर्तगाल का एक नाविक मैगेलन (Magellan) जो स्पेन के राजा की नौकरी में था, संसार के गिर्द सामुद्रिक यात्रा के लिये चल पड़ा। वह स्वयं तो मार्ग में मारा गया, परन्तु उस के कुछ मनुष्य संसार का चक्कर काट कर स्पेन लौट आने में सफल हो गये और इस प्रकार पहली बार संसार का चक्कर लगाया गया।

इस के पश्चात् और कई और देश ज्ञात हुये। सत्य तो यह है कि खोज काल अभी तक समाप्त नहीं हुआ।

यह खोज काल संसार के इतिहास में एक महत्त्वशाली घटना है, क्योंकि इस से न केवल व्यापार की उन्नति हुई प्रत्युत योरुप के देशों को बस्तियाँ बसाने और साम्राज्य स्थापित करने की अभिलाषा भी हुई।

हैनरी अष्टम
HENRY VIII
1509—1547

1509 ई० में हैनरी सप्तम की मृत्यु पर उसका दूसरा पुत्र हैनरी अष्टम सिंहासनारूढ़ हुआ। उस समय उस की आयु अठारह वर्ष की थी।* वह दीर्घकाय, दृढ़ और अपने समय का योरुप का सब से सुन्दर राजा था। प्रथम श्रेणी का खिलाड़ी होने के अतिरिक्त वह घुड़सवारी, कुश्ती, तथा बाण चलाने में अति प्रवीण था। उसे गायन विद्या का बड़ा चाव था। वह बड़ा विद्वान् था और ईसाई धर्म में उसकी बड़ी रुचि थी। वह विद्वानों का मान करता था और प्रजा में सर्वप्रिय था। वह बड़े ठाट-बाट से रहता था। परन्तु अपने राजत्व काल के अन्तिम भाग में वह बड़ा कठोर हृदय, लोभी तथा स्वार्थी बन गया था।

हैनरी अष्टम का चरित्र (Character)

Henry VIII

उसके समय की सर्व प्रसिद्ध घटना इंगलैंड में रैफ़र्मेशन का आरम्भ होना है। उसके शासन काल के पहले बीस वर्षों में शासन की बागडोर उसके योग्य मन्त्री वुल्से (Wolsey) के हाथों में रही जिसने इंगलैंड का एक दृढ़ शक्ति बना दिया।

☞Q Give a brief account of the career and administration of Cardinal Wolsey and explain the

---

*वृद्धावस्था में हैनरी अष्टम किसी रोग के कारण बहुत मोटा हो गया था।

circumstances that led to his fall
(P U 1937 40-43-45-47-48-49-50-51-52 56) (Important)

प्रश्न—संक्षिप्त रूप से कार्डीनल वुल्जे का जीवन और उस के मन्त्रित्व का वृत्तान्त कथन करो और बताओ कि किन कारणों से उस का पतन हुआ।

कार्डीनल वुल्ज़े
(CARDINAL WOLSEY)

*कार्डीनल वुल्जे हैनरी अष्टम के राजत्व काल में एक बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ हुआ है। कार्डीनल वुल्जे (Cardinal Wolsey) यह कई वर्षों तक उसका मन्त्री रहा। वह इप्सविच (Ipswich) के एक व्यापारी का पुत्र था। उस का जन्म 1471 ई० में हुआ था और वह बड़ा तीव्र बुद्धि था। उसकी योग्यता की यह अवस्था थी कि उसने १५ वर्ष की आयु में ही आक्सफ़र्ड (Oxford) यूनिवर्सिटी से बी० ए० की परीक्षा पास कर ली थी, इस लिये लोग उसे Boy Bachelor कहा करते थे। हैनरी अष्टम के राज्यकाल में उसने विशेष प्रभाव और उन्नति प्राप्त की। वह आर्चबिशप आफ़ यार्क (Archbishop of York) तथा लार्ड चान्सलर (Lord Chancellor) अर्थात् गवर्नमेंट का सब से बड़ा अधिकारी बना दिया गया। पोप ने उसे कार्डीनल (Cardinal) नियुक्त कर दिया और इंगलैंड में अपना प्रतिनिधि (Papal Legate) बना दिया। इस प्रकार वह धर्म तथा गवर्नमेंट के सर्वोच्च पदों पर सुशोभित हो गया।

Cardinal Wolsey

---

*कार्डीनल धर्म का एक अधिकारी होता है जिसका स्थान केवल पोप से नीचे पद पर होता है।

वुल्जे का चरित्र (Character)—वुल्जे बड़ा विद्वान् और योग्य पुरुष था। वह प्रभाव और सम्पत्ति का बड़ा इच्छुक था और इन दोनों को प्राप्त करने में वह सफल हुआ। वह पक्का स्वामिभक्त था और बड़े गौरव तथा ठाट-बाट से रहता था। वह कुछ अभिमानी भी था। धनाढ्यों के साथ उसका बर्ताव बड़ा कठोरतापूर्ण था, इसलिये धनाढ्य लोग उससे घृणा करते थे। *उसने अपनी चतुराई से इंगलैंड के नाम को योरुपीय राजनैतिक क्षेत्र में बहुत ऊँचा कर दिया।*

नीति (His Policy)

१ वुल्जे राजा की सत्ता बढ़ाने का बड़ा इच्छुक था इसलिये वह लोगों से बलपूर्वक धन लेकर राजकोष पूरित रखता था, जिससे हैनरी को पार्लिमेंट का मुँह न ताकना पड़े। इसी कारण वह साधारण *लोगों में भी बड़ा बदनाम हो गया था।* उसने बैरनों की रही सही शक्ति का भी नाश कर दिया।

२ वुल्जे चर्च सुधार का भी पक्षपाती था। उस ने कई छोटे विहारों (Monasteries) को तोड़ दिया। इस प्रकार जो रुपया एकत्र हुआ उससे उसने एक कालिज* *आक्सफ़ोर्ड* में और एक स्कूल *इप्सविच* में स्थापित किया। उसकी *प्रबल आकाँक्षा थी कि वह पोप बन जाये,* परन्तु इसमें वह सफल नहीं हुआ।

३ उसकी बाह्य नीति (Foreign Policy) *यह थी कि योरुप में शक्तियों की सम्मानता* (Balance of Power) *स्थापित की जावे और इंगलैंड को योरुप में सब से प्रबल शक्ति बनाया जाय।* उन दिनों फ्रांस सब से शक्तिशाली देश था, इस लिये उसने फ्रांस के साथ युद्ध किया और 1513 ई० में उसको कैले (Calais) के पास एक लड़ाई में परास्त किया। इस युद्ध में फ्रांसीसियों ने तलवार चलाने की अपेक्षा घोड़ों को युद्ध क्षेत्र से भगा ले जाने में एड़ियों का अधिक प्रयोग किया था इसलिये इस युद्ध को *एड़ियों का युद्ध* (Battle of Spurs) कहते

*उस कालिज का नाम आजकल Christ Church College है।

हैं। इसी वर्ष स्काटलैंड के राजा जेम्ज़ चतुर्थ ने अपने मित्र फ्रांस की सहायतार्थ इङ्गलैंड पर चढ़ाई की परन्तु *फ्लाडनफील्ड* (Floddenfield) पर स्काटलैंड वालों की हार हुई और स्काटलैंड का राजा जेम्ज़ चतुर्थ (James IV) युद्ध में मारा गया। तत्पश्चात् वुल्ज़े ने फ्रांस के साथ सन्धि कर ली। *वुल्ज़े की इस नीति ने हैनरी की प्रतिष्ठा अन्य देशों में बढ़ा दी और इङ्गलैंड का यश चारों ओर फैल गया।

वुल्ज़े का पतन (His Fall)

वुल्ज़े लग भग बीस वर्ष तक इङ्गलैंड का कर्ता धर्ता बना रहा परन्तु अन्त में उसका बुरी तरह से पतन हुआ। हैनरी ने राजगद्दी पर बैठते ही अपने भाई आर्थर की विधवा *कैथेराइन आफ़ अरागान* (Catherine of Aragon) से विवाह कर लिया था, परन्तु कुछ वर्षों के पश्चात् वह उस से ऊब गया और उसने दूसरा विवाह करना चाहा। इसके लिये आवश्यक था कि पहले कैथेराइन को तलाक़ (परित्याग) दिया जाये। इस परित्याग की बात पर हैनरी वुल्ज़े से अप्रसन्न हो गया और 1529 ई० में उसे राज्य के सम्पूर्ण पदों से हटा दिया। वुल्ज़े याक में जहाँ का वह आर्चबिशप था चला गया, परन्तु वहाँ भी उसे सुख से रहना प्राप्त न हुआ। 1530 ई० में हैनरी ने उस पर राजद्रोह का अभियोग चलाया और उत्तर देने के लिये उसे लण्डन बुला भेजा।

वुल्ज़े से सम्बन्धित स्थान

---

*1520 ई० में फ्रांस के राजा और हैनरी आपस में कैले (Calais) के स्थान पर भेंट हुई। भेंट का स्थान ऐसे अच्छे प्रकार सजाया गया था कि वह अपनी चमक दमक के कारण Field of the Cloth of Gold के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

वुल्जे उस समय रोग-ग्रस्त था। जब वह आ रहा था तो मार्ग में लैस्टर (Leicester) के गिरजाघर में मर गया। इस प्रकार इंगलैंड का पहला विदेश मंत्री (Foreign Minister) मृत्यु को प्राप्त हुआ। वुल्जे ने मरते समय कुछ इस प्रकार के शब्दों में अपने विचार प्रकट किये —

"यदि मैं परमात्मा की इतने यत्न तथा भक्ति से सेवा करता जितनी कि मैं ने राजा की की है तो मुझे विश्वास है कि वह इस वृद्धावस्था में मुझे इस प्रकार त्याग न देता।"

"Had I served God as faithfully as I have served my King, I am sure, He would not have given me over in my grey hairs"

Q Briefly describe Catherine's divorce What was its importance ?

प्रश्न—संक्षेप से कैथेराइन के परित्याग का वृत्तान्त वर्णन करो। इस का क्या महत्त्व था?

हैनरी अष्टम ने राजगद्दी पर बैठते ही अपने भाई *आर्थर* की विधवा स्त्री कैथेराइन से विवाह कर लिया था, जिसकी पोप ने भी आज्ञा दी हुई थी। हैनरी ने कैथेराइन के साथ लगभग सत्रह वर्ष बड़े आनन्द पूर्वक व्यतीत किये, परन्तु 1527 ई० में हैनरी ने उसका परित्याग करना चाहा। इसके कारण निम्नलिखित थे :—

कैथेराइन का परित्याग

१—कैथेराइन से कोई पुत्र नहीं था। उसकी जितनी सन्तानें इस स्त्री से हुईं उनमें से केवल एक पुत्री *"मेरी"* (Mary) जीवित रही। हैनरी को भय था कि कहीं पुत्र सन्तान न होने के कारण उसकी मृत्यु पर राजसिंहासन के सम्बन्ध में झगड़ा न उठ खड़ा हो। इसलिये वह चाहता था कि उसके यहाँ कोई पुत्र हो, परन्तु कैथेराइन प्रायः रोग-ग्रस्त रहती थी और वृद्धा* हो चुकी थी और उस से कोई अन्य सन्तान हो सकने की आशा न थी।

---

*कैथेराइन हैनरी से आयु में कई वर्ष बड़ी थी और उसकी अन्तिम संतान 1518 ई० में हुई थी। इस लिये उससे और संतान होने की सम्भावना न थी।

२—हैनरी के मन में यह भ्रम उत्पन्न हो गया था कि उसने बड़े भाई की विधवा से विवाह करके पाप किया है जिसका परिणाम यह है कि एक कन्या 'मेरी' को छोड़ कर कैथराइन के सब बच्चे मृत्यु को प्राप्त हो गये हैं।

३—इसके अतिरिक्त इसी बीच में वह कैथराइन की एक अति सुन्दर सहेली लेडी एन बोलीन (Lady Anne Boleyn) के प्रेमपाश में फँस चुका था और उससे विवाह करना चाहता था।

परन्तु ईसाई विधान (कानून) के अनुसार वह एक पत्नि के होते दूसरा विवाह नहीं कर सकता था। इसलिये आवश्यक था कि ऐन बोलीन से विवाह करने के पूर्व कैथेराइन का परित्याग किया जाय और परित्याग के लिये पाप की आज्ञा लेनी आवश्यक थी। इसलिये हैनरी ने पाप से परित्याग की आज्ञा के लिये प्रार्थना की।

परित्याग के झमेले ने पाप को अद्भुत अवस्था में डाल दिया। क्योंकि न तो वह परित्याग की आज्ञा देकर स्पेन के राजा चार्ल्स (Charles) को, जो कैथेराइन का भांजा था और जो उस समय समस्त इटली का स्वामी बना हुआ था अप्रसन्न करने का साहस रखता था और न ही आज्ञा को रोक कर हैनरी अष्टम जैसे शक्ति सम्पन्न राजा को अप्रसन्न करना चाहता था। वह इस झमेले को लम्बा करना चाहता था। इसलिये पोप ने यह विषय वुल्ज़े और इटली के एक और कार्डीनल (Campeggio) को सौंप दिया, जिन्हों ने इंगलैंड में अपना काम आरम्भ किया। परन्तु उन्हों ने अभी निर्णय नहीं किया था कि पोप ने यह विषय उनसे अपने हाथ में ले लिया। उस का वास्तविक अभिप्राय देर लगाना था। हैनरी को इस बात से बहुत क्रोध आया और उसने सारी देरी का उत्तरदाता वुल्ज़े को ठहराया और वुल्ज़े को उसके पद से हटा दिया।

जब हैनरी पाप से परित्याग की आज्ञा प्राप्त करने में असफल रहा तो उसने पार्लिमेंट से कुछ एक ऐसे कानून पास कराये जिन से पोप के अधिकारों की इंगलैंड में समाप्ति हो गई। इस के पश्चात् हैनरी ने

आर्चबिशप क्रैनमर (Cranmer) की व्यवस्था से कैथेराइन का परित्याग कर दिया और ऐन बोलीन से विवाह कर लिया।

इस परित्याग के प्रश्न का एक परिणाम यह हुआ कि इंगलैंड के धर्म का सम्बन्ध पोप से टूट गया और इस प्रकार से इंगलैंड में रैफ़र्मेशन का मार्ग खुल गया। दूसरे पादरी लोग अब सब प्रकार से राजा के अधीन हो गये, पोप का उन पर कोई अधिकार न रहा।

☞ Q What do you understand by the Reformation? What causes led to it? Show how its course was affected in England by the policy of Henry VIII Or, (P U 1928 33 35-44-52)

(a) Who was Martin Luther and how did he break away from the Catholic Church?

(b) Show the steps by which Henry VIII broke away from the Pope (P U 1943) (V Important)

प्रश्न—रैफ़र्मेशन के सम्बन्ध में तुम क्या जानते हो? उस के क्या कारण थे? बताओ हैनरी अष्टम की नीति से इस आन्दोलन पर कहाँ तक प्रभाव पड़ा।

रैफ़र्मेशन

(THE REFORMATION)

रैफ़र्मेशन ईसाई धर्म के सुधार का आन्दोलन था। इसे सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में जर्मनी के एक पादरी मार्टिन लूथर (Martin Luther) ने आरम्भ किया था। इस आन्दोलन का उद्देश्य धर्म के दोषों को दूर कर के उसका सुधार करना था। इसलिये इसे रैफ़र्मेशन कहते हैं। धीरे धीरे यह आन्दोलन योरुप के बहुत से देशों में फैल गया जिसका परिणाम यह हुआ

☞ रैफ़र्मेशन (Reformation)

Martin Luther

कि योरुप के ईसाई लोग, जो अनेक वर्षों से पोप आफ़ रोम को धर्म का शिरोमणि समझते थे दो श्रेणियों में विभक्त हो गये।

१—*प्राटेस्टेंट्स* (Protestants)।

२—*रोमन कैथालिक्स* (Roman Catholics)।

रैफ़र्मेशन के आरम्भ होने के निम्नलिखित कारण थ —

कारण (Causes)

१ पादरियों का नीच आचरण—उन दिनों पोप तथा दूसरे पादरी, जो धर्म के नेता और उपदेशक समझे जाते थ, अपने धार्मिक कर्त्तव्यों स विमुख हो कर धन एकत्र करने तथा सासारिक शक्ति बढ़ाने की ओर लगे हुए थे और पवित्र जीवन व्यतीत करने के स्थान पर भाग विलास के प्रेमी बन चुके थे। इसलिय साधारण लोग उन से घृणा करने लग गये थ।

२ धर्म में भ्रमजाल—धर्म व्यर्थ के भ्रमजाल से भरपूर था और हृदय को वास्तविक शान्ति इससे प्राप्त न हो सकती थी। उपासनाविधि में बेमाइ तथा व्यर्थ रीतियाँ प्रचलित थीं और प्रार्थना लातीनी (Latin) भाषा में पढ़ी जाती थी जिसे बहुत थोड़े लाग समझते थे। इस बात की आवश्यकता थी कि धर्म का सुधार किया जाए।

३ विद्योन्नति का प्रभाव—छापख़ाने के प्रचलित हो जाने तथा विद्या के पुनरुद्धार के प्रभाव से लोगों के विचार विस्तृत हो चुके थ। उनमें अब अन्धविश्वास नहीं रहा था और व धार्मिक बातों की छान बीन करने लग गये थे।

४ राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की भावना - पादरी और बिशप लाग *विदेशी पोप के कर्मचारी थ*। व राजाओं के स्थान पर पोप के आज्ञाकारी थे। स्वतन्त्र देश यह बात पसन्द न करते थे कि पादरी लाग विदेशी पोप के अधीन रहें। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की भावना भी पोप और उस के कर्मचारियों के विरुद्ध थी।

५ मार्टिन लूथर का रोम जाना—जर्मनी का एक पादरी मार्टिन लूथर जो विटनबर्ग (Wittenberg) विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर

था और जो पोप के धर्म का बड़ा भक्त था, एक बार (1511 ई० में) पोप के दर्शनों के लिये रोम गया और जब उसने वहाँ पोप और अन्य पादरियों के नीच आचरण तथा विलासिता को अपने नेत्रों से देखा तो उसे घृणा हो गई।

६ **तात्कालिक कारण**—*क्षमा पत्रों की बिक्री*—1517 ई० में *लूथर ने क्षमा पत्रों* (Indulgences) *के विरुद्ध अपना मत प्रकट किया।* ये क्षमा-पत्र उस समय के पोप ने, जिसे रोम का एक गिरजा घर बनवाने के लिए रुपये की आवश्यकता थी, प्रचलित कर रखे थे और प्रत्येक पाप के क्षमा-पत्र के लिये दाम नियत कर रखे थे। पोप के कर्मचारी (Agents) इन क्षमा-पत्रों को प्रत्येक नगर में यह कह कर बेचते फिरते थे कि जो कोई इन क्षमा-पत्रों को मोल लेगा, उसके पाप क्षमा हो जायेंगे। पोप का एक कर्मचारी इन क्षमा-पत्रों को बेचने के लिए विटनबर्ग भी आया। लूथर से ऐसी व्यर्थ बात सहन न हो सकी और उसने उन क्षमा पत्रों की बिक्री के विरुद्ध एक प्रबल प्रतिवाद (प्रोटैस्ट) किया।

इस के शीघ्र ही बाद लूथर का साहस और भी बढ़ गया और उस ने ईसाई धर्म के कई सिद्धान्तों पर भी चोट की।

प्रोटैस्टैंट धर्म का आरम्भ

जब पोप को इस बात का पता लगा तो उसने (1520 ई० में) लूथर को अपने धर्म से निकाल कर बाहर किया। परन्तु लूथर ने उसके आदेश पर ध्यान न दिया *और उसके हुकम को अग्नि में जला दिया और पोप के अधिकारों के विरुद्ध प्रोटैस्ट करता रहा और उसे धर्म का शिरोमणि मानने से इनकार कर दिया।* इस का परिणाम यह हुआ कि *जर्मनी के बहुत से लोग* प्राचीन धर्म को छोड़कर लूथर के अनुयायी बन गये। उन्होंने भी धर्म के दोषों के विरुद्ध प्रोटैस्ट किया। इन लोगों को प्रोटैस्टैंट (Protestants) कहा जाने लगा, और जो लोग पोप तथा प्राचीन धर्म के पक्षपाती बने रहे वे रोमन कैथोलिक (Roman Catholics) कहलाते रहे। धीरे-धीरे यह आन्दोलन योरुप के अन्य

कई देशों (नैदरलैंड, डैनमार्क, नार्वे, स्वीडन इत्यादि) में भी फैल गया और कई लोग प्रोटैस्टैंट बन गये परन्तु इटली, फ्रांस तथा स्पेन के देश रोमन कैथोलिक ही रहे।

(क) हैनरी पोप के पक्ष में—आरम्भ में तो हैनरी अष्टम इस आन्दोलन के पक्ष में न था। वह पक्का रोमन कैथोलिक था और उसने 1521 ई० में लूथर के विरुद्ध और पोप के पक्ष में एक पुस्तक भी लिखी थी जिससे प्रसन्न होकर पोप ने उसे धर्म रक्षक (Defender of the Faith) की उपाधि प्रदान की थी जो आज तक इंगलैंड के राजा की राज उपाधियों का एक भाग है। परन्तु कैथेराईन के परित्याग के प्रश्न पर हैनरी पोप के विरुद्ध हो गया और इंगलैंड में धार्मिक सुधार (Reformation) के आन्दोलन का आरम्भ हुआ।

☞ हैनरी तथा रेफ़र्मेशन

(ख) पोप से सम्बन्ध विच्छेद (Breach with Rome)-जब पोप ने हैनरी को परित्याग की आज्ञा देने में टालमटोल किया तो हैनरी को बहुत क्रोध आया और उसने पोप के अधिकारों की इंगलैंड में समाप्ति कर देनी चाही। इस अभिप्राय से उसने पार्लिमेंट बुलाई जिसे रेफ़र्मेशन पार्लिमेंट (Reformation Parliament) कहते हैं। यह पार्लिमेंट 1529 से 1536 तक सात वर्ष रही। इस पार्लिमेंट ने पहले तो कई ऐसी कार्यवाहियां कीं जिनसे इंगलैंड के पादरियों ने हैनरी की अधीनता स्वीकार कर ली। फिर पोप के अधिकारों को कम करने के लिये कई कानून पास किये। इन में से निम्नलिखित प्रसिद्ध थे :—

1 Act of Annates, 1532—इसके द्वारा यह निर्णय हुआ कि पादरी लोग अपने पहले वर्ष की आय पोप को न भेजा करें।

2. Act of Appeals, 1533—इससे यह निर्णय हुआ कि पोप के पास इंगलैंड से कोई अपील न की जाए।

3 परन्तु सबसे महत्त्वशाली कानून ☞ ऐक्ट ऑफ सुप्रैमेसी (Act of Supremacy) था जो 1534 ई० में पास हुआ। इस के अनुसार इंगलैंड के शासक को ही धर्मिती पद पर शिरोमणि

(Supreme Head of the English Church) *नियत किया गया और पोप का अधिकार इंगलैंड से सर्वथा हटा दिया गया।* इस भाँति पोप का इंगलैंड से सम्बन्ध टूट गया और चर्च भी राजा के अधीन हो गया।

(ग) हैनरी का प्रोटैस्टैंट धर्म के लिये काम—हैनरी ने कुछ ऐसे काम भी किये जिन से प्रोटैस्टैंट धर्म को सहायता मिली। उस ने *ईसाई विहारों* (Monasteries) को *जो पोप के सहायकों के गढ़ थे गिरा दिया और* *धाईबल* (Bible) *का अनुवाद भी अंग्रेजी भाषा में करा दिया।* परन्तु हैनरी ने इससे अधिक कुछ न किया क्योंकि वह तो केवल पोप से अप्रसन्न था और उसके कैथोलिक धर्म के विरुद्ध उसे कोई आपत्ति न थी।

(घ) हैनरी की धार्मिक नीति का परिणाम—हैनरी ने केवल पोप का अधिकार ही देश से हटा दिया परन्तु धार्मिक सिद्धान्तों में कोई परिवर्तन न किया। इसलिये हैनरी न तो कैथोलिक ही था क्योंकि वह पोप के अधिकारों को नहीं मानता था, और न प्रोटैस्टैंट क्योंकि वह प्राचीन सिद्धान्तों के विरुद्ध न था। उसने तो **छः नियमों का कानून** (Statute of Six Articles) भी पास किया था और इन नियमों को मानना प्रत्येक के लिये अनिवार्य था और ये छहों नियम पक्के कैथोलिक धर्म के थे। परन्तु हैनरी की इस पोप के *विरोध की नीति ने इंगलैंड में प्रोटैस्टैंट धर्म की उन्नति का मार्ग खोल दिया।*

Q. What were monasteries ? Describe their destruction in England (P U 1938)

विहारों का अन्त

प्रश्न—*ईसाई विहार क्या थे ? वे क्यों गिरा दिये गये ?*

विहार (Monasteries) विहार (भिक्षु आश्रम) *थे धर्म स्थान थे जहाँ ईसाइयों के रोमन कैथोलिक मत के भिक्षु लोग रहा करते थे।* ये लोग विवाह नहीं करते थे और अपना समय पूजा-पाठ, स्वाध्याय तथा धर्म प्रचार में व्यतीत करते थे। पुरुषों को Monk कहते थे और

टामस क्रामवैल हैनरी अष्टम का एक प्रसिद्ध मन्त्री था। वह एक लुहार का पुत्र था। परन्तु उसने अपनी ईश्वर प्रदत्त योग्यता से बड़ी उन्नति की। कुछ काल वह वुल्जे के पास कर्मचारी रहा और टामस मोर के पश्चात् हैनरी ने उसे अपना चांसलर बना लिया।

टामस क्रामवैल

क्रामवैल बड़ा स्वामिभक्त और प्रोटेस्टेंट मत का पक्षपाती था। उसने राजा के प्रभाव की वृद्धि के लिये प्रत्येक सम्भव यत्न किया और वह लोगों में बड़ा अप्रिय हो गया। उस के मन्त्रित्व काल में विहारों (Monasteries) को गिरा दिया गया और बाईबल का अनुवाद अङ्गरेजी भाषा में किया गया। विहारों को गिरवाने के कारण उसे Hammer of the Monks कहते हैं। 1540 ई० में क्रामवैल ने हैनरी का विवाह एक जर्मन राजकुमारी ऐन आफ़ क्लीव्ज़ (Anne of Cleves) से करा दिया ताकि हैनरी के सम्बन्ध प्रोटेस्टेंट शासकों के साथ दृढ़ हो जायें। परन्तु ऐन इतनी कुरूपा थी कि हैनरी ने *छः मास के भीतर-भीतर उसका परित्याग कर दिया और क्रामवैल पर* राज-द्रोह का अभियोग चला कर उसे मृत्यु-दण्ड दिया।

टामस क्रैनमर हैनरी अष्टम के समय में आर्चबिशप आफ़ कैण्टरबरी था। वह प्रोटेस्टेंट मत का पक्षपाती था। जब पोप ने हैनरी को परित्याग की आज्ञा देने में टाल-मटोल की तो हैनरी ने परित्याग का विषय क्रैनमर को सौंप दिया। उसने हैनरी को परित्याग की आज्ञा दे दी। क्रैनमर ने बाईबल का अनुवाद अंग्रेजी में कराया और उसे सब गिरजाघरों में रखवा दिया गया। जब मेरी ट्यूडर सिंहासनारूढ़ हुई तो उसने क्रैनमर को जीवित अग्नि में जलवा दिया क्योंकि उसने मेरी की माँ कैथेराइन को परित्याग दिलवाया था।

टामस क्रैनमर

मार्टिन लूथर प्रोटेस्टेंट धर्म का आरम्भ करने वाला था। वह जर्मनी का एक पादरी और विटनबर्ग यूनिवर्सिटी का प्रोफ़ेसर था। वह एक बार पोप के दर्शनों के

मार्टिन लूथर

लिए रोम (Rome) गया परन्तु पोप और अन्य पादरियों के विलासप्रिय जीवन को देखकर उसे घृणा हो गई। 1517 ई० में उसने क्षमा पत्रों (Indulgences) के विरुद्ध एक प्रबल प्रतिवाद किया और उस धर्म के कई सिद्धान्तों पर भी चोट की। कई लोग उसके अनुयायी बन गये। वे Protestant कहलाने लगे। लूथर ने अपनी आयु का अन्तिम भाग विटनबर्ग में व्यतीत किया। अन्ततः ६३ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई।

Q Give an account of the marriages of Henry VIII

प्रश्न—*हैनरी अष्टम के विवाहों का वर्णन करो।*

हैनरी अष्टम ने छः विवाह किये :—

१—हैनरी ने पहला विवाह अपने पिता की इच्छानुसार **कैथेराइन आफ अरागान** (Catherine of Aragon) से हैनरी के विवाह किया, जो स्पेन के राजा की लड़की थी और हैनरी के बड़े भाई आर्थर की विधवा थी। उससे एक लड़की *मेरी* (Mary) जीवित रही थी। हैनरी ने अन्त में (1533 ई० में) उस का परित्याग कर दिया।

२—हैनरी का दूसरा विवाह **ऐन बोलीन** (Anne Boleyn) से हुआ। उससे केवल एक लड़की उत्पन्न हुई, जो आगे चल कर *ऐलिज़बैथ* (Elizabeth) के नाम से रानी बनी। परन्तु हैनरी पुत्र चाहता था, इसलिये वह ऐन बोलीन से अप्रसन्न हो गया और तीन वर्ष के पीछे उस पर दुराचार का दोष लगा कर उसे मृत्यु-दण्ड दे दिया।

३—हैनरी का तीसरा विवाह **जेन सीमोर** (Jane Seymour) के साथ हुआ था। इस विवाह से (1537 ई० में) हैनरी के हाँ एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो बाद में *ऐडवर्ड षष्ठम* (Edward VI) के नाम से राजा बना, परन्तु जेन सीमोर बच्चा जनने के कुछ दिन पीछे परलोक सिधार गई।

४—हैनरी का चौथा विवाह उसके मन्त्री टामस क्रामवैल ने एक

जर्मन राजकुमारी ऐन आफ क्लीव्ज (Anne of Cleves) से करवाया। वह कुरूपी थी, इसलिए हैनरी ने उसका परित्याग कर दिया। क्रामवैल पर विद्रोह का अभियोग चला कर उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया।

५—हैनरी का पाँचवाँ विवाह कैथेराइन हावर्ड (Catherine Howard) से हुआ, जो कि ऐन बोलीन की सम्बन्धिनी थी परन्तु वह दुराचारिणी निकली, इसलिए उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया।

६—हैनरी का छठा और अन्तिम विवाह कैथेराइन पार (Catherine Parr) से हुआ। हैनरी की यह स्त्री उसकी मृत्यु के पश्चात् भी जीवित रही और उसने एक और विवाह कर लिया।

एडवर्ड षष्ठम
EDWARD VI
1547—1553

हैनरी अष्टम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र एडवर्ड जो *जेन सीमोर* से था, सिंहासन पर बैठा। उसकी आयु केवल दस वर्ष की थी और उसका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं था। एडवर्ड पक्का प्रोटैस्टैंट था। *इस लिये उसके राजत्व काल में इंगलैंड में प्रोटैस्टैंट मत ने बहुत उन्नति* की। एडवर्ड क्योंकि अल्प आयु था, इसलिय उसका मामा ड्यूक आफ समरसैट (Duke of Somerset) उसका संरक्षक बना।

ड्यूक आफ समरसैट

ड्यूक आफ समरसैट (Duke of Somerset) एडवर्ड षष्टम का मामा तथा उसका संरक्षक था। वह पक्का देश हितैषी तथा प्रोटैस्टैंट था। उसने इंगलैंड तथा स्काटलैंड को संयुक्त करना चाहा। इसलिय उसने स्काटलैंड वालों से अनुरोध किया कि व अपनी *रानी मेरी* (Mary of Scotland) का विवाह एडवर्ड से कर दें। परन्तु उन्होंने अस्वीकार किया। इस पर उसने स्काटलैंड पर चढ़ाई कर दी और स्काटलैंड वालों को *पिनकी* (Pinkie) के स्थान पर 1547 ई० में पराजित किया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्काटलैंड वालों ने अप्रसन्न

होकर अपनी रानी को फ्रांस भेज दिया। वहाँ बड़ी होने पर उस का विवाह फ्रांस के युवराज से हो गया।

समरसेट चूँकि पक्का प्रोटेस्टेंट था, इसलिये उसने धार्मिक सुधार (Reformation) के काम को इङ्गलैंड में जारी रखा। हैनरी अष्टम ने तो केवल पोप का सम्बन्ध ही तोड़ा था और धार्मिक सिद्धान्तों में कोई परिवर्तन नहीं किया था, परन्तु समरसेट ने एडवर्ड षष्ठम के राजत्व काल के धार्मिक सिद्धान्तों में भी कई परिवर्तन किये:—(१) गिरजाघरों में ईसाई महात्माओं (Saints) की मूर्तियों तथा चित्रों को हटा दिया गया, (२) पादरियों को विवाह करने की आज्ञा मिल गई, (३) प्रार्थना लातीनी भाषा के स्थान पर अङ्गरेज़ी भाषा में की जाने लगी, और (४) प्रार्थना की नई पुस्तक अङ्गरेज़ी भाषा में लिखी गई, जिसे बुक आफ़ कामन प्रेयर (Book of Common Prayer) कहते हैं। इस पुस्तक का प्रयोग समस्त गिरजाघरों में अनिवार्य ठहराया गया।

समरसेट के शासनकाल में कई विद्रोह हुए जो दबा दिये गये। सब से प्रसिद्ध विद्रोह केट (Ket) का विद्रोह था।

केट का विद्रोह (Ket s Rebellion)—इस विद्रोह का मुख्य कारण यह था कि उन दिनों इङ्गलैंड में ऊन का व्यापार बड़ा लाभदायक था। इसलिये इस व्यापार से हाथ रँगने के लिये बड़े बड़े ज़मींदारों ने न केवल अपनी ज़मीनों को ही भेड़ों के पालने के लिये घास-भूमियों में बदल लिया वरन् ग्रामों की साँझी ज़मीनों पर भी, जहाँ ग्राम के निर्धन लोग पशु चराया करते थे, अधिकार कर लिया। ज़मींदारों की इस चेष्टा से निर्धन खेतिहारों को बड़ी हानि पहुँची। अन्ततः नारफ़ोक (Norfolk) के किसानों ने एक पुरुष Ket नाम के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। परन्तु ड्यूक आफ़ नार्थम्बरलैंड (Duke of Northumberland) ने इस विद्रोह को कठोरता से दबा दिया। और Ket और कई दूसरे नेताओं को फाँसी पर लटका दिया गया।

इस विद्रोह का एक परिणाम यह हुआ कि ड्यूक आफ़ समरसेट को इस पद के अयोग्य समझ कर शासन-कार्य से पृथक् कर दिया गया

और उसके स्थान पर ड्यूक आफ़ नार्थम्बरलैंड संरक्षक नियुक्त हुआ।

ड्यूक आफ़ नार्थम्बरलैंड बड़ा धूर्त तथा कामी पुरुष था। उसने भी धार्मिक सुधार (Reformation) के कार्य को चलाये रखा और चर्च में कई परिवर्तन किये जिस से प्राटेस्टैंट धर्म को अधिकाधिक उन्नति प्राप्त हुई। परन्तु यह बड़ा स्वार्थी था और चाहता था कि किसी प्रकार वह अपनी शक्ति को बनाये रखे। एडवर्ड प्रथम पक्का प्रोटेस्टैंट था परन्तु क्षय रोग से ग्रस्त था और उसे सदा यही चिन्ता रहती थी कि उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी बहिन Mary जो पक्की रोमन कैथोलिक थी, उसके सारे काम पर पानी फेर देगी। इस बात से लाभ उठा कर नार्थम्बरलैंड ने एडवर्ड से यह मृत्यु-लेख (वसीयत) लिखवा लिया कि उसकी मृत्यु के पश्चात् लेडी जेन ग्रे (Lady Jane Grey) जो नार्थम्बरलैंड की पुत्र वधु थी सिंहासन की स्वामिनी होगी।

ड्यूक आफ़ नार्थम्बरलैंड (Duke of Northum berland)

लेडी जेन ग्रे एडवर्ड प्रथम को सम्बन्धिनी* और प्रोटैस्टैंट मत की अनुयायिनी थी। उसका विवाह ड्यूक आफ़ नार्थम्बरलैंड के पुत्र से हो गया था। नार्थम्बरलैंड ने उसे एडवर्ड प्रथम से उत्तराधिकारी मनोनीत करा लिया। इसका कारण यह था कि नार्थम्बरलैंड चाहता था कि किसी प्रकार उसकी शक्ति बनी रहे, परन्तु जेन ग्रे के भाग्य में केवल नौ दिन का राज्य लिखा था। फिर मेरी (Mary) रानी बनी और जेन ग्रे का वध करवा दिया गया।

लेडी जेनग्रे (Lady Jane Grey)

मेरी ट्यूडर

MARY TUDOR

1553—1558

Q Briefly describe the reign of Mary Tudor Why is she called Bloody Mary ?

---

*हेनरी प्रथम की सब से छोटी बहिन की दोहती थी।

प्रश्न—मेरी ट्यूडर के शासनकाल का संक्षिप्त वर्णन करो। बताओ कि उसे खूनी मेरी क्यों कहते हैं?

मेरी ट्यूडर हेनरी अष्टम की पहली स्त्री *कैथराइन आफ अरागान* की पुत्री थी। यह इङ्गलैंड के सिंहासन पर बैठने वाली पहली स्त्री थी और पक्की कैथोलिक थी। उसके समय की प्रसिद्ध घटना यह है कि *उसने प्रोटैस्टैंट मत की उन्नति को रोक कर देश में पुनः कैथोलिक धर्म स्थापित कर दिया और रोम के पोप के अधिकार को इंगलैंड में फिर से स्वीकार कर लिया।*

मेरी पक्की कैथोलिक थी और उसकी प्रबल इच्छा थी कि वह फिर से देश में रोमन कैथोलिक मत को उस का पुराना स्थान दिला दे। इस उद्देश्य में सफल होने के लिये उसने स्पेन के राजकुमार *फ़िलिप* से, जो थोड़े काल के पश्चात फिलिप द्वितीय (Philip II) के नाम से स्पेन का राजा बना, विवाह करना चाहा। परन्तु इङ्गलैंड निवासी इस प्रस्ताव को पसन्द नहीं करते थे क्योंकि उनका विचार था कि इस विवाह के कारण उनका देश स्पेन के अधीन हो जायेगा। इस पर एक पुरुष सर टामस वाएट (Sir Thomas Wyatt) के नेतृत्व में विद्रोह भी हुआ, परन्तु यह शीघ्र ही दबा दिया गया। इसके पश्चात् मेरी ने फ़िलिप से विवाह कर लिया, परन्तु यह विवाह मेरी के लिये सुख-प्रद न हुआ।

मेरी का विवाह

मेरी ने सिंहासनारूढ़ होते ही अपने भाई एडवर्ड के काम को जो उसने प्रोटैस्टैंट धर्म के लिये किया था, मिट्टी में मिलाना आरम्भ कर दिया। उसने *बुक आफ कामन प्रेयर का प्रयोग गिरजाघरों में निषिद्ध ठहरा दिया* और प्रोटैस्टैंट पादरियों को हटा कर उनके स्थान पर कैथोलिक पादरी नियुक्त किये। इसके अतिरिक्त उसने पोप के अधिकार को इङ्गलैंड में फिर से स्वीकार कर लिया। इस प्रकार मेरी ने देश में रोमन कैथोलिक मत फिर से प्रचलित कर दिया। परन्तु जब उसने ईसाई विहारों को

धार्मिक नीति

पुन स्थापित करना चाहा तो उस में उसे सफलता न हुई क्योंकि विहारों की भूमियाँ हैनरी अष्टम ने अपने अधिकार में करके अपने मित्रों में बाँट दी थीं और अब वे उन्हे लौटाने को तैयार न थे।

मेरी चूँकि कट्टर कैथोलिक थी इसलिये वह प्रोटैस्टैंट मत वालों को धार्मिक शत्रु समझती थी। इसी लिये उसने सब लोगों पर, जिन्होंने प्रोटैस्टैंट मत छोड़ना स्वीकार न किया, बड़े अत्याचार किये। कई एक को कैद कर दिया गया और कई देश से निकाल दिये गये। *लगभग तीन सौ प्रोटैस्टैंट जीवित ही जला दिए गये*, जिनमें से क्रैनमर (Cranmer) आर्चबिशप आफ कैन्टरबरी (जिसने मेरी की माँ को परित्याग दिलवाया था), बिशप *रिडले* (Ridley) और *लैटिमर* (Latimer) के नाम विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। इन लोगों ने बड़ी वीरता से मृत्यु का स्वागत किया। जब रिडले और लैटिमर को आक्सफोर्ड में साथ साथ जीवित जलाया जाने लगा तो लैटिमर ने रिडले को सम्बोधित करके कहा—*"प्रसन्न हो और हँसते-हँसते अपने प्राण दो, आज हम इङ्गलैंड में परमात्मा की कृपा से एक ऐसा दीपक प्रकाशित करेंगे जो कभी बुझने न पायगा।"*

प्रोटैस्टैंट पर अत्याचार

(Be of good cheer, Master Ridley, play the man We shall this day light such a candle, by God s grace in England as, I trust, shall never be put out)

मेरी की यह नीति असफल रही, क्योंकि शहीदों की मृत्यु ने प्राटैस्टैंट धर्म की जड़ों को और भी दृढ़ कर दिया।

मेरी के पति फिलिप द्वितीय (Philip II), स्पेन के राजा, ने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया। मेरी ने अपने पति को प्रसन्न करने के लिए उसका साथ दिया। इस युद्ध में फ्रांस वालों ने 1558 ई० में कैले (Calais) का नगर, जो लगभग दो सौ वर्ष से अंग्रेजों के अधिकार में चला आता था, जीत लिया। मेरी को इस स्थान के छिन जाने से बड़ा दुःख हुआ। उसने कहा—*"जब मैं मरूँगी तो कैले का शब्द मेरे हृदय पर खुदा हुआ पाओगे।"* (When

कैले का हाथ से निकल जाना 1558

I die you will find Calais written on my heart)। इस के दस महीने बाद मेरी की मृत्यु हो गई।

मेरी को प्रोटैस्टैंट लोग *खूनी मेरी* (Bloody Mary) इस लिये कहते हैं कि उसके *शासनकाल में प्रोटैस्टैंट लोगों पर बड़े अत्याचार हुये और उनमें से ३०० के लगभग जीवित ही जला दिये गये।*

रानी ऐलिज़बेथ प्रथम
1558—1603

ऐलिज़बेथ हैनरी अष्टम की दूसरी पत्नी, *ऐन बोलीन* (Anne Boleyn) की पुत्री थी। राजगद्दी पर बैठने के समय उसकी आयु २५ वर्ष की थी। वह लम्बे कद की सुन्दरी थी, उसे अपनी माता की भाँति तड़क भड़क के वस्त्र पहनने और राग रंग की सभाओं का बड़ा चाव था और वह बड़ी खुशामद प्रिय थी। परन्तु इस के साथ ही वह अपने पिता की भाँति बड़ी साहसी, दूरदर्शी और दृढ़ संकल्प वाली स्त्री थी। उसके *शासनकाल में इंगलैण्ड संसार की बहुत बड़ी शक्तियों में गिना जाने लगा।* ऐलिज़बेथ के राज्य की सफलता का एक कारण उस के योग्य मन्त्री भी थे, जिन में से *वालसिंघम* (Walsingham) और *सैसिल* (Cecil) बड़े प्रसिद्ध थे।

Queen Elizabeth

ऐलिज़बेथ ने सारी आयु विवाह नहीं किया, इसलिये वह *कुमारी रानी* (Virgin Queen) के नाम से प्रसिद्ध है। उसके विवाह न करने के कई कारण थे। एक तो यह कि वह इतनी अधिकार-प्रिय थी कि वह नहीं चाहती थी कि कोई अन्य पुरुष, चाहे वह उस का पति ही क्यों

कुमारी रानी (Virgin Queen)

न हो, शासन प्रबन्ध में उस का भागी बने। दूसरा, उसे यह भी खटका था कि यदि उसने किसी कैथोलिक से विवाह किया तो प्रोटैस्टैंट लोग अप्रसन्न हो जायेंगे और यदि किसी प्रोटैस्टैंट से विवाह कर लिया तो कैथोलिक असन्तुष्ट हो जायेंगे। तीसरे, इस में एक गहरी राजनीति की चाल थी। वह कभी यह प्रसिद्ध कर देती कि फ्रांसीसी राजकुमार से विवाह करेगी और कभी स्पेन के राजा का नाम ले देती। इस प्रकार वह अपने मनोरथ सिद्ध करने के लिये फ्रांस और स्पेन को धकमा देकर अपने देश की शक्ति बढ़ाना चाहती थी।

☞ Q Briefly describe the Church Settlement of Elizabeth (Important) (P U 1945-51)

प्रश्न—ऐलिज़बैथ के चर्च *निर्णय का संक्षिप्त वर्णन करो।*

चर्च का निर्णय

(CHURCH SETTLEMENT)

ऐलिज़बैथ ने राजगद्दी पर बैठने के बाद सबसे पहले चर्च का निर्णय करना चाहा कि देश का सरकारी धर्म क्या होगा। वह न तो कैथोलिक्स को और न प्रोटैस्टैंट्स को ही अप्रसन्न करना चाहती थी। *इस लिये उसने दोनों मतों के बीच का मार्ग* (Middle Way) स्वीकार किया और 1559 ई० में इङ्गलैंड में 'नेशनल चर्च' की नींव डाली जिसे चर्च आफ़ इंगलैंड (Church of England) अथवा *ऐंगलिकन* चर्च (Anglican Church) कहते हैं। *इस नये मत में कुछ तो कैथोलिक मत की रीतियाँ सम्मिलित थीं और कुछ नये परिवर्तन भी जो रैफ़र्मेशन के कारण हुये थे, मिला लिये गये थे। पोप का सम्बन्ध पुनः इङ्गलैंड से तोड़ दिया गया था।*

चर्च का निर्णय (Church Settlement)

१—1559 ई० में ऐक्ट आफ़ सुप्रेमेसी (Act of

Supremacy) पास किया गया जिसके अनुसार ऐलिज़बेथ को चर्च का प्रबन्धक (Supreme Governor of the Church) स्वीकार कर लिया गया और पोप के अधिकारों की इङ्गलैंड में समाप्ति हो गई।

२—1559 ई० में ऐक्ट आफ़ यूनिफ़ार्मिटी (Act of Uniformity) के अनुसार 'बुक आफ़ कामन प्रेयर' का प्रयोग समस्त गिरजाघरों में अनिवार्य ठहराया गया।

३—ऐलिज़बेथ ने इस नये धर्म के 39 नियम (Thirty Nine Articles) नियत किये। इन नियमों का मानना प्रत्येक अङ्गरेज़ के लिये आवश्यक था।

ऐलिज़बेथ के इस निर्णय से यद्यपि दोनों धर्मों के बहुत से लोग प्रसन्न हो गये, परन्तु न तो पक्के रोमन कैथोलिक (Papists) और न पक्के प्रोटेस्टैंट ही जो बाद में प्यूरिटन (Puritans) कहलाने लगे सन्तुष्ट हुए। इसलिए अपने इस चर्च के निर्णय पर आचरण कराने के लिये और इसका विरोध करने वालों को दण्ड देने के लिये ऐलिज़बेथ ने एक नवीन न्यायालय स्थापित किया, जिसे *कोर्ट आफ़ हाइ कमीशन* (Court of High Commission) कहते थे।

महत्त्व (Importance)—ऐलिज़बेथ का यह धार्मिक निर्णय दो प्रकार से *महत्त्वशाली है*। एक तो इस से इङ्गलैंड में धार्मिक झगड़ों की कई वर्षों के लिये समाप्ति हो गई और दूसरे इङ्गलैंड की धार्मिक नीति ऐलिज़बेथ के चलाये हुये धर्मानुसार उन्नति करने लगी। अतः जो मत ऐलिज़बेथ ने प्रचलित किया था, वही मत साधारण से परिवर्तनों के साथ इस समय तक इङ्गलैंड का सरकारी मत है।

☞Q Give a brief account of the life of Mary Queen of Scots (P U 1938-43-45-51) (Important).

प्रश्न—*मेरी स्काटलैंड की रानी का संक्षिप्त हाल लिखो।*

मेरी रानी स्काटलैंड

(MARY QUEEN OF SCOTS)

मेरी (Mary) रानी स्काटलैंड अथवा मेरी स्टुअर्ट स्काटलैंड के राजा जम्स पंचम की पुत्री और ऐलिज़बैथ की नाते में भतीजी थी और उसकी मृत्यु पर इङ्गलैंड के राजसिंहासन की उचित अधिकारिणी थीं। मेरी माने समय की अति सुन्दर तथा चतुर स्त्री थी। अभी यह दूध-पीती बालिका ही थी कि उसका पिता (James V) मर गया और वह स्काटलैंड की रानी बन गई।

मेरी रानी स्काटलैंड

इङ्गलैंड के सरदारों ने यह यत्न किया कि एडवर्ड षष्टम का विवाह मेरी से हो जाय जिससे इंगलैंड और स्काटलैंड संयुक्त हो जायें, परन्तु स्काटलैंड के अधिकारियों ने इस प्रस्ताव को स्वीकार न किया और मेरी को फ्रांस भेज दिया। यहाँ उसका पालन-पोषण रोमन कैथोलिक ढंग पर हुआ और उस का विवाह फ्रांस के राजकुमार से (जो शीघ्र ही फ्रांस का राजा बन गया) हो गया। परन्तु दुर्भाग्य से विवाह के थोड़े समय पीछे मेरी का पति मर गया और मेरी 1561 ई० में स्काटलैंड लौट आई। इस समय उसकी आयु उन्नीस वर्ष की थी।

Mary Queen of Scots

मेरी पक्की रोमन कैथोलिक थी, परन्तु स्काटलैंड के लोगों ने उसकी अनुपस्थिति में प्रोटैस्टैंट मत* स्वीकार कर लिया था। इस लिये मेरी की अपनी प्रजा के साथ देर तक बन न सकी। स्काटलैंड में रह

*स्काटलैंड में प्रोटैस्टैंट धर्म फैलाने वाला एक पुरुष John Knox था।

कर मेरी ने अपने एक सम्बन्धी *लार्ड डार्नले* (Lord Darnley) से विवाह कर लिया। इस विवाह से एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ, जिस का नाम जेम्ज़ (James) रखा गया। परन्तु डार्नले एक मूर्ख और घमण्डी पुरुष सिद्ध हुआ, इसलिये मेरी उससे घृणा करने लग गई और डार्नले मरवा दिया गया।

स्काटलैंड के लोगों की धारणा थी कि डार्नले के मरवाये जाने में निश्चय मेरी का हाथ है और उनका सन्देह और भी दृढ़ हो गया क्योंकि मेरी ने शीघ्र ही *अर्ल आफ़ बाथवैल* (Earl of Bothwell) से जिस पर डार्नले के वध का सन्देह था, विवाह कर लिया। अत उन्होंने मेरी को हत्यारी तथा दुराचारिणी समझ कर उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया और वह बन्दी बना ली गई और उसका दुग्धपायी पुत्र जेम्ज़ षष्टम (James VI) के नाम से स्काटलैंड का राजा स्वीकार कर लिया गया। मेरी जेल के दारोगा से मिल-मिला कर बाहर निकल आई और राज सिंहासन की प्राप्ति के लिये उसने प्रयत्न किया, परन्तु उसे पराजय हुई और 1568 ई० में वह इंगलैंड भाग गई और ऐलिज़बेथ ने उसे बन्दी बना लिया।

मेरी इंग्लैंड में लगभग १६ वर्ष रही और इस काल में रोमन कैथालिक सदा उसे राजगद्दी पर बैठाने के लिये षड्यन्त्र रचते रहे। इसका कारण यह था कि चूँकि ऐलिज़बेथ की माता ऐन बालान का विवाह हैनरी अष्टम के साथ पोप की स्वीकृति के बिना हुआ था इसलिये पक्के रोमन कैथोलिक ऐलिज़बेथ को हैनरी का नियमानुसार सन्तान नहीं मानते थे और वे ऐलिज़बेथ को राजगद्दी से उतार कर अपने मत की अनुयायिनी मेरी को सिंहासनारूढ़ करना चाहते थे। 1570 ई० में पोप ने *यह घोषणा की कि, ऐलिज़बेथ ईसाई बिरादरी से निकाल दी गई है*, इस कारण वह राजगद्दी की अधिकारिणी नहीं हो सकती। इस पर षड्यन्त्र रचने वालों का साहस और बढ़ गया। उधर स्पेन के राजा फ़िलिप (Philip) ने भी, जो पक्का कैथोलिक था,

उसकी सहायता करनी आरम्भ कर दी । इस लिये कैथालिकों ने निरन्तर ऐलिज़बैथ के वध के लिये षड्यन्त्र रचे । परन्तु ऐलिज़बैथ के गुप्तचर विभाग की निपुणता के कारण उन में से कोई भी सफल न हुआ । ऐलिज़बैथ का जीवन बड़े खतरे में था । अन्ततः 1586 ई० में एक षड्यन्त्र पकड़ा गया जिसमें मेरी का भाग लेना भी सिद्ध हो गया । इस षड्यन्त्र को बैबिंगटन प्लाट (Babington Plot) कहते हैं, क्योंकि इस षड्यन्त्र का नेता एक पुरुष बैबिंगटन था । मेरी पर अभियोग चलाया गया । वह अपराधिनी सिद्ध हुई और 1587 ई० में उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया ।

☞ Q Write a short note on the English Seamen of the 16th century What effect had their activities on the relations between England and Spain ? What was the result ? (Important)
(P U 1936)

प्रश्न—*सोलहवीं शताब्दी के अंग्रेज़ नाविकों (जहाज़रानों) पर संक्षिप्त नोट लिखो और बताओ कि उनके पराक्रमों का इंगलैंड तथा स्पेन के पारस्परिक सम्बन्धों पर क्या प्रभाव पड़ा और उसका क्या परिणाम निकला ।*

प्रसिद्ध अंग्रेज़ नाविक
(SEA DOGS)

ऐलिज़बैथ के समय में (सोलहवीं शताब्दी में) कई बड़े प्रसिद्ध नाविक हो गुज़रे हैं जिन्होंने अपने कार्य-कलापों से इंगलैंड के नाम को चार चाँद लगा दिये । इन नाविकों को Sea Dogs भी कहते हैं । इन में से निम्नलिखित प्रसिद्ध हैं :—

अंग्रेज़ी नाविक (English Seamen)

१ सर फ्रांसिस ड्रेक (Sir Francis Drake)—ऐलिज़बेथ के काल का अति प्रसिद्ध नाविक था। उसकी प्रसिद्धी का सब से बड़ा कारण यह है कि वह *पहला अंग्रेज़ नाविक था जिस ने सारे संसार का चक्कर लगाया।* 1577 ई० में संसार-यात्रा के लिये उस ने प्रस्थान किया और तीन वर्ष के पश्चात् 1580 में वह इंगलैंड लौट कर आ पहुँचा। इस यात्रा में उस ने अमेरिका में स्पेन की बस्तियों को खूब लूटा और वापसी पर वह अपने साथ बहुत सा लूट का माल लाया। एलिज़बेथ ने उसे "Sir" की उपाधि प्रदान की। जिस जहाज़ में ड्रेक ने संसार का चक्कर लगाया उसका नाम *गोल्डन हाईंड* (Golden Hind) था, पहले उसे Pelican कहते थे।

Sir Francis Drake

ड्रेक स्पेन के जहाज़ों को जो अमेरिका से सोने चाँदी से लदे हुये योरुप आया करते थे, लूट लिया करता था। 1587 ई० में जब स्पेन के राजा ने इंगलैंड पर आक्रमण करने के लिये जहाज़ों का बेड़ा (Armada) तैयार किया तो ड्रेक चुपके से केडिज़ (Cadiz) की बन्दरगाह पर पहुँचा और बहुत से जहाज़ों को आग लगा आया। इस घटना को वह 'Singeing the King of Spain's Beard' *"स्पेन के राजा की दाढ़ी झुलसना"* कहा करता था। इसके पश्चात् उसने आरमेडा को हराने में प्रशंसनीय भाग लिया। अन्ततः 1596 ई० में वह मर गया।

२ सर जान हाकिन्ज़ (Sir John Hawkins)—यह पहला पुरुष था *जिसने योरुप में दासों का व्यापार प्रचलित किया।* यह अफ्रीका के हब्शियों को दास बना कर नई दुनिया (अमेरिका) में ले जाता

था और यहाँ उनको बेचा करता था। दासों के इस व्यापार से हाकिन्स इंगलैंड का एक अति धनाढ्य पुरुष बन गया। उसने आरमेडा को हराने में भी अच्छा भाग लिया था।

३ सर वाल्टर रैले (Sir Walter Raleigh)–एलिज़ाबेथ के समय के प्रसिद्ध व्यक्तियों में से एक था और रानी की उस पर विशेष कृपा दृष्टि थी। वह एक उच्चकोटि का कवि, इतिहासज्ञ वीर सैनिक, तथा अनुभवी नाविक था। उसने अमेरिका में एक नई बस्ती स्थापित की और उसका नाम कुमारी रानी के नाम पर *वरजिनिया* (Virginia) रखा। *रैले अमेरिका से तम्बाकू तथा आलू के पौदे योरप में लाया था।* जेम्स प्रथम के सिंहासनारूढ़ होने पर रैले एक षड्यन्त्र के अभियोग में बन्दी बना लिया गया और वह १३ वर्ष कारागार में रहा। इस काल में उसने *'संसार का इतिहास'* लिखा। अन्ततः उसे इस शर्त पर छोड़ दिया गया कि वह जेम्स के लिये दक्षिणी अमेरिका में सोने की खानों की खोज निकालेगा। परन्तु इस कार्य में उसे सफलता न हुई और लौटने पर पुराने षड्यन्त्र के दण्डस्वरूप 1618 ई० में उसका वध कर दिया गया।

४ सर हमफ्री गिलबर्ट (Sir Humphrey Gilbert)–इस जलयान वाहक ने 1583 में *न्यूफ़ाउंडलैंड द्वीप* बसाने की चेष्टा की जो अंग्रेजों की सब से पुरानी बस्ती है। लौटते हुये वह अपने जहाज सहित समुद्र में डूब गया। वह सर वाल्टर रैले का सौतेला भाई था।

५ सर मार्टिन फ्रोबिशर (Sir Martin Frobisher)—इस ने *ग्रीनलैंड* (Greenland) *तथा लैब्रेडोर* (Labrador) का चक्कर लगाया और आरमेडा को हराने में बड़ा भाग लिया।

सामुद्रिक चेष्टाओं का प्रभाव

उन दिनों स्पेन निवासी अमेरिका के साथ व्यापार कर भरपूर धन कमा रहे थे। अङ्गरेजी नाविक भी इस लाभप्रद व्यापार में भाग लेना चाहते थे, परन्तु स्पेन वाले उन्हें इस कार्य से रोकते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि ड्रेक, हाकिन्स आदि अङ्गरेजी जलयान-वाहकों ने

स्पेन के माल तथा धन से लदे हुए जहाज़ों को लूटना आरम्भ कर दिया। इससे दोनों देशों में व्यापारिक शत्रुता हो गई और ईर्ष्या-द्वेष यहाँ तक बढ़ गया कि स्पेन के राजा फ़िलिप द्वितीय (Philip II) ने इंगलैंड को नष्ट करने के लिये शक्तिशाली जहाज़ों का एक बेड़ा जिसे *आरमेडा* (Armada) कहते हैं, तैयार किया। परन्तु आरमेडा को 1588 ई० में पराजय हुई और इंगलैंड का आतंक समस्त समुद्रों पर स्थापित हो गया।

☞ Q What was the Spanish Armada? Why was it sent against England and how did it meet with its end? What were the causes and effects of its defeat? (P U 1933-34-35 38-41) Or

Give an account of the war between England and Spain during the reign of Elizabeth (P U 1951-54) (V Important)

प्रश्न—आरमेडा क्या था? यह क्यों इङ्गलैंड के विरुद्ध भेजा गया और किस प्रकार नष्ट हुआ? उसकी पराजय के कारण और परिणाम वर्णन करो। *या*

ऐलिज़बैथ के राज्यकाल में इङ्गलैंड और स्पेन के मध्य युद्ध का हाल लिखो।

आरमेडा
(THE ARMADA)

आरमेडा एक युद्ध का बेड़ा था जो स्पेन के राजा *फ़िलिप द्वितीय* (Philip II) ने इङ्गलैंड के देश पर आक्रमण करने के लिये तैयार किया। इस बेड़े में १३० जहाज़ थे जिन में से कई बहुत बड़े २ थे। इन में आठ हज़ार नाविक, बीस हज़ार सामुद्रिक सैनिक, दो हज़ार से अधिक तोपें, पर्याप्त गोला बारूद और लग भग छः मास के लिये खाद्य सामग्री थी। यह बेड़ा इतना दृढ़ था कि स्पेन निवासी इसे अजेय (Invincible Armada) समझते थे। इस बेड़े का कमान ड्यूक आफ़ *मेडीना सेडोनिया* (Duke of Medina Sidonia) था। 1588 ई०

आरमेडा (Armada)

में यह बेड़ा इंगलैंड के विरुद्ध भेजा गया। अङ्गरेजी बेड़े में लगभग ९० छोटे २ जहाज थे परन्तु अङ्गरेजों में देशभक्ति कूट कूट कर भरी हुई थी। इस आरमेडा के भेजे जाने के कारण निम्नलिखित थे :—

कारण (Causes)

१—ऐलिजबैथ का प्रोटेस्टैंट होना—स्पेन का राजा फिलिप द्वितीय (Philip II) पक्का रोमन कैथोलिक था और प्रोटेस्टैंट मत को समाप्त करना चाहता था। परन्तु ऐलिजबैथ प्रोटैस्टैंट मत की पक्षपातिनी थी, इसलिये फिलिप को उसके विरुद्ध बड़ा रोष था।

२—स्पेन के जहाजों को लूटना—स्पेन निवासियों ने अमेरिका ज्ञात किया था और वहाँ से प्रतिवर्ष स्पेन के सैंकड़ों जहाज सोने चाँदी और अन्य माल से लदे हुए योरुप आया करते थे। परन्तु अङ्गरेजी जलयान-वाहक ड्रेक, *हाकिन्स*, *फ्रोबिशर* आदि उन्हें लूट लेते थे और जब स्पेन का राजा ऐलिजबैथ से शिकायत करता था तो वह उसकी बातों पर ध्यान नहीं देती थी। इससे फिलिप को बहुत रोष था। उसका यह विचार था कि यह इंगलैंड की शक्ति को नष्ट किये बिना अमेरिका में अपना प्रभुत्व स्थापित नहीं रख सकता।

३—नैदरलैंड की सहायता—नैदरलैंड (Netherland) जिसे आज कल हालैंड और बेलजियम कहते हैं उन दिनों स्पेन के अधीन था। वहाँ के निवासी प्रोटैस्टैंट थे। इसलिये उन्होंने स्पेन के विरुद्ध विद्रोह कर रखा था। स्पेन के राजा ने उन्हें दबाने के लिये अपनी कुछ सेना वहाँ भेजी हुई थी। अङ्गरेजी पार्लटियरों ने निजी रूप से नैदरलैंड वालों की सहायता की। इस पर फिलिप को बहुत क्रोध आया। वह अपने अधिकृत देश को स्वतन्त्र होते हुए सहन नहीं कर सकता था।

४—मेरी का वध—जब तक मेरी (स्काटलैंड की रानी) जीवित रही स्पेन का राजा फिलिप ऐलिजबैथ के विरुद्ध षड्यन्त्र करने वालों की धन से सहायता करता रहा परन्तु सफलता न हुई। इससे फिलिप को बहुत रोष था।

५—पोप का विरोध—पोप ने 1570 ई० में एलिजबैथ का ईसाई

ROUTE OF
THE ARMADA
EIRE
ENGLAND
CALAIS
FRANCE
LISBON
SPAIN
AFRICA
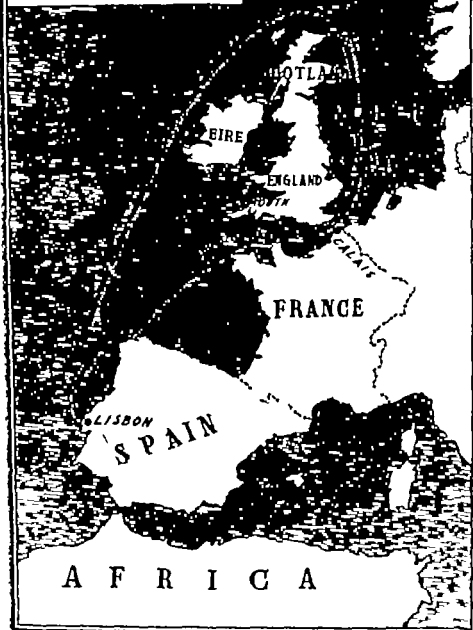
धर्म से निकाल दिया था। मेरी स्काटलैंड की रानी की मृत्यु के पश्चात् पोप ने ऐलिज़बैथ के विरुद्ध धार्मिक युद्ध का घोषणा कर दी।

६—*फ़िलिप का दावा*—पोप ने फ़िलिप को भी युद्ध छेड़ देने के लिये प्रेरित किया। अतः फ़िलिप ने अब यह दावा किया कि चूँकि मैं लंकास्टर वंश से हूँ इसलिये इंगलैंड के राजसिंहासन पर मेरा अधिकार है।

उपर्युक्त कारणों से स्पेन के राजा ने इंगलैंड को नष्ट करने के लिये एक बेड़ा तैयार किया परन्तु ड्रेक 1587 ई० में चुपके से उसके (केडिज़ में ठहरे हुए) कुछ जहाजों को आग लगा आया। इस घटना को "*स्पेन के राजा की दाढ़ी झुलसना*" कहते हैं। इस से फ़िलिप को और भी क्रोध आ गया और उसने बड़े उत्साह से तैयारियाँ कीं।

आक्रमण की योजना

फ़िलिप नैदरलैंड से इंगलैंड पर आक्रमण करना चाहता था। उसकी योजना यह थी कि आरमेडा *इंगलिश चैनल* (English Channel) से होता हुआ नेदरलैंड पहुँचे, जहाँ से स्पेन की लगभग तीस सहस्र सेना को, जो वहाँ थी, साथ लेकर इंगलैंड पर आक्रमण करे, परन्तु यह योजना सफल न हो सकी।

आरमेडा का अन्त

आरमेडा 1588 ई० को *लिज़बन* (Lisbon) से चल पड़ा। उसका सामना करने के लिये अंग्रेज़ी बेड़ा जिसका कप्तान "*लार्ड हावर्ड आफ़ एफ़िंगम*" (Lord Howard of Effingham) था और जिसके अधीन ड्रेक, हाकिंज़, तथा *फ़्रॉबिशर* जैसे अनुभवी जलयान-चालक भी थे, प्लिमथ (Plymouth) की बन्दरगाह में लंगर डाल खड़ा था। जब आरमेडा इंगलिश चैनल में पहुँचा तो अंग्रेज़ी कप्तान ने बिना किसी रोक-टोक के इस बेड़े को आगे निकल जाने दिया और फिर अपने हल्के-फुल्के और शीघ्रगामी जहाजों को उस के पीछे लगा दिया। अंग्रेज़ नाविक स्पेन के हल्के-फुल्के जहाजों पर आ पीछे रह जाते थे, आक्रमण कर उन्हें नष्ट कर देते थे। इस प्रकार स्पेन के बेड़े को बड़ी

हानि पहुँची। एक सप्ताह इसी प्रकार युद्ध होता रहा। अन्ततः आरमेडा का कैले (Calais) की बन्दरगाह में रक्षा लेनी पड़ी। अब अंग्रेजों ने आरमेडा का कैले की बन्दरगाह छोड़ खुले समुद्र में लाने के लिये अनोखी चाल चली। उन्होंने अपने कुछ एक निकम्मे जहाजों को आग लगाकर कैले की बन्दरगाह की ओर छोड़ दिया। ये जलते हुये जहाज स्पेन के जहाजों में जा पहुँचे और आरमेडा को विवश होकर खुले समुद्र में आना पड़ा। कैले के समीप लड़ाई* हुई जिसमें आरमेडा की पराजय हुई। इस समय एक प्रबल झक्कड़ आया जिससे आरमेडा को अत्यधिक हानि पहुँची और उसके जहाजों को विवश होकर उत्तर की ओर भागना पड़ा। कई जहाज नष्ट हो गये और हजारों नाविक डूब गये। अन्त में बड़ी कठिनता से त्रेपन (५३) टूटे-फूटे जहाज स्काट-लैंड का चक्कर लगाकर आयरलैंड के पश्चिम से होते हुये स्पेन पहुँचे। आरमेडा की करारी हार हुई। रानी ऐलिज़बेथ ने परमात्मा को धन्यवाद दिया और मुद्राओं पर यह शब्द अंकित कराये, "*परमात्मा ने फूँक मारी और जहाज़ तितर बितर हो गये।*" (God blew with His winds and they were scattered)

आरमेडा की हार के कारण निम्नलिखित थे —

पराजय के कारण

१—आरमेडा के जहाज बड़े भारी और मन्दगामी थे। वे सुगमता से मुड़ नहीं सकते थे किन्तु इस के विरुद्ध अंग्रेजी जहाज हल्के तथा शीघ्रगामी थे, और वे बड़ी सुगमता से मुड़ सकते थे।

२—स्पेन की तोपों की अपेक्षा अंग्रेजी तोपें अधिक भयंकर थीं। व मार भी दूर तक करती थीं और भरी भी शीघ्र जाती थीं।

३—आरमेडा के कप्तान को जलयुद्ध का अनुभव न था और उसके अधीन सैनिक भी अनुभव रहित थे। परन्तु अंग्रेजी बेड़े की बागडोर एक योग्य पुरुष के हाथों में थी। इस के अतिरिक्त ड्रैक, हाकिन्ज, फ्रोबिशर, जैसे अनुभवी जलयान-वाहक उसके साथ थे।

*Battle of Gravelines, Monday, July 29, 1588

४—फिलिप को आशा थी कि नैदरलैंड से सहायता मिल जाएगी परन्तु यह सहायता उसे प्राप्त न हो सकी।

५—प्रकृति भी अंग्रेजों के पक्ष में थी। झक्कड़ का आ जाना अंग्रेजों के लिये बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ और आरमेडा के जहाज तितर बितर हो गये।

६—इंगलैंड के लोग बड़े उत्साह वाले और देशभक्त थे। इस अवसर पर इंगलैंड के रोमन कैथोलिक लोगों ने भी ऐलिजबेथ की सहायता की। अंग्रेजी बेड़े का कप्तान लार्ड हावर्ड एक रोमन कैथोलिक ही था।

आरमेडा की पराजय के परिणाम बड़े प्रभावशाली थे —

१—आरमेडा की पराजय से स्पेन की जल-शक्ति खंड-खंड हो गई और उसकी महानता का अन्त हो गया।

पराजय के परिणाम

२—इंगलैंड एक बड़ जल-शक्ति (Mistress of the Seas) बन गया और समुद्रों पर उसका आतंक स्थापित हो गया। उसकी गणना संसार की बड़ी शक्तियों में होने लगी।

३—स्पेन की शक्ति टूट जाने से ऐलिजबेथ को कैथोलिक्स से कोई भय शेष न रहा और इंगलैंड में प्रोटेस्टेंट मत की बड़ी उन्नति प्राप्त हुई।

४—अंग्रेजों की सामुद्रिक शक्ति बढ़ जाने से उनके लिये समुद्र पार नई बस्तियाँ स्थापित करना सुगम हो गया और उन का व्यापार उन्नति करने लगा।

५—योरुपीय राजनैतिक क्षेत्र में इंगलैंड का मान बहुत बढ़ गया और उसकी शक्ति की धाक जम गई।

६—इस विजय के कारण अंग्रेजों के हृदय में अपने देश के लिये बड़ा प्रेम हो गया और उन में देश-भक्ति की मात्रा बढ़ गई।

७—नैदरलैंड के निवासी जो स्पेन के शासन के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे कुछ काल पश्चात् स्वतन्त्र हो गए और उन्होंने अपना पृथक राज्य स्थापित कर लिया।

८—आरमेडा की पराजय से इंगलैंड का विदेशी आक्रमण का

भय न रहा। इसलिए अब पार्लिमेंट ने भी सिर उठाना आरम्भ किया।

Q Write a short note on the East India Company

प्रश्न—*ईस्ट इण्डिया कम्पनी पर संक्षिप्त नोट लिखो।*

ईस्ट इण्डिया कम्पनी
(EAST INDIA COMPANY)

1558 ई० में अङ्गरेज़ों ने स्पेन के आरमेडा को निर्णयकारी पराजय दी, जिससे अङ्गरेज़ों की सामुद्रिक शक्ति में बहुत वृद्धि हो गई और व्यापार में भी उन्नति का आरम्भ हुआ। 1599 ई० में लन्दन के कुछ व्यापारियों ने ऐलिज़बैथ से प्रार्थना की कि उन्हें भारतवर्ष और पूर्वी द्वीपों में व्यापार करने की राजाज्ञा प्रदान की जाये। यह आज्ञा पत्र उन्हें 31 दिसम्बर 1600 ई० को मिल गया और इससे ईस्ट इण्डिया कम्पनी (East India Comoany) की नींव पड़ गई।

ईस्ट इंडिया कम्पनी 1600

यद्यपि यह कम्पनी केवल व्यापार के लिये स्थापित हुई थी परन्तु उन दिनों में भारतवर्ष की राजकीय अवस्था कुछ ऐसी थी कि इस कम्पनी को यहाँ पाँव जमाने का अवसर मिल गया और धीरे-धीरे भारतवर्ष पर अङ्गरेज़ों का शासन स्थापित हो गया। यही कारण है कि *ईस्ट इंडिया कम्पनी का स्थापित होना ऐलिज़बैथ के राजत्व काल की अत्यन्त प्रसिद्ध घटनाओं में गिना जाता है।*

Q Give a brief account of the conquest of Ireland.

प्रश्न—*आयरलैंड की विजय का संक्षिप्त वर्णन करो।*

आयरलैंड की विजय
(CONQUEST OF IRELAND)

इंगलैंड के शासकों में सबसे पहले *हैनरी द्वितीय* (Henry II) ने

आयरलैंड की विजय

आयरलैंड को अधिकार में करने की चेष्टा की और उसने देश के बहुत से भाग पर विजय प्राप्त कर ली। परन्तु वास्तविक बात यह है कि ट्यूडर वंश के समय से पूर्व आयरलैंड पर अङ्गरेजी शासन केवल नाम मात्र ही था।

ट्यूडर वंश के शासकों ने आयरलैंड पर बड़े अत्याचार किये जिससे आयरलैंड निवासियों को बड़ा क्रोध आया। इसके अतिरिक्त वे लोग पक्के कैथालिक थे और उन्हें अङ्गरेजों से जो प्रोटेस्टेंट थे, अत्यन्त घृणा थी, इसलिये वे अङ्गरेजी शासन से स्वतन्त्र होना चाहते थे। परन्तु दुर्बल तथा असंगठित होने के कारण उनका कोई बस न चलता था।

अन्ततः ऐलिजबेथ के शासन-काल में आयरिश सरदारों ने विद्रोह करने आरम्भ किये और स्पेन के राजा ने भी उनकी सहायता की। ऐलिजबेथ ने इस डर से कि कहीं आयरलैंड स्पेन का भाग न बन जाय, उसे पूरी तरह विजित कर लेना चाहा। इसलिये उसने अपने कृपापात्र *अर्ल आफ़* ऐसैक्स (Earl of Essex) को सेना देकर आयरलैंड भेजा, परन्तु उसे सफलता प्राप्त न हुई। उसे वापस बुला लिया गया और *लार्ड मौंटजाय* (Lord Mountjoy) को भेजा गया। उसने 1601 ई० में आयरलैंड को विजय कर लिया।

☞ Q Why is the reign of Elizabeth considered a glorious period in the history of England? Or, Discuss the importance of the reign of Elizabeth.
(V Important) (P U 1943-46 49 52-53-55)

प्रश्न—क्या कारण है कि एलिज़बेथ का शासनकाल इङ्गलैंड के इतिहास में एक समृद्धिशाली काल गिना जाता है?

सुनहरी युग
(GOLDEN AGE)

एलिज़बेथ का शासन काल *विशेषतया उसका पिछला आधा भाग*

ऐलिज़बेथ का सुनहरी युग

इंगलैंड के इतिहास में एक अत्यन्त समृद्धिशाली समय था। इसे इंगलैंड का स्वर्णयुग (Golden Age) कहते हैं। इस काल का महत्व निम्नलिखित बातों के कारण है :—

☞ १ चर्च का निर्णय—*ऐलिज़बेथ ने धर्म का निर्णय बड़ी बुद्धि-मत्ता से किया और इंगलैंड में* National Church *की नींव रक्खी।* देश का धर्म प्रोटैस्टैंट नियत किया गया, जिसमें कैथोलिक धर्म की भी कई बातें सम्मिलित की गईं। इस धर्म को लोगों की बहुसंख्या ने स्वीकार कर लिया। *उसकी इस धार्मिक पालिसी से देश को कई वर्षों के लिये आपसी झगड़ों से निवृत्ति प्राप्त हो गई। यही धर्म साधारण परिवर्तनों के पश्चात् आज तक इंगलैंड का सरकारी मत है।*

☞ २ आरमेडा की हार—ऐलिज़बेथ से पहले इंगलैंड की शक्ति दृढ़ न थी, परन्तु उसके राज्यकाल में स्पेन के आरमेडा को जिसे स्पेन निवासी अजेय समझते थे, बुरी तरह हार हुई और इंगलैंड के शक्तिशाली शत्रु स्पेन की शक्ति का जादू सदा के लिये टूट गया और इंगलैंड के लिये "*समुद्रों की रानी*" (Mistress of the Seas) बनना सम्भव हो गया। इस विजय से *इंगलैंड की शक्ति की धाक सारे योरुप में जम गई और समुद्रों का प्रभुत्व स्पेन के हाथों से निकल कर इंगलैंड के हाथों में आ गया।*

३ प्रोटैस्टैंट मत की उन्नति—आरमेडा की हार के साथ इंगलैंड को स्पेन के कैथोलिक देश से कोई भय न रहा जिस से प्रोटैस्टैंट धर्म का मार्ग साफ़ हो गया और इंगलैंड में प्रोटैस्टैंट धर्म ने पर्याप्त उन्नति की।

☞ ४ सामुद्रिक चेष्टाएँ—इस समय में कई प्रसिद्ध अङ्गरेज़ी नाविक हुये, जिन्हों ने अपने कार्य-कलाप से इंगलैंड का नाम संसार भर में विख्यात कर दिया। *फ्रांसिस ड्रेक ने संसार का चक्कर लगाया,* और लौटती बार अपने साथ बहुत सी धन-सम्पत्ति लाया। *सर जान हाकिन्स* ने हब्शी दासों का व्यापार आरम्भ किया। *सर वाल्टर रैले* अमेरिका

से आलू तथा तम्बाकू के पौदे योरुप में लाया और अमेरिका में उसने *वर्जिनिया* (Virginia) नाम की एक अङ्गरेज़ी बस्ती स्थापित की। इसके अतिरिक्त नाविकों ने एशिया पहुँचने के लिये योरुप के उत्तर-पूर्व तथा उत्तर-पश्चिम की ओर से मार्ग ढूँढने के लिये प्रबल प्रयत्न किये। वे कोई ऐसा मार्ग तो न ढूँढ सके, परन्तु जहाज़रानी में उनका अनुभव बहुत बढ़ गया।

☞५ बस्तियों का आरम्भ—इस काल में अङ्गरेज़ नाविकों ने बस्तियाँ बसानी भी आरम्भ कीं। गिलबर्ट ने *न्यूफ़ाउँडलैंड* (New foundland) पर अधिकार कर लिया, और रैले ने *वर्जिनिया* (Virginia) नाम की बस्ती बसाई। परन्तु ये चेष्टायें सफल न हुईं। इस से इतना हो गया कि अब अङ्गरेज़ों का ध्यान इस ओर भी हो गया और १७वीं शताब्दी में इन्हों ने कई बस्तियाँ बसाईं *जिससे अङ्गरेज़ी साम्राज्य की नींव पड़ गई।*

६ आयरलैंड पर विजय—एलिज़बैथ के समय में आयरलैंड पूर्ण रूप से विजित हो गया। इसके अतिरिक्त इङ्गलैंड तथा स्काटलैंड के परस्पर के झगड़े भी जो चिरकाल से चले आते थे समाप्त हो गये।

☞७ व्यापार में उन्नति—आरमेडा की हार के पश्चात् अङ्गरेज़ी व्यापार भी चमक उठा और कई व्यापारिक कम्पनियाँ स्थापित हो गईं। सब से प्रसिद्ध कम्पनी ईस्ट *इण्डिया कम्पनी* थी जो 1600 ई० में स्थापित हुई। इस कम्पनी की स्थापना एलिज़बैथ के समय की अत्यन्त प्रसिद्ध घटना है, क्योंकि धीरे धीरे इस *कम्पनी ने भारतवर्ष का विजय करके अङ्गरेज़ी राज्य में सम्मिलित कर लिया।*

८ *शिल्प में उन्नति*—एलिज़बैथ के समय में बहुत से प्रोटैस्टैंट शरणार्थी योरुप के कई कैथोलिक देशों से आकर इङ्गलैंड में बस गये थे व अपने साथ कई शिल्पी काम भी ले आये थे। इनके आने से इङ्गलैंड में *कपास, ऊन तथा सिल्क की शिल्प में पर्याप्त उन्नति कर ली।* इस के अतिरिक्त और भी कई शिल्पों (पोसन, नमक इत्यादि) ने उन्नति की।

☞९ विद्या तथा साहित्य की उन्नति—*यह समय अङ्गरेज़ी*

साहित्य का वास्तविक स्वर्णयुग था। इस समय में बड़े-बड़े लेखक, नाटककार तथा कवि हुये जिन्होंने इङ्गलैंड के नाम को चार चाँद लगा दिये। विलियम शेक्सपियर (William Shakespeare) जो संसार में अंग्रेज़ी भाषा का सबसे बड़ा नाटककार और प्रसिद्ध कवि माना जाता है, इसी समय में हुआ। उसने लोक-विख्यात नाटक लिखे। फ्रैंसिस बेकन (Francis Bacon) एक प्रसिद्ध विद्वान् और निबन्ध लेखक था। स्पैंसर (Spenser) उच्चकोटि का कवि था। इन के अतिरिक्त और भी विख्यात विद्वान् हुये। इस काल में इंगलैंड में कई उच्चकोटि के रागी भी हुये और गायन विद्या (Music) ने बहुत उन्नति की। इंगलैंड तो सचमुच ही *"गाने वाले पक्षियों का घौंसला"* (Nest of the singing birds) बन गया।

१० रहन सहन का ढंग—व्यापार के बढ़ जाने से देश में धन की वृद्धि हो गई और लोग पहले की अपेक्षा धनवान हो गये। इसी लिये लोगों के रहन-सहन के ढङ्ग में भी पर्याप्त परिवर्तन हो गया। मकान हवादार, खुले और अधिक सुन्दर बनने लगे। नाटक और तमाशे भी आरम्भ हो गये। खाना उंगलियों के स्थान पर काँटे छुरी से खाया जाने लगा। नगरों में बाग़ लगवाये गये जहाँ लोग सैर कर सकें। पोशाक में फ़ैशन चल पड़ा और यात्रा के लिये सुखप्रद गाड़ियाँ प्रयोग में आने लग गईं।

११ देश प्रेम की भावना—आरमेडा की पराजय तथा देश में भिन्न भिन्न प्रकार की उन्नति ने अंग्रेज़ों के दिलों में देश प्रेम की भावना प्रबल कर दी। *इस भावना ने तो देश की काया ही पलट दी।* लोग अपने देश के मान तथा गौरव के लिये प्रत्येक प्रकार का बलिदान करने को तैयार हो गये।

☞ १२ सामाजिक सुधार—सामाजिक सुधार की ओर भी ध्यान दिया गया। सब से बड़ा सामाजिक सुधार 1601 ई० में *निर्धन विधान* (Poor Law) का पास करना था। इसके अनुसार *सड़कों पर भीख माँगना निषेध कर दिया गया* और सरकार ने *निर्धनों की सहायता* करने का प्रबन्ध किया। कई दरिद्रालय (Poor Houses) स्थापित किये गये

जहाँ अपाहजों को भोजन तथा वस्त्र नि:शुल्क दिये जाते थे। दरिद्रालयों का खर्च पूरा करने के लिये लोगों से थोड़ा सा टैक्स उगाहा जाता था जिसे Poor Rate कहते थे। इन लोगों के बच्चों को किसी न किसी शिल्प में ट्रेनिंग देने का प्रबन्ध भी किया गया। बेकार फिरने वाले भिखारियों को कठोर दण्ड दिया जाता था। इससे निर्धनों की सहायता होने लग गई और बेकारी कम हो गई।

सारांश यह कि इस समय इंगलैंड ने *धार्मिक निर्णय, जलयान निर्माण सामुद्रिक शक्ति, भवन निर्माण कला, रहन सहन के ढंग, विद्या तथा साहित्य, प्रत्येक विभाग में जो किसी जाति की उन्नति के लिये अनिवार्य है,* आश्चर्यजनक उन्नति की। इससे इंगलैंड की गणना संसार की उच्चकोटि की शक्तियों में होने लगी। इसी कारण इस काल को इंगलैंड के इतिहास में सुनहरी युग कहते हैं।

Q Write short biographical notes on —
(a) ☞ William Shakespeare, (b) John Knox, (c) Francis Bacon

प्रश्न—*निम्नलिखित पर नोट लिखो :—*

(१) विलियम शेक्सपियर, (२) जान नाक्स, (३) फ्रौंसिस बेकन।

विलियम शेक्सपियर संसार का सब से बड़ा नाटककार माना जाता है। वह रानी ऐलिजाबेथ के समय में 1564 ई० में स्ट्रैटफोर्ड (Stratford) के स्थान पर इंगलैंड में उत्पन्न हुआ था। उसने अति साधारण शिक्षा प्राप्त की। बीस वर्ष की आयु में वह लन्दन के एक थियेटर में ऐक्टर बन गया और धीरे धीरे उसकी प्रसिद्धि का तारा चमकने लगा। उसने नाटक

विलियम शेक्सपियर
☞ William Shakespeare

William Shakespeare
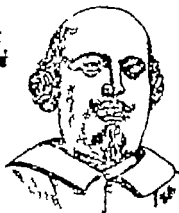
लिखने आरम्भ किये और अपनी ईश्वर प्रदत्त योग्यता से इस कला में अखण्ड ख्याति प्राप्त की। उसने कई कवितायें लिखीं। 1616 ई० में ५२ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई। उसके नाटक आज तक बड़े चाव से पढ़े जाते हैं।

जान नाक्स (John Knox) **जान नाक्स** सोलहवीं शताब्दी में स्काटलैंड का एक प्रसिद्ध सुधारक और प्रोटैस्टैंट धर्म का प्रभावशाली प्रचारक हुआ है। उसने रानी मेरी के समय में प्रोटैस्टैंट धर्म का प्रचार किया। वह बड़ा निडर और प्रभावशाली प्रचारक था। जब मेरी ने बाथवैल (Bothwell) से विवाह कर लिया तो नाक्स ने उसको देश से निकालने में सरकार की बड़ी सहायता की। अन्ततः सड़सठ (६७) वर्ष की आयु में 1572 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

John Knox

फ्राँसिस बेकन (Francis Bacon) **फ्राँसिस बेकन** रानी ऐलिज़बैथ और जेम्स प्रथम के समय में एक अत्यन्त प्रसिद्ध विद्वान् तथा उच्चकोटि का लेखक हुआ है। उसने कैम्ब्रिज (Cambridge) विश्व विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की और उन्नति करते-करते देश का लार्ड चाँसलर (Lord Chancellor) बन गया। जेम्स प्रथम के समय में उस पर घूँस लेने का अभियोग चलाया गया। वह अपराधी सिद्ध हुआ और उसे कैद कर दिया गया, परन्तु चूँकि वह राजा का कृपापात्र था, इसलिये उसे शीघ्र ही कैद से मुक्ति मिल गई। वह बड़ा लोभी था। उसकी योग्यता तथा लोभ लालच को दृष्टि में रखते हुये उसके सम्बन्ध में कहा गया है कि "He was the wisest, brightest and meanest of mankind"

☞Q Give a brief account of the Reformation in England during the Tudor Period (P U 1953) Or,

How did England become Protestant ?
(P U 1937-52) (V Important)

प्रश्न—ट्यूडर वंश के समय में इङ्गलैंड में रेफ़र्मेशन का संक्षिप्त वर्णन करो।

रेफ़र्मेशन की उन्नति

(PROGRESS OF THE REFORMATION)

इंगलैंड में रेफ़र्मेशन इंगलैंड में रेफ़र्मेशन का होना ट्यूडर वंश की एक अति महत्व-पूर्ण घटना है। *हैनरी अष्टम* ने इसके लिये मार्ग साफ़ कर दिया था। *एडवर्ड षष्टम* के काल में इसने अधिक उन्नति की, परन्तु उसके बाद उसकी बहिन *मेरी* (Mary) ने उसके किये कराये काम पर पानी फेर दिया और देश का धर्म फिर कैथोलिक नियत किया। अन्ततः *एलिज़बैथ* के राज्यकाल में देश फिर प्रोटेस्टैंट हो गया।

हैनरी अष्टम के शासन काल में—रेफ़र्मेशन का आरम्भ करने वाला जर्मनी का एक पादरी *मार्टिन लूथर* (Martin Luther) था। उसने यह आन्दोलन 1517 ई० में आरम्भ किया। उस समय इंगलैंड का राजा हैनरी अष्टम था। यह रोमन कैथोलिक था और लूथर के विरुद्ध था। उसने लूथर के विरुद्ध एक पुस्तक भी लिखी थी और पोप ने उससे प्रसन्न होकर उसे *धर्मरक्षक* (Defender of the Faith) की उपाधि प्रदान की थी, परन्तु जब पोप ने उसको कैथराइन (Catherine) के परित्याग की आज्ञा देने में टालमटोल की तो हैनरी ने पोप के अधिकार को इंगलैंड में समाप्त करना चाहा। इस लिये 1534 ई० में ऐक्ट आफ़ सुप्रेमेसी (Act of Supremacy) पास हुआ जिस से पोप के अधिकारों की इङ्गलैंड में समाप्ति हो गई और हैनरी अष्टम स्वयं धर्म का शिरोमणि नियत हुआ। उसने बाईबल का अंग्रेजी में अनुवाद कराया और पोप के अनुयाइयों के मठों को भी तोड़ दिया। परन्तु उसने कैथोलिक धर्म के मूल सिद्धान्तों में किसी प्रकार का परिवर्तन न किया, बल्कि उसने तो कैथोलिक धर्म के

छ नियमों पर चलना अनिवार्य कर दिया। *इतना अवश्य हुआ कि इंग्लैंड में प्रोटैस्टैंट मत के लिये मार्ग खुल गया।*

एडवर्ड पष्ठम के समय में—हैनरी के बाद उस का लड़का एडवर्ड षष्ठम सिंहासनारूढ़ हुआ। वह पक्का प्रोटैस्टैंट था। उस ने *रोमन कैथोलिक सिद्धान्तों को भी बदल दिया।* गिरजाघरों में मूर्तियाँ और चित्र तोड़ दिये गये, पादरियों को विवाह की आज्ञा मिल गई, प्रार्थना लातीनी भाषा के स्थान पर अंग्रेजी में की जाने लगी और *'बुक आफ़ कामन प्रेयर'* (Book of Common Prayer) गिरजाघरों में प्रचलित की गई। धर्म के ४२ (बयालीस) नियम निर्धारित किये गये। *इस प्रकार देश में प्रोटैस्टैंट मत की उन्नति हुई।*

मेरी के शासन काल में—एडवर्ड की बहिन मेरी पक्की रोमन कैथोलिक थी। जब वह रानी बनी तो उसने पोप आफ़ रोम के अधिकारों को इङ्गलैंड में फिर स्वीकार कर लिया और एडवर्ड के किये हुये सब परिवर्तनों को रद्द कर दिया। इङ्गलैंड के प्रोटैस्टैंट लोगों पर बड़े अत्याचार किये। लगभग तीन सौ को जीवित ही आग में जला दिया। इन सब बातों का परिणाम यह हुआ *कि इंगलैंड में फिर से, रोमन कैथोलिक मत स्थापित हो गया।*

ऐलिज़बैथ के काल में—मेरी के पश्चात् ऐलिज़बैथ सिंहासनारूढ़ हुई। उसने मेरी की धार्मिक नीति को बदल दिया। ऐक्ट *आफ़ सुप्रैमेसी* पास करके पोप का सम्बन्ध इंगलैंड से तोड़ दिया गया। *बुक आफ़ कामन प्रेयर* फिर प्रचलित कर दी गई। परन्तु कैथोलिक मत की बहुत सी रीतियाँ रहने दी गईं। इस प्रकार 1559 ई० में उसने *दोनों मतों के मध्य का मार्ग* (Middle Way) स्वीकार किया और इस नये मत के ३९ (उनतालीस) नियम निर्धारित किये गये। इस नये मत के विरुद्ध आचरण करने वालों को दण्ड देने के लिये *कोर्ट आफ़ हाई कमीशन* (Court of High Commission) स्थापित किया गया। इस मत *को चर्च आफ़ इंगलैंड* (Church of England) *कहते हैं और यह साधारण से परिवर्तन के साथ आज तक प्रचलित है।*

परन्तु एलिज़बेथ के समय में कई लोग कट्टर प्रोटेस्टैंट हो गये थे जिन्हें Puritans कहने लगे। जब तक इन लोगों को अपनी इच्छानुसार धर्म पालन की आज्ञा न मिली, इनका राजाओं से झगड़ा चलता रहा।

☞ Q Explain how the Tudors succeeded in establishing a strong government in the country Or,

What steps did the Tudors take to make their government strong? How far were they successful? (P U 1942-48 50) (V Important)

प्रश्न—स्पष्टतया वर्णन करो कि ट्यूडर शासक किस प्रकार देश में दृढ़ शासन स्थापित करने में सफल हो गये या ट्यूडर शासकों ने अपने शासन को दृढ़ करने के लिये क्या-क्या उपाय बर्ते? वे कहाँ तक सफल हुये?

ट्यूडरों का दृढ शासन
(STRONG GOVERNMENT)

ट्यूडर शासक अपने दृढ़ शासन के लिये विशेष प्रसिद्ध हैं। वे स्वेच्छाचारी शासक थे और राज की बागडोर उनके अपने हाथों में था। पार्लिमेंट से वे अपनी बातें मनवा लेते थे। वे निम्नलिखित उपायों से शक्तिशाली शासन स्थापित करने तथा स्वेच्छाचारी बनने में सफल हुये :-

ट्यूडर वंश का दृढ़ शासन

१ प्रजा की सहायता—लोग गुलाब के युद्धों (Wars of the Roses) की अशान्ति से तंग आये हुये थे। वे तो किसी प्रकार देश में शान्ति तथा रक्षा चाहते थे। इसलिये वे कठोर से कठोर शासक के शासन को सहन करने और उसका सब प्रकार से साथ देने को तैयार थे, यदि वह देश में प्रजा के प्राण तथा धन की रक्षा कर सके। ट्यूडर शासकों ने अपनी बुद्धिमत्ता से देश में शान्ति स्थापित की, व्यापार का उन्नत किया, और शक्तिशाली बैरनों का नाश किया। इस से सर्वसाधारण लोग उनसे बड़े प्रसन्न थे।

२ बैरनों का नाश—उन दिनों में इङ्गलैंड के राजा अधिकतर बैरनों से डरा करते थे। परन्तु गुलाब के युद्धों में बहुत से बैरनों के

वंश नष्ट हो गये थ, और जो बैरन बच रहे थे उनकी शक्ति भी क्षीण हो गई थी। इससे ट्यूडर शासकों को स्वेच्छाचारी शासन स्थापित करने में सुगमता हो गई। इसके पश्चात् हैनरी सप्तम ने इन बचे हुये बैरनों की शक्ति को भी तोड़ दिया। बैरनों की यह भूमियाँ नये सरदारों को दे दी गई थीं और वे भूमियों के लिये ट्यूडरों के भक्त बन गये थे।

३ नये सरदारों का बनाना—ट्यूडर शासकों ने पुराने बैरनों की जागीरें मध्यम श्रेणी के लोगों को दे दी थीं। ये नये सरदार ट्यूडर शासकों के समर्थक थे और वे उनके विरुद्ध नहीं जा सकते थे।

४ वर्दी का कानून—हैनरी सप्तम ने *वर्दी का कानून* (Statute against Livery and Maintenance) पास करके बैरनों को सशस्त्र सैनिक रखने का निषेध कर दिया और उनको नियत संख्या से अधिक नौकर रखने अथवा नौकरों को विशेष वर्दियाँ पहनाने से भी रोक दिया।

५ कोर्ट आफ स्टार चेम्बर—हैनरी सप्तम ने बैरनों को कानून तोड़ने का दण्ड देने के लिये कोर्ट आफ स्टार चेम्बर (Court of Star Chamber) स्थापित किया। इस न्यायालय ने अपराधी बैरनों को भली प्रकार दण्ड दिये जिस से उनकी शक्ति क्षीण हो गई और हैनरी सप्तम के हाथ दृढ़ हो गये।

६ तोपों पर कंट्रोल—बारूद के आविष्कृत हो जाने पर हैनरी सप्तम ने सम्पूर्ण तोपें अपने अधिकार में कर लीं और किसी अन्य पुरुष को तोप रखने का अधिकार न दिया, जिससे बैरन राजा के मुकाबले में *विवश* हो गये।

७ धन उपार्जन—ट्यूडर शासकों ने कई उपायों से बहुत सा धन एकत्रित कर लिया *जिससे वे पार्लिमेंट से प्रायः स्वतन्त्र हो कर शासन* करते रहे। हैनरी सप्तम ने गुलाब के युद्धों में मारे जाने वाले बैरनों की जागीरें अपने अधिकार में कर लीं। उसने लोगों से उपहार

तथा भेंट (Benevolences) लेने की चाल पुनः आरम्भ कर दी। कानून तोड़ने वाले बैरनों पर भारी जुर्माने किये गये। उसके मन्त्री मार्टन ने निजी रूप से धन इकट्ठा करने में हैनरी सप्तम की बड़ी सहायता की। इसी लिये हैनरी अठारह लाख पौंड कोष में छोड़ गया। हैनरी अष्टम ने विहारों को गिरवा कर उनका अनन्त धन अपने अधिकार में कर लिया।

८ चर्च की निर्बलता—हैनरी अष्टम ने चर्च की शक्ति को दुर्बल कर दिया था और लोगों पर चर्च का कोई प्रभाव शेष न रहा था। क्योंकि चर्च स्वयं अपनी रक्षा के लिये राज-सहायता का प्रार्थी था, इसलिये भी ट्यूडर शासकों की शक्ति बढ़ गई। *हैनरी अष्टम ने चर्च की सम्पत्ति को कई हज़ार मध्य श्रेणी वंशों में बाँट कर उन्हें अपना सहायक बना लिया।*

९ विदेशी आक्रमणों का भय—ट्यूडर काल में इंगलैंड को विदेशी शत्रुओं का भी भय रहता था जिससे जनता को अपनी रक्षा करवाने के अतिरिक्त किसी और बात का ध्यान न आता था। इस से भी ट्यूडरों को स्वेच्छाचारी बनने में लाभ रहा।

१० बैरन श्रेणी से मन्त्री न बनाना—ट्यूडर शासकों ने इस बात का विशेष ध्यान रक्खा कि बैरनों की श्रेणी में से किसी पुरुष को अपना मन्त्री नियत न किया जाये। उनके मन्त्री मध्यम श्रेणी के लोग थे जो स्वयं भी निजी सुविधाओं के लिये शासकों का मुँह ताका करते थे। उन्होंने जी जान से शासकों की सेवा की। हैनरी सप्तम का मन्त्री *मार्टन* (Morton) एक पादरी था, हैनरी अष्टम के मन्त्री *वुल्ज़े* (Wolsey) और *क्रामवैल* (Cromwell) भी साधारण श्रेणी से थे, और ऐलिज़बेथ के मन्त्री *सेसिल* (Cecil) और *वालसिंगहम* (Walsingham) व्यापारी श्रेणी से सम्बन्ध रखते थे।

११ ट्यूडरों की सूझ—ट्यूडर शासकों में योग्यता थी कि वे मन पहचान जाते थे कि पार्लिमेंट की रुचि किस ओर है और वे

पार्लिमेंट की बात इस रीति से मान लेते थे जैसे यह उनकी अपनी इच्छा है। इसके अतिरिक्त पार्लिमेंट के मैम्बर अधिकतर मध्यम श्रेणी के लोग होते थे और वे ट्यूडरों से प्रसन्न थे।

१२ ट्यूडरों की विजयें – ट्यूडर शासकों की युद्ध में सफलताओं के कारण, विशेषतया आरमेडा की पराजय से, प्रजा के हृदयों पर ट्यूडरों के पक्ष में बड़ा प्रभाव पड़ा।

उपर्युक्त उपायों से ट्यूडर वंश के शासक बहुत सीमा तक अपने मनोरथों में सफल हुए। राजकीय शासन की दृढ़ता स्थापित करने में तीन बाधाएँ होती हैं—चर्च, पार्लिमेंट और जनता। सफल हुये ट्यूडरों ने इन तीनों को वशीभूत कर लिया और प्राय निरकुश होकर राज्य करते रहे। केवल ऐलिज़बैथ के अन्तिम वर्षों में पार्लिमेंट ने सिर उठाया, परन्तु रानी ने उस विषय को सुलझा लिया।

स्टुअर्ट वंश

(STUART DYNASTY)
1603—1714

१—जेम्ज़ प्रथम	1603—1625 ई०
२—चार्ल्स प्रथम	1625—1649 ई०
३—कामनवैल्थ	1649—1660 ई०
४—चार्ल्स द्वितीय ..	1660—1685 ई०
५—जेम्ज़ द्वितीय	1685—1688 ई०
६—विलियम तृतीय तथा मेरी	1689—1702 ई०
७—रानी ऐन	1702—1714 ई०

स्टुअर्ट वंशावली
१ जेम्ज प्रथम
२ चार्ल्स प्रथम
एलिज़ाबेथ
सोफ़िया, इलैक्ट्रैस आफ़ हैनोवर
जार्ज प्रथम
३ चार्ल्स द्वितीय
मेरी
४ जेम्ज द्वितीय
५ विलियम तृतीय
=
मेरी
६ ऐन
जेम्ज
दी ओल्ड प्रीटैंडर
चार्ल्स एडवर्ड, दी यंग प्रीटैंडर
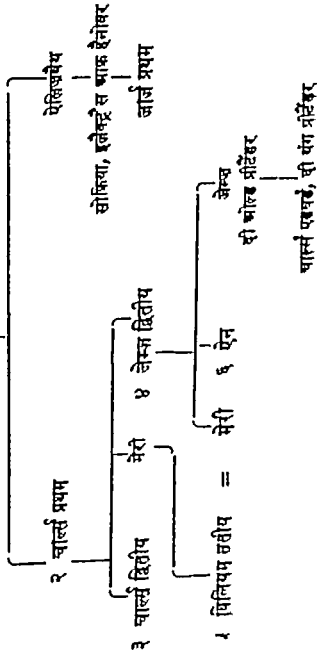
जेम्ज़ प्रथम

JAMES I
1603—1625

जेम्ज़ प्रथम का सिंहासन पर अधिकार

एलिज़बेथ ने विवाह नहीं किया था, अतः उसके कोई सन्तान न थी और न ही ट्यूडर वंश का कोई राजकुमार था जो उसके पीछे सिंहासन का अधिकारी होता। इस लिये 1603 ई० में एलिज़बेथ की मृत्यु के पश्चात् स्काटलैंड का राजा, जेम्ज़ षष्टम जो स्टुअर्ट वंश से था, *जेम्ज़ प्रथम* के नाम से इङ्गलैंड का राजा बना। वह मेरी रानी स्काटलैंड का पुत्र था और मेरी हैनरी सप्तम की पुत्री मारग्रेट की पोती थी। *इस भाँति जेम्ज़ एलिज़बेथ का निकटतम सम्बन्धी था और उसकी मृत्यु के पश्चात् सिंहासन का उचित अधिकारी था* जैसा कि निम्नलिखित वंशावली से प्रकट है :—
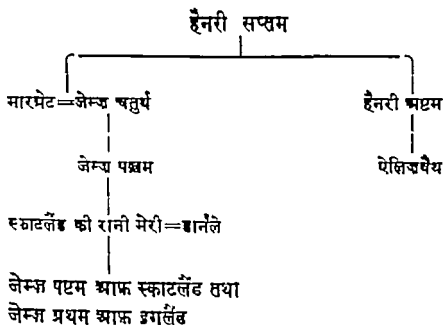
इङ्गलैंड में उसके राजगद्दी पर बैठने का एक महत्वशाली परिणाम यह निकला ☞ कि स्काटलैंड और इङ्गलैंड जो कई शताब्दियों से एक दूसरे के शत्रु थे एक ही राजा के अधीन हो गये। परन्तु इन दोनों देशों की पार्लिमेंट तथा धर्म पृथक् पृथक् ही रहे। जेम्ज ने यत्न किया कि इन दोनों देशों के धर्म तथा पार्लिमेंट एक हो जायें, परन्तु इसमें उसे सफलता न हुई और पूर्ण एकता कोई एक सौ वर्ष बाद 1707 ई० में रानी ऐन के समय में हुई।

नोट—स्मरण रहे कि जेम्ज प्रथम पहला राजा था जो इङ्गलैंड, स्काटलैंड, तथा आयरलैंड तीनों का शासक था।

☞Q Give a short sketch of the character of James I (P U 1944) and discuss the statement "James I was the wisest fool in Christendom."

(Important)

प्रश्न—जेम्ज प्रथम के चरित्र का संक्षिप्त वर्णन करो और सिद्ध करो कि जेम्ज ईसाई संसार में सब से शिक्षित मूर्ख था।

जेम्ज प्रथम लगभग ३७ वर्ष की आयु में सिंहासनारूढ़ हुआ। यह बहुत पढ़ा लिखा और अत्यन्त विद्वान् पुरुष था।

जेम्ज का चरित्र — उसका ज्ञान बड़ा विशाल और विचार बड़े उच्च थे। उसका भाषण गम्भीरतापूर्ण तथा विद्वता युक्त होता था और यह एक अच्छा लेखक भी था। धार्मिक पक्षपात के इस युग में यह धार्मिक सहिष्णुता का पालक था और चर्च आफ इङ्गलैंड का अनुयायी था। यह युद्ध से घृणा करता था।

परन्तु उसमें कई एक दोष भी थे –(१) प्रथम यह कि यह बड़ा भद्दा और बेडौल सा मनुष्य था। उसकी आकृति में राजाओं का सा महत्व सर्वथा नहीं था। (२) दूसरे यह आलसी तथा खुशामद प्रिय था। यह कायर इतना था कि खड्ग देखकर ही कांप उठता था। (३) तीसरे यह बड़ा डींगमार था। अपनी योग्यता की डींग मारता रहता था। उसके खुशामदी उसे "Solomon of England" कहा करते थे। (४) चौथे

यह कि उसमें मनुष्य परखने *की योग्यता नहीं थी।* वह सदैव अपने अयोग्य कृपापात्रों के हाथों में कठपुतली बना रहा। (५) पाँचवें वह राजा के *दैवी अधिकारों* (Divine Right of Kings) का प्रबल पालक था और स्वेच्छाचार से शासन करना चाहता था। अङ्गरेजों के आन्तरिक भावों को वह सर्वथा न समझ सका। इसलिये राजा के रूप में उसने कई भूलें कीं और पार्लिमेंट के साथ उसका आयु-पर्यन्त झगड़ा ही रहा। फ्रांस का राजा जो उसका समकालीन था उसकी विद्वत्ता तथा मूर्खताओं को दृष्टि में रखकर उसे *'ईसाई संसार का सब से शिक्षित मूर्ख'* (Wisest fool in Christendom) कहा करता था और बात थी भी ठीक।

उसके अप्रिय होने का एक कारण यह भी था कि वह परदेशी था और अंग्रेजों में अभी तक कोई परदेशी राजा सर्वप्रिय नहीं हुआ।

Q Write notes on —

(a) Hampton Court Conference (P U 1939)

☞ (b) Gunpowder Plot (P U 1933 39-43-47 52) (Important)

प्रश्न—*निम्नलिखित पर नोट लिखो :—*

(क) हैम्पटन कोर्ट कान्फ्रैंस (ख) बारूद का षड्यन्त्र।

हैम्पटन कोर्ट कान्फ्रैंस—इङ्गलैंड के प्यूरिटन लोगों को आशा थी कि चूँकि जेम्स स्काटलैंड से आया है जहाँ के लोग प्रायः प्यूरिटन धर्म के थे अतः वह उन्हें धार्मिक स्वतन्त्रता दे देगा। इसीलिये उन्होंने एक प्रार्थना-पत्र जेम्स की सेवा में पेश किया। उस में इन लोगों ने जेम्स से Prayer Book तथा प्रार्थना विधि में कुछ परिवर्तन करने की प्रार्थना की थी। इस प्रार्थना पत्र को Millenary Petition कहते हैं क्योंकि इस पर लगभग एक हजार प्यूरिटन लोगों के हस्ताक्षर थे।

Hampton Court Conference 1604

जेम्स ने 1604 ई० में प्यूरिटन मत और चर्च आफ इङ्गलैंड के बीच में समझौता कराने के लिये प्यूरिटनों के प्रतिनिधियों और अंग्रेजी

चर्च के बड़े बड़े बिशपों को हैम्पटन कोर्ट (Hampton Court) में (जो लण्डन से 15 मील परे टेम्स नदी के किनारे एक शाही महल था) एक कान्फ्रेंस में बुलाया, परन्तु परिणाम कुछ न निकला। *प्यूरिटन लोग चाहते थे कि उन्हें धार्मिक स्वतंत्रता हो और चर्च का प्रबन्ध बिशपों के स्थान जनता के हाथों में हो।* परन्तु उनकी माँगें स्वीकार न की गईं प्रत्युत राजा उनसे अप्रसन्न हो गया और उनको धमकी दी कि यदि उन्होंने चर्च आफ इङ्गलैंड की प्रार्थना विधि को न माना तो उन्हें देश से निकाल दिया जायगा। इसके बाद यह कान्फ्रेंस विसर्जित हो गई। अब जेम्स ने प्यूरिटन लोगों के विरुद्ध कई कठोर नियम पास कर दिये। *इससे प्यूरिटन लोग राजा के शत्रु बन गये* और उनमें से कुछ देश छोड़ कर चले गये। इस कान्फ्रेंस का एक बड़ा परिणाम यह निकला कि *बाईबल का एक प्रामाणिक अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया गया* जो *आज तक भी प्रचलित है।* इस अनुवाद को Authorised Version कहते हैं।

गनपौडर प्लाट

गनपौडर प्लाट—1605 ई० में कुछ कैथोलिक लोगों ने जेम्स को मार देने के लिये एक षड्यन्त्र रचा जिसे *गनपौडर*, Gunpowder Plot 5th Nov 1605 प्लाट कहते हैं परन्तु यह षड्यन्त्र सफल न हुआ।

कारण—इङ्गलैंड के रोमन कैथोलिक लोगों ने पेलिजबैथ के समय में जेम्स की माँ मेरी रानी स्काटलैंड के लिये बड़े कष्ट सहन किये थे, इसलिये उनको जेम्स पर बड़ी आशायें थीं। उनका विचार था कि जेम्स इङ्गलैंड का राजा बन कर उन सब कानूनों को जो रोमन कैथोलिक के विरुद्ध थे हटा देगा अथवा उन कानूनों को कठोरता से न बर्तेगा। परन्तु उनकी आशाएँ पूर्ण न हुईं। इससे उन्हें बड़ा क्रोध आया और उन्होंने राजा तथा पार्लिमेंट को उड़ा देने के लिये षड्यन्त्र रचा।

घटनाएँ—कुछ मनचले कैथोलिक लोगों ने जिनका नेता *रार्बट केट्सबी* (Robert Catesby) था यह योजना की कि 5 नवम्बर

1605 ई० को जब राजा पार्लिमेंट का अधिवेशन आरम्भ करने के लिये पार्लिमेंट में पधारे तो पार्लिमेंट को बारूद से उड़ा दिया जाये।

इसलिये उन्होंने हाउस आफ लार्ड्स के नीचे के कुछ तहखाने किराये पर ले लिये और उनमें बारूद भर दिया। आग लगाने का काम एक अनुभवी सैनिक गाई फाक्स (Guy Fawkes) को सौंपा गया।

इस षड्यन्त्र का ठीक समय पर पता लग गया और वह इस प्रकार कि षड्यन्त्रकारियों में से एक ने अपने सम्बन्धी को जो हाउस आफ लार्ड्स का सदस्य (मेम्बर) था एक गुप्त पत्र लिखा कि उस दिन वह पार्लिमेंट के अधिवेशन में सम्मिलित न हो। उस सदस्य को सन्देह उत्पन्न हुआ और उसने वह पत्र जेम्स को दे दिया। जेम्स ने छान बीन कराई और *गाई फ़ाक्स* तहखाने में आग लगाने को तैयार पकड़ा गया। गाई फाक्स और उसके साथियों को फाँसी का दण्ड दिया गया।

परिणाम—रोमन कैथोलिक लोगों के विरुद्ध कानूनों को बड़ी कठोरता से प्रयोग किया जाने लगा और कोई दो सौ वर्षों तक सब कैथोलिक लोगों को देश द्रोही और घातक समझा जाता रहा।

नोट—5 नवम्बर का दिन इङ्गलैंड में प्रति वर्ष धूमधाम से मनाया जाता है। इसे Guy Fawkes Day कहते हैं। इस दिन आतिशबाजी छोड़ी जाती है और गाई फ़ाक्स के छोटे छोटे बुत बना कर उन्हें जलाया जाता है।

Q Explain why the reign of James I is called a long quarrel between the King and his Parliament. What were the principal causes of this friction? Or (Important)

Why did James I quarrel with his Parliaments?

(P U 1954)

प्रश्न—जेम्स प्रथम का शासन काल, राजा तथा पार्लिमेंट के बीच एक दीर्घ संघर्ष का युग था। इसे स्पष्ट करो और बताओ इस संघर्ष के क्या कारण थे? या बताओ कि जेम्स अपनी पार्लिमेंट से क्यों झगड़ता था?

जेम्ज़ का पार्लिमेंट से झगड़ा

(JAMES AND PARLIAMENT)

जेम्ज़ प्रथम के सिंहासनारूढ़ होते ही उसका पार्लिमेंट से झगड़ा आरम्भ हो गया। यह झगड़ा न केवल जेम्ज़ के शासन काल में ही चलता रहा वरन् लगभग सारे स्टुअर्ट वंश में निरन्तर चलता गया। वास्तव में स्टुअर्ट वंश के शासन काल की सब से प्रसिद्ध घटना पार्लिमेंट और राजाओं का झगड़ा है। अन्तत 1688 ई० में Glorious Revolution के परिणाम स्वरूप इस झगड़े की समाप्ति हुई।

जेम्ज़ तथा पार्लिमेंट

जेम्ज़ ने अपने शासन काल में चार पार्लिमेंटें बुलाईं और अन्तिम पार्लिमेंट को छोड़ कर शेष सब को लड़ झगड़ कर तोड़ दिया।

पहली पार्लिमेंट (First Parliament)—1604 ई० में बुलाई गई और सात वर्ष तक रही। परन्तु इस समय में यह जेम्ज़ के साथ लड़ती झगड़ती रही। इस झगड़े का एक कारण तो यह था कि जेम्ज़ "दैवी अधिकारों" पर अड़ा और बैठा था, परन्तु पार्लिमेंट अपने अधिकारों पर तुली हुई थी। दूसरा कारण 'रुपये की आवश्यकता' का था। राजा को अपने दरबार तथा प्रबन्ध का व्यय पूरा करने के लिये विशेष रकम मिला करती थी। परन्तु जेम्ज़ एक तो अपव्ययी था और दूसरे चाँदी और सोने के अमरीका से अधिक आ जाने के कारण सिक्कों की क्रय शक्ति कम हो गई थी। अतः उसका निर्वाह उस रकम से नहीं हो सकता था। जेम्ज़ ने अपना खर्च पूरा करने के लिये पार्लिमेंट की स्वीकृति के बिना अनुचित टैक्स, जिनका नाम Impositions पड़ गया था, लगा रखे थे और पार्लिमेंट इस बात को अच्छा नहीं समझती थी। अन्ततः 1611 ई० में जेम्ज़ ने इस पार्लिमेंट को तोड़ दिया।

दूसरी पार्लिमेंट (Second Parliament)—1614 ई० में बुलाई गई परन्तु यह केवल दो मास ही रह सकी और क्योंकि इस

पार्लिमेंट ने कोई भी कानून पास नहीं किया, इस लिये यह Addled Parliament के नाम से प्रसिद्ध है।

तीसरी पार्लिमेंट (Third Parliament)—1621 ई० में बुलाई गई। इसने जेम्स की धाम नीति का विरोध किया। जेम्स ने सिंहासनारूढ़ होने के शीघ्र पीछे स्पेन के साथ (जो ऐलिज़बैथ के समय में इंगलैंड का शत्रु रहा था) मित्रता कर ली थी और वह इस मित्रता को और भी दृढ़ करने के लिये अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी से करना चाहता था। पार्लिमेंट उस के घोर विरुद्ध था। इसलिये जेम्स ने अगले ही वर्ष इसे तोड़ दिया। इस पार्लिमेंट को एक सफलता हुई कि उस ने *चाँसलर बेकन* (Bacon) पर घूँस का दोष लगाकर उसे उसके पद से हटा दिया।

अब जेम्स ने स्पेन के साथ नाता गाँठने के लिये और भी अधिक यत्न किया। किन्तु स्पेन निवासी इस नाते के पक्ष में न थे। इसी कारण यह नाता न हो सका। इस पर सारे देश में हर्ष मनाया गया। जेम्स ने नाता न होने पर अपमान समझते हुये स्पेन के विरुद्ध युद्ध छेड़ने का संकल्प किया।

चौथी पार्लिमेंट (Fourth Parliament)—1624 ई० में बुलाई गई। इसने स्पेन के विरुद्ध युद्ध छेड़ने का समर्थन किया। अभी पार्लिमेंट समाप्त न होने पाई थी कि जेम्स प्रथम स्वयं परलोक सिधार गया।

इस भाँति जेम्स प्रथम के सारे राज्यकाल में राजा तथा पार्लिमेंट के बीच एक निरन्तर संघर्ष चलता रहा।

झगड़े के कारण जेम्स तथा पार्लिमेंट के बीच झगड़े के बड़े बड़े कारण निम्नलिखित थे :—

१ डिवाइन राइट आफ किंग्ज़—जेम्स Divine Right of Kings अर्थात् '*राजा के दैवी अधिकारों*' का विश्वासी और पालक था। वह अपने आप को परमात्मा का प्रतिनिधि समझता था और स्वेच्छाचारी शासकों की भाँति शासन करना चाहता था। इसके

विपरीत पार्लिमेंट अपने प्राचीन अधिकारों की रक्षा पर तुली हुई थी।

२ जेम्ज़ के कृपापात्र—जेम्ज़ के जो कृपापात्र (Favourites) थे, व सब अयोग्य थे, परन्तु जेम्ज़ उनका बड़ा पक्षपात करता था यहाँ तक कि यदि किसी मन्त्री को भी राजा से कोई काम निकालना होता था तो वह इन कृपापात्रों द्वारा निकालता था। इन में से एक *राबर्ट कार* (Robert Carr) था और उसके पश्चात् दूसरा *ड्यूक आफ़ बकिंगहम* (Duke of Buckingham) था। पार्लिमेंट जेम्ज़ के इन कृपापात्रों को अच्छा नहीं समझती थी और उन्हें हटा देना चाहती थी परन्तु जेम्ज़ को यह स्वीकार न था।

३ आर्थिक आवश्यकता—जेम्ज़ अपव्ययी था और बहुत सा धन अपने कृपापात्रों पर व्यय कर देता था, परन्तु पार्लिमेंट उसकी इच्छानुसार रुपया देने को तैयार न थी। जेम्ज़ अनुचित रीतियों से रुपया एकत्र करता था और पार्लिमेंट इसे पसंद न करती थी।

४ बाह्य नीति—जेम्ज़ शान्ति-प्रिय राजा था। सिंहासनारूढ़ होते ही उसने स्पेन से, जो इंगलैंड का शत्रु रहा था, सन्धि कर ली थी। इस मित्रता को दृढ़ करने के लिये वह अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन की कैथोलिक राजकुमारी से करना चाहता था। परन्तु पार्लिमेंट इस नीति के विरुद्ध थी क्योंकि वह स्पेन वालों को इंगलैंड का शत्रु समझती थी। परन्तु जेम्ज़ कहता था कि पार्लिमेंट को उसकी बातों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं।

५ धार्मिक नीति—जेम्ज़ प्रथम चर्च आफ़ इंगलैंड का मानने वाला था, परन्तु पार्लिमेंट के सदस्य अधिकतर प्यूरिटन थे। वे लोग चाहते थे कि चर्च का प्रबन्ध बिशपों के स्थान जनता के हाथ में होना चाहिये। जेम्ज़ इस बात के पक्ष में न था, क्योंकि वह समझता था कि जो लोग आज चर्च के प्रबन्ध में प्रजातन्त्र चाहते हैं व कल देश का प्रबन्ध भी राजा से छीन कर जनता को देने के लिये तैयार हो जायेंगे। वह कहा करता था कि *"यदि बिशप नहीं तो राजा भी नहीं"* (No Bishop, No King)।

६ समय का प्रभाव—उपरिलिखित कारणों के न होते हुये भी पार्लिमेंट और राजाओं में खटपट होनी आवश्यक थी। कारण यह कि ट्यूडर काल में लोग शान्ति और रक्षा चाहते थे, इसलिये कठोर से कठोर शासक की कठोरता सहन करने को तैयार थे। परन्तु अब भीतरी और बाह्य शाँति स्थापित हो गई थी। *स्काटलैंड और इंगलैंड एक ही राजा के अधीन थे, आयरलैंड पूर्ण रूप से जीता जा चुका था, स्पेन की शक्ति कुचल दी गई थी और फ्रांस से मित्रता हो गई थी।* ऐसी अवस्था में युद्ध का कोई भय न था। अतः पार्लिमेन्ट अपने अधिकारों की रक्षा पर तुल गई। ऐलिज़बैथ के काल के अन्तिम वर्षों में भी पार्लिमेंट ने खटपट आरम्भ कर दी थी।

Q Write short notes on —
(a) ☞ The Divine Right of Kings (P U 1945)
(b) The Plantation of Ulster (c) Pilgrim Fathers

प्रश्न—*निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखो* —

(क) *डिवाइन राइट आफ किंग्स*, (ख) *प्लान्टेशन आफ़ अल्स्टर*, (ग) *पिलग्रिम फ़ादर्ज़*।

1 Divine Right of Kings

दैवी अधिकार—जेम्स का तथा स्टुअर्ट वंश के अन्य शासकों का भी यह विचार था कि शासन ईश्वरीय दान है। *राजा पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि होता है और जिस प्रकार परमात्मा के कामों पर दोषारोपण करना पाप है इसी प्रकार राजा के कामों के विषय में पूछ ताछ करना अथवा यह कहना कि राजा यह कर सकता है और यह नहीं कर सकता*, अपराध है। उनका विचार था कि राजा सम्पूर्ण विधानों (कानूनों) से ऊपर है और वह जो चाहे कर सकता है। वह अपने कामों के लिये संसार की किसी शक्ति के सम्मुख उत्तरदायी नहीं है। इस सिद्धान्त को Divine Right of Kings अर्थात् राजाओं का दैवी अधिकार कहते हैं। 1688 ई० की क्रांति के पश्चात् यह बात निश्चय हो गई कि राजाओं का कोई दैवी अधिकार नहीं है।

LONDONDERRY
ULSTER
DROGHEDA
DUBLIN
EIRE
LIMERICK
WEXFORD

प्लांटेशन आफ अल्सटर—आयरलैंड का देश रानी ऐलिज़बैथ के शासन काल में विजित हुआ था, परन्तु वहाँ के लोग अधिकतर रोमन कैथोलिक धर्म के मानने वाले थे। इसलिये वे अंग्रेजी शासन को पसन्द नहीं करते थे। जेम्ज प्रथम ने आयरलैंड में अंग्रेजी शासन को दृढ़ करने के लिये एक प्रान्त अल्सटर (Ulster) से

2. Plantation of Ulster 1607–1610

विद्रोही रोमन कैथोलिक सरदारों को निकाल कर उनकी जागीरें छीन लीं और वहाँ इङ्गलैंड तथा स्काटलैंड के कुछ प्रोटैस्टैंट लोगों को बसा दिया। आयरलैंड में इस प्रोटैस्टैंट बस्ती स्थापित करने को Plantation of Ulster कहते हैं। इस से इंगलैंड को यह लाभ हुआ कि *आवश्यकता के समय आयरलैंड के कैथोलिक लोगों के विद्रोह को आसानी से दबाया जा सकता था।*

पिल्ग्रिम फ़ादर्ज़—जेम्ज़ प्रथम के शासन काल में प्यूरिटनों को धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त न थी और उन्हें अपनी इच्छानुसार पूजा करने में कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। इसलिये कुछ प्यूरिटन लोग जिन की संख्या एक सौ के लगभग थी, इङ्गलैंड छोड़ कर हालैंड जा बसे। 1620 ई० में ये परिवार एक

3 Pilgrim Fathers 1620

छोटे से *जहाज़ मेफ़्लावर* (Mayflower) में सवार होकर अमेरिका चले गये जहाँ उन्होंने अपनी बस्ती *'न्यू प्लिमथ'* (New Plymouth) बसाई। इन प्यूरिटनों को इतिहास में Pilgrim Fathers कहते हैं। ये लोग बड़े परिश्रमी तथा तपस्वी थे। इन लोगों को अमेरिका पहुँच कर बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

इसके पश्चात् स्टुअर्ट वंश के शासन काल में धीरे-धीरे कई अंग्रेज़ी बस्तियाँ अमेरिका में स्थापित हो गईं और *इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्य का आरम्भ हुआ।*

चार्ल्स प्रथम
CHARLES I
1625—1649

चार्ल्स प्रथम जेम्स प्रथम का पुत्र था। उसने 1625 ई० से लेकर 1649 ई० तक राज्य किया।

सिंहासनारूढ़ होना

सिंहासनारूढ़ होने के शीघ्र ही पश्चात् उसने फ्रांस के बादशाह की बहिन, रोमन कैथोलिक कुमारी, *हैनरीटा मेरिया* (Henrietta Maria), से विवाह कर लिया और उसके प्रभावाधीन रोमन कैथोलिक लोगों का पक्षपात करना आरम्भ कर दिया। उस के राज्यकाल के *प्रारम्भिक वर्षों में ड्यूक आफ़ बकिंगहम* (Duke of Buckingham) उस का मन्त्री था और *उसकी मित्रता चार्ल्स के लिये बड़ी हानिकारक सिद्ध हुई।*

Charles I

चरित्र

चार्ल्स प्रथम प्रायः प्रत्येक भाव से अपने पिता की अपेक्षा अधिक उत्तम मनुष्य था। वह बड़ा सुन्दर, आतंक वाला, सदाचारी, और धार्मिक था, *परन्तु वह एक असफल राजा सिद्ध हुआ।* इसका एक कारण तो यह था कि वह बड़ा हठी था और अपने वचन को पूरा न करता था, दूसरे वह अपनी रोमन कैथोलिक स्त्री के प्रभाव में था। परन्तु सब से बड़ा कारण यह था कि *वह राजा के दैवी अधिकारों में अपने पिता से भी बढ़ कर विश्वास करता था।* अन्ततः उसको पार्लिमेंट के साथ सिविल वार हुई जिस में उसकी हार हुई और पार्लिमेंट ने उसका वध कर दिया।

Q Give a brief account of the reign of Charles I up to the outbreak of the Civil War (P U 1937)

प्रश्न—*सिविल वार के आरम्भ होने से पहले तक चार्ल्स प्रथम के शासनकाल का संक्षिप्त वर्णन करो।*

चार्ल्स प्रथम 1625 ई० में सिंहासनारूढ़ हुआ और चौबीस वर्ष तक राज्य करता रहा। उसके राज्य-काल को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है :—(१) *पहली तीन पार्लिमेंटों से झगड़ा* 1625–1629, (२) *निरंकुश शासन* 1629—40, (३) *लौंग पार्लिमेंट का अधिवेशन* 1640, (४) *सिविल वार* 1642–1649।

चार्ल्स प्रथम 1625 ई० में सिंहासनारूढ़ हुआ। उसने अपने राज्य काल के पहले चार वर्षों के अन्दर तीन पार्लिमेंटें बुलाई और प्रत्येक से लड़कर उसे तोड़ दिया। उसके सिंहासनारूढ़ होने के समय स्पेन के साथ युद्ध छिड़ा हुआ था अतः चार्ल्स को रुपये की बड़ी आवश्यकता थी। उसकी पहली दो पार्लिमेंटों ने

१ पहली तीन पार्लि-मेंटों से झगड़ा 1625–29

जिनके अधिवेशन क्रमश· 1625 और 1626 ई० में हुए, उसको उस समय तक रुपया देने से इनकार किया जब तक कि वह अपने मित्र *ड्यूक आफ़ बकिंगहम* (Duke of Buckingham) का साथ न छोड़ दे। चार्ल्स को पार्लिमेंट की इस मांग पर बड़ा रोष हुआ और उसने शीघ्र ही, एक के बाद दूसरी, दोनों पार्लिमेंटों को तोड़ दिया। स्पेन के युद्ध में चार्ल्स को असफलता हुई। अभाग्यवश अब फ्रांस के साथ युद्ध छिड़ गया और चार्ल्स को *रुपये की आवश्यकता और भी अधिक हो गई*। चार्ल्स ने कई अनुचित रीतियों से रुपया एकत्र करना आरम्भ किया। *उसने प्रजा से बलपूर्वक ऋण लेना और सैनिकों को लोगों के घरों में बिठाना शुरू कर दिया और शान्ति के समय में भी मार्शल-ला* (Martial Law) *से राज्य करने लगा*। परन्तु उसे कोई विशेष सफलता न हुई। अन्तत विवश हो कर उसने 1628 ई० में तीसरी पार्लिमेंट बुलाई। यह पार्लिमेंट इस बात पर तुली हुई थी कि जब तक उसकी शिकायतें दूर न हों वह रुपया मंजूर नहीं करेगी। अतएव उसने *अधिकार-याचना* (Petition of Right) स्वीकार कराई।

२ अधिकार याचना (Petition of Right), 1628— चार्ल्स की *तीसरी पार्लिमेंट* ने 1628 ई० में उससे अधिकार याचना

स्वीकार कराई। इसकी प्रसिद्ध धाराएँ (Provisions) निम्नलिखित थीं :—

१—राजा पार्लिमेंट की स्वीकृति के बिना लोगों से ऋण, भेंट अथवा टैक्स नहीं ले सकता।

२—राजा बिना अभियोग चलाए किसी को बन्दी नहीं बना सकता।

३—राजा लोगों के घरों पर सैनिकों को नहीं बिठा सकता।

४—राजा शान्तिकाल में मार्शल-ला (Martial Law) द्वारा राज्य नहीं कर सकता।

महत्व—"Magna Carta" के पश्चात् "Petition of Right" *अंग्रेजी जाति की स्वाधीनता का दूसरा बड़ा चार्टर (स्वतन्त्रता-पत्र) समझा जाता है। इसको स्वीकार करने से राजा के अधिकार घट गये और पार्लिमेंट की शक्ति दृढ़ हो गई।*

परन्तु चार्ल्स ने शीघ्र ही अपना वचन भंग कर दिया और अनुचित टैक्स लगा दिये जिनमें से प्रसिद्ध Tunnage & Poundage* था। पार्लिमेंट ने इस बात पर बड़ा रोष किया। यह देखकर चार्ल्स ने अगले ही वर्ष अर्थात् 1629 ई० में पार्लिमेंट को तोड़ दिया और उसने निश्चय किया कि वह और पार्लिमेंट नहीं बुलायेगा। *इस तीसरी पार्लिमेंट के तोड़ने से चार्ल्स के राज्यकाल के पहले भाग की समाप्ति हो गई।*

तीसरी पार्लिमेंट को तोड़ने के पश्चात् चार्ल्स प्रथम ने ग्यारह वर्ष (1629–40) तक बिना पार्लिमेंट के राज्य किया।

२. चार्ल्स का निरंकुश शासन 1629—40

इस समय को चार्ल्स प्रथम का *निरंकुश शासन* (Personal Rule) कहते हैं। यह वास्तव में अत्याचार का युग था। इस काल की प्रसिद्ध घटनाएँ निम्नलिखित हैं :—

---

*Tunnage वह टैक्स था जो शराब पर टन के हिसाब से लिया जाता था और Poundage वह टैक्स था जो दूसरी वस्तुओं पर पाउंड के हिसाब से लिया जाता था।

१ वैंटवर्थ और लाड के अत्याचार—इस निरंकुश शासन काल में चार्ल्स के दो बड़े परामर्शदाता थे, वैंटवर्थ, अर्ल आफ़ स्ट्रैफ़र्ड (Wentworth, Earl of Strafford), राज्य प्रबन्ध के कार्य में, और विलियम लाड (William Laud), आर्चबिशप आफ़ कैंटरबरी, धार्मिक कामों में। इन दोनों ने प्रजा पर घोर अत्यचार किये। वैंटवर्थ ने राजा के विरुद्ध सब प्रकार के विरोध को कठोरता से कुचल डाला। यह अपनी इस नीति को 'Thorough' अर्थात् 'सम्पूर्ण' कहा करता था। विलियम लाड ने प्यूरिटन लोगों पर अत्यन्त अत्याचार किये जिस से लगभग बीस हज़ार प्यूरिटन देश छोड़ कर अमरीका जा बसे। इन अत्याचारों से दोनों पुरुष प्रजा में बहुत ही अप्रिय हो गये। इसके अतिरिक्त कोर्ट आफ़ स्टार चेम्बर (Court of Star Chamber) तथा कोर्ट आफ़ हाई कमीशन (Court of High Commission) ने भी लोगों पर बहुत अत्याचार किये।

२ अनुचित टैक्स—चार्ल्स ने इस समय धन इकट्ठा करने के लिये कई अनुचित टैक्स भी लगाये। परन्तु जिस टैक्स ने लोगों को सब से बढ़ कर उत्तेजित किया वह ☞ जहाज़ी कर (Ship Money) था। यह पुरातन काल का टैक्स था जो केवल युद्ध के दिनों में और वह भी समुद्र तट के स्थानों के लोगों से राजा उगाहा करते थे, जिस से देश-रक्षा के लिये जहाज़ बनवाये जा सकें। परन्तु चार्ल्स ने यह टैक्स देश के भीतरी भाग के लोगों से भी और वह भी पार्लिमेंट की स्वीकृति के बिना और शान्ति के दिनों में उगाहना आरम्भ कर दिया। एक पुरुष जान हैम्पडन (John Hampden) ने यह टैक्स देने से इनकार किया जिस पर उसे कैद कर दिया गया।

John Hampden

३ स्काटलैंड से युद्ध—विलियम लाड ने (जो अब आर्च-बिशप आफ कैंटरबरी हो गया था) अपनी धार्मिक नीति (इंगलीकन चर्च) को स्काटलैंड के देश में भी ठोंसना चाहा। इस पर स्काटलैंड वालों ने जो कट्टर प्रोटेस्टेंट (अर्थात् Presbyterians) थे विद्रोह कर दिया। चार्ल्स ने स्काटलैंड पर चढ़ाई कर दी परन्तु हार खाई और उसे बहुत सा रुपया देने की प्रतिज्ञा करने पर सन्धि करनी पड़ी। इस युद्ध को बिशपों का युद्ध (Bishops' War) भी कहते हैं क्योंकि इस युद्ध का कारण यह था कि चार्ल्स ने स्काटलैंड में भी बिशप नियुक्त करने चाहे थे। इस प्रकार उसके राज्य-काल के दूसरे भाग की समाप्ति हुई।

४ लौंग पार्लिमेंट

रुपये की अत्यन्त आवश्यकता से विवश होकर चार्ल्स ने 1640 ई० में क्रमशः दो पार्लिमेंट बुलाईं। पहली पार्लिमेंट को तो तुरन्त ही विसर्जित कर दिया गया, इसे Short Parliament कहते हैं। परन्तु दूसरी पार्लिमेंट बीस वर्ष रही और लौंग पार्लिमेंट (Long Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अधिकांश सदस्य (मेम्बर) प्यूरिटन थे। पार्लिमेंट ने चार्ल्स की नियम-विरुद्ध कार्यवाइयों की समाप्ति कर दी और निम्नलिखित महत्त्वशाली निर्णय किये :—

१—चार्ल्स प्रथम के परामर्शदाताओं वेंटवर्थ और लाड पर अभियोग चलाये गये। 1641 ई० में वेंटवर्थ को मृत्यु दण्ड दिया गया और लाड को टावर आफ लण्डन में डाल दिया गया। चार वर्ष बन्दी रखने के पश्चात् 1645 ई० में उसे भी मृत्यु दंड दिया गया।

२—कोर्ट आफ स्टार चम्बर और कोर्ट आफ हाई कमीशन जो राजा के हाथों प्रजा को तंग करने का यन्त्र बनी हुई थीं तोड़ दी गईं।

३—शिप-मनी और अन्य टैक्स जो राजा ने पार्लिमेंट की स्वीकृति के बिना लगा रखे थे, अनुचित ठहरा दिये गये और निश्चित हुआ कि राजा पार्लिमेंट की स्वीकृति के बिना टैक्स नहीं लगा सकता।

४—*त्रैवर्षी कानून* (Triennial Act) पास किया गया जिस से निर्णय हुआ कि प्रति तीन वर्ष के समय में पार्लिमेंट का कम से कम एक अधिवेशन अवश्य बुलाया जावे।

५—यह भी निर्णय किया गया कि इस पार्लिमेंट को इसके मेम्बरों की अपनी इच्छा के बिना तोड़ा नहीं जा सकता।

६—चार्ल्स के विरुद्ध दो सौ से अधिक (२०४) दोषों का एक *ग्लानिपत्र* पास किया गया जिसे *महान् ग्लानिपत्र* (Grand Remonstrance) कहते हैं। इस के अतिरिक्त पार्लिमेंट ने मिलिशया बिल (Militia Bill) पास किया जिसके अनुसार सेना पर पार्लिमेंट का अधिकार हो गया। चार्ल्स को इस पर बहुत क्रोध आया और उसने पार्लिमेंट के पाँच मुख्य सदस्यों को पकड़ना चाहा। वह सेना का एक दस्ता ले कर पार्लिमेंट में गया। परन्तु इन सदस्यों को चार्ल्स के इस संकल्प का पहले ही पता लग चुका था और वह भाग गये हुये थे। जब चार्ल्स ने उन सदस्यों को वहाँ न पाया तो उसने क्रोध में कहा—*'शोक कि पक्षी उड़ गये हुए हैं'*। अब चार्ल्स को युद्ध के अतिरिक्त और कोई उपाय न था। इसलिये उसने *नाटिंघम* (Nottingham) के स्थान पर अपना झंडा गाड़ दिया। पार्लिमेंट तथा चार्ल्स के बीच युद्ध छिड़ गया जिसे Civil War कहते हैं। *इस युद्ध में चार्ल्स की पराजय हुई और उसका सिर काट दिया गया।*

☞ Q Describe the causes, main events and results of the Civil War or the Puritan Rebellion during the reign of Charles I. (P U 1939-42-47-48-53) Account for the success of the Parliament. (1942)
(V Important)

प्रश्न—चार्ल्स प्रथम के समय की सिविल वार (गृह-युद्ध) अथवा प्यूरिटन-विद्रोह के कारण, बड़ी बड़ी घटनायें तथा परिणाम वर्णन करो। इन युद्ध में पार्लिमेंट की सफलता के कारण भी वर्णन करो।

सिविल वार

THE CIVIL WAR

1642—1649

यह सिविल वार (गृह-युद्ध) चार्ल्स प्रथम के समय में राजा तथा पार्लिमेंट के बीच में हुई। इसके कारण निम्नलिखित थे —

१ स्वेच्छाचारी शासन—इस युद्ध का प्रधान कारण यह था कि चार्ल्स प्रथम राजाओं के दैवी अधिकारों का प्रबल पालक था और वह निरंकुश राजा की भाँति शासन करना चाहता था। उसने प्रजा की स्वाधीनता को सब प्रकार से कुचलना चाहा। प्रजा पर अनुचित टैक्स लगाये और लोगों को बिना कारण बन्दी बनाया। चार्ल्स के अनुचित कामों से लोग तंग आ चुके थे।

कारण

२ धार्मिक मतभेद—दूसरा बड़ा कारण धार्मिक मतभेद था। चार्ल्स चर्च आफ इङ्गलैंड का प्रबल पक्षपाती था और वह समस्त लोगों को उस धर्म का अनुयायी बनाना चाहता था, परन्तु पार्लिमेंट के अधिकांश सदस्य (मेम्बर) प्यूरिटन थे और वे अपने धर्म को देश का राजधर्म बनाना चाहते थे। इसके अतिरिक्त चार्ल्स अपनी कैथोलिक रानी के प्रभावाधीन कैथोलिक लोगों को सुविधायें देना चाहता था।

३ चार्ल्स के परामर्शदाता—चार्ल्स के परामर्शदाताओं विशेष कर वेंटवर्थ (Wentworth) तथा लाड (Laud) ने अपने अधिकार के समय लोगों पर अत्यन्त अत्याचार किये थे। इस से प्रजा चार्ल्स के विरुद्ध हो गई थी।

४ आर्थिक समस्या—पार्लिमेंट देश के रुपये पैसे पर अपना अधिकार रखना चाहती थी जिससे राजा उसके अधीन रहे। परन्तु राजा अनुचित उपायों से रुपया एकत्र करना चाहता था जिससे उसे पार्लिमेंट का मुँह न ताकना पड़े।

५ ग्रैंड रीमॉस्ट्रैंस (Grand Remonstrance)—लौंग पार्लिमेंट ने राजा के विरुद्ध एक ग्लानि-पत्र जिसे ग्रैंड रीमान्स्ट्रैंस कहते हैं, पास किया जिस में राजा पर दो सौ से अधिक दोपारोपण किये गये थे। चार्ल्स को इस पर बड़ा क्रोध आया। उसने पार्लिमेंट के पाँच मुख्य सदस्यों को पकड़ने की चेष्टा की। परन्तु वे पहले ही भाग गये हुये थे। जब चार्ल्स उनको पकड़ने में असफल रहा तो उसके क्रोध की कोई सीमा न रही।

६ मिलिश्या बिल (Militia Bill)—इस के पश्चात् पार्लिमेंट ने मिलिश्या बिल पास किया जिस का उद्देश्य यह था कि *सेना राजा की बजाय पार्लिमेंट के अधीन हो जाये*। चार्ल्स ने इस बिल को अस्वीकार किया। इस बात पर राजा तथा पार्लिमेंट के बीच झगड़ा इतना बढ़ गया कि युद्ध के बिना और कोई उपाय न रह गया। चार्ल्स लण्डन छोड़ गया और *नाटिंघम* (Nottingham) में उसने युद्ध का झण्डा खड़ा कर दिया।

राजा तथा पार्लिमेंट दोनों ने युद्ध की तैयारियाँ आरम्भ कर दीं और देश दो भागों में विभक्त हो गया।

Parties १—इंगलैंड के *उत्तरी और पश्चिमी* भाग ने राजा का साथ दिया। राजा के साथी (Royalists) अधिकतर देहाती जमींदार थे। वे अच्छे सैनिक थे और क्योंकि वे घोड़ों पर सवार होकर लड़े, इसलिये उन्हें घुड़ सवार (Cavaliers) कहते थे। उनका सेनापति चार्ल्स का भाञ्जा प्रिंस रूपर्ट (Prince Rupert) था जो एक वीर परन्तु अनुभव रहित नवयुवक था।

२—*इंगलैंड के दक्षिणी और पूर्वी* प्रदेश, लण्डन नगर व्यापारी, और जलसेना (Navy) पार्लिमेंट की ओर थे। ये लोग अधिकतर प्यूरिटन थे और अपने सिर के बाल इतने छोटे कटवाते थे कि उनके सिर गोल प्रतीत होते थे, इसलिये उनको Roundheads कहते थे। उनका सेनापति अर्ल आफ इसैक्स (Earl of Essex) था जो एक योग्य जरनैल था।

CIVIL WAR

1642 1649

BATTLEFIELDS ✕

SCOTLAND

NORTH SEA

IRISH SEA

IRELAND

MARSTON MOOR

ENGLISH CHANNEL

FRANCE
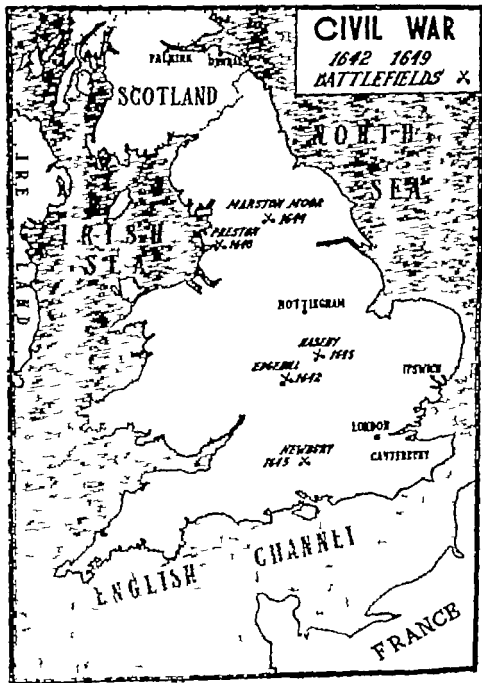
इस प्रकार देश में घरेलू युद्ध आरम्भ हो गया। क्योंकि राजा के विरोधी अधिकतर प्युरिटन थे अतः इस घरेलू युद्ध को Puritan Rebellion भी कहते हैं।

घटनाएँ—इस युद्ध की प्रसिद्ध घटनाएँ निम्नलिखित थीं —

घटनाएँ (Events)

१ ऐजहिल (Edgehill) की लड़ाई, 1642 ई०—चार्ल्स ने लण्डन पर अधिकार करने के लिये कूच किया। मार्ग में ऐजहिल के स्थान पर लड़ाई हुई। यह सिविल वार की पहली लड़ाई थी। यद्यपि इस में राजा का पल्ला कुछ भारी रहा तथापि कुछ विशेष परिणाम न निकला। राजा ने इस जीत का कोई लाभ न उठाया और लण्डन पर आक्रमण न किया।

२ न्यूबरी (Newbury) की लड़ाई, 1643 ई०—इस लड़ाई में भी चार्ल्स का पलड़ा भारी रहा, परन्तु यह लड़ाई निर्णयकारी न थी।

इस लड़ाई के पश्चात् पार्लिमेंट ने स्काटलैंड से सहायता माँगी और साथ ही पार्लिमेंट को एक वीर तथा बुद्धिमान् नेता आलिवर क्रामवेल (Oliver Cromwell) की सेवाएँ भी प्राप्त हो गईं। उसने सेना का एक दल तैयार किया जिस के योद्धा अपनी वीरता के कारण Ironsides अर्थात् लौहतनु कहलाते थे।

३ मार्सटन मूर (Marston Moor) की लड़ाई, 1644 ई०—इस लड़ाई में क्रामवैल ने स्काटलैंड की सहायता से चार्ल्स की सेनाओं को बुरी तरह हराया। *यह पार्लिमेंट की पहली बड़ी विजय थी।*

सेना का सुधार—इसके पश्चात् आलिवर क्रामवैल ने पार्लिमेंट की सेना का सुधार किया। उसने एक कानून (Self Denying Ordinance) पास कराया जिस के अनुसार *पार्लिमेंट के मम्बरों को सेना के नेतृत्व से पृथक् कर दिया गया,* परन्तु क्रामवैल को उसकी योग्यता के कारण न हटाया गया। अब अनुभव रहित सेनापति इस भाँति पृथक् कर दिये गये तो क्रामवैल ने युद्धानुभवी सैनिक सेना में भर्ती किये

और उनको अनुभवी सेनापतियों के अधीन किया। इस शिक्षित सेना का नाम New Model Army रखा गया। इस सेना का सेनापति एक व्यक्ति Sir Thomas Fairfax था और क्रामवैल उपसेनापति था।

४ नेजबी (Naseby) की लड़ाई, 1645 ई०—इस युद्ध में न्यू माडल सेना ने राजा को पूर्णतया पराजित किया। *यह लड़ाई इस युद्ध की सब से प्रसिद्ध लड़ाई थी*। नेजबी की पराजय के पश्चात् चार्ल्स ने अपने आप को स्काटलैंड की सेना के समर्पित कर दिया। परन्तु स्काटलैंड वालों ने बहुत सा धन लेकर उसे पार्लिमेंट को दे दिया।

५ प्रैस्टन (Preston) की लड़ाई, 1648 ई०—अब पार्लिमेंट तथा सेना में झगड़ा आरम्भ हो गया। चार्ल्स ने दोनों में फूट डाल कर लाभ उठाने का यत्न किया। इसी बीच में उसने स्काटलैंड वालों से मेल मिलाप कर लिया और अन्त में उनकी शर्तों को स्वीकार कर लिया। इसलिये 1648 ई० में स्काटलैंड की सेना ने चार्ल्स की सहायता के लिये इङ्गलैंड पर आक्रमण कर दिया। परन्तु क्रामवैल ने उन्हें *प्रैस्टन (Preston)* के स्थान पर *बुरी तरह हराया* और युद्ध की समाप्ति हो गई।

क्रामवैल को चार्ल्स के विरुद्ध बड़ा रोष था क्योंकि उसने दोनों पार्टियों को लड़ाने का यत्न किया था। इस लिये

चार्ल्स का अन्त क्रामवैल उसे कठोर दण्ड देना चाहता था। इसी अभिप्राय के लिये उसने *लौंग पार्लिमेंट* का अधिवेशन बुलाया। परन्तु उसने अपने भौज *कर्नल प्राइड* (Colonel Pride) को पार्लिमेंट के द्वार पर खड़ा कर दिया। प्राइड ने केवल उन पुरुषों को भीतर जाने दिया जो चार्ल्स के घोर शत्रु थे और उस पर अभियोग चलाने के पक्ष में थे। पार्लिमेंट की इस काँट छाँट को जो कर्नल प्राइड ने की Pride's Purge कहते हैं और लौंग पार्लिमेंट के इस शर्षांश को रम्प (Rump) के नाम से पुकारते हैं। रम्प ने निश्चय किया कि चार्ल्स पर अभियोग चलाया जाय। इस के लिए विशेष न्याय सभा स्थापित की गई जिसका प्रधान एक वकील *ब्रैडशा* (Bradshaw) था परन्तु चार्ल्स ने इस आधार पर अपने पक्ष में

कुछ कहना अस्वीकार कर दिया कि *इंगलैंड में किसी न्याय-सभा को* राजा के *विरुद्ध अभियोग सुनने का अधिकार नहीं है।* अन्ततः न्याय-सभा ने चार्ल्स को जाति द्रोही और घातक ठहरा कर मृत्यु-दण्ड की आज्ञा दी। 30 जनवरी 1649 ई० को Whitehall के राजप्रासाद के बाहर चार्ल्स का सिर काट दिया गया। चार्ल्स ने इस अवसर पर असाधारण धैर्य और गम्भीरता का प्रमाण दिया जिससे लोगों के हृदय में उसका मान बहुत बढ़ गया और लोग उसे *शहीद* मानने लगे। इसके पश्चात् रम्प ने निश्चय किया कि देश में प्रजातन्त्र शासन होगा।

(१) चार्ल्स को मृत्यु दण्ड मिला। (२) राजा के पद की समाप्ति हो गई। (३) प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हुआ।

युद्ध के परिणाम

इस युद्ध में यद्यपि आरम्भ में तो चार्ल्स का पक्ष भारी रहा, परन्तु अन्त में पार्लिमेंट की विजय हुई। इस विजय के बड़े बड़े कारण निम्नलिखित थे:—

पार्लिमेंट की विजय के कारण

१—चार्ल्स की असफलता का एक भारी कारण यह था कि उसके अफ़सर घमंडी और अवज्ञाकारी थे। आरम्भ में जो चार्ल्स को विजयें प्राप्त हुई उनका उन्होंने पूर्ण रूप से लाभ नहीं उठाया। *ऐजहिल* की *लड़ाई के बाद लण्डन पर आक्रमण न करना राजा की भारी भूल थी।*

२—पार्लिमेंट के पक्ष में *व्यापारी लोग भी थे,* जो चार्ल्स के पक्ष के ज़मींदारों से बहुत धनवान् थे और युद्ध में धन का बड़ा प्रभाव पड़ता है, लण्डन का नगर भी पार्लिमेंट के साथ था।

३—*जल सेना पार्लिमेंट के पक्ष में थी,* इस कारण चार्ल्स को फ्रांस या हालैंड से कोई सहायता न मिल सकी।

४—इस जल-सेना के कारण *पार्लिमेंट का अधिकार बन्दरगाहों पर था* जहाँ से महसूल (Customs) प्राप्त होते थे। इससे पार्लिमेंट की आय राजा की आय से अधिक थी।

५—पार्लिमेंट को *क्रामवेल* जैसा सुयोग्य नेता मिल गया था जिस की लौहतनु सेना (Ironsides) बड़ी प्रबल थी।

६—पार्लिमेंट को स्काटलैंड से सहायता मिल गई।

७—पार्लिमेंट ने आरम्भ की हारों के पश्चात् अपनी सेना का सशोधन कर लिया। पार्लिमेंट के मेम्बर सेनापद से हटाये गये और इनके स्थान पर अनुभवी अफसर नियुक्त किये गए थे।

Q Write short notes on —
(i) The Duke of Buckingham (ii) Earl of Strafford (iii) William Laud (iv) John Hampden

प्रश्न—निम्नलिखित पर नोट लिखो —
(१) ड्यूक आफ बकिंघम (२) अर्ल आफ स्ट्रैफर्ड (३) विलियम लाड (४) जान हैम्पडन।

१ ड्यूक आफ बकिंघम (Duke of Buckingham)—ड्यूक आफ बकिंघम का वास्तविक नाम जार्ज विलयर्ज़ (George Villiers) था। वह बड़ा सुन्दर नवयुवक था और वह अपने सौंदर्य के कारण ही इस पद पर नियुक्त हुआ था। वह जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम दोनों का कृपापात्र था। चार्ल्स प्रथम के समय उसे विशेष अधिकार प्राप्त था और देश का प्रायः सारा प्रबन्ध उसी के हाथों में था। परन्तु चूँकि वह कोई योग्य पुरुष न था इसलिये उसकी नीति देश के लिये हानिकारक सिद्ध हुई और वह लोगों में बड़ा बदनाम हो गया। चार्ल्स तथा उसकी पार्लिमेंट में झगड़े का एक बड़ा कारण बकिंघम ही था। 1628 ई० में उसके किसी शत्रु फैलटन (Felton) नामक ने उसका वध कर दिया। इस पर सारे देश में बड़ा आनन्द मनाया गया।

Duke of Buckingham

२ अर्ल आफ स्ट्रैफर्ड (Earl of Strafford)—अर्ल आफ स्ट्रैफर्ड का वास्तविक नाम टामस वेंटवर्थ (Thomas Wentworth) था। वह चार्ल्स प्रथम के निरंकुश राज्य में उसका सबसे बड़ा

मन्त्री था। पहले वह चार्ल्स प्रथम तथा उसके कृपापात्र बकिंगहम के विरुद्ध था और *अधिकार पत्र* (Petition of Right) के पास कराने में उस ने बड़ा भाग लिया था। परन्तु बकिंगहम की मृत्यु पर वह चार्ल्स की ओर हो गया था। इस पर उसके पहले मित्र *पिम* (Pym) ने कहा, "*तुम हमें छोड़ गये हो परन्तु जब तक तुम्हारे कन्धों पर सिर है हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे*" और वास्तव में हुआ भी ऐसा ही। स्ट्रैफर्ड बड़ा योग्य पुरुष तथा शक्तिशाली प्रबन्धकर्ता था और राजा के अधिकार बढ़ाने का प्रबल पक्षपाती था। उसकी नीति यह थी कि शासन के विरुद्ध चाहे किसी प्रकार का विरोध भी क्यों न हो, कठोरता और पूर्ण रूप से कुचल डालना चाहिये। वह अपनी नीति को Thorough अर्थात् 'सम्पूर्ण' कहा करता था। छः वर्ष तक वह आयरलैंड का वाइसराय भी रहा, जहाँ उसने बड़ी कठोरता से शासन किया। अपनी कठोरता और अत्याचारों के कारण वह प्रजा में बदनाम हो गया। लोग उसे 'Black Tom the Tyrant' कहा करते थे। चार्ल्स ने उसे वचन दे रखा था कि कोई तुम्हारा बाल बाँका न कर सकेगा, परन्तु लाँग पार्लिमेंट ने उसे मृत्यु-दण्ड दिया और चार्ल्स ने उसकी मृत्यु के वारंट पर हस्ताक्षर कर दिये। स्ट्रैफर्ड ने वीर पुरुषों की भाँति मृत्यु को स्वीकार किया। उसके अन्तिम शब्द ये थे, 'Put not your trust in Princes'

२ विलियम लाड (William Laud)–विलियम लाड चार्ल्स प्रथम के स्वेच्छाचारी शासनकाल में *आर्चबिशप आफ कैंटरबरी* बनाया गया था और धार्मिक बातों में उसका परामर्श दाता था। वह धार्मिक रीतियों में ठाठ बाट और दिखावे का बड़ा इच्छुक था और इस लिये यह सरलता प्रिय प्यूरिटन लोगों का घोर शत्रु था। उसने अपने अधिकार काल में कोर्ट आफ हाई

William Laud

कमीशन द्वारा प्यूरिटन लोगों पर घोर अत्याचार किये जिनसे हजारों प्यूरिटन लोग देश छोड़ कर अमेरिका जा बसे। लाड ने स्काटलैंड में भी अपनी रीति को ठोंसना चाहा, परन्तु स्काटलैंड वालों ने विद्रोह कर दिया। इन कामों से लाड जनता में बदनाम हो गया। अन्तत लाँग पार्लिमेंट ने जिसके अधिकतर मेम्बर प्यूरिटन थ 1645 ई० में लाड को मृत्यु-दण्ड दिया।

४ जान हैम्पडन (John Hampden)—जान हैम्पडन चार्ल्स प्रथम के समय में एक वीर तथा निडर पुरुष था। उसकी कीर्ति का सब से बड़ा कारण यह था कि उसने 1637 ई० में राजा को जहाजी टैक्स (Ship Money) देना अस्वीकार कर दिया और कहा कि राजा कोई टैक्स पार्लिमेंट की स्वीकृति के बिना नहीं ले सकता। इस इनकार के कारण हैम्पडन पर अभियोग चलाया गया और यद्यपि न्यायाधीशों ने उसके विरुद्ध निर्णय दिया परन्तु वह अपनी निडरता के कारण जनता में सर्वप्रिय हो गया। लाँग पार्लिमेंट में यह उन पाँच मुख्य मेम्बरों में से था जिन्हें चार्ल्स पकड़ना चाहता था। सिविल वार में यह पार्लिमेंट की ओर से लड़ा और उसी युद्ध में यह मारा गया।

कामनवैल्थ तथा रैस्टोरेशन
(COMMONWEALTH AND RESTORATION)
1649—1660

कामनवैल्थ

चार्ल्स प्रथम के वध किये जाने के पश्चात् देश में प्रजातन्त्र शासन स्थापित किया गया जो ग्यारह वर्ष तक रहा। चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय के अधिकारों की ओर ध्यान न दिया गया। राजत्व तथा हाउस आफ लार्ड्ज़ की समाप्ति हो गई और केवल हाउस आफ कामन्ज़ रहने दिया गया। राज्य प्रबन्ध के लिये ४१ मेम्बरों की एक कौंसिल आफ स्टेट (Council of State) स्थापित की गई। इस प्रजातन्त्र शासन प्रणाली को अङ्गरेजी भाषा में कामनवैल्थ (Commonwealth) कहते हैं, परन्तु यह तलवार का राज्य था।

इस प्रजातन्त्र शासनकाल को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है —

१—1649 ई० से 1653 ई० तक *रम्प पार्लिमेंट का शासनकाल।*

२—1653 ई० से 1658 ई० तक *प्रोटैक्टरेट आफ आलिवर क्रामवैल।*

३—1658 ई० से 1660 ई० तक *रिचर्ड क्रामवैल और रैस्टोरेशन।*

Q Give a brief account of the rule of the Rump

प्रश्न—*रम्प के शासन का संक्षिप्त वर्णन करो।*

रम्प का राज्य
(RULE OF THE RUMP)

रम्प का शासन — प्रजातन्त्र शासन के पहले पाँच वर्षों में देश का प्रबन्ध रम्प पार्लिमेंट के हाथों में था, परन्तु वास्तव में सारी शक्ति क्रामवैल और सेना के हाथों में थी। इस समय की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित हैं :—

१ आयरलैंड की विजय, 1649—आयरलैंड के लोगों ने रम्प का शासन मानने से इनकार कर दिया और चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय के पक्ष में विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को शान्त करने के लिये आलिवर क्रामवैल आयरलैंड गया और उसने ड्राहाडा (Drogheda) तथा वैक्सफ़ोर्ड (Wexford) के स्थानों पर विद्रोहियों को बुरी तरह हराया और इस विद्रोह को बड़ी कठोरता से कुचल डाला। सहस्रों मनुष्य मौत के घाट उतार दिये गए, कैथोलिकों की जमीनें छीन ली गईं और वहाँ प्राटेस्टेंट लोगों का बसा दिया गया और आयरलैंड का शासन क्रामवैल के दामाद

आयरटन (Ireton) को सौंप दिया गया। आयरलैंड के लोग अब तक क्रामवैल के नाम को बड़ी घृणा से याद करते हैं।

२ स्काटलैंड की विजय, 1650 51—आयरलैंड से क्रामवैल स्काटलैंड पहुँचा क्योंकि वहाँ के लोगों ने भी चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को अपना राजा स्वीकार कर लिया था। सितम्बर 1650 ई० को क्रामवैल ने स्काटलैंड की सेना को डनबार (Dunbar) के स्थान पर पराजित किया। इसके ठीक एक वर्ष पश्चात् चार्ल्स द्वितोय ने इंगलैंड पर आक्रमण किया, परन्तु क्रामवैल ने उसे वर्स्टर (Worcester) के स्थान पर पराजित किया। चार्ल्स द्वितीय भाग गया और कई कठिनाइयाँ सहन करने के पश्चात् फ्रांस पहुँचने में सफल हो गया। स्काटलैंड का शासन एक बड़े योग्य व्यक्ति जैनरल मंक (General Monk) को सौंप दिया गया।

३ हालैंड से युद्ध, 1652 54—इस समय हालैंड का देश व्यापार तथा जहाजरानी में सब देशों से बढ़ा हुआ था। उसके पास कई जहाज थे और योरुप के लगभग सभी देशों का व्यापार हालैंड के जहाजों में होता था जिससे हालैंड को बहुत लाभ होता था। 1651 ई० में अंग्रेजी पार्लिमेंट ने अपने देश का व्यापार उन्नत करने के लिये नैविगेशन ऐक्ट (Navigation Act) पास किया जिसके अनुसार निश्चय हुआ कि इंगलैंड में जो माल दूसरे देशों से आता है वह या तो इंगलैंड के जहाजों में आया करे अथवा उन देशों के जहाजों में आया करे जिनका वह माल है। इस कानून से हालैंड वालों के व्यापार को हानि पहुँची और इंगलैंड के साथ उनका युद्ध छिड़ गया। कई सामुद्रिक लड़ाइयाँ हुईं और यद्यपि पहले पहल हालैंड वालों का पलड़ा भारी रहा, परन्तु 1653 ई० में इंगलैंड के प्रसिद्ध जल सेनापति ब्लेक (Admiral Blake) ने हालैंड के बेड़े को नष्ट कर दिया अन्त में दोनों देशों में सन्धि हो गई। इस युद्ध का परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजों का व्यापार चमक उठा और देश में धन की वृद्धि होने लगी।

४ रम्प की समाप्ति, 1653—इन लड़ाइयों से निबट कर

क्रामवैल ने देश की ओर ध्यान दिया और उसने अनुभव किया कि रम्प देश की प्रतिनिधि सभा नहीं है और इसके मैम्बर घूँस लेने वाले तथा पापात्मा हैं। इसलिये उसने रम्प को परामर्श दिया कि वह अपने आप को समाप्त कर दे जिससे पार्लिमेंट का चुनाव हो सके। परन्तु रम्प ने इस बात को न माना। इस पर क्रामवैल ने रम्प को बलपूर्वक तोड़ दिया। इसके पश्चात् उसने एक नई पार्लिमेंट बुलाई जिसे *बेयरबोन पार्लिमेंट (Barebone's Parliament)* कहते हैं क्योंकि इस पार्लिमेंट के एक मैम्बर का नाम Barebone था। परन्तु यह पार्लिमेंट सफल न हो सकी और इसे शीघ्र ही तोड़ दिया गया।

☞ Q Give a brief account of the rise of Oliver Cromwell to power and state what you know of his administration.
(P U 1925-27-36-38-43-50-52-53-55) (V Important)

प्रश्न—आलिवर क्रामवैल की उन्नति का संक्षिप्त वर्णन करो और बताओ कि तुम उसके शासन प्रबन्ध के विषय में क्या जानते हो?

आलिवर क्रामवैल
(OLIVER CROMWELL)

आरम्भिक जीवन (Early Career)—आलिवर क्रामवैल 1599 ई० में हण्टिंगटन (Huntingdon) नगर के एक प्रतिष्ठित घराने में उत्पन्न हुआ था।

Oliver Cromwell

आलिवर क्रामवैल (Oliver Cromwell)

यह हैनरी अष्टम के प्रसिद्ध मन्त्री टामस क्रामवैल के वंश से था। 1628 ई० में यह चार्ल्स प्रथम की तीसरी पार्लिमेंट का जिसने अधिकार याचना (Petition of Right) पास

की थी, मेम्बर चुना गया और फिर लोंग पार्लिमेंट का मेम्बर भी रहा। धर्म के विचार से वह पक्का प्यूरिटन था।

चार्ल्स प्रथम के समय की सिविल वार में उसने बड़ा भाग लिया और यहीं से उसकी उन्नति आरम्भ हुई। उसने Ironsides का सैनिक दल तैयार किया और उसकी सहायता से मार्स्टन मूर (Marston Moor) की लड़ाई में राजकीय सेनाओं को पराजित करके बहुत यश प्राप्त किया और इसके पश्चात् उसने पार्लिमेंट की सेना का सुधार किया और इस सुशिक्षित सेना का नाम New Model Army रखा गया। वह स्वयं इस सेना का उप-सेनापति था। इस सेना की सहायता से उसने चार्ल्स को नेजबी (Naseby) के स्थान पर पूर्ण रूप से पराजित किया जिससे वह देश का सबसे अधिक प्रभावशाली पुरुष बन गया। इसके पश्चात् क्रामवेल ने चार्ल्स को मृत्यु-दण्ड दिलवाया और देश में प्रजातन्त्र शासन स्थापित कराया।

इस प्रजातन्त्र शासन को आयरलैंड तथा स्काटलैंड ने मानने से इनकार कर दिया और विद्रोह कर दिये। क्रामवेल ने उनको बड़ी कठोरता से कुचल डाला। इन विजयों के कारण क्रामवेल की शक्ति बहुत बढ़ गई।

क्रामवेल का प्रोटैक्टर बनना—1653 ई० में क्रामवेल ने रम्प पार्लिमेंट को तोड़ दिया और नई पार्लिमेंट बुलाई जो अपने एक मेम्बर के नाम पर बेयरबोन पार्लिमेंट (Barebone's Parliament) कहलाती थी। परन्तु उसे भी शीघ्र ही तोड़ दिया गया। इसके पश्चात्, सैनिक अफसरों की एक कौंसिल ने एक नई शासन पद्धति तैयार की जिसे Instrument of Government कहते हैं। इस के अनुसार क्रामवेल देश का Lord Protector अर्थात् राज्यरक्षक नियत किया गया और इंगलैंड, स्काटलैंड तथा आयरलैंड तीनों देशों के लिये एक ही पार्लिमेंट बुलाई गई।

आन्तरिक नीति (Home Policy)—क्रामवेल पाँच वर्ष तक

क्रामवैल प्रोटैक्टर के रूप में 1653—58

(1653—58) प्रोटैक्टर बना रहा और उसने अत्यन्त योग्यता और न्यायशीलता से शासन किया। उसकी प्रोटैक्टरेट के समय में देश में पूर्णतया शान्ति तथा सुख रहा। उसकी आन्तरिक नीति की प्रसिद्ध बातें निम्नलिखित थीं —

१ तीनों देशों का मिलाप—इङ्गलैंड, स्काटलैंड तथा आयरलैंड को परस्पर मिला दिया गया और तीनों देशों के लिये एक ही पार्लिमेंट नियत की गई। इस प्रकार क्रामवैल के समय में *पहली बार बर्तानिया की राजनैतिक एकता प्राप्त हुई*। परन्तु क्रामवैल पार्लिमेंट से प्रायः उसी प्रकार झगड़ता रहता था, जिस प्रकार स्टुअर्ट वंश के पहले दोनों राजे जेम्ज़ प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम झगड़ा करते थे।

२ सैनिक शासन—*क्रामवैल का शासन सैनिक शासन था*। उसके समय में दो पार्लिमेंटें बुलाई गई। उसकी पहली पार्लिमेंट 1654 ई० में बुलाई गई। इस पार्लिमेंट ने क्रामवैल के अधिकारों को सीमित करना और सेना को घटाना चाहा। इस पर उसने इसे चार ही महीनों बाद तोड़ दिया। *पहली पार्लिमेंट को तोड़ देने के पश्चात् क्रामवैल ने सारे देश को बारह सैनिक भागों में बाँट दिया और प्रत्येक भाग में एक फ़ौजी अफ़सर, जिसे मेजर जैनरल* (Major General) *कहते थे, नियुक्त किया। ये फ़ौजी अफ़सर बड़े कठोर तथा क्रूर थे और उन्होंने बड़ी कठोरता से राज्य किया*। इस फौजी शासन ने क्रामवैल को अप्रिय बना दिया। अतः 1656 ई० में उसने दूसरी पार्लिमेंट बुलाई। जब उसने दूसरी पार्लिमेंट बुलाई तो मेजर जनरलों को हटा दिया गया। क्रामवैल की दूसरी पार्लिमेंट ने उससे राजा की उपाधि ग्रहण करने और अपना उत्तराधिकारी नियत करने की प्रार्थना की, परन्तु क्रामवैल ने पहली बात तो स्वीकार न की, हाँ उसने अपने पीछे अपने पुत्र को लार्ड *प्रोटैक्टर मनोनीत कर दिया*। 1658 ई० में क्रामवैल ने दूसरी पार्लिमेंट को भी तोड़ दिया और फिर कोई पार्लिमेंट न बुलाई।

३ धार्मिक नीति—क्रामवैल धार्मिक स्वतन्त्रता के पक्ष में था।

देश का धर्म तो प्यूरिटन नियत किया गया परन्तु प्रोटेस्टैंट धर्म के सब सम्प्रदायों को स्वतन्त्रता दे दी गई, यहाँ तक कि यहूदियों (Jews) को भी जिन्हें किसी समय इङ्गलैंड से देश निकाला दे दिया गया था, देश में लौट आने की आज्ञा मिल गई। केवल रोमन कैथोलिक लोगों को पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता न थी परन्तु उनके साथ भी पहले की सी कठोरता नहीं बरती जाती थी।

४ शिक्षा विस्तार—क्रामवेल ने शिक्षा के विस्तार की ओर विशेष ध्यान दिया और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये सारे देश में कई स्कूल स्थापित किये।

५ पाबन्दियाँ—देश में सब प्रकार के आनन्द के साधन जैसे राग-रंग, नाच, थियेटर और तमाशे यहाँ तक कि खेलें भी बन्द थीं क्योंकि ये सब बातें प्यूरिटन धर्म में अनुचित समझी जाती थीं। ऐसा प्रतीत होता था जैसे देश में शोक छाया हुआ हो। इस बात ने क्रामवेल को बहुत ही अप्रिय बना दिया।

इसमें सन्देह नहीं कि क्रामवैल का शासन बड़ा न्यायानुसार था और देश में सब प्रकार से शान्ति तथा सुख विराजमान था, परन्तु लोग इस शासन से प्रसन्न न थे। इसका कारण यह था कि क्रामवैल बड़ा क्रूर शासक था और उसने देश में सैनिक शासन स्थापित कर रखा था। उसके शासनकाल में उचित आनन्द मनाना भी बन्द था और धार्मिक स्वतन्त्रता भी सीमित थी। इसलिये उसकी आन्तरिक नीति कोई विशेष सफल न थी।

बाह्य नीति (Foreign Policy)—क्रामवेल की बाह्य नीति यह थी कि इङ्गलैंड की शक्ति तथा मान को बढ़ाया जाये। उसकी यह नीति अत्यन्त ही सफल थी। इससे इङ्गलैंड की प्रतिष्ठा को चार चाँद लग गये और इङ्गलैंड को योरुप के राजनैतिक क्षेत्र में वही प्रतिष्ठा प्राप्त हो गई जो उसे ऐलिज़बेथ के समय में थी। क्रामवेल की बाह्य नीति के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें वर्णन के योग्य हैं:—

१ स्पेन से युद्ध—स्पेन प्रोटेस्टेंट धर्म का कट्टर विरोधी था और यह अंग्रेज व्यापारियों को अपनी बस्तियों के साथ व्यापार नहीं करने देता था। इस कारण क्रामवैल ने फ्रांस के साथ मित्रता करके स्पेन के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया और स्पेन के द्वीप जैमेका (Jamaica) को जो पश्चिमी भारत द्वीप समूह में है विजय कर लिया। यह द्वीप उस समय से लेकर अंग्रेजों के ही अधीन है। इसके अतिरिक्त इंगलैंड ने स्पेन के विरुद्ध और भी कई विजयें प्राप्त कीं। इससे अंगरेजों की शक्ति बढ़ गई।
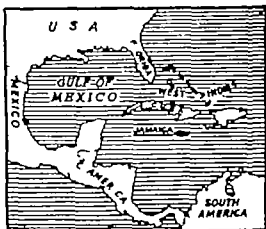
२ हालैंड से युद्ध—नैवीगेशन ऐक्ट (Navigation Act) के पास होने के कारण हालैंड के साथ युद्ध छिड़ गया था। उस में जल सेनापति ब्लेक (Admiral Blake) ने हालैंड को पराजय दी, *जिस से अंग्रेज़ी व्यापार को बड़ा लाभ हुआ।*

३ व्यापारिक प्रतिज्ञा-पत्र—योरुप के कई देशों (डेन्मार्क, स्वीडन और पुर्तगाल) के साथ व्यापारिक प्रतिज्ञा-पत्र किये गये *जिस से अंगरेजी व्यापार फिर चमक उठा।*

४ प्रोटेस्टेंट्स की रक्षा—क्रामवैल ने सारे प्रोटेस्टेंट लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिये प्रोटेस्टेंट देशों की लीग स्थापित करनी चाही, परन्तु इसमें उसे कोई विशेष सफलता न हुई। फिर भी उसने *यथासम्भव अत्याचार पीड़ित प्रोटेस्टेंट लोगों की सदैव सहायता की।*

☞ इस भाँति क्रामवैल ने *स्पेन को नीचा दिखाया, हालैंड के व्यापार पर चोट लगाई, प्रोटेस्टेंट धर्म को उन्नति दी और अंगरेजी व्यापार को*

बहुत बढ़ाया। उसकी बाह्य नीति की सफलता को देखकर ही कहा गया है "Cromwell's greatness at home was a mere shadow of his greatness abroad"

अन्त में 3 सितम्बर 1658 ई० को क्रामवेल की मृत्यु हो गई।

क्रामवेल की मृत्यु

वह निस्सन्देह एक वीर सेनापति, शक्तिशाली शासक और उच्चकोटि का राजनीतिज्ञ था। उसकी राजनीति से देश में पूर्णतया शान्ति तथा सुख रहा और इंगलैंड की प्रतिष्ठा अन्य देशों की दृष्टि में बहुत बढ़ गई।

क्रामवेल का चरित्र

क्रामवेल इंगलैंड का एक बहुत बड़ा व्यक्ति था। वह बड़ा गम्भीर बुद्धिमान् और सच्चा देशभक्त था। उसने इङ्गलैंड का योरुप में एक महाशक्ति बना दिया और देश के भीतर भी शान्ति स्थापित रखी। वह बड़ा धर्म परायण था, परन्तु सांसारिक विषयों में भी अति निपुण था। वह कहा करता था—*"परमात्मा से प्रार्थना करो, परन्तु अपना बारूद सूखा रखो"* (Pray to God, but keep your powder dry)। *वह एक वीर सेनापति तथा उच्चकोटि का राजनीतिज्ञ था।* प्रोटेस्टेंट लोग उसे सच्चा धर्म भक्त मानते हैं। किन्तु रोमन कैथोलिक उसे मिथ्याचारी समझते हैं। आयरलैंड के लोग तो उसके नाम से घृणा करते हैं।

रेस्टोरेशन

RESTORATION

1660

☞Q What do you understand by the term 'Restoration'? How was it brought about and what were its effects? (P U 1925-30-47) (Important)

प्रश्न—रेस्टोरेशन से क्या अभिप्राय है? यह किस प्रकार हुई और इसका क्या परिणाम निकला?

अभिप्राय—रैस्टोरेशन (Restoration) शब्द का अर्थ है "पुन स्थापित करना"। 1660 ई० में चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को बुला कर सिंहासनारूढ़ कर दिया गया और इंगलैंड में फिर से राजकीय शासन स्थापित हो गया। इस घटना को "रैस्टोरेशन" कहते हैं।

रैस्टोरेशन

किस प्रकार हुई—आलिवर क्रामवैल की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र रिचर्ड क्रामवैल (Richard Cromwell) देश का प्रोटैक्टर बना। परन्तु वह एक दुर्बल, सुखार्थी और आलसी पुरुष था और उसमें इतने बड़े पद को सम्भालने की योग्यता न थी। कुछ ही मास के पीछे उसका सेना से झगड़ा हो गया और उसने त्याग-पत्र दे दिया।

इसके पश्चात् सेना ने रम्प (Rump) पार्लिमेंट को, जिसे आलिवर क्रामवैल ने बलपूर्वक तोड़ दिया था, देश का प्रबन्ध करने के लिये बुलाया, परन्तु सेना और पार्लिमेंट की आपस में न बन पाई और उन के बीच झगड़ा आरम्भ हो गया। इस झगड़े का परिणाम यह हुआ कि देश में अशान्ति फैल गई और जनता जो पहले ही प्रजातन्त्र शासन से तंग आ हुई थी, अब विचारने लगी कि राजत्व पुनः स्थापित किया जावे।

इसलिये जनरल मंक (General Monk) जो स्काटलैंड का सैनिक अफसर था कुछ सेना के साथ 1660 ई० में लण्डन पहुँचा। उसने एक पार्लिमेंट जिसे कनवैंशन (Convention*) कहते हैं बुलाई। यह पार्लिमेंट राजत्व की स्थापना के पक्ष में थी। इसी बीच में मंक की ओर से चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय के साथ, जो उन दिनों हालैंड के नगर ब्रीडा (Breda) में रहता था पत्र-व्यवहार भी हो रहा था। परिणाम स्वरूप चार्ल्स द्वितीय ने एक घोषणा

*Convention उस पार्लिमेंट को कहते हैं जो राजा ने न बुलाई हो परन्तु किसी और ढंग से बुलाई गई हो।

प्रकाशित की जिसे *ब्रेडा की घोषणा* (Declaration of Breda) कहते हैं। इस में उसने प्रतिज्ञा की कि वह (१) *सम्पूर्ण मनुष्यों को (उन के अतिरिक्त जिनको पार्लिमेंट न चाहे) क्षमा कर देगा,* (२) *लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता होगी और* (३) *वह नियमानुसार राज्य करेगा।* कनवैंशन ने इस घोषणा को प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकार किया और चार्ल्स द्वितीय से लौट कर राजसिंहासन सम्भालने की प्रार्थना की। चार्ल्स द्वितीय, डोवर (Dover) की बन्दरगाह पर उतरा। लोगों ने बड़े जोश से उसका स्वागत किया। 29 मई 1660 ई० (अपने तीसवें जन्म दिन) को उसे इङ्गलैंड का राजा बना दिया गया। इस प्रकार देश में रैस्टोरेशन हुई।

रैस्टोरेशन के परिणाम

१—इससे प्रजातन्त्र शासन की समाप्ति हो गई और देश में राजत्व तथा पुराना पार्लिमेन्टरी शासन स्थापित हो गया। हाउस आफ लार्डज़ फिर से स्थापित कर दिया गया। चार्ल्स ने देश के कानून के अनुसार राज करने का वचन दिया। *इस से देश में वैधानिक शासन का आरम्भ हो गया।*

२—इंगलैंड, स्काटलैंड तथा आयरलैंड का परस्पर मेल तोड़ दिया गया और तीनों देशों की पार्लिमेंटें और शासक पृथक् हो गये।

३—क्रामवैल के सैनिक शासन से लोग इतने दुःखी हो गये थे कि *अब उन के दिल में राजा के लिये भक्ति भाव बहुत बढ़ गया।*

४—प्रजातन्त्र शासनकाल में देश का धर्म प्यूरिटन था और इन लोगों ने अपनी धर्मान्धता से लोगों को कष्ट कर *दिया था।* अतः *अब देश का धर्म चर्च आफ इङ्गलैंड नियत किया गया और प्यूरिटनज़ के विरुद्ध कई कठोर नियम पास किये गये।*

५—न्यू माडल सेना (New Model Army) को उसका वेतन देकर तोड़ दिया गया, क्योंकि लोग सेना के अत्याचारों से तंग आ गये हुए थे। परन्तु इस में से कुछ दस्ते रख लिये गये जिस से इंगलैंड में स्थायी सेना की नींव पड़ गई।

६—प्रोटैक्ट्रेट के काल में देश में आनन्द के सब सामान बन्द थे और ऐसा प्रतीत होता था जैसे सारे देश में शोक छाया हुआ हो, परन्तु अब देश में आनन्द-सामग्री, राग रंग, नाच-तमाशे, मदिरापान, फिर से आरम्भ हो गये और लोगों का *सोशल जीवन सवथा ही बदल गया* और उसमें पहिले जैसी सरलता न रही।

नोट—जिन जजों ने चार्ल्स प्रथम को मृत्यु दण्ड दिया था उनमें से १२ को जो जीवित थे फाँसी दी गई। आखिर कामवैल कामवैल तथा दो अन्य पुरुषों (आयरटन और ब्रैडशा) के मृतक शरीर कब्रों से खोदकर फाँसी पर लटका दिये गये।

Q Discuss what made the Commonwealth and Protectorate unpopular in England and brought about the Restoration. What changes did it introduce in English Government and Society?

(P U 1942)

प्रश्न—वे कारण वर्णन करो जिन से कामनवैल्थ और प्रोटैक्ट्रेट इङ्गलैंड में अप्रिय रही और रैस्टोरेशन स्थापित हुई। अंग्रेज़ी गवर्नमेंट और सोसायटी में इससे क्या परिवर्तन हुये।

इङ्गलैंड में कामनवैल्थ और प्रोटैक्ट्रेट 1649 ई० से लेकर 1660 ई० तक अर्थात् ११ वर्ष तक रही परन्तु इस सारे समय में वह अप्रिय ही रही। इस के कारण निम्नलिखित थे :—

कामनवैल्थ की अप्रियता के कारण

१—यद्यपि चार्ल्स प्रथम हार गया और उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया फिर भी उसके पक्ष में अनेक लोग थे। इसके अतिरिक्त जिस धैर्य से उसने प्राण दिये, उसका यह प्रभाव हुआ कि कई लोग उसे शहीद समझने लगे। कई लोगों की तो यह भी अनुमति थी कि यदि अपराधी है तो चार्ल्स प्रथम है, उसके पुत्र ने क्या अपराध किया है कि वह राज्य से वंचित किया जाय।

२—जब कामवैल देश का प्रोटैक्टर बना तो उसने निरंकुश होकर

राज्य करना आरम्भ किया। यह पार्लिमेंट से झगड़ता रहता था और जनता इस बात को अच्छा नहीं समझती थी।

३—प्रोटैक्टरेट के समय में कुछ काल तक मेजर जैनरलों (Major Generals) का सैनिक राज्य रहा। उनका राज्य इतना कठोर और भयप्रद था कि जनता उससे तंग आ चुकी थी।

४—क्रामवैल आयु भर के लिये प्रोटैक्टर बनाया गया और तत्पश्चात् उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करने का भी अधिकार दिया गया तो लोग खुले रूप से पूछने लगे कि इस शासन और राजत्व के शासन में क्या भेद है?

५—प्रोटैक्टरट के समय में आनन्द के सब साधन बन्द थे। साधारण आनन्दों का मनाया जाना भी वर्जित था। खेल-तमाशे भी बंद थे। धार्मिक स्वतन्त्रता सीमित थी, इसलिये जनता इससे रुष्ट थी।

६—क्रामवैल के पश्चात् उसका पुत्र रिचर्ड क्रामवैल प्रोटैक्टर बना। यह अयोग्य पुरुष था। उसका सेना से झगड़ा हो गया, उसने त्यागपत्र दे दिया और देश में एक प्रकार की अराजकता फैल गई और जन साधारण इस बात की प्रबल इच्छा करने लगे कि किसी प्रकार देश में दृढ़ गवर्नमेंट स्थापित हो सके। अब लोगों का विचार राजत्व का शासन स्थापित करने की ओर झुका। 1660 ई० में चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को राजा बना दिया गया और रैस्टोरेशन हुई। (दूसरे भाग के लिये देखो पिछला प्रश्न)।

चार्ल्स द्वितीय
(CHARLES II)
1660—1685

चार्ल्स द्वितीय चार्ल्स प्रथम का पुत्र था। वह पर्याप्त समय प्रवास में काट चुका था। अन्त में 29 मई, 1660 ई०, को उसे इंगलैंड का राजा बना दिया गया। उस समय उसकी आयु 30 वर्ष की थी। लोगों ने बड़ी धूम-धाम

सिंहासनारूढ़ होना

से उसका स्वागत किया, क्योंकि वे कामनवैल्थ के शासन से तंग आ गये हुए थे। सब ओर हर्ष तथा रंगरलियाँ मनाई जाने लगीं। राजा तथा उसके दरबारी भी आनन्द और भोग-विलास में मग्न हो गये। इस विलास प्रियता के कारण चार्ल्स को *रंगीला राजा* (Merry Monarch) कहते हैं।

1661 ई० में चार्ल्स ने पुर्तगाल की राजकुमारी *कैथेराइन आफ़ ब्रैगनज़ा* (Catherine of Braganza) से विवाह किया और दहेज में उसे *बम्बई का टापू* मिल गया।

चार्ल्स का चरित्र (Character)

चार्ल्स द्वितीय बड़ा उपहास-प्रिय, सुशिक्षित तथा हँसमुख, परन्तु *आचार से गिरा हुआ* पुरुष था। उसकी कई अवैध (नाजायज़) सन्तानें थीं जिन में से एक *ड्यूक आफ़ मनमथ* (Duke of Monmouth) था। इस के अतिरिक्त चार्ल्स द्वितीय बड़ा ही *स्वार्थी तथा बे असूला* था। वह अपने लाभ के लिये अपना धर्म, अपने मित्र तथा मन्त्रियों को भी छोड़ने के लिये तैयार हो जाता था।

यद्यपि मनुष्य रूप से चार्ल्स में कई त्रुटियाँ थीं फिर भी वह *स्टुअर्ट वंश का सबसे योग्य, बुद्धिमान् तथा सर्वप्रिय राजा था*। वह पहले ही पर्याप्त समय प्रवास में काट चुका था और कोई ऐसी चेष्टा करने को तैयार न था जिससे पार्लिमेंट से झगड़ा हो जावे। वह कहा करता था, "I do not want to go on my travels again."। यही कारण था कि यद्यपि वह राजा के दैवी अधिकारों का पक्षपाती था, परन्तु जब वह देखता था कि उसकी बात नहीं मानी जायगी तो वह पार्लमेंट के आगे झुक जाता था। वह स्वयं गुप्त रूप से रोमन कैथोलिक था और रोमन कैथोलिक धर्म को देश में प्रचलित करना चाहता था। परन्तु वह अपने आप को प्राटेस्टेंट प्रकट करता था, केवल मृत्यु के समय उसने अपने रोमन कैथोलिक होने को स्वीकार किया।

Q Give an account of the most important

events of the reign of Charles II (P U. 1940)

Or,

Describe briefly the important Acts passed by the Parliament in the reign of Charles II.

(P U 1945)

प्रश्न—चार्ल्स द्वितीय के राज्यकाल की अति प्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन करो। या उसके समय के प्रसिद्ध कानूनों का वृत्तांत लिखो।

चार्ल्स द्वितीय के राज्यकाल की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित थीं—

चार्ल्स द्वितीय के पहले सात वर्षों में क्लैरेंडन (Clarendon) उसका मन्त्री था। वह स्टुअर्ट वंश का पुराना सेवक था। चार्ल्स द्वितीय का वह अध्यापक तथा मित्र था और उसके प्रवास काल में उसके साथ रहा था। चार्ल्स ने राजा बनने पर उसे अपना मन्त्री नियत किया और सात वर्ष तक यह इस पद पर रहा।

१ क्लैरेंडन कोड (Clarendon and his Code)

क्लैरेंडन कोड—क्लैरेंडन चर्च आफ इंगलैंड का प्रबल पक्षपाती तथा प्यूरिटन लोगों का घोर शत्रु था, इसी लिये उसके मन्त्रित्व काल में प्यूरिटन लोगों के विरुद्ध चार कानून पास हुये जिन्हें Clarendon Code कहते हैं।

१—The Corporation Act, 1661—इस एक्ट के अनुसार कोई पुरुष जो चर्च आफ इंगलैंड का अनुयायी न हो किसी कार्पोरेशन (नागरिक कमेटी) का मेम्बर नहीं बन सकता था।

२—The Act of Uniformity, 1662—इस ऐक्ट के अनुसार सब पादरियों के लिय Book of Common Prayer का प्रयोग अनिवार्य ठहराया गया। कोई दो हजार पादरी जिन्होंने इस कानून को मानने से इनकार किया नौकरी से हटा दिए गये।

३—The Conventicle Act, 1664—इस कानून से यह पास हुआ कि पाँच से अधिक डिस्सैंटर्स (इंगलिकन चर्च के न मानने वालों) की धार्मिक सभा नहीं की जा सकती।

४—The Five Mile Act, 1665—इस कानून द्वारा यह पास हुआ कि कोई पादरी अथवा टीचर जो डिस्सेंटर हो किसी नगर अथवा कस्बे के पाँच मील के अन्दर नहीं आ सकता।

परिणाम—बहुत से प्यूरिटन लोगों ने इन कड़े कानूनों को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। इनमें से हजारों देश छोड़ कर अमेरिका जा बसे और सहस्रों जेलों में बन्द कर दिये गये। *जान बनियन* (John Bunyan) जो एक प्यूरिटन प्रचारक था, १२ वर्ष तक जल में रहा और वहाँ उसने प्रसिद्ध पुस्तक Pilgrim's Progress लिखी।

२. लण्डन की प्लेग (Great Plague of London) 1665

1665 ई० में लण्डन में भयंकर प्लेग फूट पड़ी। इसका बड़ा कारण यह था कि लण्डन के गली कूचे उन दिनों बड़े तंग और गंदे थे और स्वास्थ्य रक्षा के नियमों का कोई विचार न था। जिन लोगों से हो सका, वे नगर छोड़कर भाग गये। सारा काम व्यवहार रुक गया, यहाँ तक कि मृतकों को उठाने वाला कोई न रहा। अन्त में म्यूनिसिपल कमेटी ने गाड़ीवानों का प्रबन्ध किया जो मृतकों को छकड़ों में लाद कर नगरों से बाहर गढ़ों में दबा आया करते थे। इस प्लेग से अकेले लण्डन नगर में एक लाख से अधिक मनुष्य मर गये।

३. भयानक अग्नि (Great Fire of London)

प्लेग से अगले वर्ष अर्थात् 1666 ई० में लण्डन में भयंकर आग लग गई जो पाँच दिन और पाँच रात तक जलती रही और लगभग आधा नगर जल कर भस्म हो गया। लंडन का सर्व प्रसिद्ध गिरजा St. Paul's भी राख का ढेर बन गया। *कोई तेरह हजार घर इस आग की भेंट हुये और लगभग एक लाख व्यक्ति* बे-घर बन गये। अंत में कुछ मकान गिरा कर खाली स्थान बनाया गया कि आग बढ़ने से रुक जाये। परन्तु इस आग से जहाँ इतनी हानि हुई वहाँ एक बड़ा भारी लाभ भी हुआ और वह यह कि नगर का नये

सिरे से निर्माण किया गया। मकान हवादार, खुले तथा पक्के बनवाये गये और इस के पीछे प्लेग फिर कभी लण्डन में नहीं फूटी।

अर्ल आफ क्लेरेंडन के मन्त्रित्व की समाप्ति पर चार्ल्स ने पाँच मन्त्रियों की एक कमेटी नियत की जिसे कबैल

४ कबैल मन्त्रि मण्डल (Cabal Ministry) 1667—1673

मन्त्रि मण्डल कहते हैं। इन मन्त्रियों के नाम *क्लिफर्ड* (Clifford), *आरलिंगटन* (Arlington), *बकिंगहम* (Buckingham), *एशले* (Ashley) *तथा लाडरडेल* (Lauderdale) थे।

कबैल के शब्दार्थ *'गुप्त'* सभा के हैं और संयोग की बात यह है कि इन मन्त्रियों के नामों के पहले अक्षरों को मिलाने से भी शब्द कबैल बन जाता है। इस मन्त्रि-मंडल के समय की प्रसिद्ध घटनायें (१) डोवर *का गुप्त संधिपत्र* (Secret Treaty of Dover), 1670 और (२) टैस्ट ऐक्ट (Test Act), 1673 हैं। टैस्ट ऐक्ट के पास होने से इस मन्त्रि-मण्डल की समाप्ति हो गई।

1670 ई० में चार्ल्स द्वितीय ने फ्रांस के *राजा लुई चौदहवें* (Louis XIV) के साथ डोवर के स्थान पर

५. डोवर की गुप्त संधि Secret Treaty of Dover, 1670

एक गुप्त प्रतिज्ञापत्र किया जिसे Secret Treaty of Dover कहते हैं। इस प्रतिज्ञा पत्र में चार्ल्स द्वितीय ने प्रतिज्ञा की कि वह फ्रांस *के पक्ष में हालैंड के विरुद्ध युद्ध करेगा और इंगलैंड में वह रोमन कैथोलिक धर्म को उन्नति देगा और उचित समय आने पर कैथालिक होने की घोषणा कर देगा।* इसके बदले में फ्रांस के राजा ने उसे एक अच्छी धनराशि दी और वचन दिया कि यदि इंगलैंड में चार्ल्स के विरुद्ध कोई विद्रोह होगा तो वह सेना से उस की सहायता करेगा। इसके पश्चात् चार्ल्स ने Declaration of Indulgence की घोषणा कर के रोमन कैथालिक लोगों पर से कई रुकावटें हटा दीं। इसलिए पार्लिमेंट ने *टैस्ट* ऐक्ट पास किया।

टैस्ट ऐक्ट (Test Act) चार्ल्स द्वितीय के समय में 1673 ई० में पास हुआ। इसका कारण यह था कि चार्ल्स ने कैथोलिकों का पक्षपात करना आरम्भ कर दिया था। उसने एक घोषणा (Declaration of Indulgence) द्वारा कैथोलिक लोगों के विरुद्ध समस्त बाधायें हटा दीं। पार्लिमेंट चार्ल्स की कैथोलिक पक्ष नीति को अच्छा नहीं समझती थी। इसलिये यह घोषणा रद्द कर दी गई और पार्लिमेंट ने टैस्ट ऐक्ट पास किया। इसके अनुसार निश्चय हुआ कि *कोई पुरुष सरकारी नौकरी नहीं ले सकता जब तक कि वह चर्च आफ़ इंगलैंड को मानने की शपथ न खाये।* इस कानून के अनुसार कैथोलिक तथा प्यूरिटन लोगों को नौकरियाँ मिलनी बन्द हो गईं और उन में से जो लोग पहले सरकारी नौकरी में थे वे हटा दिये गये। (अन्त में 1828 ई० में जार्ज चतुर्थ के समय में यह कानून हटा दिया गया)।

☞ Test Act, 1673

1678 ई० में एक पादरी टाईटस ओट्स (Titus Oates) ने जो बड़ा अविश्वसनीय तथा झूठा मनुष्य था लंदन के एक मैजिस्ट्रेट के सम्मुख जाकर वर्णन किया कि रोमन कैथोलिक लोगों ने एक षड्यन्त्र पक्का कर लिया है कि चार्ल्स द्वितीय का वध करके उसके भाई जेम्स ड्यूक आफ़ यार्क (James, Duke of York) को जो पक्का रोमन कैथोलिक है, सिंहासनारूढ़ किया जाये और देश में बलपूर्वक रोमन कैथोलिक धर्म पुनः स्थापित किया जाये। इंगलैंड एक प्रोटैस्टैंट देश था और उसके लोग कैथोलिक राजा का नाम भी सुनना नहीं चाहते थे। इसलिये इस लोकवाद से लोगों में सनसनी फैल गई और रोमन कैथोलिक लोगों के विरुद्ध घृणा का भाव बहुत बढ़ गया। टाइटस ओट्स (Titus Oates) को इस भेद-प्रकाश के लिये पर्याप्त पारितोषिक दिया गया। यह देखकर अन्य बहुत से मनुष्यों ने भी ऐसे लोकवाद फैलाने आरम्भ कर दिये। इस का

The Popish Plot, 1678

परिणाम यह हुआ कि बहुत से निरपराधी रोमन कैथोलिक मौत के घाट उतार दिये गये।

हेबियस कार्पस ऐक्ट—यह कानून अर्ल आफ शैफ्ट्सबरी (Earl of Shaftesbury) ने जिसका मूल नाम ऐशले था (और जो कबैल गुप्त मंडल का एक मेम्बर भी रह चुका था) 1679 ई० में पास कराया। इस कानून के अनुसार निश्चय हुआ कि *किसी पुरुष को उस पर अभियोग चलाये बिना कैद नहीं किया जा सकता और यदि कोई पुरुष बिना अभियोग चलाये कैद* कर दिया गया है तो उसका कोई सम्बन्धी अथवा मित्र मैजिस्ट्रेट के पास प्रार्थना-पत्र दे सकता है और उस अवस्था में जेल के दारोगा के लिये अनिवार्य होगा कि वह कैदी को बिना विलम्ब किये न्यायालय में उपस्थित करे और वारंट दिखाये जिसके द्वारा उसे कैद किया गया है।

Habeas Corpus Act, 1679

महत्व—*इस कानून से अंग्रेजी जाति की स्वतन्त्रता और दृढ़ हो गई क्योंकि शासक लोग किसी पुरुष को अविधेय रूप से (ग़ैरकानूनी तौर पर) कैद करने के अधिकारी न रहे।*

चूँकि चार्ल्स द्वितीय की कोई विधेय (जायज़) सन्तान न थी इसलिये उसके पीछे उसका उत्तराधिकारी उसका भाई जेम्स ड्यूक आफ़ यार्क था, परन्तु जेम्स कैथोलिक मत का अनुयायी था और इंगलैंड के लोग किसी कैथोलिक को राजा बनाना नहीं चाहते थे। पोपिश प्लाट की सनसनी का लाभ उठाकर अर्ल आफ़ शैफ्ट्सबरी ने 1679 ई० में पार्लिमेंट में एक बिल पेश किया जो एक्सक्लूज़न बिल (Exclusion Bill) के नाम से प्रसिद्ध है। इस बिल का उद्देश्य यह था कि *जेम्स ड्यूक आफ़ यार्क को कैथोलिक होने के कारण सिंहासन से वंचित किया जाये* और उसके स्थान पर ड्यूक आफ़ मनमथ (Duke

Exclusion Bill 1679

of Monmouth) को, जो चार्ल्स द्वितीय का एक अवैध पुत्र था, सिंहासन का अधिकारी स्वीकृत किया जाये, परन्तु चार्ल्स द्वितीय को यह बात स्वीकार न थी इसलिये जब यह बिल पेश होता था तो वह पार्लिमेंट तोड़ देता था। इस प्रकार यह बिल पास न हो सका।

Whig and Tory

ऐक्सक्लूयन बिल के पेश होने से देश में दो पोलिटिकल पार्टियाँ बन गईं। एक पार्टी तो अर्ल आफ शैफ्ट्सबरी के पक्ष में थी। उसका यह मत था कि *पार्लिमेंट को राजसिंहासन के प्रश्न का फ़ैसला करने का पूरा अधिकार है*। दूसरी पार्टी चार्ल्स द्वितीय के पक्ष में थी। उसका मत था *कि राजसिंहासन के प्रश्न का फ़ैसला करने में राजा स्वतन्त्र होना चाहिये*। इन दोनों पार्टियों ने एक दूसरे के नाम रख दिये। शैफ्ट्सबरी की पार्टी विग (Whig) और चार्ल्स की पक्षपाती पार्टी को टोरी (Tory) का नाम दिया गया। ये दोनों नाम व्यंगार्थ में रखे गये थे। "विग" के अर्थ 'विद्रोही' और "टोरी" के अर्थ 'डाकू' के हैं, परन्तु धीरे धीरे इन शब्दों के वास्तविक अर्थों का विचार छोड़ दिया गया। ये पार्टियाँ अब तक भी हैं, परन्तु इनके नाम बदल चुके हैं। विग पार्टी को *लिबरल* (Liberal) और टोरी पार्टी को *कनज़र्वेटिव* (Conservative) कहते हैं।

Rye House Plot 1683

जब विग ऐक्सक्लूयन बिल पास कराने में सफल न हुए तब 1683 ई० में उन्हों ने यह षड्यन्त्र रचा कि जब चार्ल्स द्वितीय तथा उसका भाई, जेम्स ड्यूक आफ यार्क, घुड़-दौड़ से लौटकर आएँ और *राई हाउस* (Rye House) नामक मकान के पास से गुज़रें तो दोनों का वध कर दिया जाये, परन्तु चार्ल्स तथा जेम्स किसी कारण से समय से पूर्व ही घुड़दौड़ से लौटकर आ गये, इस लिये यह षड्यन्त्र सफल न हो सका। बाद में इस षड्यन्त्र का पता लग गया और इसके नेताओं को मृत्यु-दण्ड दिया गया। परिणाम यह हुआ कि विग पार्टी निर्बल हो गई।

नोट—चार्ल्स द्वितीय के समय में तीन प्रसिद्ध कानून (i) Clarendon Code (ii) Test Act (iii) Habeas Corpus Act पास हुये। इनका वृत्तांत ऊपर दिया गया है।

जेम्ज़ द्वितीय
JAMES II
1685-88

जेम्स द्वितीय चार्ल्स का छोटा भाई था और उसकी मृत्यु के पश्चात् यह सिंहासनारूढ़ हुआ। जेम्स कट्टर रोमन कैथोलिक था और राजा के दैवी अधिकारों में बड़ा विश्वास रखता था। उसने समय पाकर रोमन कैथोलिक धर्म को फैलाने और निरंकुश होकर शासन करने का यत्न किया। इससे प्रजा उससे रुष्ट हो गई और जेम्स को सिंहासन से वंचित होना पड़ा। इंगलैंड का सिंहासन उस के जामाता William III और पुत्री Mary को पेश किया गया।

जेम्स द्वितीय का सिंहासनारूढ़ होना

Q Give a brief account of Monmouth's Rebellion

प्रश्न—मनमथ के विद्रोह का वर्णन करो।

कारण—मनमथ चार्ल्स द्वितीय का अवैध पुत्र था। जेम्स के सिंहासनारूढ़ होने के समय मनमथ तथा अन्य कई विग नेता हालैंड में थे। इन विग नेताओं ने उसे अनुमति दी कि वह इंग्लैंड पर आक्रमण करके सिंहासन बलपूर्वक छीन ले। उनका विचार था कि लोग प्रोटैस्टैंट शासक को पसन्द करेंगे और मनमथ पक्का प्राटैस्टैंट था।

मनमथ का विद्रोह, 1685

घटनायें—1685 ई० में मनमथ इंग्लैंड पहुँचा और उसने घोषणा की कि वह चार्ल्स का विधय पुत्र है और सिंहासन का वास्तविक अधिकारी है। बहुत से कृषिकार तथा खानि खनिक उसके झण्डे के नीचे एकत्रित हो गये। उनके बल-बाते पर मनमथ ने अपने

राजा होने की घोषणा कर दी। परन्तु उन लोगों के पास शस्त्र अपर्याप्त थे और वे युद्ध-विद्या में शिक्षित भी नहीं थे। इस प्रकार जेम्स द्वितीय की सेनाओं ने मनमथ को सेजमूर (Sedgemoor) के स्थान पर पराजित किया। मनमथ पकड़ा गया और लण्डन ले जाकर उसका सिर काट दिया गया।

परिणाम—उसके साथियों से बड़ी निर्दयता का बर्ताव किया गया। सैंकड़ों गोली से उड़ा दिये गये और कई एक पर अभियोग चलाये गये। इन अभियोगों को सुनने के लिये जैफ्रीज (Jeffreys) जो एक बड़ा अत्याचारी तथा क्रूर हृदय पुरुष था न्यायाधीश नियुक्त किया गया। उसने बड़े कठोर दण्ड दिये। तीन सौ से अधिक विद्रोहियों को मृत्यु-दण्ड दिया गया और लगभग आठ सौ मनुष्यों को दास बना कर पश्चिमी द्वीप-समूह (West Indies) में भेज दिया गया। जैफ्रीज के इन न्यायालयों को जो उसने इन अभियोगों को सुनने के लिये लगाये घातक *न्यायालय* (Bloody Assizes) कहते हैं। विद्रोह के दब जाने से जेम्स द्वितीय की स्थिति दृढ़ हो गई।

☞ Q Describe the Glorious Revolution of 1688 or 1689 Why is it so called? Explain its constitutional importance.
(P U 1935-38-44-46-49 51 52-53) (V Important)

What were the causes and effects of the Glorious Revolution (1689)? Or,

Trace the events from 1685 which led to the expulsion of James II from England (P U 1952-54)
Or,

What causes led to the flight of James II from England?

प्रश्न—1688 ई० की *वैभवशाली क्रांति का वर्णन करो। इसका यह नाम क्यों है ? स्पष्ट करो कि इसका वैधानिक महत्व क्या था ?* या

1689 की *वैभवशाली क्रान्ति के कारण और परिणाम लिखो।* या

1685 ई० के पश्चात् होने वाली उन घटनाओं का वर्णन करो जिन के कारण जेम्स द्वितीय को इंगलैंड से निकलना पड़ा था।

गौरवपूर्ण क्रान्ति

(GLORIOUS REVOLUTION)

Glorious Revolution 1688*

1688 ई० में इंगलैंड में एक क्रान्ति हुई जिसके कारण राजा जेम्स द्वितीय (James II) सिंहासन छोड़ कर फ्रांस भाग गया। पार्लिमेंट ने उसके जामाता विलियम आफ़ औरेंज (William of Orange) और पुत्री मेरी (Mary) को देश के साँझे शासक बना दिया। इस क्रान्ति को गौरवपूर्ण क्रान्ति (Glorious Revolution) कहते हैं।

क्रान्ति के कारण Causes

इस क्रान्ति का वास्तविक कारण यह था कि एक तो जेम्स द्वितीय निरंकुश हो कर राज्य करना चाहता था, दूसरे वह कट्टर रोमन कैथोलिक था और अपने सहधर्मियों पर से सब रुकावटों को दूर करके देश में रोमन कैथोलिक धर्म स्थापित करना चाहता था। मनमथ के विद्रोह की असफलता से इसे यह दृढ़ विश्वास हो गया था कि जनता उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। इससे उसका साहस और भी बढ़ गया था। इसलिए उसने कई नियम विरुद्ध तथा अनुचित कार्यवाहियाँ आरम्भ कर दीं जो इस क्रान्ति का कारण बनीं। ये कार्यवाहियाँ निम्नलिखित थीं :—

१ टेस्ट एक्ट का उल्लंघन-जेम्स ने टेस्ट ऐक्ट को जिसके कारण रोमन कैथोलिक लोगों को सरकारी नौकरियाँ नहीं मिल सकती थीं हटा देना चाहा। परन्तु पार्लिमेंट ने विरोध किया। इस पर

---

*विलियम 1688 ई० में इंगलैंड पहुँचा परन्तु राज्य उसे 1689 ई० में मिला। इसलिये इस क्रान्ति के लिये 1688 तथा 1689 दोनों सन् प्रयोग किये जाते हैं।

जेम्स ने राजा होने के अधिकार से Dispensing and Suspending Power का दावा किया अर्थात् *डिसपैंसिंग पावर* के अनुसार वह *विशेष मनुष्यों के लिये* एक कानून सदा के लिये नकारा बना सकता है और *सस्पैंडिंग पावर* से एक कानून को कुछ काल के लिये सब मनुष्यों के लिये स्थगित कर सकता है। जजों ने उसके इस दावे को स्वीकार कर लिया और जेम्स ने टैस्ट ऐक्ट को स्थगित कर दिया।

२ रोमन कैथोलिक लोगों का पक्षपात—टैस्ट ऐक्ट को स्थगित करने के बाद जेम्स ने रोमन कैथोलिक लोगों को सेना, न्यायालयों, यूनिवर्सिटियों, चर्च, सारांश प्रत्येक विभाग में खुल्लम खुल्ला नौकरियाँ देनी आरम्भ कर दीं। उस ने आक्सफ़ोर्ड (Oxford) और कैम्ब्रिज (Cambridge) की यूनिवर्सिटियों में भी जो ऍगलीकन चर्च की गढ़ थीं हस्ताक्षेप किया और उन में भी कई कैथोलिक नियुक्त किये। इससे लोग जेम्स से घृणा करने लग गये।

३ धार्मिक न्यायालय की स्थापना—जेम्स द्वितीय ने अपनी धार्मिक नीति का विरोध करने वालों को दण्ड देने के लिये फिर से कोर्ट आफ़ हाई कमीशन (Court of High Commission) को (जिसे लौंग पार्लिमैंट ने तोड़ दिया था) एक नये नाम से स्थापित कर दिया और जैफ़्रीज़ (Jeffreys) को उसका सब से बड़ा जज नियत किया।

४ सेना की स्थापना—जेम्स द्वितीय के इन कार्यों से जनता में अशान्ति फैल गई। इस पर जेम्स ने लोगों को भयभीत करने के लिए एक स्थायी सेना रख ली जो लण्डन नगर के बाहर डेरे डाले रहती थी और जिसके अफ़सर रोमन कैथोलिक थे। इस सेना के आतंक से किसी पुरुष को जेम्स के विरुद्ध किसी प्रकार की कुचेष्टा करने का साहस न होता था। लोग इस सेना के *शान्ति काल* में रखने को बहुत बुरा मानते थे।

५ डिक्लेरेशन आफ़ इन्डलजैंस-कुछ समय तक तो जेम्स गिने

मिने कैथोलिक लोगों को रियायतें देता रहा। परन्तु 1687 ई० में उस ने घोषणा प्रकाशित की जिसके अनुसार कैथोलिक लोगों पर से सम्पूर्ण रोकें हटा दी गईं और निश्चय हुआ कि कैथोलिक लोग अपनी रीति के अनुसार पूजा पाठ कर सकते हैं और नौकरियाँ भी ले सकते हैं। इस घोषणा को *डिक्लेरेशन आफ़ इन्डलजेंस* (Declaration of Indulgence) कहते हैं। इस से प्रोटेस्टेंट लोग जेम्स से अप्रसन्न हो गये।

६ ☞ सात पादरियों पर अभियोग (मुकद्दमा) (Trial of Seven Bishops)—अगले वर्ष अर्थात् 1688 ई० में जेम्स ने इस प्रकार की दूसरी घोषणा निकाली और आज्ञा दी कि सब पादरी इस घोषणा को* ऐतवार के दिन गिरजाघरों में पढ़ कर सुनायें। बहुत से पादरी इस घोषणा को पढ़ कर सुनाने के विरुद्ध थे। परन्तु सात बड़े पादरियों (बिशपों) ने जिनमें *आर्चबिशप आफ़ कैंटरबरी* (Sancroft) भी सम्मिलित था, जेम्स के पास एक प्रार्थना पत्र भेजा कि क्योंकि उनका अन्तः करण उन्हें ऐसा करने की आज्ञा नहीं देता अतः उन्हें इस घोषणा को गिरजों में पढ़ कर सुनाने के लिये विवश न किया जाये। जेम्स का इस पर बड़ा क्रोध आया और उसने इन पादरियों पर विद्रोह का अभियोग चलाया। परन्तु जजों ने उन्हें निरपराध ठहराया और वे मुक्त किये गये। सब लोगों ने इनके मुक्त होने पर बड़ा हर्ष मनाया, यहाँ तक कि जेम्स की लन्दन वाली सेना भी इस आनन्द में सम्मिलित हुई। जेम्स ने *अपनी कुचेष्टा से सारी जनता को अपने विरुद्ध कर लिया।*

७ तात्कालिक कारण—*पुत्रोत्पत्ति*, 1688 ई०—यद्यपि लोग जेम्स की इन नियम विरुद्ध कार्यवाहियों से तंग आ गये थे, तो भी वे इन अत्याचारों को धीरज के साथ सहन कर रहे थे। इसका कारण

---

*उन दिनों घोषणा प्रकाशित करने का ढंग यह था कि गिरजों में धार्मिक कार्यवाही के पश्चात् पादरी लोग राजादेश सुनाया करते थे।

यह था कि जेम्स के कोई पुत्र न था और वह बूढ़ा हो चुका था। लोगों का विचार था कि वह थोड़े ही समय के पश्चात् मर जाएगा और उस की मृत्यु पर उसकी प्रोटेस्टेंट पुत्री *मेरी* (Mary) जो हालैंड के प्रोटेस्टेंट शासक *विलियम आफ़ ओरेंज* (William of Orange) के साथ ब्याही हुई थी, शासक बनेगी और मेरी के सिंहासनारूढ़ होते ही सब शिकायतों की समाप्ति हो जावेगी। परन्तु 1688 ई० में जेम्स के घर पुत्र उत्पन्न हो गया और यह बात निश्चित थी कि *कैथोलिक पिता का पुत्र कैथोलिक ही होगा*। इससे लोगों की सब आशाओं पर पानी फिर गया। *वे इस बात को कदापि सहन नहीं कर सकते थे कि इंगलैंड पर सदा के लिये रोमन कैथोलिक राजाओं का शासन हो*।

इसलिये देश के सात बड़े बड़े पुरुषों ने जिनमें विग तथा टोरी दोनों पार्टियों के पुरुष सम्मिलित थे, मेरी के पति, *विलियम आफ़ ओरेंज*, को एक विश्वासपात्र दूत के हाथ निमन्त्रण भेजा कि वह

Events
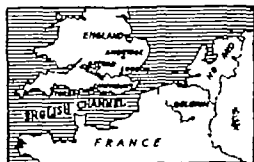
सेना के साथ आकर राजा बने और देश को जेम्स के अत्याचारों से मुक्ति दिलाये। विलियम ने जो उस समय फ्रांस के राजा लुई चौदहवें (Louis XIV) से युद्ध कर रहा था और इंगलैंड की सहायता चाहता था, इस निमन्त्रण को सहर्ष स्वीकार कर लिया। वह एक छोटी सेना के साथ 5 नवम्बर 1688 ई० को इंगलैंड के तट पर टारबे (Torbay) की बन्दरगाह पर उतरा। विलियम का इंगलैंड में पहुँचना था कि सब लोगों ने जेम्स का साथ छोड़ दिया, यहाँ तक कि उसका सेनाध्यक्ष *जान चर्चिल* (John Churchill) भी जो पीछे Duke of Marlborough बनाया गया, विलियम के साथ जा मिला। जेम्स की पुत्री ऐन (Anne) भी उसका साथ छोड़ गई।

जेम्स ने निराशा की अवस्था में कहा, "*प्रभु भला करे, मेरे अपने बच्चे भी मुझे छोड़ गये हैं।*" जेम्स ने अब लोगों को कई सुविधाएँ देने का वचन दिया, परन्तु उस पर किसी को भी विश्वास न था। विलियम लन्दन पहुँचा और जेम्स अपने आप को असहाय अवस्था में पाकर फ्रांस भाग गया और जाते हुए शाही मोहर को टेम्ज़ (Thames) नदी में फेंक गया। विलियम ने Convention पार्लिमेंट बुलाई, जिसने निर्णय किया कि चूँकि जेम्स द्वितीय भाग गया है इसलिये इंग्लैंड का सिंहासन खाली है और कुछ शर्तों के पश्चात् जिन्हें '*अधिकार घोषणा*' (Declaration of Rights) कहते हैं, सिंहासन विलियम और मेरी को सांझे रूप से दे दिया गया। अधिकार घोषणा के अनुसार राजा के अधिकार बहुत कुछ सीमित कर दिये गये।

नाम का कारण

इस क्रान्ति को *गौरवपूर्ण क्रान्ति* (Glorious Revolution) इसलिए कहते हैं क्योंकि इससे देश में इतना बड़ा परिवर्तन *लहू की एक बूंद बहाए बिना हो गया।* राज्य बदल गया, परन्तु किसी बार एक गोली चलाने तक का अवसर न आया। इसके *अतिरिक्त निम्नलिखित बातें भी इस क्रान्ति के गौरवपूर्ण* (Glorious) होने का प्रमाण हैं :—

वैधानिक महत्व (Importance)

१ दैवी अधिकारों की समाप्ति—इस राज्यक्रान्ति ने राजा के दैवी अधिकार (Divine Right of Kings) *की समस्या को सदा के लिए समाप्त कर दी* क्योंकि पार्लिमेंट ने उत्तराधिकारी कानून की कुछ परवाह न करते हुए विलियम तथा मेरी को अपनी इच्छा से *सिंहासन प्रदान किया था*, जिस का स्पष्ट अर्थ यह था कि *राजा परमात्मा की ओर से भेजा हुआ नहीं होता परन्तु प्रजा का अपना नियुक्त किया हुआ होता है*। अब से वह ईश्वर का नहीं अपितु प्रजा का एजेंट था। इसके पश्चात इंग्लैण्ड का प्रत्येक शासक पार्लिमेंट की इच्छानुसार राज्य कार्य चलाता रहा।

२ झगड़े का अन्त—उस झगड़े को, जो पार्लिमेंट और स्टुअर्ट

शासकों में चिरकाल से चला आता था, समाप्त हो गई और पार्लिमेंट की जीत हुई और यह स्पष्ट हो गया कि *पार्लिमेंट ही देश में शासन की मुखिया है और राजा केवल नाम मात्र है।*

३ **वैधानिक शासन**—इसके अतिरिक्त अधिकार-घोषणा के मानने से राजा के अधिकार सीमित हो गये। अब वह अपनी मनमानी नहीं कर सकता था। उसे Suspending and Dispensing Power का अधिकार न रहा और उसके कई और अधिकार भी उससे ले लिये गये। इससे पार्लिमेंट की शक्ति अति दृढ़ हो गई और देश में *वैधानिक शासन* (Constitutional Government) *स्थापित हो गया। इसके बाद राजा तथा पार्लिमेंट में कभी कोई झगड़ा न हुआ।*

४ **प्रोटेस्टेंट धर्म की दृढ़ता**—इस क्रांति का प्रभाव यह भी हुआ कि देश में प्रोटेस्टेंट धर्म को दृढ़ता प्राप्त हो गई, क्योंकि अब यह फैसला हो गया था कि इंगलैंड का शासक कोई कैथोलिक नहीं हो सकता। यह *राज्य क्रान्ति प्रोटेस्टेंट धर्म की विजय थी।*

इन सब बातों के कारण यह गौरवपूर्ण क्रान्ति इंगलैंड के इतिहास में एक अत्यन्त महत्त्वशाली घटना है। ☞ *इसने देश में शासकों का स्वेच्छाचारी राज्य समाप्त करके पार्लिमेंट का वैधानिक शासन स्थापित कर दिया।*

☞Q Briefly describe the struggle between the Kings and Parliament during the Stuart Period

Or,

Describe the causes of the quarrel between the first two Stuart Kings and their Parliaments What were the results of the quarrel ? (P U 1946 50 53)

प्रश्न—*स्टुअर्ट वंश के समय में राजा तथा पार्लिमेंट के बीच झगड़े का संक्षिप्त वर्णन करो।*

या

स्टुअर्ट वंश के पहले दो राजाओं और उनकी पार्लिमेंटों के बीच झगड़े के क्या कारण थे? इस झगड़े का क्या परिणाम हुआ?

स्टुअर्ट बादशाह और पार्लिमेंट

(STUART KINGS AND PARLIAMENTS)

लगभग सारे स्टुअर्ट काल में विशेषकर स्टुअर्ट वंश के पहले दो राजाओं जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम के समय में राजाओं तथा पार्लिमेंट में खटपट रही। इस खटपट के प्रधान कारण निम्नलिखित थे :—

स्टुअर्ट राजा और पार्लिमेंट

१ डिवाईन राईट आफ किंग्ज—स्टुअर्ट वंश के राजा, विशेषकर जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम, डिवाईन राईट आफ किंग्ज के सिद्धान्त में दृढ़ विश्वास रखते थे। परन्तु पार्लिमेंट इस अधिकार को मानने का तैयार न थी। वह चाहती थी कि राजा वैधानिक रूप से राज्य करे।

२ धार्मिक प्रश्न—स्टुअर्ट वंश के राजा प्रायः रोमन कैथोलिक धर्म के अनुयायी थे, परन्तु पार्लिमेंट के मेम्बर अधिकतर प्यूरिटन होते थे। इसलिये राजा और पार्लिमेंट में बनती न थी। चार्ल्स के समय में उसके मित्र लाड (Laud) ने लोगों पर बड़े अत्याचार किये थे।

३ बाह्य नीति—स्टुअर्ट वंश के राजाओं की बाह्य नीति देश के लिये हितकर नहीं थी। जेम्स प्रथम ने स्पेन से मित्रता करनी चाही जो ऐलिज़बैथ के राज्यकाल में इङ्गलैंड का कट्टर शत्रु रहा था। चार्ल्स प्रथम ने स्पेन और फ्रांस से युद्ध किये परन्तु उसे सफलता न हुई। चार्ल्स द्वितीय ने इङ्गलैंड की बाह्य नीति को फ्रांस के अधीन कर दिया। पार्लिमेंट इस नीति को अपमानजनक समझती थी।

४ अयोग्य कृपापात्र—जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम के राज्य-काल में इन झगड़े का एक बड़ा कारण यह था कि उनके कृपा पात्र बकिंगहम, स्ट्रैफर्ड, इत्यादि एक अयोग्य थे। उन्होंने प्रजा पर बड़े अत्याचार किये। पार्लिमेंट उन्हें पसन्द न करती थी परन्तु य राजे उनका साथ छोड़न का तैयार न थ।

५ रुपये की आवश्यकता—स्टुअर्ट वंश के राजा बहुत अपव्ययी थे। वे अपने मित्रों को बहुत धन देते थे। उधर अमेरिका से चाँदी के अधिक आ जाने से चाँदी की क्रय शक्ति बहुत घट गई थी। स्टुअर्ट राजे अधिक रुपया चाहते थे परन्तु पार्लिमेंट उतना रुपया स्वीकार करने को तैयार न थी।

६ बाह्य भय का न होना—स्टुअर्ट राजाओं के राज्य काल में किसी विदेशी आक्रमण का भय शेष न था। इसलिये पार्लिमेंट राजाओं की परवाह न करती थी और अपने अधिकार लेने पर तुली हुई थी।

७ स्टुअर्ट राजाओं की बेसमझी—स्टुअर्ट वंश के राजा ट्यूडरों की भाँति चतुर और समझदार नहीं थे। व पार्लिमेंट की नाड़ी को नहीं पहचानते थे। वे बड़े हठी थे परन्तु पार्लिमेंट अब अधिक जागृत हो गई थी।

८ अधिकार प्राप्ति का प्रश्न—परन्तु इस झगड़े का सब से बड़ा कारण यह था कि पार्लिमेंट अब अपने अधिकार लेने पर तुली हुई थी और राजाओं को निरंकुश रहने देना नहीं चाहती थी। वह राज्य की बाग डोर अपने हाथ में लेना चाहती थी।

झगड़े का वृत्तान्त—यह संघर्ष जेम्स *प्रथम* के समय में ही आरम्भ हो गया और उसका सारा शासन काल इसी झगड़े में व्यतीत हो गया। उसने अपने राज्य-काल में चार पार्लिमेंटें बुलाईं और अन्तिम पार्लिमेंट को छोड़ शेष सब को लड़ झगड़ कर तोड़ दिया। इसके पश्चात् यह झगड़ा उसके पुत्र *चार्ल्स प्रथम* के समय में भी चलता रहा। 1628 ई० में पार्लिमेंट को *पहली सफलता* प्राप्त हुई जब कि चार्ल्स ने *अधिकार याचना* (Petition of Right) को स्वीकार कर लिया। इस से चार्ल्स की कुछ अनुचित कार्यवाहियों की समाप्ति हो गई।

परन्तु अगले ही वर्ष अर्थात् 1629 ई० में चार्ल्स प्रथम ने

पार्लिमेंट को तोड़ दिया और ग्यारह वर्ष बिना पार्लिमेंट के शासन किया। इस स्वेच्छाचारी शासन-काल में उसने लोगों पर इतने अत्याचार किये कि ग्यारह वर्ष के इस युग को *'अत्याचार का युग'* कहते हैं। 1640 ई० में चार्ल्स को विवश हो कर लौंग पार्लिमेंट बुलानी पड़ी, जिस ने राजा के अधिकारों को बहुत कम कर दिया। इससे राजा तथा पार्लिमेंट के बीच सिविल वार छिड़ गई जो सात वर्ष होती रही। इस युद्ध में चार्ल्स की हार हुई और 1649 ई० में उस का *सिर काट दिया गया। यह पार्लिमेंट की दूसरी सफलता थी।*

चार्ल्स प्रथम के वध के पश्चात् देश में प्रजातन्त्र शासन स्थापित हो गया। परन्तु यह अनुभव असफल सिद्ध हुआ। 1660 ई० में चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को राजा बना दिया गया। इस घटना को रेस्टोरेशन कहते हैं। चार्ल्स द्वितीय बड़ा बुद्धिमान् पुरुष था। वह पार्लिमेंट से बिगाड़ करना नहीं चाहता था। इस लिए जब कभी वह देखता था कि पार्लिमेंट का पक्ष प्रबल है तो वह झुक जाता था। उसके पश्चात् उसका भाई जेम्स द्वितीय सिंहासनारूढ़ हुआ। उसने नये सिरे से देश में रोमन कैथोलिक धर्म प्रचलित करने की चेष्टा की। इस पर क्रांति हो गई जिसे इतिहास में 1688 ई० की *गौरवपूर्ण क्रांति* कहते हैं। जेम्स द्वितीय सिंहासन छोड़ कर भाग गया और पार्लिमेंट ने अपनी इच्छानुसार उसके जामाता विलियम और पुत्री मेरी को साँझे शासक चुना। विलियम ने प्रतिज्ञा की कि वह पार्लिमेंट के विधानानुसार शासन करेगा। इस प्रकार संघर्ष की समाप्ति हुई और *पार्लिमेंट को सफलता हुई।*

विलियम तृतीय तथा मेरी
WILLIAM III AND MARY
1689—1702

Q Under what conditions did William and Mary come to occupy the throne of England. Give

a brief account of the chief events of their reign.
(P U 1926 33) (Important)

प्रश्न—*विलियम तृतीय तथा मेरी किस प्रकार इंगलैंड के शासक बने ? उनके शासन-काल की प्रसिद्ध घटनाओं का संक्षिप्त रूप से वर्णन करो।*

विलियम तथा मेरी का सिंहासनारूढ़ होना

जेम्स द्वितीय की अवैधानिक कार्यवाहियों ने जो उसने निरकुश राज्य करने तथा इंगलैंड में रोमन कैथोलिक धम को पुन स्थापित करने के लिये कीं, सारी जाति को उसके विरुद्ध कर दिया। परन्तु लोग इन सब अत्याचारों को इस आशा पर सहन करते रहे थे कि राजा के यहाँ कोई पुत्र नहीं था और उसकी मृत्यु पर सिंहासन पर उसकी प्रोटैस्टैंट पुत्री मेरी का अधिकार था। 1688 ई० में राजा के यहाँ पुत्र उत्पन्न हो पड़ा। इससे लोगों ने विचार किया कि अब कैथोलिक राज्य स्थापित हो जायगा। अतः देश के सात मुख्य पुरुषों ने जेम्स द्वितीय के जामाता *विलियम आफ़ ओरेंज* (William of Orange) को जो हालैंड का शासक था इंगलैंड का राजा बनने के लिये आमन्त्रित किया। 5 नवम्बर 1688 ई० को विलियम तथा मेरी इंगलैंड के तट पर उतरे। जेम्ज़ निराशा की अवस्था में फ्रांस भाग गया। कनवैनशन पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ जिसने सिंहासन रिक्त ठहराया और कुछ शर्तों के पीछे जिन से राजा के अधिकार सीमित कर दिये गये, सिंहासन विलियम तथा मेरी को साँझे रूप से दे दिया गया। उनके राजा रानी बन जाने के पश्चात् इन शर्तों को एक कानून का रूप दे दिया गया जिसे Bill of Rights कहते हैं। 1689 ई० से 1694 ई० तक विलियम तथा मेरी साँझे रूप से शासन करते रहे। परन्तु 1694 ई० में मेरी शीतला रोग से मर गई और विलियम फिर अकेला ही शासन करता रहा। अन्त में 1702 ई० में वह भी घोड़े से गिर कर मर गया। उस के शासन काल की प्रसिद्ध घटनाएँ निम्नलिखित हैं —

इंगलैंड के शासकों की मनमानी कार्यवाहियों का पार्लिमेंट का

कड़वा अनुभव था। इसलिये पार्लिमेंट अब राजा के अधिकारों को सीमित करना चाहती थी जिससे फिर कभी कोई राजा इस प्रकार अनुचित कार्यवाहियाँ करने न पाये। इस लिये पार्लिमेंट ने एक कानून पास किया जिसे बिल आफ़ राइट्स कहते हैं। यह कानून अधिकार घोषणा (Declaration of Rights) की धाराओं पर ही आश्रित था। इसकी प्रसिद्ध धारायें निम्नलिखित थीं:—

१ Bill of Rights, 1689

१ राजा को पार्लिमेंट की इच्छा के बिना किसी कानून का स्थगित करने अथवा रद्द करने का अधिकार नहीं, अर्थात् Suspending and Dispensing Power का अधिकार नहीं।

२ राजा पार्लिमेंट की स्वीकृति के बिना कोई टैक्स नहीं लगा सकता।

३ राजा को शान्ति काल में पार्लिमेंट की इच्छा के बिना स्थायी सेना रखने का अधिकार नहीं।

४ प्रजा का प्रत्येक व्यक्ति राजा की सेवा में प्रार्थना-पत्र दे सकता है और राजा उसे ऐसा करने पर किसी प्रकार का दंड नहीं दे सकता।

५ प्रजा को पार्लिमेंट के मेम्बरों को चुनने में स्वतन्त्रता होगी।

६ पार्लिमेंट के अधिवेशन अधिकता से हुआ करेंगे और पार्लिमेंट में भाषण की स्वतन्त्रता होगी अर्थात् किसी मेम्बर पर उस भाषण के सम्बन्ध में जो उसने पार्लिमेंट में दिया हो अभियोग नहीं चलाया जा सकता।

७ भविष्यत् काल में कोई व्यक्ति जो रोमन कैथोलिक हो अथवा जिसका विवाह रोमन कैथोलिक से हुआ हो, इङ्गलैंड के सिंहासन पर नहीं बैठ सकता।

८. *यह भी निश्चय हुआ कि यदि विलियम तथा मेरी निस्सन्तान*

मर जायें तो इङ्गलैंड का सिंहासन मेरी की छोटी बहिन ऐन तथा उसकी सन्तान को मिलेगा।

महत्व (Importance)—*बिल आफ़ राइट्स अङ्गरेजी स्वाधीनता का तीसरा बड़ा चार्टर समझा जाता है।* इस कानून से राजा के अधिकार बहुत कम हो गये और पार्लिमेंट की शक्ति दृढ़ हो गई।

२. Mutiny Act, 1689

1689 ई० में Mutiny Act पास हुआ। इस ऐक्ट के अनुसार राजा को स्थायी सेना रखने का अधिकार दिया गया, परन्तु यह शर्त लगा दी गई कि इसके लिये प्रति वर्ष पार्लिमेंट की स्वीकृति ली जाया करे। इससे *राजा सेना रखने के लिये पार्लिमेंट के अधीन हो गया और पार्लिमेंट का प्रतिवर्ष बुलाया जाना अनिवार्य हो गया।*

३ Toleration Act, 1689

इसी वर्ष Toleration Act पास हुआ। इस कानून के अनुसार रोमन कैथोलिक लोगों के अतिरिक्त शेष सब ईसाइयों को अपनी इच्छा के अनुसार पूजा पाठ करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई। *यह ऐक्ट धार्मिक स्वतन्त्रता की ओर बड़ा भारी पग था।*

४ Triennial Act, 1694

1694 ई० में पार्लिमेंट ने *त्रैवर्षी कानून* पास किया। इस कानून के अनुसार *पार्लिमेंट* की अवधि तीन वर्ष नियत की गई और निश्चय हुआ कि प्रति तीन वर्ष पश्चात् नये चुनाव किये जायें। यह कानून केवल बाईस वर्ष रहा।

५. स्काटलैंड का विद्रोह, 1689 Rebellion in Scotland

स्काटलैंड की पार्लिमेंट ने तो विलियम को राजा स्वीकार कर लिया था। परन्तु वहाँ के पहाड़ी कुलों (Clans) ने उसे अपना राजा मानने से इनकार कर दिया और जेम्स द्वितीय के पक्ष में विद्रोह कर दिया। इन का नेता एक सरदार *वाईकौंट डन्डी* (Viscount Dundee) था। विलियम तृतीय ने उसके विरुद्ध सेना भेजी, परन्तु इस सेना को *किल्लीक्रैंकी*

(Killiecrankie) के दर्रे में पराजय हुई परन्तु ठीक विजय के समय वाईकौंट डन्डी मारा गया। परिणाम यह हुआ कि उसकी सेना अपने घरों को लौट गई और स्काटलैंड में *विलियम का अधिकार जम गया।*

स्काटलैंड का विद्रोह शान्त हो जाने के पश्चात् विलियम ने घोषणा की कि जो कुल (Clans) प्रथम जनवरी 1692 ई० से पहिले-पहले उसकी अधीनता स्वीकार कर लेंगे उन्हें क्षमा दे दी जायेगी। शाप सब कुलों के सरदारों ने नियत अवधि तक अधीनता स्वीकार कर ली, परन्तु ग्लैंको (Glencoe) के कुल मैकडानल्ड (Macdonald) के सरदार (मैगइन) को आकस्मिक देर हो गई। विलियम के मन्त्रियों ने उसको शिक्षाप्रद दण्ड देना चाहा। इसलिये यह काम मैकडानल्ड कुल की पुरानी शत्रुकुल कैम्पबैल्ज़ (Campbells) को सौंपा गया। ये लोग पाहुनों की भाँति ग्लैंको पहुँचे। मैकडानल्ड कुल के लोगों ने उन पर किसी प्रकार का सन्देह न करते हुये उनकी खूब आवभगत की। कोई दो सप्ताह पश्चात् एक दिन प्रातः जब मैकडानल्ड कुल के लोग सो रहे थे, ये लोग उन पर टूट पड़े और सर्वघात कर दिया। इस घटना को *ग्लैंको का सर्वघात* (Massacre of Glencoe) कहते हैं।

६ ग्लैंको का सर्वघात 1692 Massacre of Glencoe

विलियम चूँकि प्रोटेस्टैंट था इसलिये आयरलैंड के लोगों ने जो अधिकतर रोमन कैथोलिक थे उसे अपना राजा स्वीकार न किया और जेम्ज़ द्वितीय के पक्ष में विद्रोह कर दिया। जेम्ज़ यह देखकर कुछ सेना के साथ फ्रांस से आयरलैंड जा पहुँचा और वहाँ पहुँच कर उस ने अलस्टर प्रान्त के प्रोटेस्टैंट लोगों को जो विलियम के पक्षपाती थे *लण्डनडरी* (Londonderry) नगर में घेरे में ले लिया। फिर भी ये लोग बड़ी वीरता से डटे रहे, अन्त में इंगलैंड से सहायता आ पहुँची और जेम्ज़ का घेरा

७ आयरलैंड में विद्रोह Rebellion in Ireland 1689—1691

उठा लेना पड़ा। इसके बाद विलियम स्वयं आयरलैंड पहुँचा और जेम्स को बायन (Boyne) नदी की लड़ाई में मुँह तोड़ हार दी। जेम्स फ्रांस भाग गया। इसके कुछ काल पीछे जेम्स के पक्ष वालों को *लिमिरिक* (Limerick) के स्थान पर एक और पराजय हुई और उन्होंने *विलियम तथा मेरी को अपना शासक स्वीकार कर लिया।*

फ्रांस उन दिनों योरुप का सबसे शक्तिशाली देश था। इस लिए विलियम की यह प्रबल इच्छा थी कि उसकी शक्ति का घटा कर योरुप में शक्ति की सम्मारता (Balance of Power) स्थापित की जावे। इङ्गलैंड का राजा बनने के पूर्व वह लगभग बीस वर्ष तक फ्रांस के विरुद्ध लड़ता रहा था और इङ्गलैंड का सिंहासन स्वीकार करने का एक कारण यह भी था कि वह अंग्रेजों की शक्ति फ्रास के विरुद्ध प्रयोग करना चाहता था। सिंहासनारूढ़ होते ही उसने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया जो कोई आठ वर्ष रहा।

८. फ्रांस के साथ युद्ध War with France 1689—97

इस युद्ध का तत्कालीन कारण यह था कि फ्रांस का राजा लुई चौदहवाँ (Louis XIV) विलियम को इङ्गलैंड का शासक मानने को तैयार न था और वह जेम्स द्वितीय को जो फ्रांस में भाग गया हुआ था पुनः सिंहासन दिलाने में सहायता कर रहा था।

इस युद्ध में स्थल पर तो विलियम को फ्रांस के विरुद्ध कोई बड़ी सफलता न हुई, परन्तु 1692 ई० में *ला होग* (La-Hogue) के जल युद्ध में फ्रांसीसियों को मुँह तोड़ हार हुई। इसके पश्चात् भी युद्ध कुछ वर्षों तक होता रहा। अन्त में 1697 ई० में यह युद्ध संधि-पत्र *रिज़विक* (Ryswick) के अनुसार समाप्त हो गया। फ्रांस के *राजा ने विलियम को इंगलैंड का शासक स्वीकार कर लिया और जेम्स का साथ छोड़ दिया।*

फ्रांस के विरुद्ध युद्ध करने में इङ्गलैंड का बहुत सा रुपया व्यय हुआ। इस व्यय को राजा टैक्सों द्वारा पूरा न कर सका इस-

९ देशीय ऋण National Debt

लिये गवर्नमेंट को विवश होकर बहुत सा रुपया ऋण लेना पड़ा। ऋण की यह रकम लोगों को लौटा कर नहीं दी जाती, परन्तु इस रकम पर नियमानुसार सूद दिया जाता है। इस ऋण को National Debt कहते हैं।

१० The Bank of England 1694

1694 ई० में इंगलैंड में पहला बैंक अर्थात् Bank of England स्थापित किया गया। इसका उद्देश्य यह था कि लोगों से रुपया प्राप्त करके सरकार को आवश्यकता के समय दिया जाया करे।

विलियम निस्सन्तान था। इसलिये यह तो निश्चित बात थी कि उसकी मृत्यु पर मेरी की बहिन ऐन (Anne) रानी बनेगी। ऐन के कई बच्चे हुए परन्तु उन में से कोई भी जीवित न रहा। उसका अन्तिम पुत्र 1700 में मर गया। इसलिये इस बात का निर्णय करना आवश्यक था कि ऐन के बाद सिंहासन का अधिकारी कौन हो। इसलिये पार्लिमेंट ने 1701 ई० में ऐक्ट आफ़ सैटलमेंट (Act of Settlement) पास किया जिसके अनुसार सिंहासन के भावी अधिकारी का निर्णय हो गया। इससे निश्चित हुआ कि विलियम के बाद *ऐन सिंहासन पर बैठेगी और उसके बाद सोफ़िया इलेक्टरैस आफ़ हैनोवर* (Sophia Electress of Hanover) *और उसकी सन्तान सिंहासन की अधिकारिणी होगी*। सोफ़िया जेम्स प्रथम की पोहती और प्रोटैस्टेंट धर्म की अनुयायिनी थी।

☞ ११ ऐक्ट आफ़ सैटलमेंट 1701 ई० Act of Settlement

इसके अतिरिक्त ऐक्ट आफ़ सैटलमेंट के अनुसार यह भी निश्चय हुआ कि (१) इंगलैंड का शासक अवश्य चर्च आफ़ इंगलैंड का अनुयायी हुआ करे (२) न्यायालयों के जज बिना पार्लिमेंट की प्रार्थना के हटाये न जाया करें और (३) पार्लिमेंट की स्वीकृति के बिना इंगलैंड को किसी अन्य देश के युद्ध में सम्मिलित न होने दिया जाय

(४) इंगलैंड का शासक पार्लिमेंट की आज्ञा के बिना देश से बाहर न जाया करे। इस ऐक्ट के पास होने से राजा के अधिकार और भी घट गये और पार्लिमेंट की शक्ति बढ़ गई।

विलियम के समय की सर्वप्रसिद्ध घटना पार्टी गवर्नमेंट का आरम्भ था।

१२ पार्टी गवर्नमेंट का आरम्भ
Party Government

पार्टी गवर्नमेंट का आशय यह शासन प्रणाली है जिस में देश का प्रबन्ध करने के लिये मन्त्री उस पार्टी से चुने जायें जिसकी संख्या पार्लिमेंट में अधिक हो। आरम्भ में विलियम अपने मन्त्री *विग और टोरी* दोनों पार्टियों से चुना करता था, परन्तु यह सिस्टम ठीक सिद्ध न हुआ। इस लिये उसे यह परामर्श दिया गया कि वह अपने मन्त्री उस पार्टी से चुना करे जिसकी संख्या पार्लिमेंट में अधिक हो। विलियम ने शासन-कार्य चलाने के लिये अपने मन्त्री अधिक पार्टी से चुनने आरम्भ किय और इस प्रकार पार्टी सिस्टम का आरम्भ हुआ। (इस शासन प्रणाली का पूरा ब्यौरा जार्ज प्रथम के समय में दे रखा है।)

१३ विलियम की मृत्यु

1702 ई० में विलियम घोड़े से गिर कर मर गया। वह परदेशी होने के कारण सर्वप्रिय न था, परन्तु वह एक महान् शासक सिद्ध हुआ। उसने इंगलैंड की स्थिति को बहुत ऊँचा कर दिया।

Q Why is the reign of William III said to be so important in the History of England? (P U 1939)

प्रश्न—इंगलैंड के इतिहास में विलियम तृतीय का राज्यकाल क्यों इतना महत्त्वशाली कहा जाता है?

विलियम तृतीय के राज्यकाल का महत्त्व

इंगलैंड के इतिहास में विलियम तृतीय का राज्यकाल अत्यन्त महत्त्वशाली है। सच पूछो तो इस समय से *इंगलैंड में एक नया युग आरम्भ होता है।*

(१) *बिल आफ़ राइट्स* (Bill of Rights) ने यह निश्चित कर दिया *कि सब से महान् शक्ति*

पार्लिमेंट है न कि राजा। इसके अतिरिक्त कई अन्य फानून पास हुए जिन से पार्लिमेंट के अधिकार बढ़ते गये और राजा की शक्ति घटती गई। पहले पार्लिमेंट केवल आय के साधनों की ही स्वीकृति दे सकती थी, अब व्यय पर भी उसका अधिकार हो गया। एक कानून के अनुसार सेना पार्लिमेंट के अधीन हो गई। इन सब बातों से देश में वैधानिक शासन (Constitutional Government) स्थापित हो गया।

(२) टालरेशन ऐक्ट (Toleration Act) ने देश में धार्मिक स्वतन्त्रता की नींव डाल दी, यद्यपि रोमन कैथोलिक्स की अवस्था वैसी की वैसी रही।

(३) त्रैवर्षी कानून (Triennial Act) से निश्चय हो गया कि पार्लिमेंट के मेम्बरों का चुनाव नियत काल के पश्चात् हुआ करेगा। इस प्रकार राजा के लिये असम्भव हो गया कि दास वृत्ति वाली पार्लिमेंट को चिरकाल तक चलाता जाये।

(४) बैंक आफ़ इंगलैंड की स्थापना से व्यापार में वृद्धि हो गई और सरकार के लिये ऋण लेना भी सुगम हो गया।

(५) ऐक्ट आफ़ सैटलमेंट (Act of Settlement) ने इंगलैंड के शासक के लिये प्राटेस्टैंट होना अनिवार्य ठहरा दिया जिससे प्राटेस्टैंट धर्म की विशेष उन्नति हुई। इसके अतिरिक्त इसी फानून के अनुसार राजा से जजों को उनके पद से हटाने का अधिकार भी छीन लिया गया। अब जज स्वतन्त्रता से न्याय करने लगे और उन्हें किसी प्रकार का भय न रहा कि उस न्याय से उन्हें कोई हानि पहुँचेगा।

(६) कैबिनेट प्रणाली (Cabinet System) जो आजकल इङ्गलैंड की शासन विधि का अनिवार्य भाग है इसी राज्यकाल में आरम्भ हुई।

(७) इसी राज्यकाल में एक कानून द्वारा समाचार पत्रों पर से रुकावटें भी हटा ली गईं और जनता अपने विचारों को स्वतन्त्रता से प्रकट करने लगी।

(८) परन्तु विलियम का प्रशंसनीय काम उसकी बाह्य नीति है।

उनके राज्यकाल से पूर्व इंगलैंड फ्रॉस की राजनैतिक दासता में था और चार्ल्स द्वितीय और जेम्स द्वितीय फ्रॉस के राजा के एक प्रकार से अधीन थे। परन्तु विलियम ने फ्रांस से युद्ध छेड़ कर इंगलैंड के प्रभुत्व को बहुत बढ़ा लिया और वह फ्रांस की अधीनता से स्वतन्त्र हो गया। बाद के युद्धों में विजय पाने से इंगलैंड को संसार में उतना ही गौरव प्राप्त हो गया जितना कि ऐलिज़बैथ के समय में था।

☞ *संक्षिपतः विलियम ने अपनी नीति से प्राटैस्टैंट धर्म को सुदृढ़ किया, स्टुअर्ट वंश के पुनः स्थापन होने को असम्भव बना दिया, फ्रॉस की अधीनता का जुआ उतार फैंका और देश में वैधानिक शासन पक्का कर दिया।*

रानी ऐन

QUEEN ANNE
1702—1714

रानी ऐन मेरी की बहिन थी और चूँकि विलियम तथा मेरी निस्सन्तान थे इसलिये

सिंहासनारूढ़ होना विलियम के बाद बिल आफ़ राइट्स तथा ऐक्ट आफ़ सैटलमैंट के अनुसार ऐन सिंहासनारूढ़ हुई। वह अपने शासनकाल का अधिक समय Duke of Marlborough तथा उसकी स्त्री के प्रभावाधीन रही। उसके राज्यकाल की दो प्रसिद्ध घटनाएँ हैं-(१) स्पेन का सिंहासनारोहण सम्बन्धी युद्ध और (२) इंगलैंड तथा स्काटलैंड का मिलाप।

Queen Anne

☞ Q Give the causes, main events and results of the War of Spanish Succession
(P U 1933-36-40-44 50) Or, (V Important)

Describe the part played by Marlborough in the War of Spanish Succession What did England gain by this war ?

प्रश्न—स्पेन के सिंहासनारोहण सम्बन्धी युद्ध के कारण, प्रसिद्ध घटनाओं और परिणामों का वर्णन करो।

स्पेन के सिंहासनारोहण का युद्ध

THE WAR OF SPANISH SUCCESSION 1702—1713

स्पेन के सिंहासनारोहण का युद्ध इंगलैंड के इतिहास में एक बड़ा प्रसिद्ध युद्ध था। इसमें एक ओर *इंगलैंड, हालैंड* और *आस्ट्रिया* थे तथा दूसरी ओर *फ्रांस* था। यह युद्ध १२ वर्ष होता रहा। अन्ततः इस में फ्रांस को पराजय हुई।

युद्ध का कारण—स्पेन का राजा *चार्ल्स द्वितीय* (Charles II) रोगी था और शीघ्र मरने वाला था। उसकी कोई सन्तान न थी, परन्तु उसके कुछ निकट के सम्बन्धी सिंहासन के दावेदार थे। उनमें से एक फ्रांस के राजा लुई चौदहवें (Louis XIV) का पोता *फ़िलिप* (Philip) था और दूसरा आस्ट्रिया का युवराज *आर्च ड्यूक चार्ल्स* (Archduke Charles) था। स्पेन का साम्राज्य इतना विस्तृत था कि यदि किसी एक अधिकारी के हाथ में आ जाता तो योरुप की शक्ति की सम्भारता (Balance of Power) स्थिर नहीं रह सकती थी। विलियम यह कदापि सहन न कर सकता था कि इस साम्राज्य का अकेला स्वामी *फ़िलिप* नियत हो जाये क्योंकि *इस प्रकार फ्रांस की शक्ति* अत्यधिक हो जाने का डर था। इसलिये उसने फ्रांस के राजा की अनुमति से दावेदारों के बीच बँटवारे की सन्धि (Partition Treaty) करा दी जिसके अनुसार स्पेन का साम्राज्य दो भागों में विभक्त हो गया।

परन्तु जब 1700 ई० में स्पेन के राजा की मृत्यु हो गई तो ज्ञात हुआ कि उसने अपने अन्तिम पत्र (वसीयत) में फ़िलिप को अपना

अकेला उत्तराधिकारी नियत किया हुआ है। लुई (Louis) ने बँटवारे के प्रतिज्ञा पत्र की उपेक्षा करते हुये स्पेन के सम्पूर्ण साम्राज्य पर अपने पोते *फ़िलिप* का अधिकार स्वीकार कर लिया और इस भाँति फ्राँस *संसार में सबसे शक्तिशाली साम्राज्य बन गया।* इस पर विलियम को बड़ा क्रोध आया और उसने फ्राँस के विरुद्ध युद्ध छेड़ना चाहा। विलियम ने *इंगलैंड, हालैंड* और *आस्ट्रिया* के बीच एक मेल स्थापित कर लिया जिसे Grand Alliance कहते हैं।

तत्कालीन कारण—अंग्रेज तो फ्राँस के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयार न थे, परन्तु 1701 ई० में जेम्स द्वितीय मर गया तो *लुई चौदहवें* (Louis XIV) ने (रिज़विक के सन्धि-पत्र की उपेक्षा करते हुए) उसके पुत्र को जेम्स *तृतीय* (James III) के नाम से इंगलैंड का राजा स्वीकार कर लिया। इस पर अंग्रेज भड़क उठे और उन्होंने बड़े वेग से युद्ध की तैयारियाँ आरम्भ कर दीं। परन्तु इसी बीच में विलियम घोड़े से गिर कर मर गया, इसलिये यह युद्ध, जो उस समय तक अंग्रेजी इतिहास में सबसे बड़ा युद्ध था, रानी ऐन के समय में आरम्भ हुआ।

घटनाएँ Events

इस युद्ध में हालैंड और इंगलैंड की सेनाओं का सेनापति प्रसिद्ध अङ्गरेज़ी जैनरल ड्यूक *आफ़ मालबरो* (Duke of Marlborough) था और आस्ट्रिया की सेनायें *प्रिंस युजीन* (Eugene) के अधीन थीं। इस युद्ध की प्रसिद्ध लड़ाइयाँ निम्नलिखित थीं —

१ ब्लैनहाइम (Blenheim) की लड़ाई, 1704—फ्राँसीसी सेनाओं ने आस्ट्रिया की राजधानी *वीआना* (Vienna) पर अधिकार करना चाहा ताकि आस्ट्रिया को परास्त किया जाय। परन्तु मालबरो और युजीन ने उन्हें मार्ग में ही *ब्लैनहाइम* (जर्मनी स्थित) के *स्थान पर बुरी तरह हराया।* फ्राँसीसी जैनरल (Marshal Tallard) और सहस्रों सैनिक बन्दी बना लिये गये। *इस हार से फ्राँसीसी सेना की शक्ति का जादू टूट गया। आस्ट्रिया नष्ट होने से बच गया* और युद्ध का
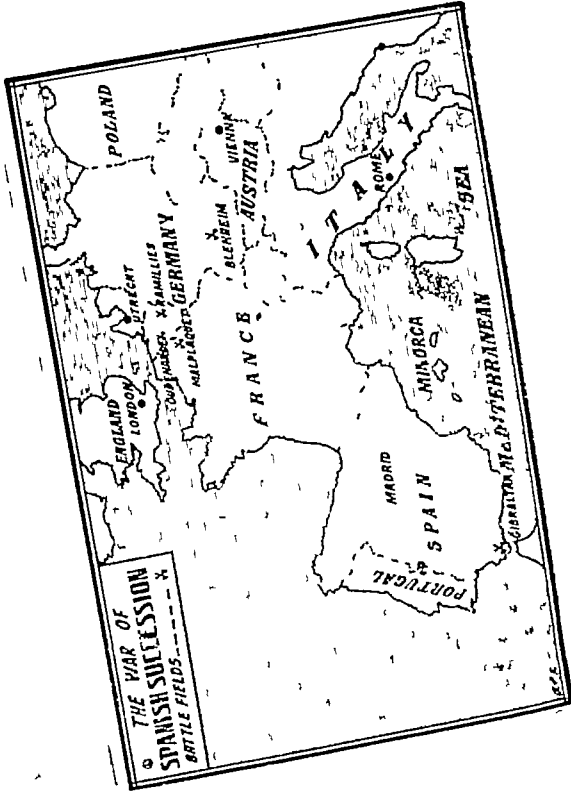
पाँसा ही पलट गया। मार्लबरो योरुप का सबसे प्रसिद्ध पुरुष बन गया।

२ जिब्राल्टर (Gibraltar) की विजय, 1704—समुद्र पर भी अंग्रेजों को कई विजयें प्राप्त हुईं। 1704 ई० में अंग्रेजी जल-सेनापति रुक (Rooke) ने *जिब्राल्टर का दुर्ग जो रोम सागर की कुन्जी है, विजय कर लिया*। उस समय से लेकर जिब्राल्टर अंग्रेजों के अधिकार में ही है। इसके कुछ वर्ष पश्चात् (1708 ई० में) अंग्रेजों ने *माईनार्का* (Minorca) द्वीप भी जो रोम सागर में है जीत लिया। *इससे अंग्रेजों की स्थिति रोम सागर में सुदृढ़ हो गई*।

नैदरलैंड में युद्ध—इसके बाद मार्लबरो ने नैदरलैंड में जो फ्राँसीसियों के अधीन था निम्नलिखित स्थानों पर फ्राँसीसियों को हराया —

१ रेमेली (Ramillies), 1706 ई०
२ उडनार्ड (Oudenarde), 1708 ई०
३ मालप्लेके (Malplaquet), 1709 ई०

इन लड़ाइयों के परिणाम स्वरूप फ्राँसीसियों को नेदरलैंड खाली करना पड़ा और वे अपने देश फ्राँस में चले गये। मार्लबरो ने उन्हें वहाँ भी परास्त करना चाहा। परन्तु उसे सफलता न हुई और कई वर्ष व्यर्थ लड़ाइयों में बीत गय।

अन्त में 1713 ई० में यूट्रेक्ट के सन्धि पत्र के अनुसार यह युद्ध समाप्त हो गया।

यूट्रेक्ट (Utrecht) के *सन्धि-पत्र की शर्तें निम्नलिखित थीं*:—

यूट्रेक्ट का सन्धि पत्र, 1713

१—फ्राँस के राजा लुई चौदहवें के पोते *फ़िलिप* को स्पेन का शासक मान लिया गया। परन्तु यह शर्त लगा दी गई कि *स्पेन और फ्राँस का शासक कभी एक पुरुष न होगा*। इससे *फ्राँस के अधिक शक्तिशाली बन जाने की सम्भावना जाती रही*।

२—स्पेन साम्राज्य का कुछ भाग जिसमें नैदरलैंड भी था आस्ट्रिया के राजा को दे दिया गया।

३—लुई चौदहवें ने रानी ऐन को इङ्गलैंड की रानी स्वीकार कर लिया और जेम्स तृतीय का साथ छोड़ दिया।

☞४—इङ्गलैंड को योरुप में जिब्राल्टर (Gibraltar) और माईनार्का (Minorca) और अमेरिका में नोवा स्कोशिया (Nova Scotia), न्यूफ़ाउण्डलैंड (Newfoundland) तथा खाड़ी हडसन के इर्द गिर्द का प्रदेश (Hudson Bay Territory) मिल गये।
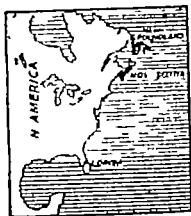
५—अङ्गरेज़ों को अमेरिका में दासव्यापार का ठेका दिया गया और प्रतिवर्ष एक जहाज़ व्यापार के लिये दक्षिणी अमेरिका भेजने का अधिकार मिल गया।

महत्त्व (Importance)—(i) यूट्रेक्ट के सन्धि पत्र के कारण फ्रांस की योजनायें मिट्टी में मिल गईं, क्योंकि फ्रांस और स्पेन का एक शासक के अधीन होना असम्भव हो गया।

(ii) इङ्गलैंड को अत्यन्त महत्वशाली बस्तियाँ हाथ लगीं और उसे व्यापार सम्बन्धी सुगमतायें भी प्राप्त हो गईं, जिससे उसकी शक्ति तथा व्यापार बहुत बढ़ गया। जिब्राल्टर तथा माईनार्का पर अधिकार हो जाने से रोम सागर पर अंग्रेज़ी अधिकार हो गया, और नोवास्कोशिया तथा न्यूफ़ाउण्डलैंड के मिलने से उत्तरी अमेरिका में उसकी शक्ति बढ़ गई।

(iii) इस युद्ध में फ्रांस बहुत थक गया था, परन्तु इङ्गलैंड को कोई विशेष हानि नहीं पहुँची थी। अतः इङ्गलैंड के लिये अपने साम्राज्य तथा व्यापार का बढ़ाना अब अधिक सुगम हो गया। वह योरुप में सबसे शक्तिशाली देश बन गया।

☞Q Write short notes on —

(i) The Union of Scotland and England. (1949)
(ii) The Duke of Marlborough. (1943-51)

प्रश्न—*निम्नलिखित पर नोट लिखो* —

(1) *इंगलैंड तथा स्काटलैंड का पूर्ण मिलाप।*

(2) *ड्यूक आफ़ मार्लबरो।*

इंगलैंड तथा स्काटलैंड का मिलाप

Union of Scotland and England 1707

इंगलैंड तथा स्काटलैंड का मिलाप रानी ऐन के समय की सर्व प्रसिद्ध घटना है। यूँ तो 1603 ई० से अर्थात् जेम्ज़ प्रथम के इंगलैंड का बादशाह बनने से लेकर इंगलैंड और स्काटलैंड एक ही शासक के अधीन इकट्ठे हो गये थे परन्तु चूँकि इन दोनों देशों की पार्लिमेंट पृथक् पृथक् थीं, इसलिये यह मेल अधूरा सा था। *आलिवर क्रामवैल* ने दोनों देशों की पार्लिमेंट भी एक कर दी थी, परन्तु कामनवैल्थ के समाप्त होते ही फिर दोनों देशों की पार्लिमेंट पृथक्-पृथक् हो गई। *विलियम तृतीय* ने भी इन देशों में मिलाप स्थापित करने की चेष्टा की परन्तु उसे सफलता न हुई।

स्काटलैंड के निवासी इंगलैंड के साथ व्यापार में समान अधिकारों के न होने तथा धार्मिक भेदभाव और अन्य कई कारणों से अप्रसन्न थे, इसलिये उन्होंने 1703 ई० में ऐक्ट आफ़ *सिक्युरिटी* (Act of Security) पास किया जिसके अनुसार उन्होंने निश्चय किया कि *यदि उन्हें इंगलैंड के बराबर व्यापारिक अधिकार न दिये गये तो रानी ऐन की मृत्यु के बाद वे अपना पृथक् शासक नियत करेंगे।* इससे इंगलैंड को बड़ी चिन्ता हुई। अन्त में दोनों देशों की एक कमीशन नियत हुई, जिसके यत्नों से 1707 ई० में रानी ऐन के समय में संयुक्ति का कानून (Act of Union) पास हो गया। इस कानून से दोनों देश संयुक्त हो गये।

धारायें (Provisions)—संयुक्ति के कानून की धारायें निम्न लिखित थीं :—

१—दोनों देशों को मिला कर ग्रेट ब्रिटेन (Great Britain) का नाम दिया गया और उनके सम्मिलित जातीय झंडे का नाम Union Jack रखा गया।

२—दोनों देशों की पार्लिमेंट एक कर दी गई जिसके अधिवेशन लण्डन में होने निश्चित हुए। स्काटलैंड को 45 मैम्बर हाउस आफ कामन्स में और 16 लार्डज, हाउस आफ लार्डज़ में भेजने का अधिकार दिया गया।

३—व्यापार की दृष्टि से दोनों देशों को समान अधिकार दिए गये।

४—स्काटलैंड का अपना धर्म पृथक् ही रहा और कानून में भी कुछ भेद रहा।

इस मेल को आरम्भ में तो स्काटलैंड ने पसंद न किया और इसे रद्द करने की चेष्टायें कीं। परन्तु बाद में दोनों देशों में मिलाप हो गया।

ड्यूक आफ़ मार्लबरो

ड्यूक आफ मार्लबरो जिसका वास्तविक नाम जान चर्चिल (John Churchill) था Duke of Marlborough इङ्गलैंड का एक प्रसिद्ध सेनापति था। वह युद्ध क्षेत्र में बड़ा दृढ़ संकल्प जरनैल था। उसमें एक बड़ा गुण यह था कि वह शत्रु की शिथिलता को झट ताड़ जाता था। इङ्गलैंड ने ड्यूक आफ़ वैलिंगटन (Duke of Wellington) के अतिरिक्त और कोई जरनैल उसकी तुलना का उत्पन्न नहीं किया। मार्लबरो के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि "उसने कोई ऐसी

ड्यूक आफ़ मार्लबरो

Marlborough

लड़ाई नहीं लड़ी जिसमें उसे सफलता न हुई हो और न ही उसने किसी ऐसे स्थान का घेरा किया जिसे विजय करके न छोड़ा हो।" यही कारण है कि वह संसार के सर्वोत्तम जरनैलों में गिना जाता है। मार्लबरो एक योग्य जरनैल होने के अतिरिक्त एक नीतिज्ञ और शक्तिशाली प्रबन्धकर्ता भी था। उसका स्वभाव बड़ा मनोरञ्जक था।

परन्तु *जहाँ उसमें इतने गुण थे वहाँ कई अवगुण भी थे।* वह लोभी स्वार्थी तथा मित्र-द्रोही था। उसका कोई सिद्धांत न था। वह निजी स्वार्थ के लिए अपने मित्रों तक को भी छोड़ देता था। वह जेम्ज़ को भी छोड़ कर विलियम के साथ मिल गया, परन्तु जेम्ज़ के साथ निरन्तर पत्र-व्यवहार करता रहा। इसके पश्चात् वह रानी ऐन के समय में सेनापति और कुछ काल के लिये प्रधान मन्त्री भी रहा।

ऐन ने उसे *ड्यूक आफ़ मार्लबरो* की उपाधि दी। स्पेन के सिंहासनारोहण के युद्ध में जो ऐन के समय में हुआ, मार्लबरो ने फ्रांसीसियों को निरन्तर कई बार हरा कर इंगलैंड की सैनिक शक्ति का सिक्का बिठा दिया। 1722 ई० में ७२ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हुई। *मार्लबरो वास्तव में संसार के सर्वोत्तम जरनैलों में से एक था।*

नोट—इंगलैंड के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ Mr Winston Churchill ने जो ड्यूक आफ़ मार्लबरो का वंशज है ड्यूक का जीवन चरित्र लिखा है, जिसमें उसने यह प्रकट किया है कि ड्यूक लोभी, मित्र द्रोही, तथा स्वार्थी न था।

———

हैनोवर वंश

(HANOVERIAN DYNASTY)

1714—1901

१—जार्ज प्रथम 1714—1727 ई०

२—जार्ज द्वितीय 1727—1760 ई०

३—जार्ज तृतीय 1760—1820 ई०

४—जार्ज चतुर्थ 1820—1830 ई०

५—विलियम चतुर्थ 1830—1837 ई०

६—महारानी विक्टोरिया 1837—1901 ई०

हैनोवर वंशावली

१ जार्ज प्रथम

२ जार्ज द्वितीय

प्रिंस आफ वेल्स, पिता के जीते ही मर गया — ड्यूक आफ कम्बरलैंड

३ जार्ज तृतीय

४ जार्ज चतुर्थ — ५ विलियम चतुर्थ — ऐडवर्ड ड्यूक आफ कैंट

६ महारानी विक्टोरिया = प्रिंस ऐल्बर्ट
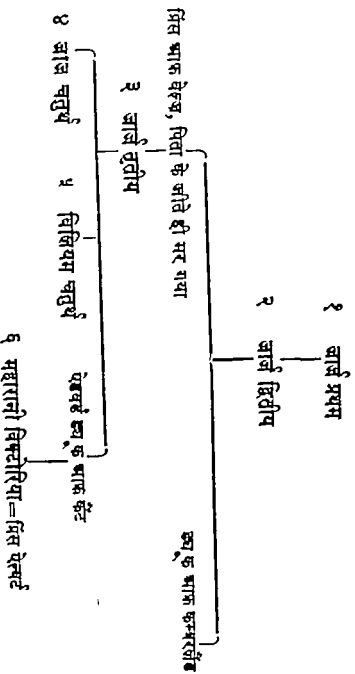
जार्ज प्रथम

GEORGE I

1714—1727

Q What claim had George I to the throne of England ? Briefly describe his character and the results of his accession (P U 1942) Also give the important events of his reign.

प्रश्न—जार्ज प्रथम का इंगलैंड के सिंहासन पर क्या अधिकार था ? उसके चरित्र तथा उसके सिंहासनारोहण होने के परिणाम लिखो। उसके शासनकाल की प्रसिद्ध घटनाओं का भी वर्णन करो।

जार्ज प्रथम का अधिकार

जार्ज प्रथम इंगलैंड के राजा जेम्स प्रथम की दोहती सोफ़िया (Sophia Electress of Hanover) का पुत्र था। 1701 ई० के एक्ट आफ सैटलमैंट (Act of Settlement) के अनुसार यह निश्चय किया गया था कि ऐन के पश्चात् इंगलैंड के सिंहासन पर सोफ़िया तथा उसकी सन्तान का अधिकार होगा। परन्तु सोफ़िया महारानी ऐन की मृत्यु के पूर्व ही मर चुकी थी। इसलिये एन के बाद सोफ़िया का पुत्र जार्ज प्रथम (George I) इंगलैंड का राजा बना। वह जर्मनी की रियासत हैनोवर का शासक था, इसलिये इस वंश का जो जार्ज प्रथम से प्रारम्भ हुआ हैनोवर वंश कहते हैं।

जार्ज का आचार Character

जब जार्ज प्रथम इंगलैंड का राजा बना, उसकी आयु चौव्वन (५४) वर्ष की थी। वह इससे पूर्व कभी इंगलैंड में नहीं आया था और अंग्रेजी भाषा का एक अक्षर भी नहीं जानता था। उसके ढंग तथा स्वभाव भी मनोरंजक न थे। वह अपना समय अपनी जन्मभूमि हैनोवर में ही बिताता था और उसे इंगलैंड के राजनैतिक विषयों में

कोई विशेष रुचि न थी। यही कारण था कि वह इङ्गलैंड में सर्वप्रिय न हो सका। उसके राजा बनाये जाने का सब से बड़ा कारण यह था कि वह *प्रोटेस्टैंट था और इंगलैंड के लोग किसी कैथोलिक को राजा बनाना नहीं चाहते थे।*

जार्ज प्रथम का सिंहासनारोहण इङ्गलैंड के इतिहास में एक बड़ी महत्वशाली घटना है। इसके प्रसिद्ध परिणाम ये थे —

जार्ज प्रथम के सिंहासनारूढ होने के परिणाम

१—इङ्गलैंड में *जनता-राज्य* (Democracy) की *नींव पड़ गई।* कहावत है कि इङ्गलैंड का राजा राज्य करता है शासन नहीं करता। इङ्गलैंड का पहला राजा जिसने राज्य किया और शासन न किया जार्ज प्रथम था। धीरे २ सब शक्ति राजा के हाथ से निकल कर मन्त्रिमण्डल के हाथों में आ गई।

२—गवर्नमेंट का *पार्टी सिस्टम* जो विलियम तृतीय के समय में आरम्भ हुआ था दृढ़ रूप से स्थापित हो गया। जार्ज अङ्गरेज़ी भाषा से अपरिचित था, इस कारण *महामन्त्री* (Prime Minister) का पद आरम्भ हो गया।

३—*विग पार्टी* ने जिसकी सहायता से जार्ज प्रथम सिंहासन पर बैठा था अपनी शक्ति को कई वर्षों तक स्थिर रक्खा।

४—जार्ज प्रथम इङ्गलैंड और हैनोवर दोनों देशों का राजा था इसलिये इङ्गलैंड को अब *महाद्वीप के पालिटिक्स में भी उलझना* पड़ा।

जार्ज प्रथम के समय की प्रसिद्ध घटनाएँ निम्नलिखित थीं —

प्रसिद्ध घटनाएँ

(१) *जैकोबाईट विद्रोह* 1715 (२) *सप्तवर्षीय क़ानून* 1716 (३) *साउथ सी कम्पनी* (४) *पार्टी सिस्टम आफ़ गवर्नमेंट की दृढ़ता और प्रधान मन्त्री के पद का आरम्भ होना।*

JACOBITE REVOLTS
1715 & 1745
BATTLE FIELDS
FALKIRK
PRESTON
IRELAND
LONDON
English Channel
FRANCE

जेम्स द्वितीय के पक्षपातियों को, जिन्हें*जैकोबाइट्स (Jacobites) कहते थे, यह कदापि पसन्द न था कि जार्ज प्रथम इंग्लैंड का राजा बने। इसलिये उन्होंने यत्न किया कि उसे गद्दी से उतार कर जेम्स द्वितीय के पुत्र जेम्स तृतीय को जो इतिहास में *ओल्ड प्रीटेंडर* (Old Pretender) के नाम से प्रसिद्ध है गद्दी पर बैठाया जाए।

१-Jacobite Rebellion 1715

1715 ई० में स्काटलैंड और इंगलैंड दोनों देशों में जेम्स के पक्ष में विद्रोह हुआ और एक ही दिन में दो लड़ाइयाँ हुईं, एक इंगलैंड में प्रैस्टन (Preston) के स्थान पर और दूसरी स्काटलैंड में *शैरफ़म्यूर* (Sheriffmuir) के स्थान पर (देखो चित्र पृष्ठ १४८)। परन्तु जैकोबाइट्स को सफलता न हुई। इसके बाद जेम्स स्वयं स्काटलैंड पहुँचा, परन्तु वह कायर तथा आलसी था, इसलिये किसी ने भी उसकी सहायता न की, और वह फ्रांस को लौट गया। इस भाँति विद्रोह दब गया। इस विद्रोह को **पन्द्रह का विद्रोह** (The Fifteen) भी कहते हैं।

विलियम के समय में त्रैवर्षी कानून (Triennial Act) पास हुआ था जिससे पार्लिमेंट की अवधि तीन वर्ष नियत हो गई थी। परन्तु जब जार्ज प्रथम के समय 1716 में पार्लिमेंट का नया चुनाव होना था तो उस समय जैकोबाइट्स के विद्रोह से अशान्ति फैली हुई थी और इस बात का भय था कि कहीं इस नये चुनाव में जार्ज प्रथम के विरोधियों की बहुसंख्या न हो जाये। इसलिये 1716 ई० में *सप्तवर्षीय कानून* (Septennial Act) पास किया गया, *जिससे पार्लिमेंट की अवधि सात वर्ष नियत कर दी गई* (यह कानून 1911 ई० तक प्रचलित रहा। 1911 ई० से पार्लिमेंट की अवधि पाँच वर्ष कर दी गई है।)

२. Septennial Act सप्तवर्षीय कानून 1716

---

*लातीनी भाषा में James को Jacob कहते हैं।

1711 ई० में इङ्गलैंड में एक कम्पनी स्थापित हुई जिसका नाम South Sea Company रखा गया। इस कम्पनी का उद्देश्य दक्षिणी अमेरिका के देशों से व्यापार करना था। शीघ्र ही इस कम्पनी ने खूब उन्नति की और देशीय ऋण (National Debt) चुका देने की प्रतिज्ञा पर गवर्नमेंट से दक्षिणी अमेरिका के देशों के साथ व्यापार करने का एकाकी अधिकार ले लिया। इस से लोगों के हृदय में यह विचार हो गया कि गवर्नमेंट इस कम्पनी की पुष्टि कर रही है। इसलिये उन्होंने इस कम्पनी के भाग धड़ाधड़ मोल लेने आरम्भ किये। भागों की इतनी माँग बढ़ जाने का परिणाम यह हुआ कि सौ पौंड वाले भाग के दाम हजार पौंड तक जा पहुँचे।

१ South Sea Company 1711-1720

इस कम्पनी को इस प्रकार उन्नति करते देख और भी बहुत सी कम्पनियाँ स्थापित हो गईं जिनमें से कई तो केवल लोगों से धन ऐंठने के लिये चलाई गई थीं, परन्तु शीघ्र ही इनका भेद खुल गया और वे टूट गईं। अब यह बात स्पष्ट है कि जब एक कम्पनी टूट जाती है तो लोगों को ईमानदार कम्पनियों पर भी विश्वास नहीं रहता। इस लिये 1720 ई० में लोगों में सनसनी फैल गई और उन्होंने साउथ सी कम्पनी के भाग भी बेचने आरम्भ कर दिये। परन्तु ग्राहक बहुत थोड़े थे। परिणाम यह हुआ कि कम्पनी के भागों के दाम बहुत गिर गये। कई लोग सर्वथा निर्धन हो गये। चूँकि थोड़े ही काल में इस कम्पनी के भागों का मूल्य इतना बढ़ गया और फिर शीघ्र ही इतना गिर गया इसलिये लोग इस कम्पनी को "दक्षिणी समुद्रों का बुलबुला" (South Sea Bubble) के नाम से पुकारने लगे और कहने लगे कि बुलबुला फट गया है। यह घटना 1720 ई० की है। इस बुलबुले के फट जाने से देश में एक बड़ी भारी विपत्ति उत्पन्न हो गई। व्यापार नष्ट हो गया और लोग निर्धन हो गये। इस दुर्दशा की अवस्था में जार्ज प्रथम ने सर राबर्ट वालपोल (Sir Robert Walpole) को अपना प्रधान

मन्त्री बनाया, क्योंकि सब की यही धारणा थी कि यह ही लोगों को आर्थिक पतन से बचा सकता है। वालपाल ने डाइरेक्टरों की सम्पत्ति बेचकर कम्पनी के हिस्सेदारों को उनके धन का एक-तिहाई रुपया वापस दिलवाया और देश में शान्ति स्थापित की।

जार्ज प्रथन के समय की सबसे महत्वशाली घटना पार्टी सिस्टम आफ़ गवर्नमेंट की स्थापना है। जार्ज अंग्रेजी भाषा से अपरिचित था और उसे इंगलैंड के पालिटिक्स में कोई रुचि न थी। इसी कारण महामन्त्री के पद का आरम्भ हुआ और पार्टी गवर्नमेंट स्थापित हो गई।

४—Party System of Government

☞Q Clearly describe the establishment of Party System of Government in England (P U 1956) (Important)

प्रश्न—*इंगलैंड में पार्टी सिस्टम आफ़ गवर्नमेंट की स्थापना का वर्णन करो।*

पार्टी सिस्टम आफ़ गवर्नमेंट

अभिप्राय—*पार्टी सिस्टम आफ़ गवर्नमेंट से अभिप्राय वह शासन प्रणाली है जिस में देश का प्रबन्ध उस पार्टी के हाथों में हो जिसकी पार्लिमेंट में बहुसंख्या हो।* इंगलैंड में कई पोलिटिकल पार्टियाँ हैं यथा लिबरल (Liberal), कान्सर्वेटिव (Conservative), लेबर (Labour), आदि। प्रत्येक पार्टी का एक नेता होता है। जब पार्लिमेंट का चुनाव होता है तो राजा सबसे अधिक संख्या वाली पार्टी के नेता को प्रधान मन्त्री नियुक्त कर देता है। फिर यह प्रधान मन्त्री अपनी पार्टी से कुछ एक योग्य पुरुषों को अपने साथ काम करने के लिये मन्त्री नियत कर देता है। *मन्त्रियों की इस छोटी सी सभा को* कैबिनेट (Cabinet) कहते हैं। प्रत्येक मन्त्री के पास शासन का कोई न कोई विभाग होता है और मन्त्रि-मण्डल देश का सारा प्रबन्ध करता है।

Party System of Government

यदि किसी कारण से बहुसंख्या वाली पार्टी अपनी अधिकता स्थिर न रख सके तो जिस पार्टी की संख्या अधिक हो जाती है वह अपना मन्त्रि-मण्डल बना लेती है और देश का प्रबन्ध उसके अधीन हो जाता है। इस भाँति सदा वही पार्टी शासन का काम चलाती है जिस की संख्या अधिक हो। इस शासन प्रणाली को पार्टी सिस्टम आफ़ गवर्नमेंट कहते हैं। बहुसंख्या वाली पार्टी को Party in Power और दूसरी पार्टी को Opposition Party कहते हैं।

पार्टी सिस्टम आफ़ गवर्नमेंट का आरम्भ—पार्टी सिस्टम आफ़ गवर्नमेंट का आरम्भ विलियम तृतीय के समय में हुआ। विलियम तृतीय को इंगलैंड का शासक बनने के लिये *विग* (लिबरल) और टोरी (कान्सर्वेटिव) दोनों पार्टियों ने आमन्त्रित किया था। इसलिये वह शुरू शुरू में अपने मन्त्री दोनों पार्टियों से चुना करता था। परन्तु विभिन्न पार्टियों में से होने के कारण उन मन्त्रियों में सदा झगड़ा रहता था और शासन कार्य भली भाँति नहीं हो सकता था। इसलिये विलियम ने विवश हो कर अपने मन्त्री बहुसंख्या वाली पार्टी से चुनने आरम्भ कर दिये और इस प्रकार पार्टी सिस्टम आफ़ गवर्नमेंट का आरम्भ हुआ। परन्तु इस समय तक राजा स्वयं ही मन्त्री चुनता था और मन्त्रि-मण्डल अर्थात् कैबिनेट के अधिवेशनों का प्रधान भी राजा स्वयं ही हुआ करता था। प्रधान मन्त्री कोई नहीं होता था।

पार्टी सिस्टम की दृढ़ता—यद्यपि पार्टी सिस्टम की नींव विलियम तृतीय के समय में पड़ी, परन्तु यह शासन प्रणाली अधिक दृढ़ जार्ज प्रथम के समय में हुई। इसका कारण यह था कि जार्ज प्रथम इंगलैंड में एक परदेशी था। न तो वह अंग्रेज़ी ही जानता था और न ही उसके मन्त्री जर्मन भाषा जानते थे। उसे इंगलैंड के राजनैतिक विषयों में रुचि भी न थी। इसलिये उसने कैबिनेट के अधिवेशनों में सम्मिलित होना ही छोड़ दिया और उसके स्थान में कोई एक मन्त्री ही जो दूसरों से अधिक प्रभावशाली होता था प्रधानपद के कार्य को पूरा करने लगा

गया। धीरे धीरे प्रधान-मन्त्री को Prime Minister कहने लग गये और इस प्रकार जार्ज प्रथम के समय में प्रधान-मन्त्री का पद आरम्भ हुआ। *इंगलैंड का सब से पहला प्रधान मन्त्री* सर राबर्ट वालपोल (Sir Robert Walpole) *था।*

जार्ज प्रथम स्वय कैबिनेट के अधिवेशनों में सम्मिलित नहीं होता था और न उसे इङ्गलैंड के राजनैतिक विषयों में कोई रुचि ही थी। इसलिए मन्त्रियों के निर्णय गवनमेंट के निर्णय हो जाते थे और राजा उन्हें स्वीकार कर लिया करता था। इसके पश्चात् यह चाल चल पड़ी कि इङ्गलैंड का शासक मन्त्रियों के अधिवेशन में सम्मिलित न हो। इस प्रकार मन्त्रियों के अधिकार अत्यधिक हो गए और राज्य का सारा प्रबन्ध उन्हीं के हाथों में आ गया। इस से पार्टी सिस्टम आफ गवर्नमेंट अधिक दृढ़ हो गया।

जार्ज द्वितीय
GEORGE II
1727—1760

जार्ज द्वितीय 1727 ई० में सिंहासनारूढ़ हुआ। यह अपने पिता के सदृश जर्मन था। परन्तु यह अंग्रेजी भाषा बोल सकता था और अपने पिता की अपेक्षा इंगलैंड के विषयों में अधिक भाग लिया करता था। वह एक वीर सैनिक भी था। उसके शासन काल के पहले भाग में अर्थात् (1742 ई० तक) वालपोल उसका सब से बड़ा मन्त्री था।

☞ Q Give an account of the career and administration of Sir Robert Walpole In what different ways did England benefit from his administration ?
(P U 1931-37-39-41-45 48-50-52-53-55)

(V Important)

प्रश्न—*सर राबर्ट वालपोल के जीवन तथा मन्त्रित्व का वर्णन करो। इंगलैंड को उसके कार्य से क्या लाभ हुआ ?*

सर राबर्ट वालपोल
(SIR ROBERT WALPOLE)

सर राबर्ट वालपोल इंगलैंड का सब से पहला प्रधान मन्त्री तथा अपने समय का सब से प्रसिद्ध ह्विग राजनीतिज्ञ था। यह 1676 ई० में नार्फोक (Norfolk) के एक जमींदार के यहाँ उत्पन्न हुआ और उसने ईटन (Eton) में शिक्षा प्राप्त की। 1702 ई० में यह पार्लिमेंट का मेम्बर बना और इसके कुछ ही वर्षों के पीछे उसने अपनी योग्यता से पर्याप्त शक्ति प्राप्त कर ली। 'साउथ सी बबल' के फटने पर जब कि हजारों वंश निर्धन हो गये थे यह महामंत्री बना, क्योंकि यह आर्थिक विषयों में बड़ा निपुण था और लोगों की राय में यह ही एक पुरुष था जो विपत्ति में देश को बचा सकता था। वालपोल 1721 से 1742 ई० तक अर्थात् इक्कीस वर्ष इस पद पर रहा। इतना समय कोई अन्य पुरुष महामन्त्री नहीं रहने पाया।

Sir Robert Walpole

Sir Robert Walpole

वालपोल का चरित्र
Character

वालपोल बड़ा चतुर तथा कर्तव्यशील पुरुष था। वह अवसर पहचानने वाला और आर्थिक तथा व्यापारिक विषयों का बड़ा जानकार था। वह एक अच्छा शिकारी था और कभी किसी प्रकार की चिन्ता नहीं किया करता था। वह कहा करता था, "I throw off my cares when I throw off my clothes.' वह शांति का भूखा था और पार्लिमेंट को सर्वदा अपने वश में रखना चाहता था और वह अपने इस उद्देश्य में सफल भी हुआ। इसकी सफलता का सबसे बड़ा कारण यह था कि वह लोगों की नाड़ी का ज्ञान

पहचानता था। अपनी शक्ति बनाये रखने के लिये वह अनुचित रीतियों के प्रयोग से भी नहीं चूकता था, यथा वह अपने मन्त्रि-मण्डल में साधारण योग्यता के पुरुषों को रखता था और जो मन्त्री उसकी इच्छा के तनिक भी प्रतिकूल चलता था उसे वह मंत्रीपद से हटा देता था। इसके अतिरिक्त वह अपने विरोधियों को पदवियाँ, उपाधियाँ और पेन्शनें देकर भी अपनी ओर कर लेता था। वह कहा करता था "Every man has his price" अर्थात् प्रत्येक पुरुष का दाम होता है जो दे देने से प्रत्येक काम निकाला जा सकता है। *इस प्रकार उसने पार्लिमेंट को अपने वश में रखा*, परन्तु उसकी इस नीति से कई लोग उसके शत्रु बन गये।

वालपोल की भीतरी नीति के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें वर्णनीय हैं :—

वालपोल की आन्तरिक नीति Home Policy

१—*वालपोल शान्तिप्रिय मन्त्री था*। उसकी नीति का सारांश यह था "Prosperity at home and peace abroad" अर्थात् *"देश में सुख शान्ति हो और विदेश से युद्ध न हो।"* इसलिये वह कोई ऐसी बात नहीं करना चाहता था जिससे लोग भड़क उठें और देश में गड़बड़ मच जाये। उसका कथन था, "Let sleeping dogs lie" अर्थात् *"सोये हुये कुत्तों को सोने दो"*। यदि कभी वह देखता कि लोग उसके किसी बिल का विरोध करेंगे तो वह उसे वापस ले लेता था, चाहे वह बिल देश के लिये अत्यन्त लाभकारी ही क्यों न हो। उदाहरणतया 1733 ई० में उसने पार्लिमेंट में एक बिल पेश किया जिसका उद्देश्य यह था कि तम्बाकू, शराब, आदि, बाहर से आने वाली *कुछ वस्तुओं पर महसूल बन्दरगाहों की बजाय माल बेचने वाली दुकानों पर लगाया जाये*। इस बिल को Excise Bill कहते थे। यदि यह बिल पास हो जाता तो सरकार की आमदनी पर्याप्त बढ़ जाती। परन्तु लोगों ने इस बिल का विरोध किया। इस पर वालपोल ने इसे वापिस ले लिया। इस प्रकार उसने *इङ्गलैंड में बीस वर्ष तक शान्ति स्थापित रखी और इसी शान्ति की इङ्गलैंड को परम आवश्यकता थी। यही वालपोल*

की अपने देश की सबसे बड़ी सेवा है। उसकी इस शान्ति की नीति से व्यापारी लोग उससे बहुत प्रसन्न थे।

२—उसकी चेष्टा थी कि हैनोवर वंश का शासन स्थापित रहे क्योंकि विग होने के कारण उसकी अपनी स्थिति भी इसी वंश के शासक बन रहने से दृढ़ हो सकती थी। अतः उसने कोई ऐसा कार्य न किया जिससे इस वंश की स्थापना में कोई शिथिलता आ जाय। उसने अपनी शान्तिमय नीति से इस वंश की जड़ें पक्की गाड़ दीं। इस कारण जार्ज प्रथम उससे बहुत प्रसन्न था।

३—वह हाउस आफ़ कामन्स को शक्ति और मान को बढ़ाना चाहता था। इसी लिये वह इसी हाउस का मेम्बर रहा और सदा इसी की सहायता और परामर्श से अपना राजनैतिक कार्य चलाता रहा। इससे हाउस आफ़ कामन्स का महत्व बढ़ गया।

४—उसने महामन्त्रि के पद तथा कैबिनेट पद्धति को भी इंगलैंड में सुदृढ़ किया। वह अपनी कैबिनेट को अपने अधीन रखता था और यदि कोई मन्त्री उसकी नीति से सहमत नहीं होता था तो उसे मन्त्रि मण्डल से निकाल देता था। इसके अतिरिक्त क्योंकि जार्ज प्रथम कैबिनेट के अधिवेशनों में सम्मिलित नहीं होता था इसलिये राजकाज का सारा कार्य मन्त्रिमण्डल ही करता था। इससे राजा की शक्ति कम हो गई और पार्लिमेंट की शक्ति बढ़ गई।

५—वालपोल आर्थिक विषयों (Financial Matters) में विशेष तथा निपुण था। उसकी यह प्रबल इच्छा थी कि देश के व्यापार की वृद्धि हो जिससे देश में धन बढ़ जाये और चूँकि वह उस समय महा मन्त्री बना था जब साउथ-सी-बबल के फट जाने के कारण देश की आर्थिक दशा बहुत बिगड़ चुकी थी, इस लिये उसने व्यापार की वृद्धि की ओर विशेष ध्यान दिया। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये उसने स्वतंत्र व्यापार (Free Trade) की नीति पर आचरण किया और बहुत आयात तथा निर्यात वस्तुओं पर टैक्स घटा दिया और कई वस्तुओं पर सर्वथा हटा दिया। उसने राष्ट्रीय ऋण को घटाने के लिये कई कार्य वाहियाँ कीं और बढ़ एक शिल्पों (Industries) को उन्नति देने के

लिये सरकार की ओर से धन की सहायता दी। इससे देश के शिल्प तथा व्यापार में वृद्धि हुई और देश धन-धान्य से परिपूर्ण हो गया।

६—यह धार्मिक स्वतन्त्रता के भी पक्ष में था। इसलिये यह डिसेंटर्स (Dissenters) को भी कोई दण्ड नहीं देता था जिस से Dissenters भी उससे प्रसन्न थे।

वालपोल की विदेशी नीति Foreign Policy

वालपोल एक शान्तिप्रिय मन्त्री था और उसकी विदेशी नीति भी यही थी कि दूसरे देशों के साथ सदैव सन्धि बनी रहे और उसे किसी युद्ध में सम्मिलित न होना पड़े। इसका कारण यह था कि वह भली प्रकार जानता था कि युद्ध छिड़ जाने से एक तो देश के व्यापार को बड़ी हानि होगी और दूसरे स्टुअर्ट वंश का पुन आगमन सुगम हो जायगा। इसी उद्देश्य से उसने फ्रांस के साथ मित्रता बनाए रखी। उसके मन्त्रित्व काल में योरुप के महाद्वीप पर कई लड़ाइयाँ हुईं, परन्तु उसने देश को उनसे पृथक् ही रखा। उदाहरणतया 1733 ई० में योरुप में पोलैंड के सिंहासनारोहण का युद्ध छिड़ गया और उसमें कई देश सम्मिलित हुये। परन्तु वालपोल ने अपने देश को पृथक् रखा। उसने गर्व से कहा था कि यद्यपि इस युद्ध मे ५००००- मनुष्य मारे गये परन्तु उनमें एक भी अंग्रेज़ न था। वालपोल अपनी इस नीति पर बड़ा गर्व किया करता था।

☞ वालपोल ने अपनी नीति से इंगलैंड को निम्नलिखित लाभ पहुँचाये —

वालपोल का कार्य

१ उसकी अपने देश के लिये सब से बड़ी सेवा यह है कि उसने अपने देश में पूर्ण शान्ति स्थापित रखी। उसने योरुप के किसी भी युद्ध में अपने देश को सम्मिलित न होने दिया इससे हैनोवर वंश की जड़ें पक्की हो गईं और जैकोबाइट्स का दोबारा शक्ति प्राप्त करना असम्भव हो गया। २ इस शान्ति की पालिसी से व्यापार तथा शिल्पकला में उन्नति हुई और देश धन-धान्य से परिपूर्ण हो गया जिससे

गये। यह देखकर अंग्रेज फ्रांस के विरुद्ध प्रशिया की ओर जा मिले और इस प्रकार सप्तवर्षीय युद्ध आरम्भ हो गया।

पार्टियाँ

इस युद्ध में एक ओर दो बड़ी शक्तियाँ *इंगलैंड तथा प्रशिया थीं* और दूसरी ओर *फ्रांस तथा आस्ट्रिया*। बाद में स्पेन भी इङ्गलैंड के विरुद्ध शामिल हो गया। इस युद्ध के तीन केन्द्र थे —

युद्ध के केन्द्र

१ योरुप
२ अमेरिका
३ भारतवर्ष

युद्ध आरम्भ होने के समय *न्यूकासल* (Newcastle) इंगलैंड का प्रधान मन्त्री था। उसे युद्ध सम्बन्धी विषयों में कोई विशेष रुचि न थी। अतः आरम्भ में सब स्थानों पर अङ्गरेज़ों की पराजयें हुईं।

१ Events in Europe

(i) 1756 ई० में फ्रांसीसियों ने रूम सागर में स्थित द्वीप *मिनारका* (Minorca) अंग्रेज़ों से जीत लिया। जल-सेनापति *बिंग* (Byng) को उसे विजय करने के लिये भेजा गया परन्तु वह बिना युद्ध किये ही लौट आया और उसे कायरता के कारण गोली से उड़ा दिया गया।

(ii) अगले वर्ष 1757 ई० में फ्रांसीसियों ने जार्ज द्वितीय के पुत्र ड्यूक आफ़ कम्बरलैंड (Duke of Cumberland) को जो रियासत हैनोवर की रक्षा के लिये भेजा गया था हैसनबेक (Hastenbeck) के
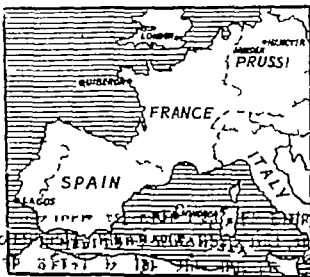
स्थान पर पराजित किया और हैनोवर पर अधिकार कर लिया।

अब न्यूकासल ने विलियम पिट (William Pitt) को साथ मिला कर संयुक्त मन्त्रित्व स्थापित किया। पिट एक अति निपुण युद्ध मन्त्री था। उसने इस युद्ध को जीतने में बड़ा भाग लिया। उसके मन्त्रि-मण्डल में सम्मिलित होते ही युद्ध की दशा बदल गई। उस ने अपने चमत्कारी भाषणों से देशवासियों में बड़ा उत्साह पैदा किया। उसने बड़ उदार हृदय से प्रशिया की धन और जन से सहायता की, जिससे प्रशिया ने फ्राँसीसियों को योरुप में अपने विरुद्ध कार्य मग्न रखा और फ्राँसीसी भारतवर्ष और अमेरिका में पर्याप्त सहायता न भेज सके। इसके अतिरिक्त पिट ने युद्ध कार्य के लिये सर्वोत्तम जरनैल चुने और फ्राँसीसी बन्दरगाहों की नाकाबन्दी कर दी। अब योरुप में अंग्रेजों की विजयें आरम्भ हुईं। 1759 सन् तो अंग्रेजों के लिये विजयों का सन् था।

(i) 1759 ई० में फ्राँसीसियों को मिण्डन (Minden) के स्थान पर जो जर्मनी में स्थित है पराजय हुई और हैनोवर का प्रान्त अंग्रेजों के हाथ में आ गया।

(ii) इसी वर्ष अंग्रेजों ने फ्राँसीसी बेड़े को जो इंगलैंड पर आक्रमण करने की तैयारियों में था लागोस (Lagos) और खाड़ी क्विबिरान (Quiberon Bay) की सामुद्रिक लड़ाइयों में पराजित करके नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और इंगलैंड का समुद्र पर अधिकार हो गया।

२. Events in America

आरम्भ में अंग्रेजों की अमेरिका में भी पराजयें हुईं। जरनैल ब्रैडक (Braddock) ने डूकेन (Fort Duquesne) पर आक्रमण किया, परन्तु हार खाई और मारा गया। इसके बाद विलियम पिट ने एक योग्य जरनैल वुल्फ़ (Wolfe) को कैनेडा भेजा जिस ने अवस्था का बिगड़ने से बचा लिया।

(i) 1759 ई० में कैनेडा की राजधानी क्विबक (Quebec) की प्रसिद्ध लड़ाई हुई। जरनैल वुल्फ़ अपनी सेनाओं को लेकर एक पहाड़ी पर, जिसे हाइट्स आफ़ एब्राहम (Heights of Abraham) कहते हैं, चढ़ गया और वहाँ से क्विबेक पर खूब गोलाबारी की।

फ्रांसीसी जरनैल *मौंटकाम* (Montcalm) ने बड़ी वीरता से सामना किया परन्तु विजय अंग्रेज़ों की ही हुई और क्यिबेक पर उनका अधिकार हो गया। इस युद्ध में वुल्फ तथा मौंटकाम दोनों मारे गये। क्यिबेक की इस लड़ाई को Battle of the Heights of Abraham भी कहते हैं।
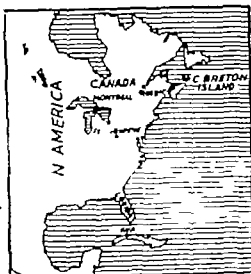
(ii) 1760 ई० में *मौंटरयाल* (Montreal) भी अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गया और इस प्रकार *अङ्गरेज़ों का सारे कैनेडा पर अधिकार हो गया।*

३ Events in India

(i) 1760 ई० में *सर आयर कूट* (Sir Eyre Coote) ने फ्रांसीसियों को *वन्दिवाश* (Wandiwash) की लड़ाई में बुरी तरह पराजित किया।

(ii) 1761 ई० में अंग्रेज़ों ने फ्रांसीसियों की राजधानी *पाण्डीचेरी* (Pondicherry) को विजय कर लिया। इन पराजयों से फ्रांसीसी शक्ति की भारतवर्ष से समाप्ति हो गई।

४ War with Spain

1762 ई० में स्पेन भी फ्रांस की ओर युद्ध में सम्मिलित हो गया, परन्तु अङ्गरेज़ों ने उसे पराजय दी और *हवाना* (Havana) तथा *मनीला* (Manila) के नगर जीत लिये।

अन्त में 1763 ई० में पेरिस के सन्धि-पत्र

के अनुसार युद्ध समाप्त हो गया। इसकी शर्तें निम्नलिखित थीं :—

Peace of Paris, 1763

१—फ्रांस ने अङ्गरेजों को *मिनारका* टापू लौटा दिया। इस के अतिरिक्त उसने अमेरिका में कैनेडा और केप ब्रीटन टापू, अफ्रीका में सैनीगाल, और पश्चिमी द्वीप समूह में कुछ टापू अंग्रेजों को दे दिये।

२—अंग्रेजों को अमेरिका में *फ्लोरीडा* का प्रदेश स्पेन से प्राप्त हुआ, परन्तु उन्हों ने *हवाना* और *मनीला* वापस स्पेन को लौटा दिये।

३—फ्रांसीसियों का *पॉडीचरी* और उनके दूसरे भारतीय अधीन प्रदेश इस शर्त पर लौटा दिये गये कि वे पुनः उनकी किलाबन्दी न करें और न वहाँ सेना ही रखें।

४—सिलिशिया का प्रान्त प्रशिया के पास ही रहा।

यह युद्ध एक महत्वशाली युद्ध था। इससे —

(Importance)

१—भारतवर्ष और अमेरिका से फ्रांसीसी शासन की सत्ता के लिये समाप्ति हो गई और दोनों देशों में अङ्गरेजी साम्राज्य का विस्तार आरम्भ हुआ।

२—अङ्गरेजों की सामुद्रिक शक्ति बहुत दृढ़ हो गई और वे धीरे-धीरे एक विशाल साम्राज्य स्थापित करने में सफल हो गये।

३—प्रशिया भी यारुप में एक प्रथम श्रेणी की शक्ति बन गया।

सच तो यह है कि इस युद्ध से इंगलैंड सारे संसार में सब से बड़ा व्यापारिक तथा उपनिवेश सम्बन्धी देश बन गया।

☞Q Describe the character and work of William Pitt the Elder (P U 1948-52) (V Important)

प्रश्न—*विलियम पिट ऐल्डर के आचार, नीति तथा कार्य के सम्बन्ध में तुम क्या जानते हो?*

विलियम पिट ऐल्डर

(1708—1778)

आरम्भिक जीवन (Early Career)—विलियम पिट का बाद

में Earl of Chatham बनाया गया, इङ्गलैंड का एक उच्चकोटि का राजनीतिज्ञ था।

Pitt the Elder

William Pitt the Elder उसकी गणना उन थोड़े से व्यक्तियों में होती है जिन्होंने अत्यन्त संकट के अवसरों पर इंगलैंड की अमूल्य सेवाएँ कीं। वह 1708 ई० में उत्पन्न हुआ और उसने ईटन (Eton) तथा आक्सफ़ोर्ड में शिक्षा प्राप्त की। उसका दादा ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधीन मद्रास का गवर्नर रह चुका था। 1735 ई० में जब *वालपोल* प्रधान मन्त्री था तो पिट पार्लिमेंट का मेम्बर चुना गया और वालपोल की विरोधी पार्टी में सम्मिलित हो गया। वालपोल इस पार्टी को कटाक्ष के तौर पर Boy Patriots अर्थात् 'देशभक्त छोकरे' कहा करता था। पिट तथा उसके साथियों ने वालपोल की अनुचित कार्यवाहियों का प्रबल विरोध करना आरम्भ किया जिससे पिट शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गया। वह कई वर्षों तक सेना का Paymaster (वेतन देने वाला) रहा। 1757 ई० में जब कि सप्तवर्षीय युद्ध में अंग्रेजों की सब स्थानों पर पराजयें हो रही थीं तो न्यूकासल ने उसे साथ मिला कर संयुक्त मन्त्रित्व स्थापित किया और उसे युद्ध मन्त्री नियुक्त किया। इस काम को उसने भली भाँति निभाया।

चरित्र (Character)—पिट एक ऊँचे चरित्र वाला मनुष्य था। वह सच्चा देश-भक्त और अत्यन्त कर्तव्य परायण पुरुष था और घूँस लेने अथवा देने के घोर विरुद्ध था। इसके अतिरिक्त वह बड़ा सुवक्ता था। इसके उत्तेजना-पूर्ण तथा प्रभावशाली चमत्कारी भाषण कायर लोगों में भी उत्साह भर देते थे। उसे अपने आप पर पूर्ण विश्वास था। वास्तविक योग्य पुरुषों के चुनाव में उसे विशेष योग्यता प्राप्त थी। वह जनता में बड़ा सर्वप्रिय था और लोग उसे Great Commoner

कहते थे।

पिट युद्ध मन्त्री के रूप में (As War Minister)—पिट के युद्ध मन्त्री बनने के समय इङ्गलैंड की दशा बड़ी शोचनीय थी और उसे सप्तवर्षीय युद्ध में प्रत्येक स्थान पर असफलता हो रही थी। परन्तु पिट ने अपने पद का कार्य सम्भालते ही कहा, *"मैं जानता हूँ कि देश को केवल मैं ही बचा सकता हूँ और कोई अन्य पुरुष इसे नहीं बचा सकता।"* (I know that I can save the country and that no one else can)। उसका यह दावा अक्षरशः ठीक निकला और उसके मन्त्रिमण्डल में आते ही युद्ध की दशा सर्वथा बदल गई। *अंग्रेजों को निरन्तर विजयें प्राप्त होने लगीं और असफलतायें सफलताओं के रूप में परिवर्तित हो गईं।* उसकी पालिसी निम्नलिखित थी —

१—उसने प्रशिया (Prussia) की बड़ी उदारता पूर्वक धन तथा सेना से सहायता की, जिस से उसने फ्रांसीसियों को योरुप में ही अपने विरुद्ध युद्ध में संलग्न रखा और वे भारतवर्ष और अमेरिका में पूरी पूरी सहायता न भेज सके। पिट कहा करता था "America must be won in Germany"

२—सर्वोत्तम जरनैलों को चुनकर सेना का अधिकार उन को सौंपा।

३—उसने अपने उत्तेजनापूर्ण और चमत्कारी भाषणों से लोगों में युद्ध चालू रखने के लिये उत्साह उत्पन्न किया।

४—उस ने नौसैनिक बेड़े को संगठित किया और फ्रांसीसी बन्दरगाहों की नाका-बन्दी कर दी जिस से फ्रांस युद्ध के क्षेत्रों में पर्याप्त सहायता न भेज सका।

पिट की यह नीति बड़ी सफल रही। फ्रांसीसियों की पराजय हुई, कैनेडा तथा भारतवर्ष उनके हाथों से निकल गये, फ्रांस की सामुद्रिक शक्ति नष्ट हो गई और इङ्गलैंड योरुप की सर्वोपरि शक्ति बन गया।

त्याग पत्र—1761 ई० में पिट ने जार्ज तृतीय को स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने की सम्मति दी क्योंकि उसका विचार था कि

स्पेन शीघ्र ही फ्रांस से मिल जायगा। परन्तु जार्ज तृतीय ने यह बात न मानी। इस पर पिट ने त्याग-पत्र दे दिया।

पिट प्रधान मन्त्री—1766 ई० में जार्ज तृतीय ने पिट को प्रधान मन्त्री नियुक्त किया। परन्तु उसका स्वास्थ्य ठीक न था अत दो ही वर्ष पश्चात् उसने त्याग-पत्र दे दिया। उसकी सेवाओं के उपलक्ष में उसे Earl of Chatham की उपाधि प्रदान की गई।

पिट और अमेरिका का युद्ध—अमेरिका की स्वाधीनता के युद्ध के दिनों में उसने बड़ा यत्न किया कि किसी प्रकार अमेरिका इंग्लैंड से पृथक् न होने पाय। परन्तु उसे इस में सफलता प्राप्त न हुई। पिट का स्वास्थ्य बिगड़ चुका था। 1778 ई० में हाउस आफ लार्डज़ में भाषण देते हुये वह मूर्छित हो कर गिर पड़ा और एक मास के पीछे उसका देहान्त हो गया।

काम का सारांश—*पिट वास्तव में इंगलैंड का सर्वोत्तम युद्ध-मन्त्री था। सप्तवर्षीय युद्ध में अंग्रेजों की सफलता उसी के उत्साह तथा नीति के कारण हुई थी। उसकी गणना अंगरेज़ी साम्राज्य के उच्चकोटि के राजनीतिज्ञों में की जाती है। वह सत्यतः अंगरेज़ी साम्राज्य का बानी था।*

जार्ज तृतीय
GEORGE III
1760—1820

जार्ज तृतीय जार्ज द्वितीय का पोता था। उसका पिता फ्रैड्रिक (Frederick) प्रिंस आफ वेल्ज़ 1751 ई० में मर चुका था, इस लिये 1760 ई० में जब जार्ज द्वितीय की मृत्यु हुई तो उसका पोता जार्ज तृतीय सिंहासनारूढ़ हुआ। राजगद्दी पर बैठने के समय उसकी आयु बाईस वर्ष की थी। उसने ६० वर्ष राज्य किया। अपनी आयु के अन्तिम वर्षों में वह पागल हो गया था।

चरित्र (Character)—जार्ज तृतीय इंगलैंड में उत्पन्न हुआ था। उसका पालन-पोषण तथा शिक्षा अंग्रेजी ढंग जार्ज तृतीय का से हुई थी इसलिये उसका रहन-सहन तथा स्वभाव चरित्र तथा नीति अपने दादा तथा पड़दादा से जो पूरे जर्मन थे सर्वथा भिन्न था। उसे न तो जर्मन भाषा ही आती थी और न वह कभी हैनोवर ही गया था। *वह पर्तानिया के नाम पर गर्व करता था।* मनुष्य रूप से उसका आचरण बहुत अच्छा था। वह सदाचारी तपस्वी, धर्म का पालक तथा बड़ा कर्त्तव्यपरायण था और उसका घरेलू जीवन बड़ा उच्चकोटि का था। वह चर्च आफ इंगलैंड का अनुयायी था। *परन्तु वह एक अच्छा राजा सिद्ध न हुआ,* क्योंकि वह बड़ा तीव्र प्रकृति, कट्टर तथा पक्का हठी था। इसके अतिरिक्त वह कोई अधिक बुद्धिमान् न था। *उसके हठ के कारण ही इंग्लैंड को अमेरिका हाथ से खोना पड़ा।*

नीति (Policy)—जार्ज तृतीय की नीति के सम्बन्ध में सबसे बड़ी बात यह है कि *वह राजा की शक्ति बढ़ाने का इच्छुक था।* सिंहासनारूढ़ होने से पूर्व ही उसने *दृढ़ संकल्प कर लिया था* कि वह नाम मात्र का राजा नहीं बनेगा वरन यथार्थ रूप से शासन करेगा। इसका कारण यह था कि आरम्भ से ही उसकी माता तथा उसका शिक्षक ब्यूट (Bute) उसके हृदय पर यह बात अङ्कित करते रहे थे कि *'जार्ज राजा बनो'* (George, be king)। वह मन्त्रियों के हाथों में कठपुतली नहीं बनना चाहता था, वरन वह अपने मन्त्री अपनी इच्छानुसार चुनना चाहता था। *इसलिये जार्ज तृतीय राजा बनते ही सब अधिकारों* को अपने हाथों में लेने की चेष्टा करने लगा। *इस उद्देश्य* को प्राप्ति के लिये उसने भी वालपोल की भांति प्रत्येक उचित तथा अनुचित रीति का प्रयोग किया और इस प्रकार वह पार्लियामेंट में अपने पक्षपातियों की मण्डली स्थापित करने में सफल हो गया जिसे King's Friends कहते थे। इन मित्रों की सहायता से वह जो चाहता करवा लेता था।

Q Write a short note on John Wilkes

(P U 1939-43-45)

प्रश्न—*जान विल्क्स पर संक्षिप्त नोट लिखो।*

जान विल्क्स जार्ज तृतीय के समय में पार्लिमेंट का एक मेम्बर था। वह *नार्थ ब्रिटन* (North Briton) नाम के एक समाचार-पत्र का सम्पादक भी था। वह बड़ा चालाक और आचारहीन पुरुष था, परन्तु जनसाधारण के साथ उसे बड़ी सहानुभूति थी।

John Wilkes

1763 ई० में पैरिस के सन्धि-पत्र के बाद जब जार्ज तृतीय ने पार्लिमेंट में भाषण दिया तो विल्क्स ने अपने पत्र में इस भाषण के सम्बन्ध में राजा पर *'मिथ्या भाषण'* का दोष लगाया। इस पर मन्त्रि-मण्डल ने विल्क्स पर अभियोग चलाना चाहा। इसलिये पत्र के सम्पादक तथा कार्यकर्ताओं की गिरफ़्तारी के लिये जनरल वारंट (General Warrant) जारी कर दिया गया, जिसमें किसी विशेष अपराधी का नाम तथा पता दर्ज नहीं था। जब इस वारंट के आधार पर उस पत्र से सम्बन्ध रखने वाले समस्त पुरुषों को विल्क्स सहित गिरफ़्तार कर लिया गया, तो उसने आपत्ति उठाई कि एक तो जनरल वारंट के अनुसार और दूसरे पार्लिमेंट का मेम्बर होने के कारण उस की गिरफ़्तारी नियम विरुद्ध है। न्यायाधीश ने उसे इस आधार पर छोड़ दिया कि *पार्लिमेंट के किसी मेम्बर को राजा के भाषण पर समालोचना करने के अपराध में गिरफ़्तार नहीं किया जा सकता* और साथ ही *जनरल वारंट भी भविष्यत् के लिये नियम विरुद्ध ठहरा दिये गये।* विल्क्स ने इस गिरफ़्तारी के लिये गवर्नमेंट से भारी हर्जाना भी प्राप्त किया।

इस अभियोग के कुछ काल बाद गवर्नमेंट ने विल्क्स को एक और अपराध के आधार पर पार्लिमेंट से निकाल दिया और उसे अराज-रक्षित कर दिया। वह भाग कर फ्रांस चला गया परन्तु कुछ वर्ष पश्चात् जब वह फिर इंगलैंड लौट आया तो लोगों ने उसे दोबारा पार्लिमेंट का मेम्बर चुन लिया। हाउस आफ़ कामन्स ने उस पार्लिमेंट में बैठने की आज्ञा न दी। इस पर लोगों में असन्तोष फैल गया और

उन्होंने विल्क्स को बार बार निरन्तर मेम्बर चुना। परन्तु हाउस आफ कामन्ज़ ने उसे चारों बार अस्वीकार किया और अन्तिम बार उसके विरोधी को मेम्बर नियत कर लिया। गवर्नमेंट की इस कार्यवाही से सारे देश में हलचल मच गई और अन्त में गवर्नमेंट को स्वीकार करना पड़ा कि जनता जिसे चाहे पार्लिमेंट का मेम्बर चुन सकती है।

इसके पश्चात् जनता ने विल्क्स को लण्डन का मेयर (Mayor) अर्थात् प्रधान चुन लिया। इस पद पर रहते हुये विल्क्स ने यह निर्णय किया कि *समाचार पत्र* (जिन्हें उस समय पार्लिमेंट की कार्यवाही छापने का अधिकार नहीं था) *पार्लिमेंट की कार्यवाही भी छाप सकते हैं।*

महत्त्व—यद्यपि विल्क्स घरेलू जीवन में एक शराबी और दुराचारी पुरुष था तथापि अपने लोकोपकार के कामों के कारण वह अति *प्रसिद्ध तथा सर्वप्रिय बन गया। उसी के कारण* एक तो जनरल वारंट *अर्थात् गिरफ्तारी के ऐसे वारंट जिनमें किसी अपराधी का नाम तथा पता लिखा न हो नियम-विरुद्ध ठहरा दिये गये।* दूसरे, *लोगों को यह अधिकार प्राप्त हो गया कि वे जिस पुरुष को चाहें पार्लिमेंट का मेम्बर चुनें।* तीसरे *उसके यत्न से समाचार पत्रों को अधिकार मिल गया कि पार्लिमेंट की कार्यवाही छाप दिया करें।*

☞Q Give a brief account of the American War of Independence. Or,

Describe how England came to lose her American colonies. (P U 1935-39-40-42-43-45-46-47-49-51 53-54)

(V Important)

Describe the causes of the American War of Independence Account for the success of the colonists and discuss its results. Or, (P U 1942-45)

Why did the English colonists in North America

rebel against the English Government? Discuss the causes that led to their success

प्रश्न—अमेरिका को स्वाधीनता के युद्ध का संक्षिप्त वर्णन करो, और बस्ती निवासियों की विजय के कारण लिखो और परिणाम वर्णन करो।

अमेरिका की स्वाधीनता का युद्ध

AMERICAN WAR OF INDEPENDENCE
1775—83

यह युद्ध अमेरिका को अंग्रेजी बस्तियों तथा इंगलैंड में हुआ। इसमें इंगलैंड को पराजय हुई और अंग्रेजी बस्तियाँ जिनकी संख्या उस समय तेरह थी इंगलैंड के शासन से स्वतन्त्र हो गई और उन्होंने अपना नाम अमेरिका की संयुक्त रियासतें (United States of America) रखा।

American War of Independence 1775—1783

इस युद्ध के कारण निम्नलिखित थे :—

१ कठोर व्यापारी नियम—उस समय योरुप के सब देश यह समझते थे कि बस्तियाँ केवल मातृभूमि के लाभार्थ होती हैं, और उनके अपने कोई अधिकार नहीं होते, इसलिये बस्तियों के सम्बन्ध में इंगलैंड में ऐसे कानून बनाये गये थे जो इंगलैंड के लिये तो लाभकारी थे परन्तु बस्तियों को इन से बहुत हानि थी जैसे कि ये बस्तियाँ दूसरे देशों के साथ सीधा व्यापार नहीं कर सकती थीं और इंगलैंड के साथ भी केवल अंग्रेजी जहाज़ों में व्यापार कर सकती थीं और अपने शिल्पालयों (कारखानों) में कोई ऐसी वस्तु तैयार नहीं कर सकती थीं जो इंगलैंड में तैयार होती हो। इन कठोर कानूनों के कारण बस्ती निवासी अंग्रेजी शासन से अप्रसन्न थे।

Causes

२ इंगलैंड के प्रति घृणा—अमेरिका के अधिकांश बस्ती निवासी ऐसे लोग थे जो इंगलैंड के राजाओं की धार्मिक नीति की

कठोरता से तंग आ कर वहाँ गये हुये थे, या अन्य योरुपियन देशों से गये हुये थे। इसलिये उन के हृदय में *इङ्गलैंड के लिये कोई विशेष सहानुभूति अथवा प्रेम न था।* परन्तु उन्हें यह भय लगा रहता था कि कहीं कैनेडा के फ्रांसीसी उनकी बस्तियों को विजय न कर लें, अतः वे चुप रहे। अन्त में जब सप्तवर्षीय युद्ध के पश्चात् यह भय जाता रहा तो उन्होंने कठोर कानूनों के विरुद्ध नाद किया।

3 स्टैम्प ऐक्ट—सप्तवर्षीय युद्ध में, जो अधिकतर बस्तियों के लाभ के लिये लड़ा गया था, इङ्गलैंड का बहुत सा रुपया खर्च हो गया था। इसके अतिरिक्त इन बस्तियों की रक्षा के लिये एक स्थायी सेना भी आवश्यक थी, इसके लिये भी रुपया चाहिये था। अतः पार्लिमेंट ने निश्चय किया कि बस्तियों को भी युद्ध के व्यय में और सेना रखने में अपना अपना भाग देना चाहिये। इसी लिये 1765 ई० में स्टैम्प ऐक्ट (Stamp Act) *पास किया गया जिसके अनुसार निश्चय हुआ कि अमरिका के लोग लेन-देन के प्रतिज्ञा-पत्र ऐसे कागज़ों पर किया करें जिन पर स्टैम्प लगी हुई हो।* यह आय बढ़ाने का एक साधन था। परन्तु इस ऐक्ट के पास हो जाने से उपनिवेशकों का बहुत क्रोध आया। वे कहते थे कि चूँकि उनका कोई प्रतिनिधि इंगलैंड की पार्लिमेंट में नहीं बैठता इसलिये ब्रिटिश पार्लिमेंट को उन पर टैक्स लगाने का कोई अधिकार नहीं (No taxation without representation)। उन्हों ने स्टैम्प ऐक्ट का घोर विरोध किया। फलतः 1766 ई० में यह कानून हटा दिया गया।

४ नवीन टैक्स—स्टैम्प ऐक्ट तो हटा दिया गया, परन्तु साथ ही पार्लिमेंट ने एक और ऐक्ट (Declaratory Act) पास किया *कि ब्रिटिश पार्लिमेंट को अपनी बस्तियों पर कर लगाने का अधिकार है।* इस ऐक्ट के अनुसार अगले वर्ष अर्थात 1767 ई० में कई और वस्तुओं यथा *शीशे, कागज़, रंगों तथा चाय आदि पर टैक्स लगा दिया* गया। [illegible]
[illegible]

५ **बोस्टन का सर्वघात**—इन टैक्सों के विरुद्ध बोस्टन (Boston) नगर में बहुत जोश फैल गया और वहाँ शान्ति स्थापित करने के लिये सैनिक रखने पड़े। नागरिकों ने इन सैनिकों की हँसी उड़ाना और उन्हें अपमानित करना आरम्भ कर दिया। इस पर सैनिकों को इतना क्रोध आया कि उन्हें एक स्थान पर गोली चलानी पड़ी और तीन व्यक्ति मारे गये। लोगों ने इस घटना को *बोस्टन का सर्वघात* (Boston Massacre) कहना आरम्भ कर दिया।

६ **चाय पर टैक्स**—1770 ई० में लार्ड नार्थ (Lord North) प्रधान मन्त्री बना और उसने चाय के अतिरिक्त शेष सब वस्तुओं पर से टैक्स हटा दिया परन्तु इस पर उपनिवेशक प्रसन्न न हुए। वे तो इस सिद्धान्त पर अड़े हुए थे *कि जब तक ब्रिटिश पार्लिमेंट में उनका कोई प्रतिनिधि नहीं होगा व टैक्स नहीं देंगे*। इस लिये उन्होंने निश्चय किया कि जब तक चाय पर से टैक्स न हटाया जाय, वे चाय को अपने देश में न आने देंगे।

७ **बोस्टन टी पार्टी**—1773 ई० में चाय के तीन जहाज बोस्टन (Boston) की बन्दरगाह पर पहुँचे। कुछ उपनिवेशकों ने अमेरिका के मूल निवासियों का भेस बनाया और कुली बन कर जहाज पर आ गये, तथा सारी चाय समुद्र में गिरा दी। इस घटना को *बोस्टन टी पार्टी* (Boston Tea Party) कहते हैं। इस घटना से इंगलैंड में इतनी अप्रसन्नता फैली कि बोस्टन की बन्दरगाह व्यापार के लिए बन्द कर दी गई और मैसाचूसेट्स (Massachusetts) की बस्ती का (जिसकी बोस्टन राजधानी थी) चार्टर छीन लिया गया अर्थात् उसे सीधा अंग्रेजी शासन के अधीन कर दिया गया और वहाँ मार्शल-ला (Martial Law) लगा दिया गया।

८ **फिलाडैलफिया की काँग्रेस**—उपनिवेशक भला इस कठोरता को कैसे सहन कर सकते थे। उन्होंने इसके विरुद्ध प्रोटैस्ट के लिये फिलाडैलफिया (Philadelphia) में [illegible] जिसमें

जार्जिया (Georgia) की बस्ती के अतिरिक्त शेष सब बस्तियों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुये। उन्होंने मैसाचूसेट्स के साथ सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया और यह निश्चय किया कि इंगलैंड को बस्तियों की स्वीकृति के बिना उन पर कोई कर लगाने का अधिकार प्राप्त नहीं। अन्तत 1775 ई० में युद्ध छिड़ गया।

Events

इस युद्ध की आरम्भ की लड़ाइयाँ बोस्टन के समीप हुई, क्योंकि इस पर अंग्रेजी सेना का अधिकार था और उपनिवेशक इसे वापस लेना चाहते थे।

१ लेक्सिंगटन (Lexington) की लड़ाई, 1775 ई०—यह इस युद्ध की सबसे पहली लड़ाई थी। इसमें उपनिवेशकों की विजय हुई। इस से उपनिवेशकों का साहस बढ़ गया और उन्होंने बोस्टन नगर के बाहर एक पहाड़ी बंकर्स हिल (Bunker's Hill) पर अधिकार कर लिया ताकि बोस्टन को जीता जा सके।

२ बंकर्स हिल (Bunker's Hill) की लड़ाई, 1775 ई०—अंग्रेजी सेनाओं ने उपनिवेशकों को इस पहाड़ी से निकालने का भरसक प्रयत्न किया। कुछ समय तो उनकी कोई पेश न गई परन्तु अन्ततः वे उपनिवेशकों को वहाँ से निकालने में सफल हो गये।

३ बोस्टन की विजय, 1776 ई०—बंकर्स हिल की लड़ाई के बाद उपनिवेशकों ने जार्ज वाशिंगटन (George Washington) को अपना सेनापति बनाया। यह बड़ा योग्य तथा समझदार जरनैल था। उसने अंग्रेजों को बोस्टन (Boston) से निकाल कर वहाँ पर अधिकार कर लिया और न्यूयार्क (New York) का विजय कर लिया।

George Washington

४ स्वाधीनता की घोषणा, 4 जुलाई

The War of
AMERICAN
INDEPENDENCE
NORTH AMERICA
SARATOGA
BUNKER'S HILL
BOSTON
LOUISIANA
WEST INDIES
JAMAICA
S. AMERICA

1776 ई०—1776 ई० में समस्त उपनिवेशकों के प्रतिनिधि फिर फिलाडेलफिया के स्थान पर इकट्ठे हुये और 4 जुलाई 1776 ई० को उन्होंने अमेरिका की स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। इन तेरह बस्तियों ने अपने आप को मिला कर United States of America का नाम दिया। इसलिये इस नये देश अर्थात् U S A का जन्म इसी तिथि से आरम्भ होता है और स्वतन्त्रता दिवस बड़े समारोह से मनाया जाता है।

५ साराटोगा (Saratoga) की लड़ाई, 1777 ई०-इस लड़ाई में अंग्रेजी जरनैल बरगायन (Burgoyne) को पराजय हुई और उसे विवश होकर शस्त्र डाल देने पड़े। अंग्रेजों की इस हार से युद्ध की दशा सर्वथा बदल गई क्योंकि इसके बाद अंग्रेजों के शत्रु फ्रांस और स्पेन भी अमेरिका के साथ सम्मिलित हो गये और अंग्रेजों की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो गई।

६ यार्कटाउन (York Town) की लड़ाई, 1781 ई०—इस लड़ाई में अंग्रेजी जरनैल लार्ड कार्नवालिस (Cornwallis) की (जो इसके कुछ वर्ष पीछे भारत में गवर्नर जनरल नियुक्त हुआ), पराजय हुई। उसने वाशिंगटन के आगे हथियार डाल दिये।

७ जिबराल्टर (Gibraltar) का घेरा 1779–82 ई०—स्पेन तथा फ्रांस के एक संयुक्त बेड़े ने अंग्रेजी दुर्ग जिबराल्टर का घेरा कर लिया। परन्तु अन्त में तीन वर्ष के पश्चात् उन्हें घेरा उठाना पड़ा।

अन्त में यह युद्ध वर्सेल्स के सन्धिपत्र के अनुसार समाप्त हो गया। इस की शर्तें ये थीं—

Treaty of ⊛ Versailles 1783 ई०

१—संयुक्त राज्य अमेरिका (U S A) की स्वाधीनता का स्वीकार कर लिया गया।

२—न्यूफाउंडलैंड, नोवास्कोशिया और कैनेडा अपनी इच्छानुसार इंगलैंड के पास रहे।

⊛ फ्रांसीसी शब्द Versailles का उच्चारण वर्सेय है और यह पेरिस से 11 मील दूर दक्षिण पश्चिम में है।

३—स्पेन को मिनारका तथा फ्लोरीडा के प्रान्त वापस मिल गये।

४—फ्रांस के पास चन्द्रनगर तथा अन्य फ्रांसीसी अधिकृत प्रदेश भारतवर्ष में कुछ प्रदेश (Tobago) पश्चिमी भारत द्वीपों में, और कुछ प्रदेश (Senegal) अफ्रीका में रहने दिये गये।

५—अमेरिका में एक स्वतन्त्र जाति का जन्म हुआ जो शनैः शनैः उन्नति करती हुई अब संसार की एक प्रसिद्ध जाति बन गई है।

प्रभाव—*यह युद्ध इङ्गलैंड के लिये बड़ा हानिकारक सिद्ध हुआ। इससे अंग्रेजी शक्ति को बहुत धक्का लगा और जातीय ऋण बहुत बढ़ गया।*

नोट—संयुक्त राज्य अमेरिका का पहला प्रेजीडेंट जार्ज वाशिंगटन नियत हुआ।

इस युद्ध में बस्ती वासियों की विजय के कारण निम्नलिखित थे :—

बस्ती वासियों की विजय के कारण

१ इंगलैंड से दूरी—अमेरिका इंगलैंड से लगभग ३००० मील दूर है। उन दिनों में जब अभी वाष्पी जहाज (Steamships) नहीं बने थे और न तार ही का आविष्कार हुआ था अमेरिका में युद्ध-सामग्री, सेनायें, सूचनायें आदि भेजना इंगलैंड के लिये अति कठिन था।

२ देश से अपरिचय—इंगलैंड की सेनायें अमेरिका के देश से जहाँ वे लड़ रही थीं इतनी परिचित न थीं और बस्ती वासी अपने देश की भूमि के चप्पे चप्पे से भली प्रकार परिचित थे।

३ उद्देश्य का न होना—अमेरिका के योद्धा एक आदर्श (स्वतन्त्रता) के लिये लड़ रहे थे, अतः वे बड़े उत्साह से लड़ते थे, परन्तु अंग्रेजी सैनिक किसी आदर्श के लिये नहीं लड़ रहे थे।

४ शक्ति का अनुमान—अंग्रेज अमेरिका वालों की शक्ति का ठीक अनुमान न लगा सके, यहाँ तक कि एक दक्ष सैनिक ने कहा कि अमेरिका को जीतने के लिये केवल चार रैजिमैंटें पर्याप्त होंगी। अतः अंग्रेजों ने भली प्रकार अमेरिका की शक्ति का

अनुमान नहीं लगाया था।

५ जर्मन सैनिक—अग्रेज प्राय बस्ती वासियों के विरुद्ध लड़ना नहीं चाहते थे। अत अग्रेजी सरकार ने जर्मन सैनिकों को भरती करके भेजा। यह बात बस्ती वासियों के लिए असह्य थी। इसलिए व जी जान से लड़े।

६ अच्छे जरनैलों का अभाव—बस्ती वासियों का सेनापति जार्ज वाशिंगटन (George Washington) एक बड़ा योग्य, साहसी और सर्वप्रिय जरनैल था और अमेरिका की सेनायें और जनता उसके साथ पूर्णरूप से सहयोग करती थीं। परन्तु अग्रेजी अफसरों में जो अमेरिका में लड़ने गये थे कोई भी वाशिंगटन की तुलना का न था। सच तो यह है *कि इस युद्ध में बस्ती वासियों की विजय का एक बड़ा कारण जार्ज वाशिंगटन का उत्साह और नीति थी।*

७ सरकार का हस्ताक्षेप—इंगलैंड की सरकार अमेरिका के युद्ध की जंगी चालों में अत्यधिक हस्ताक्षेप करती थी जिससे वहाँ लड़ने वाले अफसर अपनी सूझ से काम नहीं ले सकते थे।

८ फ्रांस और स्पेन की सहायता—अंग्रेजों की पराजय का सब से बड़ा *कारण फ्रांस और स्पेन की अमरिका को सहायता थी।* अमेरिका के पास जलसेना नाममात्र थी और सम्भव है कि यदि फ्रांस और स्पेन के शक्तिशाली देश उसकी सहायता न करते तो अमेरिका हार जाता।

☞ Q Give a brief account of the Industrial Revolution in England What were its results ?
(P U 1935 36 37 38 41-44 48 49 51 53 54 55,
(V Important)

प्रश्न—इंगलैंड में शिल्प क्रान्ति का संक्षिप्त वर्णन करो और बताओ कि देश पर उसका क्या प्रभाव हुआ ?

शिल्प क्रान्ति
(INDUSTRIAL REVOLUTION)

जार्ज तृतीय के समय से पूर्व इंगलैंड में शिल्प का काम हाथ से

Industrial Revolution किया जाता था। शिल्पालय (कारखाने) आदि स्थापित न थे। शिल्पकार लोग अपने घरों में वस्तुएँ तैयार करते थे और फिर उन्हें दुकानदारों के पास बेच देते थे। शिल्पकला की इस रीति को *'घरेलू रीति'* (Domestic System) कहते हैं। परन्तु जार्ज तृतीय के शासनकाल में बहुत सी ऐसी मशीनें तथा कलाएँ आविष्कृत हो गईं जिनके कारण शिल्पकला में आश्चर्यजनक उन्नति हो गई और देश में स्थान स्थान पर शिल्पालय (कारखाने) खुल गये। इसके अतिरिक्त यातायात के मार्गों में भी पर्याप्त उन्नति हुई। *शिल्पकला तथा यातायात के मार्गों में इस आश्चर्यजनक परिवर्तन को जो इङ्गलैंड में जार्ज तृतीय के राज्यकाल (अथवा अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग और उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भिक भाग) में हुआ, शिल्पक्रांति* (Industrial Revolution) *कहते हैं।*

इंगलैंड में शिल्पक्रांति के कारण—यह शिल्प-क्रांति सब से पहले इंगलैंड में हुई। इसके कई कारण थे :—

१—सबसे पहिले मशीनों का आविष्कार इङ्गलैंड में हुआ।

२—इन मशीनों को चलाने के लिये इंगलैंड में लोहा और कोयला जो शिल्प की जान हैं निकट ही मिलते हैं।

३—उन दिनों में भी अंग्रेजी साम्राज्य पर्याप्त विस्तृत था। अतः यह शिल्पी वस्तुओं के लिए एक अच्छी मंडी का काम दे सकता था।

४—इस शिल्प क्रांति से पहले कृषि में एक भारी क्रांति हो गई थी जिससे मजदूरी सस्ती हो गई थी।

५—अठारहवीं शताब्दी में व्यापार के अधिक होने के कारण देश में पर्याप्त धन था।

६—देश में व्यापारी जहाजों का भी घाटा न था जिस से माल का लाना और भेजना कठिन न था। इसके साथ देश में आवागमन के साधनों में पर्याप्त उन्नति हुई।

प्रसिद्ध मशीनें (Important Machines)—अठारहवीं

शताब्दी में इङ्गलैंड में कातने और बुनने की कई कलें आविष्कृत हुईं।

१ फ्लाईङ्ग शटल (Flying Shuttle)—1733 ई० में एक व्यक्ति जान के (John Kay) ने शटल का आविष्कार किया जिस से जुलाहे कपड़ा अधिक चौड़ा और सुगमता से बुनने लगे। इस के पश्चात् लोगों ने कातने के काम को तेज़ करने की ओर ध्यान दिया।

२ स्पिनिंग जैनी (Spinning Jenny)—1764 ई० में एक मिस्त्री हारग्रीव्ज़ (Hargreaves) ने कातने की एक ऐसी मशीन का आविष्कार किया जिस के द्वारा एक मनुष्य एक साथ आठ धागे (और कुछ समय पश्चात १०० धागे) कात सकता था। इस मशीन का नाम उसने अपनी पत्नी (Jenny) के नाम पर Spinning Jenny रखा।
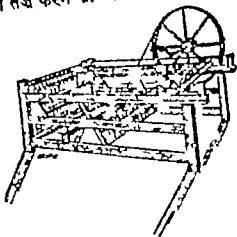
Spinning Jenny

३ वाटर फ्रेम (Water Frame)—इस समय के लग भग आर्कराइट (Arkwright) ने एक मशीन आविष्कृत की जिस में कातने का काम हाथ के स्थान जल-शक्ति से होता था। इस मशीन का नाम वाटर फ्रेम (Water-Frame) था।

Arkwright

४, म्यूल (Mule)—इसके कुछ समय के बाद क्रम्पटन (Crompton) ने एक ऐसी मशीन आविष्कृत की जिस में Jenny और Water

Frame दोनों आविष्कारों के लाभ विद्यमान थे, अर्थात् इस मशीन में एक साथ धागे भी कई काते जा सकते थे और यह चलती भी जल की शक्ति से थी। इस से धागा अधिक बारीक और अधिक पक्का बनता था। इस मशीन को Mule कहते थ।

उपरिलिखित मशीनों से कातने का काम बहुत तेज़ हो गया और बुनने का काम साथ-साथ न हो सका।

५ पावर लूम (Power Loom)—कार्ट राइट (Cart wright) ने 1785 ई० में एक ऐसी मशीन निकाली जिसने बुनाई का काम अति सुगम कर दिया। इस मशीन का नाम Power loom अर्थात् *बाष्प से चलने वाली खड्डी* रखा गया था। इन समस्त आविष्कारों ने इंगलैंड में कपड़ा तैयार करने के काम को पर्याप्त बढ़ा दिया।

६ स्टीम इञ्जन (Steam Engine)—उपरिलिखित मशीनों न शीघ्र ही आश्चर्यजनक उन्नति कर ली। पहले तो ये मशीनें जल से चलती थीं, परन्तु कुछ काल के पश्चात् जब James Watt ने *स्टीम इञ्जन* तैयार किया तो ये मशीनें भाप से चलने लगीं। साथ ही इस काल में लोगों न पत्थर का कोयला निकालने का अधिक ज्ञान प्राप्त कर लिया जिस से लोहा पिघलाना सुगम हो गया और लोहे की शिल्प की बहुत उन्नति हुई।
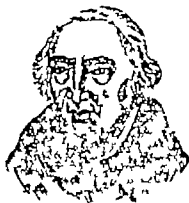
James Watt

आवागमन के साधनों में उन्नति—शिल्पी उन्नति के साथ साथ आवागमन के साधनों में भी उन्नति होने लगी।

१ जहाज़ी नहरें—*ब्रिंडले* (Brindley) ने जो एक इंजीनियर

था 1761 ई० में पहली जहाजी नहर बनाई (यह वर्सले से मानचेस्टर तक थी)। इसके पश्चात् उसने कई और नहरें बनाईं।

२ पक्की सड़कें—इंगलैंड में सड़क पहले कच्ची होती थीं, परन्तु स्काटलैंड के एक इंजीनियर मैकेडम (Macadam) ने पत्थर कूट कर पक्की सड़कें बनाने की रीति निकाली।

Brindley

३ भाप वाले जहाज—बादबानी जहाजों (Sailing Ships) के स्थान पर भाप से चलने वाले जहाज (Steamships) भी चलने लग पड़े। इसके बनाने वालों में अमेरिका के एक इंजीनियर राबर्ट फुलटन (Robert Fulton) का नाम प्रसिद्ध है। इन जहाजों से माल असबाब का आना-जाना अधिक सुगम हो गया।

४ रेलवे—इन दिनों में भाप के बल से गाड़ियाँ खींचने वाले इञ्जन भी आविष्कृत हो गये थे। उनमें सब से प्रसिद्ध जार्ज स्टीफ़ेनसन (George Stephenson) का इञ्जन "राकेट" (The Rocket) था। 1830 ई० में लिवरपूल और मानचेस्टर के मध्य रेलवे लाइन बनाई गई।
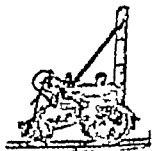
The Rocket

उपर्युक्त आविष्कारों तथा आवागमन के साधनों में उन्नति के कारण शिल्पकला में

आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया। वस्तुएँ अधिकता से तैयार होने लगीं और एक स्थान से दूसरे स्थान तक सुगमतापूर्वक पहुँचने लगीं।

George Stephenson

शिल्प क्रान्ति का परिणाम

परिणाम—इस शिल्प क्रान्ति के बड़े बड़े परिणाम निम्नलिखित थे :—

१—*इंगलैंड शिल्पी देश*—इस क्रान्ति ने इंगलैंड को संसार में सब से बड़ा शिल्पी देश बना दिया।

२—*सस्ती वस्तुएँ*—मानव जीवन के लिये काम आने वाली वस्तुएँ कारखानों में बहुतायत से तथा सस्ती तैयार होने लग गईं।

३—*व्यापार में वृद्धि*—चीजों के अधिक और सस्ता तैयार होने के कारण इंगलैंड का व्यापार संसार के दूसरे देशों के साथ बहुत होने लग गया।

४—*धन में वृद्धि*—व्यापार के बढ़ जाने का एक प्रभाव यह हुआ कि देश में धन बहुत बढ़ गया और अन्त में इसी धन के कारण से इंगलैंड को क्रान्तिकारी फ्रांस के विरुद्ध सफलता प्राप्त हुई।

५—*जन संख्या में परिवर्तन*—बहुत से शिल्पी नगर कोयले की खानों के समीप बस गये। श्रमजीवी (मजदूर) लोग आजीविका के लिये ग्रामों को छोड़ इन्हीं नये नगरों में आ बसे जिससे इंगलैंड के उत्तरी भाग में (जहाँ कोयला तथा लोहा बहुत था) जन संख्या अधिक हो गई। नये नगर यथा *बरमिंगहम शेफ़ील्ड* आदि बड़े रौनक वाले नगर बन गये।

६—*देश में अशान्ति*—शिल्पालय बन जाने के कारण बहुत से कारीगर बेकार हो गये और मजदूरी कम हो गई, जिससे देश में अशान्ति फैल गई।

७—मज़दूरों से अधिक काम लेना—पूँजी वालों अथात् शिल्पालयों के स्वामियों ने अधिक लाभ उठाने के लोभ से बच्चों तथा स्त्रियों से काम लेना आरम्भ कर दिया और काम के घण्टे इतने अधिक कर दिये कि वह इतनी देर काम नहीं कर सकते थे। शिल्पालयों में कई प्राणहारिणी दुर्घटनाएँ होने लगीं। अन्ततः गवर्नमेन्ट को मज़दूरों के पक्ष में कानून बनाने पड़े।

८—पूँजी तथा मज़दूरी में झगड़ा—लगभग सारी शिल्पकारी के काम थोड़े से पूँजीपतियों (Capitalists) के हाथ आ गये और मज़दूर लोग उनकी दया पर निर्भर हो गये। क्योंकि मज़दूर अधिकता से मिल सकते थे अतः मज़दूरी बहुत कम हो गई और उनके साथ अच्छा व्यवहार भी नहीं होता था। अन्त में पूँजी (Capital) और मज़दूरी (Labour) में एक ऐसा झगड़ा उत्पन्न हो गया जिसका अभी तक सन्तोषजनक हल नहीं हुआ।

९—पार्लिमेंट के सुधार का आन्दोलन—शिल्पी क्रान्ति के कारण कई नये नगर बस गये थे परन्तु उनको पार्लिमेंट में अपने मेम्बर भेजने का अधिकार न था जब कि पुराने उजड़े हुये नगरों को यह अधिकार प्राप्त था। इसलिये पार्लिमेंट के चुनाव के सुधार का आन्दोलन भी शीघ्र ही आरम्भ हो गया।

१०—कृषि में अधोगति—इंगलैंड के शिल्प प्रधान देश बन जाने से कृषि की अधोगति हो गई, जिससे इंगलैंड को खाद्य पदार्थों के लिये दूसरे देशों का आश्रित बनना पड़ा।

११—युद्धों का मूल कारण—यह शिल्पी क्रान्ति ही वर्तमान काल के युद्धों का एक बड़ा कारण है क्योंकि सब शिल्पी देश दूसरे देशों पर अधिकार करना चाहते हैं जिससे उन्हें कच्चा सामान मिल सके और उनकी शिल्पी वस्तुएँ दूसरे देशों में जा सकें।

☞Q What do you understand by the French Revolution? (P U 1923-53) Describe its causes, chief events and results (P U 1940) What was England's attitude towards it? (P U 1955)

प्रश्न—फ्रांस की क्रांति से तुम क्या समझते हो? इसके कारण, प्रसिद्ध घटनायें तथा परिणाम वर्णन करो और बताओ कि उसकी ओर इंगलैंड का कैसा भाव था।

फ्रांस की क्रान्ति
(FRENCH REVOLUTION)
1789

अठारहवीं शताब्दी में फ्रांस में स्वच्छाचारी राजाओं का राज्य था। पादरियों तथा अमीरों (Nobles) को बहुत शक्ति तथा विशेष सुविधायें प्राप्त थीं, परन्तु जन-साधारण का बहुत बुरा हाल था। अत 1789 ई० में फ्रांस में सर्व साधारण ने इस स्वेच्छाचारी राज्य तथा पादरियों और अमीरों की सुविधाओं के विरुद्ध एक प्रबल विद्रोह कर दिया।

French Revolution

इससे फ्रांस में राजवंश की समाप्ति हो गई, धनवान् और निधन को एक पद पर किया गया, पादरियों तथा अमीरों की सुविधायें छीन ली गईं और स्वाधीनता, समानता और भ्रातृभाव (Liberty, Equality and Fraternity) का सिद्धान्त अपने सामने रखा गया और देश में प्रजातन्त्र शासन स्थापित किया गया। इस क्रान्ति को फ्रांस की क्रान्ति कहते हैं। इस क्रान्ति के बड़े बड़े कारण निम्नलिखित थे —

१ देश की आर्थिक दशा—फ्रांस के राजे तथा उन के दरबारी बड़े अपव्ययी तथा विलासप्रिय थे। लाखों रुपये राजदरबारों के सजधज पर व्यय हो जाते थे। उधर अन्य देशों के साथ युद्ध के कारण बड़ा खर्च आ गया था। इसलिये देश की आर्थिक दशा हीन हो चुकी थी और लोगों का शासन से विश्वास उठ गया था।

२ दूषित शासन-प्रबन्ध—देश का शासन प्रबन्ध बहुत बुरा था। राजे स्वच्छाचारी थे और शासन की बागडोर कुछ एक लोभी तथा स्वार्थी कर्मचारियों के हाथों में था जो प्रजा के हितों का तनिक भी ध्यान न रखते थे और केवल अपने ही सुखों में लगे रहते थे। देश की पार्लिमेंट तो थी परन्तु पौने दो सौ वर्षों से (1614 ई० से)

सुनाई न गई थी। उधर पड़ोसी देश इंगलैंड में पार्लिमेंट का बहुत बल तथा प्रभाव था। जनता इस शासन प्रणाली से बहुत तंग आ गई थी।

३ श्रेणी विभाग—फ्रांस के लोग दो श्रेणियों में विभक्त थे। प्रथम उच्च श्रेणी अर्थात् पादरी और अमीर लोग, दूसरे निचली श्रेणी अर्थात सर्वसाधारण। इन दोनों श्रेणियों में बड़ा भारी भेद था। उच्च श्रेणी के लोग विलास का जीवन व्यतीत करते थे, वे अमीनों के स्वामी थे, टैक्सों से मुक्त थे और सब बड़ी नौकरियाँ उन्हीं के लिये रखी हुई थीं। परन्तु निचली श्रेणी अर्थात सर्वसाधारण की दशा बहुत बुरी थी। उनसे बेगार ली जाती थी और उन पर अनुचित कठोरतायें की जाती थीं और वे टैक्सों के असह्य बोझ से दबे जा रहे थे, परन्तु उन्हें अपने देश के राजकाज में कोई भाग प्राप्त न था। इससे जनता के हृदयों में अमीरों तथा पादरियों के लिये बड़ी घृणा का भाव पाया जाता था।

४ टैक्सों का असमान विभाजन—देश में टैक्सों का विभाजन असमान था। सरदार और पादरी जो टैक्स दे सकते थे प्रायः टैक्सों से मुक्त थे, परन्तु निर्धन लोग जिन्हें दो समय पेट भर कर खाना भी प्राप्त न होता था टैक्सों के बोझ से दबे जा रहे थे। उन्हें सड़कों पर चलने, पुलों से लाँघने और नगरों में प्रवेश करने के लिये भी टैक्स देने पड़ते थे। इससे जनता में बहुत असन्तोष फैल गया था।

५ कृषकों तथा जनसाधारण की दशा—भूमियों के स्वामी प्रायः अमीर तथा पादरी थे। ये लोग प्रायः पैरिस में रह कर आमोद प्रमोद में डूबे रहते थे। उन्हें अपने रियाइयों से कोई सहानुभूति न थी। इन कृषकों की बड़ी दुर्दशा थी। उन्हें अपनी इच्छानुसार खेती बोने की आज्ञा न था और न ही वे अपने खेतों को जंगली पशुओं से बचाने के लिये उनके चारों ओर बाड़ लगा सकते थे क्योंकि इस से सरदारों को शिकार खेलने में कष्ट होता था। इसके अतिरिक्त जमीन का लगान इतना अधिक था कि किसानों का पेट भर कर खाना भी कठिन

कठिनता से प्राप्त होता था। जनता के पास आटा पीसने के लिये चक्की और रोटी पकाने के लिए तन्दूर भी नहीं होते थे। चक्की और तन्दूर के प्रयोग के लिये उन्हें धनवानों को भारी फीस देनी पड़ती थी।

६ देश के विद्वानों के विचार—परन्तु इतनी दुर्दशा होते हुए भी शायद फ्रांस में क्रांति न होती यदि इस समय फ्रांस के निवासी भली भाँति सुशिक्षित न होते और देश में उच्चकोटि के नीतिज्ञ तथा फ़िलासफ़र उत्पन्न न होते। इनमें से निम्नलिखित नाम विशेषतया वर्णनीय हैं :—

(i) वाल्टेयर (Voltaire) (ii) रूसो (Rousseau) (iii) डिडरो (Diderot) (iv) मौंटेस्क्यू (Montesquieu)।

इन्हों ने लोगों का ध्यान उनकी शोचनीय दशा की ओर आकर्षित किया और उन में जागृति उत्पन्न कर दी। वाल्टेयर ने अपनी पुस्तकों में फ्रांस की दशा की तुलना इंगलैंड से करके लोगों का ध्यान फ्रांस की दुर्दशा की ओर दिलाया। रूसो ने जनसाधारण को अधिकार दिये जाने का प्रचार बड़े जोश से किया। अब लोग प्रकट रूप से शिकायत करने लगे कि लोगों में भेद-भाव क्यों हो? क्यों सरदार तथा पादरी टैक्सों से मुक्त हों और सर्वसाधारण ही टैक्स दें? क्यों सरदार लोग विलास करें और निर्धन मारे-मारे फिरें? सच तो यह है कि रूसो के प्रचार ने लोगों को सरकार के विरुद्ध कर दिया। नैपोलियन ने कहा था, "There would have been no French Revolution but for Rousseau"

७ फ्रांस की पराजय—जितना काल फ्रांस के राजा योरुप में विजयें प्राप्त करते रहे सरकार का प्रभाव बना रहा और जनता इन विजयों के आनन्द में अपनी दशा पर विचार भी नहीं करती था, परन्तु जब सप्तवर्षीय युद्ध में फ्रांस को पराजयें मिलना आरम्भ हुईं तो सरकार का दबदबा जाता रहा और लोग इस शासन से विमुख हो गये।

८ अमेरिका की उपमा—फ्रांस वालों ने अमेरिका की बस्तियों को इंगलैंड के शासन से स्वतन्त्रता प्राप्त करते देखा था। इस उदाहरण ने उनके हृदयों में अपने लिये स्वतन्त्रता प्राप्त करने का भाव उत्पन्न कर दिया था।

९ देश में अकाल—1788 ई० में देश में एक भारी अकाल पड़ गया जिससे क्रांति का होना और भी निश्चित हो गया।

क्रांतिकाल की घटनायें

(i) पार्लिमेंट का अधिवेशन—1789 ई० में फ्रांस के राजा *लुई सोलहवें* (Louis XVI) ने आर्थिक कठिनाइयों को सुलझाने के लिये फ्रांसीसी पार्लिमेंट का, जिसे States General कहते थे, अधिवेशन (वर्सेय में) बुलाया, परन्तु जनता के प्रतिनिधियों ने तत्काल ही पार्लिमेंट पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया और उसका नाम *नेशनल असेम्बली* (National Assembly) रखा। *इस असेम्बली ने एक नवीन विधान तैयार किया* जिसके अनुसार राजा के अधिकार सीमित कर दिये, अमीरों और पादरियों के अधिकार घटा दिये और स्वेच्छाचारी शासन के स्थान देश में इंगलैंड की भाँति वैधानिक शासन स्थापित कर दिया।

(ii) क्रान्ति का आरम्भ—इतने में एक अफवाह फैल गया कि राजा ने इस नेशनल असेम्बली को दबाने का षड्यन्त्र कर लिया है। इससे पेरिस के लोगों में बड़ा जोश फैल गया और उन्होंने 14 जुलाई 1789 ई० को *बैस्टील** (Bastille) जेल पर, जिसे वे अत्याचार का चिन्ह समझते थे, धावा बोल दिया और पहरेदारों का वध करके कैदियों को मुक्त कर दिया। इस प्रकार क्रान्ति का आरम्भ हुआ।

(iii) राजा तथा रानी का वध—इसके पश्चात् विद्रोहियों ने वर्सेय (Versailles) में राजभवन पर धावा बोल दिया, और राजा,

---

*बैस्टील पेरिस नगर में एक भवन था जो दुर्ग और जेल दोनों का काम देता था।

रानी तथा राजवंश को पेरिस में लाकर अपने अधिकार में ले लिया। राजा तथा रानी ने अपने प्राण संकट में जानकर फ्रांस से भाग जाने का यत्न किया परन्तु वे पकड़े गये और कैद कर दिये गये। *आस्ट्रिया तथा प्रशिया* ने राजा की सहायतार्थ फ्रांस पर चढ़ाई की, परन्तु क्रान्तिकारियों ने उन को मुँहतोड़ पराजय दी। क्रांतिकारियों ने अब देश में प्रजातन्त्र शासन की घोषणा कर दी और 1793 ई० में लुई सोलहवें (Louis XVI) और उसकी रानी (Marie Antoinette) को जो बड़ी क्रूर और निर्दयी थी, मृत्यु दण्ड दिया गया।

(iv) त्रास-चक्र—राजा तथा रानी के वध के पश्चात् फ्रांस में *त्रास चक्र* (Reign of Terror) आरम्भ हुआ जो लगभग एक वर्ष तक रहा। इस काल में क्रांतिकारियों के नेताओं ने बड़े अत्याचार किये। अमीर, पादरी तथा राजभक्त बिना सोचे विचारे हजारों की संख्या में वध किये गये। अकेले पेरिस नगर में ही सहस्रों लोग मृत्यु का ग्रास बने। क्रांतिकारियों के इन अन्धा धुन्ध अत्याचारों के कारण ही इस काल को "*त्रास चक्र*" (Reign of Terror) कहते हैं। परन्तु यह त्रास चक्र बहुत देर न रहा। लोगों की आँखें खुलीं और उन्होंने इन दुष्टों से पूरा बदला लिया। अन्ततः देश की बाग डोर एक पुरुष *नेपोलियन बोनापार्ट* (Nepoleon Bonaparte) के हाथ में आ गई जो 1804 ई० में फ्रांस का सम्राट् बन बैठा।

परिणाम—इस क्रांति से योरुप के दूसरे शासक भयभीत हो गये। इंगलैंड ने भी जो आरम्भ में इस क्रांति से सहानुभूति रखता था, अपना व्यवहार बदल लिया और अन्ततः 1793 में इंगलैंड और क्रांतिकारी फ्रांस में युद्ध छिड़ गया जो 1815 ई० में समाप्त हुआ।

इंगलैंड का भाव (England's Attitude) — जब फ्रांस में क्रांति आरम्भ हुई तो *अंग्रेज प्रारम्भ में तो बहुत प्रसन्न* हुए क्योंकि उनका विचार था कि फ्रांस उनका अनुसरण कर रहा है अर्थात् स्वेच्छाचार पूर्ण शासन की समाप्ति करके इंगलैंड के ढंग की नियमानुमोदित शासन प्रणाली स्थापित करना चाहता है। इस लिये

कई नीतिज्ञों ने क्रांतिकारियों के साथ सहानुभूति प्रकट की। यंगर पिट (Younger Pitt) का, जो उस समय प्रधान मन्त्री था भाव क्रांति के सम्बन्ध में बड़ा सहानुभूति पूर्ण था। परन्तु जब 1793 ई० में फ्रांस में त्रास-चक्र चल रहा था तो बहुत से अंग्रेज नीतिज्ञों ने अपनी राय बदल दी और जब फ्रांस के क्रांतिकारियों ने योरुप के अन्य देशों को प्रेरित किया कि वे भी अपने राजाओं को पदच्युत कर के प्रजातंत्र शासन स्थापित करें और इस बात में फ्रांस उनको सहायता करेगा, तो पिट घबरा गया और उसे अपने विचार बदलने पड़े।

यंगर पिट ने इस क्रांति के विचारों को इंगलैंड में फैलने से रोकने के लिये दमन नीति का प्रयोग किया :—

१—हेबियस कार्पस ऐक्ट (Habeas Corpus Act) कुछ काल के लिये स्थगित कर दिया गया।

२—एक कानून पास करके सब पालिटिकल जलसे देश में निषिद्ध ठहरा दिये गये।

३—संदिग्ध प्रदेशी लोगों को देश से तत्काल ही निकाल दिये जाने के लिये एक कानून पास किया गया जिसे Alien Act कहते थे।

४—देश में प्रत्येक प्रकार की हलचल को दबा दिया गया और बड़े बड़े नेताओं को कैद में डाल दिया गया।

इस प्रकार से इस क्रांति की तरंग का देश में आने से रोका गया।

Q Briefly describe the main events of the war between England and France (1793 1815) What were the causes of the English success in it?

प्रश्न—इंगलैंड और फ्रांस के युद्ध की प्रसिद्ध घटनायें संक्षिप्त रूप से बयान करो। इस में अंग्रेजों की सफलता के क्या कारण थे?

कारण—जब फ्रांस में राजा तथा रानी का वध कर दिया गया

इंगलैंड और क्रान्तिकारी फ्रांस का युद्ध (1793—1815)

और त्रास-चक्र आरम्भ हुआ तो पिट ने फ्रांस में रहने वाले अंग्रेजी राजदूत को वापिस बुला लिया। इससे फ्रांसीसियों ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और यह युद्ध बाईस वर्ष (1793—1815) तक होता रहा। इस युद्ध का दो भागों में विभक्त किया जा सकता है :—

१—1793 ई० से 1802 ई० तक—*क्रान्तिकारी युद्ध* (Revolutionary War)।

२—1803 ई० से 1815 ई० तक—*नैपोलियन से युद्ध* (Napoleonic War)।

१. क्रान्तिकारी युद्ध

(Revolutionary War)

1793—1802

इस युद्ध को क्रान्तिकारी युद्ध इसलिये कहते हैं, क्योंकि यह युद्ध क्रान्तिकारी फ्रांस के विरुद्ध लड़ा गया था। इस युद्ध की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित हैं :—

१. पहला मेल (First Coalition), 1793 ई०—इंगलैंड के प्रधान मन्त्री यंगर पिट ने यूरोप के कुछ देशों (स्पेन, हालैंड, आस्ट्रिया तथा प्रशिया) को साथ मिला कर 1793 ई० में फ्रांस के विरुद्ध एक मेल स्थापित कर लिया, जिसे *पहला मेल* (First Coalition) कहते हैं। परन्तु फ्रांसीसी इस मेल को तोड़ने में सफल हो गये। इंगलैंड के साथी देश उसे छोड़ कर फ्रांस से मिल गये और इंगलैंड युद्ध के लिये अकेला रह गया। परन्तु इंगलैंड युद्ध लड़ता रहा और अंग्रेजी बेड़े के एक अफसर लार्ड नेलसन (Lord Nelson) ने स्पेन के बेड़े का सेंट विनसेंट (St Vincent) की लड़ाई में करारी हार दी।

२ नील की लड़ाई (Battle of the Nile), 1798 ई०—उस समय नैपोलियन बोनापार्ट (Napoleon Bonaparte) फ्रांसीसी सेनाओं का सेनापति था। उसने यह अनुभव करके कि अंग्रेज़ी बेड़े का हराना बड़ा कठिन है, भारतवर्ष से अंग्रेज़ी शासन को मिटाने का विचार किया और अवसर भी बहुत अच्छा था, क्योंकि *टीपू सुल्तान*, मैसूर केसरी, अंग्रेज़ों के विरुद्ध फ्रांसीसी सहायता का इच्छुक था। इसलिये नैपोलियन भारत विजय के विचार से मिस्र पहुँचा और उसने जाते ही मिस्र को जीत लिया। अंग्रेज़ी जल-सेनापति नैलसन (Nelson) को उसका पीछा करने के लिये भेजा गया। नील नदी के मुहाने के पास उन दोनों बेड़ों में युद्ध हुआ, जिस में फ्रांसीसी बेड़ा नष्ट हो गया। *इसे नील नदी की लड़ाई कहते हैं। इस पराजय से नेपोलियन की भारत विजय की कामना एक स्वप्न मन पर रह गई और नैपोलियन वापस फ्रांस लौट आया।*
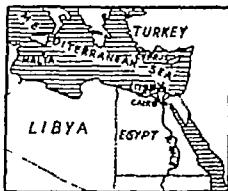
३ दूसरा मेल (Second Coalition), *1798–1800* ई०—नैपोलियन के नील की लड़ाई में पराजित हो जाने से उस के शत्रुओं का साहस बढ़ गया। इस लिये इंगलैंड ने (आस्ट्रिया और रूस का साथ मिलाकर) फ्रांस के विरुद्ध एक और मेल स्थापित कर लिया, जिसे *दूसरा मेल* (Second Coalition) कहते हैं, परन्तु नैपोलियन ने शीघ्र ही ऐल्प्स पर्वत को पार करके *मैरंगो* (Marengo) के स्थान पर 1800 ई० में इस मेल के एक साथी *आस्ट्रिया* को करारी हार दी और इस मेल को भी तोड़ दिया। इंगलैंड फिर अकेला रह गया। परन्तु इंगलैंड ने फ्रांसीसियों से *माल्टा* (Malta) का टापू, जो रोम सागर में है, जीत लिया और यह अब तक उसी के अधीन है।

४ निष्पक्ष देशों की लीग (Armed Neutrality)—इस के बाद योरुप के निष्पक्ष देशों (रूस, डेन्मार्क तथा स्वीडन) ने एक लीग स्थापित करके इंगलैण्ड के विरोध की तैयारियाँ कर लीं, क्योंकि इंगलैंड उन्हें फ्रांस के साथ व्यापार करने नहीं देता था। परन्तु 1801 ई० में लार्ड नैलसन ने कोपनहेगन (Copenhagen) के जलयुद्ध में डेनमार्क को पराजित करके इस लीग को तोड़ दिया।

५ ऐमिअन्ज़ का सन्धि पत्र (Treaty of Amiens) 1802 ई०—अन्ततः 1802 ई० में इंगलैंड तथा फ्रांस में *ऐमिअन्ज़* (Amiens) के स्थान पर जो फ्रांस में है, सन्धि हो गई और युद्ध कुछ काल के लिए बन्द हो गया। *इंगलैंड ने सारे विजित प्रदेश वापस कर दिये और माल्टा द्वीप को खाली करना भी स्वीकार कर लिया।* परन्तु यह संधि स्थायी सिद्ध न हुई और 1803 ई० में युद्ध फिर छिड़ गया।

२ नैपोलियन से युद्ध

(Napoleonic War)
1803–1815

कारण—1803 ई० में नैपोलियन के साथ युद्ध फिर आरम्भ हो गया। इसका कारण यह था कि संधि-पत्र होते हुए भी नैपोलियन युद्ध की भरपूर तैयारियाँ कर रहा था।

१ ट्रैफालगर की लड़ाई (Battle of Trafalgar) 1805 ई०—1804 ई० में नैपोलियन फ्रांस का सम्राट् बन गया और उसने इंगलैंड पर आक्रमण करने की प्रबल तैयारियाँ कीं। परन्तु 1805 ई० में अंग्रेज़ी जल-सेनापति नैलसन (Nelson) ने स्पेन के तट पर अन्तरीप *ट्रैफलगर* (Trafalgar) के समीप फ्रांस तथा स्पेन के संयुक्त बेड़े को मुँहतोड़ पराजय दी। इस लड़ाई को ट्रैफालगर की लड़ाई कहते हैं। यद्यपि नैलसन स्वयं लड़ाई में एक गोले के लगने से मर गया, परन्तु *अंग्रेज़ों की इस विजय ने फ्रांसीसी जलशक्ति को नष्ट कर दिया और नैपोलियन को फिर कभी इंगलैंड पर आक्रमण करने का साहस न हुआ।*

२ तीसरा मेल (Third Coalition), 1805 ई०—इसी बीच में इंगलैंड ने (रूस, आस्ट्रिया तथा प्रशिया के साथ) एक और मेल स्थापित कर लिया था, जिसे तीसरा मेल (Third Coalition) कहते हैं, परन्तु नैपोलियन ने 1805 ई० में रूस तथा आस्ट्रिया को 'आस्टर्लिट्ज' *(Austerlitz) के स्थान पर मुँहतोड़ पराजय दी और अगले वर्ष अर्थात् 1806 ई० में नैपोलियन ने प्रशिया को भी जेना (Jena) के स्थान पर एक विनाशकारी पराजय दी और इस भाँति तीसरा मेल भी टूट गया।

३ कान्टीनेंटल सिस्टम (Continental System), 1806 ई०—नैपोलियन ने यह अनुभव करके कि इंगलैंड पर आक्रमण करके उसे नहीं हराया जा सकता, उसके व्यापार को नष्ट करने की ठानी।

इसलिये उसने बर्लिन से एक घोषणा प्रकाशित की, जिसे Berlin

*इंगलैंड का मन्त्री पिट आस्टर्लिट्ज की हार के शोक से ही मर गया।
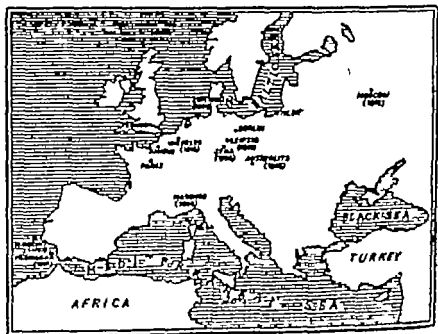
Decress या Continental System कहते हैं। इसके अनुसार इंगलैंड की सब बन्दरगाहें नाकाबन्दी की दशा में ठहराई गईं और फ्रांस के साथ सम्बन्ध रखने वाले सब देशों का इंगलैण्ड के साथ व्यापार करने से मना कर दिया गया। इसके उत्तर में अंग्रेजों ने Orders in Council* की घोषणा की कि जिससे उन्होंने अन्य देशों को फ्रांस के साथ इस शर्त पर व्यापार करने की आज्ञा दी कि वे पहले इंगलैंड की किसी बन्दरगाह से अवश्य होकर जायें। कान्टीनैन्टल सिस्टम का चालू करना नैपालियन की एक बड़ी भारी भूल थी और अन्ततः उसके लिये बड़ी हानिकारक सिद्ध हुई, क्योंकि व्यापार में गड़बड़ मच जाने से समस्त देशों में वस्तुओं का मूल्य बहुत बढ़ गया और यारुप की जातियाँ नैपालियन से घृणा करने लग गईं।

४ टिलसिट (Tilsit) का सन्धि पत्र—1807 ई० में नैपालियन ने रूस को भारी पराजय दी। अन्त में रूस के जार (Tsar)† ने उसके साथ टिलसिट (Tilsit) का सन्धि-पत्र किया, जिसके अनुसार जार ने कान्टीनैंटल सिस्टम को मान लिया और प्रतिज्ञा की कि भारतवर्ष पर आक्रमण करने में वह नैपोलियन की सहायता करेगा। इस समय नैपोलियन की शक्ति पूरे यौवन पर थी। परन्तु पैनिनसुलर-वार ने उसकी शक्ति की लगभग समाप्ति कर दी।

५ पैनिनसुलर-वार (Peninsular War)—1808 ई० में नैपालियन ने अपने भाई जोजफ (Joseph) बोनापार्ट को स्पेन का राजा नियत कर दिया। इस पर स्पेन निवासी बिगड़ बैठे और उन्होंने अंग्रेजों से सहायता माँगी। अंग्रेजों ने अपने वीर जरनैल सर आर्थर वैल्जली (Sir Arthur Wellesley) के अधीन उनकी सहायता के लिए सेना भेजी। कोई छः वर्ष तक अंग्रेजों तथा फ्राँसीसियों में

---

*Orders in Council इंगलैंड के मन्त्रि-मण्डल का एक आदेश होता है, जिसको चालू करने का अधिकार पार्लिमेंट ने उसको दिया होता है।

†रूस के सम्राट् को Tsar (जार) कहते थे।

युद्ध होता रहा। अन्तत बड़ी भारी हानि उठाने के पश्चात् फ्रांस वालों को देश खाली करना पड़ा। इसको *प्रायद्वीप का युद्ध* (Peninsular War) कहते हैं। *यह नैपोलियन के पतन का एक कारण सिद्ध हुआ।*

६ मास्को पर चढ़ाई (*Moscow Expedition*), 1812 ई०—रूस के जार ने कान्टीनैंटल सिस्टम को मानने से इनकार कर दिया था, क्योंकि इससे उसके व्यापार को बहुत हानि पहुँची थी। इस पर 1812 ई० में नैपोलियन स्वयं छः लाख सेना के साथ मास्को पर चढ़ आया। रूसी पीछे ही पीछे हटते चले गये। जब नैपोलियन मास्को पहुँचा तो उसने देखा कि रूसी नगर छोड़ कर भाग गये हैं और नगर खाली पड़ा है। अन्त में नैपोलियन को लौट आना पड़ा। शीत बला की थी, उधर रूसी छुप कर उसकी लौटती हुई सेना पर आक्रमण करते थे। खाद्य पदार्थों का अभाव था, क्योंकि रूसियों ने सब खेतियाँ नष्ट कर दी थीं। परिणाम यह हुआ कि छः लाख में से केवल साठ हजार रोगी सैनिक जर्मनी पहुँचे। *मास्को पर चढ़ाई नैपोलियन के नाश का एक बड़ा भारी कारण सिद्ध हुई। यह नैपोलियन की गुराकी पर पहली बड़ी पराजय थी।* यहाँ से उसके पतन का आरम्भ हो गया।

७ चौथा मेल (Fourth Coalition) 1813 ई०—नैपोलियन के नाश को देख कर इंगलैंड, प्रशिया, आस्ट्रिया, रूस इत्यादि देश उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए और 1813 ई० में उन्होंने नैपोलियन को लाइपजिग (Leipzig) के स्थान पर जा जर्मनी में स्थित है, बुरी तरह पराजित किया। क्योंकि इस युद्ध में बहुत से देशों ने भाग लिया, इसलिए इस युद्ध को Battle of the Nations भी कहते हैं। *यह नैपोलियन की दूसरी बड़ी पराजय थी।* इसके बाद नैपोलियन फ्रांस को भाग निकला।

८ नैपोलियन का सिंहासन त्याग – 1814 ई० में संयुक्त शक्तियों ने पैरिस पर अधिकार कर लिया और नैपोलियन ने सिंहासन

त्याग दिया। उसे ऐल्बा (Elba) द्वीप में, जो इटली के पश्चिमी तट के समीप है, भेज दिया गया और लूई अठारहवाँ (Louis XVIII) जो लुई सोलहवें का भाई था, फ्रांस का राजा बनाया गया।

९ शतदिवस (The Hundred Days), 1815 ई०—फ्रांस का नया राजा लूई अठारहवाँ (Louis XVIII) जनता में सर्वप्रिय नहीं था। उधर नैपोलियन के शत्रुओं में योरुप की बाँट पर फूट पड़ गई। नैपोलियन ने अवसर अनुकूल देखा और ऐल्बा से भाग कर फ्रांस आ गया। उसके पुराने सैनिकों ने उसका स्वागत किया। लूई भाग गया और नैपोलियन पुनः फ्रांस का सम्राट् बन गया। परन्तु उसे कोई सौ दिन का राज्य करना प्राप्त हुआ। इसी कारण से इस समय को The Hundred Days कहते हैं।

१० वाटरलू की लड़ाई (Battle of Waterloo), 1815 ई०—नैपोलियन ऐल्बा से आकर फ्रांस का बादशाह बन गया, परन्तु योरुप के देश इस बात पर तुले हुये थे कि वे नैपोलियन को फ्रांस का राजा नहीं रहने देंगे। इसलिये उन्होंने अपने झगड़ों को एक ओर रख कर नैपोलियन का सामना करने की तैयारियाँ कीं। Waterloo के स्थान पर जो बैल्जियम देश में स्थित है लड़ाई हुई, जिस में नैपोलियन के विरुद्ध अङ्गरेजी जैनरल ड्यूक आफ़ वेलिंगटन (Duke of Wellington) और प्रशिया का जैनरल ब्लूकर (Blucher) थे। नैपोलियन को मुँह तोड़ पराजय मिली। *यह उसकी तीसरी और अन्तिम बड़ी पराजय थी। वाटरलू की लड़ाई ने नैपोलियन की शक्ति का अन्त कर दिया।* उसने भाग निकलने का यत्न किया, परन्तु असफल रहा और अपने आप को अंग्रेजों के समर्पित कर दिया।

११ नैपोलियन की मृत्यु—अब नैपोलियन को सेंट हेलीना (St. Helena) टापू में, जो अफ्रीका के पश्चिमी तट से परे है, देश निकाला दिया गया, जहाँ वह छः वर्ष के पश्चात् 1821 ई० में मर गया।

इंगलैंड और फ्रांस में यह युद्ध कोई 22 वर्ष रहा, अन्ततः अङ्गरेजों की सफलता हुई। अङ्गरेजों की इस सफलता के कारण निम्नलिखित थे :—

अङ्गरेजों की सफलता के कारण

१ अंग्रेजी जल-शक्ति—अंग्रेजों की जल-शक्ति बड़ी प्रबल थी और नेलसन जैसा वीर जल सेनापति उनके पास था, जिसने नील और ट्रैफालगर की लड़ाइयों में फ्रांस की जल-शक्ति को छिन्न-भिन्न कर दिया।

२ अङ्गरेजी साधन—शिल्प क्रांति के कारण इंगलैंड के पास जन और धन की कमी न थी। योरुप के दूसरे देशों ने भी उसकी सहायता की। इसलिये वह लड़ाई को अन्त तक जारी रख सका।

3 कान्टीनेन्टल सिस्टम—इस सिस्टम के चालू करने से स्वयं नैपोलियन को हानि पहुँची। उसके अपने देश में भी चीजें महँगी हो गईं। परन्तु वह इंगलैंड की ठीक नाकाबन्दी न कर सका।

४ प्रायद्वीपी युद्ध—यह युद्ध भी फ्रांस के लिये बड़ा हानिकारक सिद्ध हुआ। नैपोलियन ने स्वयं कहा था—"The Spanish ulcer ruined me"

५ मास्को पर चढ़ाई—नैपोलियन की इस चढ़ाई ने फ्रांसीसी सेनाओं को भयंकर हानि पहुँचाई। इसके अतिरिक्त उसकी इस हानि ने योरुप के अन्य देशों का साहस बढ़ा दिया।

६ नैपोलियन की लालसा—नैपोलियन की अधिक लालसा भी उसके नाश का कारण बनी। उसने अपने सामर्थ्य से बढ़ कर देश विजय कर लिये। परन्तु इससे उसके बहुत से शत्रु बन गये। जब इन देशों को अवसर मिला, वे सब उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए और नैपोलियन का पतन हो गया।

७ अङ्गरेजी प्रापेगंडा—अंग्रेजों ने नैपोलियन के विरुद्ध निष्पक्ष देशों में बड़ा प्रापेगंडा किया, जिससे वह निष्पक्ष देशों की सहानुभूति भी खो बैठा।

८ नैपोलियन के अधीन अफसरों ने भी उसे कई अवसरों पर धोखा दिया।

Q Give a brief account of the Peninsular War

प्रश्न—*प्रायद्वीप के युद्ध का संक्षिप्त वर्णन लिखो।*

यह युद्ध पुर्तगाल और स्पेन के प्रायद्वीप में लड़ा गया था। इस लिये इसे प्रायद्वीप का युद्ध कहते हैं।

Peninsular War 1808—1814

कारण—इस युद्ध का कारण यह था कि 1808 ई० में स्पेन के राजवंश में कुछ झगड़ा हो गया। नैपोलियन ने इस झगड़े से लाभ उठा कर अपने भाई जोजफ *बोनापार्ट* (Joseph Bonaparte) को स्पेन का राजा नियत कर दिया। स्पेन निवासी इस पर बहुत क्रुद्ध हुए। उन्होंने फ्रांसीसियों के विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर दिया और इंगलैंड से सहायता की प्रार्थना की।

घटनाएँ

इंगलैंड ने फ्रांस के विरुद्ध स्पेन की सहायता करना स्वीकार कर लिया और *सर जान मोर* (Sir John Moore) तथा *सर आर्थर वैल्जली* (Sir Arthur Wellesley) को अंग्रेजी सेनाओं के साथ स्पेन भेजा। सर जान मोर यद्यपि एक अनुभवी जरनैल था, परन्तु उसे फ्रांसीसियों के साथ युद्ध में पीछे हटना पड़ा और वह *कारूना* (Corunna) की लड़ाई में मारा गया। उसकी सेना जहाजों में सवार होकर इंगलैंड लौट आई।

सर आर्थर वैल्जली ने फ्रांसीसियों का बड़ी वीरता से सामना किया और उन्हें कई लड़ाइयों में बुरी तरह हराया*। उसकी प्रसिद्ध विजयें निम्नलिखित थीं :—

---

*उसने लिस्बन के निकट खाइयों की एक दुहरी के पीछे अति सुदृढ़ तीन लाइनें बना रखी थीं, जिन्हें फ्रांसीसी पार नहीं कर सकते थे। इन लाइनों को Torres Vedras की लाइनें कहते हैं। आवश्यकता के समय वेलिंगटन इनके पीछे आश्रय लेता था और सुअवसर देखकर फिर शत्रु सेना पर आक्रमण कर देता था।

PENINSULAR WAR
1808 — 1814
BATTLE FIELDS ______ X
ENGLAND
PARIS
TOULOUSE
VITORIA
SALAMANCA
TALAVERA
LISBON
LAGOS
A F R I C A

१—तलवेरा (Talavera) की लड़ाई, 1809 ई० ।

२—सैलेमानका (Salamanca) की लड़ाई, 1812 ई० ।

३—विटोरिया (Vitoria) की लड़ाई, 1813 ई० ।

इन विजयों के कारण सर आर्थर वेल्जली को ड्यूक आफ वैलिंगटन (Duke of Wellington) की उपाधि मिली। अन्त में उसने फ्रांसीसियों को स्पेन से निकाल दिया और टूलूज़ (Toulouse) के स्थान पर उन्हें एक अन्तिम पराजय दी।

परिणाम

यह युद्ध नेपोलियन के पतन का एक बड़ा भारी कारण सिद्ध हुआ। नेपोलियन स्वयं कहा करता था कि "स्पेन के फोड़े" ने *मेरा नाश कर दिया* ("The Spanish ulcer ruined me")

☞Q Estimate the part played by (a) Pitt the Younger (b) Nelson and (c) Wellington in the defeat of Napoleon (Important)

प्रश्न—बताओ कि यंगर पिट, नैलसन और वैलिंगटन ने नैपोलियन को हराने में क्या भाग लिया ?

यगर पिट, नैलसन और वैलिंगटन का काम

यगर पिट, नैलसन और वैलिंगटन—ये तीन महान पुरुष थे, जिन्होंने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध में अपने देश इंगलैंड की सब से अधिक सेवा की। यगर पिट उस समय प्रधान मन्त्री था और देश की बाग डोर उसके हाथ में थी। नैलसन जल सेनापति था और उसने फ्रांस की जलशक्ति को नष्ट भ्रष्ट करके समुद्रों पर अंग्रेजी प्रभुत्व जमा दिया। वैलिंगटन बड़ा भारी जरनैल था और उसने नैपोलियन को हराने में सब से अधिक कार्य किया।

१ **यगर पिट का काम**—जब 1793 ई० में इंगलैंड और फ्रांस का युद्ध आरम्भ हुआ तो यगर पिट प्रधान मन्त्री था। इस में शक नहीं कि वह युद्ध के कार्य में अपने महान् पिता ऐलडर पिट (Elder Pitt)

की भाँति योग्य न था परन्तु उसे अपने आप पर बड़ा विश्वास था और सत्य तो यह है कि उस समय वह ही एक पुरुष था, जो इस तूफ़ान से देश को बचा सकता था।

यंगर पिट ने फ्रांस को हराने के लिये योरुप के कई देशों को साथ मिलाकर कई मेल (Coalitions) स्थापित किये, परन्तु इस में उसे कोई विशेष सफलता न हुई। 1804 ई० में नैपोलियन फ्रांस का सम्राट् बन गया और उसने इङ्गलैंड पर आक्रमण करने की बड़ी प्रबल तैयारियाँ कीं। उसने एक बड़ी विशाल सेना तैयार की और उसे समुद्र पार इङ्गलैंड पहुँचाने के लिये एक बेड़ा तैयार किया। इससे इङ्गलैंड के लोगों के दिल में बड़ा भय उत्पन्न हो गया, परन्तु यंगर पिट ने देश को मुकाबले के लिये तैयार किया और तट के उस भाग पर जहाँ फ्रांसीसी सेनाओं के उतरने की सम्भावना हो सकती थी, बड़े बड़े बुर्ज (towers) स्थापित किये, जिन में वीर सैनिक और तोपें रखीं। इस से नपोलियन को इंगलैंड पर आक्रमण करने का साहस न हुआ। परन्तु नैपोलियन ने इस उद्देश्य में निराशा देखकर इंगलैंड के साथी आस्ट्रिया पर 1805 में आक्रमण कर दिया और उसे करारी हार दी। इस समाचार से यंगर पिट को बहुत दुःख हुआ और वह कुछ समय बीमार रह कर मर गया। उसके अन्तिम शब्द बड़े दुःख भरे थे "My country, how I leave my country!" वह नेपोलियन को हराने में विशेष सफल न हुआ।

२ नैलसन का काम—नैलसन इंगलैंड का वीर जल सेनापति था। उसने नैपोलियन और उसके साथियों को पराजयें दीं।

(क) उसने 1797 ई० में सेंट विन्सैंट (St. Vincent) की लड़ाई में फ्रांस के मित्र स्पेन के जहाजी बेड़े को करारी हार दी।

(ख) 1798 ई० में नेपोलियन भारत को विजय करने के विचार से जहाजी बेड़े के साथ चल पड़ा और उसने मिस्र देश जीत लिया। परन्तु नैलसन ने उसका पीछा किया और नील नदी की लड़ाई (Battle of the Nile) में उसे पराजय दी। इस से नैपोलियन

की भारत विजय की आशाओं पर पानी फिर गया । इसके दो वर्ष पश्चात् नैलसन ने *माल्टा* (Malta) का टापू भी फ्रांसीसियों से जीत लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि बजाये इसके कि नैपोलियन अंग्रेजों को भारतवर्ष से निकालता, उल्टा रोम सागर में अंग्रेजों की शक्ति बहुत बढ़ गई और यह नैपोलियन के लिये हानिकारक सिद्ध हुई। माल्टा का टापू अब तक भी अंग्रेजों के अधीन है।

(ग) 1805 ई० में नैलसन ने फ्रांसीसी बेड़े को जो इंगलैंड पर आक्रमण करना चाहता था स्पेन के तट के निकट *ट्रैफ़ालगर* के युद्ध (Battle of Trafalgar) में करारी हार दी और फ्रांस की जलशक्ति का नाश कर दिया। नैलसन स्वयं इस लड़ाई में मारा गया, परन्तु इस से नैपोलियन को शक्ति को बहुत हानि पहुँची और इसके पश्चात् उसे इंगलैंड पर आक्रमण करने का कभी साहस न हुआ। इस लड़ाई से इंगलैंड की *जलशक्ति और भी अधिक हो गई* और यह बात नैपोलियन के लिये बड़ी हानिकारक सिद्ध हुई। सच तो यह है कि नैलसन ने अपनी वीरता से फ्रांसीसी बेड़े का नाश करके इंगलैंड को एक प्रबल जल-शक्ति बना दिया। *इसी कारण उसको इंगलैंड का सब से बड़ा जल-सेनापति माना जाता है*। नैपोलियन की जल-शक्ति को तोड़ने में उसका सब से बड़ा हाथ था।

३ वैलिंगटन का काम—वैलिंगटन का वास्तविक नाम *आर्थर वैलज़्ली* था। यह इंगलैंड का प्रसिद्ध जरनैल था । उसने नैपोलियन को हराने में सब से अधिक काम किया।

(क) 1807 ई० में नैपोलियन लगभग सारे योरुप का एक मात्र स्वामी बन चुका था और उससे अगले वर्ष उस ने स्पेन पर भी अधिकार कर लिया था। परन्तु इंगलैंड ने स्पेन की सहायता की और *आर्थर वैलज़्ली* को सेना देकर वहाँ भेजा। वह छः वर्ष लड़ता रहा और उसने कई युद्धों में फ्रांसीसियों को पराजयें दीं । इसे प्रायद्वीपी युद्ध कहते हैं। इन विजयों के उपलक्ष में उसे Duke of Wellington बनाया गया। अन्त में 1814 ई० में नैपोलियन को सिंहासन त्यागना

पड़ा। नैपोलियन स्वयं कहा करता था "The Spanish Ulcer ruined me" इसके पश्चात् नैपोलियन को इटली के तट के निकट Elba के टापू में भेज दिया गया।

(ख) नैपोलियन ऐल्बा से कुछ ही महीनों बाद फिर फ्रांस आ गया और फ्रांस का सम्राट् बन गया। परन्तु योरुप के देश अब उसे सम्राट् रहने देना नहीं चाहते थे। इस लिये उसके विरुद्ध एक बड़ी भारी लड़ाई हुई। यह लड़ाई बैलजियम में वाटरलू (Waterloo) के स्थान पर 18 जून 1815 ई० को लड़ी गई। इस में वैलिंगटन ने अंग्रेज़ी तथा प्रशियन सेनाओं की सहायता से नैपोलियन को करारी हार दी। नैपोलियन ने सिंहासन त्याग दिया और अब उसे अफ्रीका के तट के पास सेंट हैलीना (St. Helena) के टापू में कैद कर दिया गया, जहाँ यह छः वर्ष बाद मर गया। इस प्रकार वैलिंगटन ने नैपोलियन को हरा कर बड़ी योग्यता का प्रमाण दिया। इससे योरुप को सुख और शान्ति का साँस लेने का अवसर मिल गया।

☞Q Write a short note on the Act of Union between England and Ireland. (P U 1948)
(Important)

प्रश्न—आइरिश एक्ट आफ यूनियन पर संक्षिप्त नोट लिखो।

The Irish Act of Union 1800

जार्ज तृतीय के सिंहासनारूढ़ होने के समय आयरलैंड की अपनी पृथक् पार्लिमेंट थी, परन्तु वह न होने के बराबर थी। उसमें एक यह दोष था कि उसके मैम्बर केवल प्रोटेस्टेंट ही हो सकते थे और कैथोलिकों को जिनकी आयरलैंड में बहु-संख्या थी, मैम्बर चुनने का अधिकार भी न था। दूसरे यह कि प्रोटेस्टेंट लोगों को भी कानून पास करने का पूर्ण अधिकार न था। इस दशा में आयरलैंड के न तो कैथोलिक और न प्रोटेस्टेंट ही अंग्रेज़ी शासन से प्रसन्न थे इसलिए जब कभी वे इंगलैंड को किसी युद्ध में उलझा हुआ देखते, सुअवसर समझ कर अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध विद्रोह कर देते थे। ऐसे विद्रोह उन्होंने कई बार किए।

अन्ततः प्रधान मन्त्री *यंगर पिट* (Younger Pitt) ने विचार किया कि इस अशान्ति और असन्तोष को दूर करने का एक मात्र उपाय यह है कि आयरलैंड की पृथक् पार्लिमेंट तोड़ दी जाय और इसे इंगलैंड के शासन के साथ मिला दिया जाय। परन्तु न तो आयरलैंड के कैथोलिक ही और न प्रोटैस्टैंट ही इस बात के लिये तैयार थे। अन्त में पिट ने आयरिश पार्लिमेंट के मेम्बरों को जो सब के सब प्रोटैस्टैंट थे, घूँस देकर और *रोमन कैथोलिकों के साथ यह प्रतिज्ञा करके कि उन्हें प्रोटैस्टैंट लोगों के बराबर अधिकार मिल जायेंगे और वे पार्लिमेंट के मेम्बर बन सकेंगे, आयरलैंड की पार्लिमेंट से* 1800 ई० *में आयरिश एक्ट आफ यूनियन* (Irish Act of Union) *पास करा दिया।*

धारायें (Provisions)–इस ऐक्ट की निम्नलिखित धारायें थीं :

१—इस ऐक्ट के अनुसार आयरलैंड की पृथक् पार्लिमेंट तोड़ दी गई और आयरलैंड को इंगलैंड के साथ मिला दिया गया और इन दोनों की एक पार्लिमेंट हो गई।

२—आयरलैंड को १०० मेम्बर हाउस आफ कामन्स में और २८ लार्डस और ४ बिशप हाउस आफ लार्डस में, लण्डन में भेजने का अधिकार मिल गया। आजकल केवल अलस्टर प्रान्त के ही मेम्बर जाते हैं।

३—दोनों देशों को आपस में व्यापार करने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई।

नोट—ऐक्ट आफ यूनियन पास होने के बाद जब कैथोलिक लोगों को प्रोटेस्टैंट लोगों के समान अधिकार दिये जाने का प्रश्न सामने आया तो राजा जार्ज तृतीय ने साफ़ इनकार कर दिया, क्योंकि कैथोलिकों को सुविधा देना Coronation Oath के विरुद्ध चलना था। इस पर पिट ने त्याग पत्र दे दिया।

☞ Q Give a brief account of the Ministry of the Younger Pitt (P U 1946-47-49-52) (Important)

प्रश्न—*यंगर पिट के मन्त्रित्व काल का संक्षिप्त ब्यौरा वर्णन करो।*

यगर पिट
(YOUNGER PITT)

यगर पिट ऐल्डर पिट का (जो पीछे Earl of Chatham बन गया था) दूसरा पुत्र था।

Younger Pitt

उस का जन्म 1759 ई० में हुआ था। वह आरम्भ से ही कुछ दुर्बल सा था, इस कारण उसकी प्रारम्भिक पढ़ाई घर पर ही हुई। तत्पश्चात् उसने कैम्ब्रिज (Cambridge) यूनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त की। कुछ ऐसे ढंग से उसको शिक्षा हुई थी कि वह राज नीति में बढ़ चढ़कर भाग ले सके। वह इक्कीस वर्ष की आयु में पार्लिमेंट का मैम्बर चुना गया और चौबीस वर्ष की आयु में प्रधान मन्त्री बन गया। इतनी छोटी आयु में कोई अन्य पुरुष इंगलैंड का प्रधान मन्त्री नहीं हुआ। उसके शत्रुओं ने कहा कि राजा ने शासन की बागडोर एक स्कूल के छोकरे को सौंप दी है, परन्तु पिट ने शीघ्र ही अपनी योग्यता का प्रभाव बिठा दिया और पार्लिमेंट तथा बादशाह दोनों को अपने प्रभावाधीन कर लिया। यह एक योग्य पिता का योग्य पुत्र सिद्ध हुआ। पिट १६ वर्ष प्रधान मन्त्री रहा।

Younger Pitt

चरित्र (Character)—यगर पिट अपने पिता की भाँति कर्त्तव्यपरायण, सुवक्ता तथा दृढ़संकल्प पुरुष था। यह आर्थिक विषयों में बड़ा प्रवीण था। उसे अपनी योग्यता में पूरा विश्वास था। परन्तु यह अपने पिता की भाँति युद्ध-सम्बन्धी विषयों में प्रवीण न था और उसे मदिरापान का भी व्यसन था। उसके मन्त्रित्व का सब से बड़ा कार्य यह था कि उसने इंगलैंड को क्रान्ति के प्रभाव से बचा लिया। वह दो बार प्रधान मन्त्री रहा।

पहली बार 1783—1801 ई०
दूसरी बार 1804—1806 ई०

यंगर पिट के पहले मन्त्रित्व की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित थीं :—

१ आर्थिक सुधार—वालपोल की भाँति पिट भी अपने देश को समृद्धिशाली बनाना चाहता था और इस बात की आवश्यकता उस समय और भी अधिक थी क्योंकि अमेरिका के युद्ध में इंगलैंड की बड़ी आर्थिक हानि हुई थी। इस कारण पिट स्वतंत्र व्यापार (Free Trade) के पक्ष में था। अर्थात् यह चाहता था कि अन्य देशों के माल पर टैक्स न लगाया जाए। इस लिये उसने कई वस्तुओं पर से टैक्स हटा दिये अथवा घटा दिये जिससे देश का व्यापार बढ़ गया। उसने फ्रांस के साथ भी सन्धिपत्र किया जिसके अनुसार दोनों देशों ने एक दूसरे के माल पर कर घटा दिया। उसने जातीय ऋण (National Debt) को भी कम करने का प्रयत्न किया। इस प्रकार उसने देश की आर्थिक दशा को बहुत अच्छा बना दिया।

पहला मन्त्रित्व 1783—1801

२ पिट का इण्डिया ऐक्ट—1784 ई० में पिट ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रबन्ध उत्तम बनाने के लिये एक कानून पास किया जिसे Pitt's India Act कहते हैं। इसके अनुसार कम्पनी के व्यापारिक तथा राजनैतिक कामों को पृथक् कर दिया गया और राजनैतिक कार्य को एक बोर्ड के समर्पित कर दिया गया जिसे बोर्ड आफ़ कन्ट्रोल (Board of Control) कहते थे। भारत विद्रोह तक कम्पनी का प्रबन्ध इसी ऐक्ट के अनुसार चलता रहा।

३ पार्लिमेंट के सुधार का प्रयत्न—शिल्पक्रांति के कारण कई नये नगर बस गये थे, परन्तु पार्लिमेंट में उनके प्रतिनिधि नहीं जाते थे। पिट ने पार्लिमेंट के सुधार के लिये (1785 ई० में) एक बिल पेश किया कि उजड़े हुए स्थानों से प्रतिनिधि भेजने का अधिकार छीन लिया जाये परन्तु उसे सफलता न हुई। इस के बाद फ्रांस में क्रांति का आरम्भ हो गया था, इस लिये पिट ने अपने विचार को स्थगित कर दिया।

४ पिट तथा फ्रांस की क्रांति—1789 ई० में फ्रांस में क्रांति

का चक्र चल पड़ा और थोड़े ही समय के पश्चात् यह भय उत्पन्न हो गया कि इंगलैंड में भी क्रांति का चक्र न चल पड़े। पिट ने इंगलैंड को क्रांति से बचाने के लिये अत्यन्त कठोर कार्यवाहियाँ कीं। (१) हैबियस कार्पस ऐक्ट कुछ काल के लिये स्थगित कर दिया (२) क्रांतिकारी सभायें कानून विरुद्ध ठहरा दीं। (३) पोलिटिकल जलसे बन्द कर दिये। (४) संदिग्ध परदेशी पुरुषों को देश से बाहर निकाल दिये जाने के लिये एक कानून (Alien Act) पास किया। इस भाँति उसने इंगलैंड को क्रांति से बचा लिया। यह उसका सब से बड़ा कार्य था।

५ पिट युद्ध मन्त्री के रूप में—1793 में इंगलैंड का फ्रांस से युद्ध छिड़ गया। पिट ने क्रांतिकारी फ्रांस की शक्ति कुचलने के लिये योरुप के देशों के साथ कई मेल स्थापित किये। परन्तु इसमें उसे कोई विशेष सफलता न हुई। सत्य तो यह है कि यंगर पिट कोई योग्य युद्ध मन्त्री न था। परन्तु इतना अवश्य हुआ कि उसने लोगों के दिल में जोश और साहस भर दिया और क्रांतिकारी फ्रांस का अच्छा मुकाबला किया।

६ आयरलैंड के साथ ऐक्ट आफ यूनियन—1800 ई० में आयरलैंड की पृथक् पार्लिमेंट तोड़ दी गई और आयरिश ऐक्ट आफ यूनियन के अनुसार आयरलैंड सीधा इंगलैंड के साथ मिला दिया गया।

त्याग-पत्र—आयरिश ऐक्ट आफ यूनियन के पास कराने से पहले पिट ने रोमन कैथोलिक लोगों से प्रण किया था कि उन्हें प्रोटैस्टेंट लोगों के समान अधिकार दिये जायेंगे। परन्तु जार्ज तृतीय ने समान अधिकार देने से इनकार कर दिया। इस पर पिट ने 1801 ई० में त्याग पत्र दे दिया।

1804 ई० में जब नैपोलियन ने इंगलैंड पर आक्रमण करने की बड़े जोश से तैयारियाँ कीं तो पिट प्रधान मन्त्री बनाया गया परन्तु उसे कोई विशेष सफलता न हुई। 1805 ई० में नैपोलियन ने आस्टर्लिट्ज़ (Austerlitz) के स्थान पर बड़ी भारी विजय

दूसरा मन्त्रित्व
1804-1806

प्राप्त की। इससे पिट को बहुत दुःख हुआ और वह इसी दुःख से जनवरी 1806 ई० में ४७ वर्ष की आयु में मर गया। उसके अन्तिम शब्द थे, "My country ! How I leave my country !" ऐ मेरे देश मैं तुम्हें कैसी बुरी अवस्था में छोड़े जा रहा हूँ।

☞ Q Write short notes on —(a) The Duke of Wellington (b) Lord Nelson (c) Napoleon.

प्रश्न—*निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखो :—*

(क) ड्यूक आफ़ वैलिंगटन (ख) लार्ड नैलसन (ग) नैपोलियन।

ड्यूक आफ़ वैलिंगटन इंगलैंड का सब से वीर जरनैल था। उस का नाम आर्थर वैलज़ली

Duke of Wellington (Arthur Wellesley) था और वह भारतवर्ष के प्रसिद्ध गवर्नर जनरल लार्ड वैलज़ली का छोटा भाई था। वह अपनी शूरवीरता के कारण इतिहास में Iron Duke या Great Duke के नाम से प्रसिद्ध है। वह 1769 ई० में अर्थात् उसी वर्ष में उत्पन्न हुआ जिसमें कि उसका विपक्षी नैपोलियन उत्पन्न हुआ था। उसने ईटन (Eton) स्कूल में शिक्षा प्राप्त की थी।
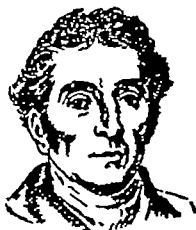
Wellington

जीवन के प्रसिद्ध कार्य—(१) लार्ड वैलज़ली के शासन काल में उसने भारतवर्ष में टीपू सुल्तान तथा मराठों के विरुद्ध बड़ी सफलता से लड़ाइयाँ लड़ीं और बड़ा यश प्राप्त किया। उनमें से असइ (Assaye) और अरगाँव (Argaon) की लड़ाइयाँ विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। इस के बाद वह इंगलैंड को लौट गया।

(२) 1808 ई० में प्रायद्वीप का युद्ध आरम्भ होते ही उसे फ्रांसीसियों के साथ लड़ने के लिये स्पेन भेजा गया जहाँ उसने कई (तलवेरा, सैले

मामका तथा विटोरिया की) विजयें प्राप्त कीं। इस सफलता के उपहार स्वरूप उसे ड्यूक आफ़ वैलिंगटन की उपाधि दी गई।

(३) 1815 ई० में उसने जर्मन जरनैल ब्लूकर की सहायता से वाटरलू (Waterloo) की लड़ाई में नैपोलियन को बहुत बुरी तरह हराया।

एक उत्कृष्ट का जरनैल होने के अतिरिक्त वह एक विचारशील नीतिज्ञ भी था, यद्यपि वह इस दृष्टि से बहुत सफल सिद्ध न हुआ। वह टोरी था और सुधारों का घोर विरोधी था। 1828 ई० से 1830 ई० तक वह *प्रधान मन्त्री भी रहा और उसके मन्त्रित्व में कैथोलिक की स्वाधीनता का क़ानून* (Catholic Emancipation Act) पास हुआ यद्यपि वह इसके घोर विरुद्ध था। 1832 ई० में उसने *रिफ़ार्म बिल* (Reform Bill) का घोर विरोध किया। परन्तु अन्त में समय की गति को भांप कर उसने विरोध छोड़ दिया और बिल पास होने दिया। 1852 ई० में ८३ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई।

लार्ड नैलसन *इंगलैंड का सब से बड़ा जल-सेनापति हुआ है।* वह 1758 ई० में एक पादरी के घर उत्पन्न हुआ और बारह वर्ष की आयु में सामुद्रिक बेड़े में भर्ती हो गया। वह एक दुबला सा बालक था, *परन्तु उसकी आत्मा बड़ी बलवान् थी।* उसने अपनी शूरवीरता के कारण अक्षय कीर्ति प्राप्त की। उसे समुद्र की लड़ाइयाँ लड़ने में वैसी ही अद्वितीय योग्यता थी जैसी नैपोलियन को स्थल पर *लड़ाइयाँ* लड़ने में थी। उस ने अपने देश के निमित्त लड़ाइयों में एक आंख और एक भुजा गंवा दी थी। उसका सब से महत्वशाली काम यह है कि उस ने *इंगलैंड और क्रांतिकारी फ्रांस के युद्ध में अपनी जाति की बहुमूल्य*

Lord Nelson

Lord Nelson

सेना की और देश को नाश होने से बचा लिया। उसके महत्वशाली कार्यों की स्मृति के साथ चार नाम सेंट विनसैएट, नील, कोपनहेगन और ट्रैफ़लगर विशेषतया जुड़े हुए हैं।

1798 ई० में जब नैपोलियन भारत विजय के विचार से मिश्र की ओर चला तो नेलसन ने उसका पीछा किया और नील की लड़ाई (Battle of the Nile) में फ्रांसीसी बेड़े को बुरी तरह हराया जिस से नैपोलियन के मनोरथ मिट्टी में मिल गये और उसे विवश होकर फ्रांस लौट आना पड़ा। 1805 ई० में नेलसन की फ्रांसीसी बेड़े के साथ एक और लड़ाई हुई जिसे ट्रैफाल्गर (Trafalgar) की लड़ाई कहते हैं। इस लड़ाई के आरम्भ होने के पूर्व नेलसन ने अपने जहाज Victory पर से यह प्रसिद्ध सिगनल दिया था।

"England expects every man to do his duty"

इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रांसीसी बेड़े को बुरी तरह हार हुई और उसके पश्चात् नैपोलियन को इंगलैंड पर आक्रमण करने का कभी साहस न हुआ परन्तु नेलसन स्वयं उस लड़ाई में काम आया। उसके अन्तिम शब्द ये थे :—

"Thank God, I have done my duty"

नैपोलियन बोनापार्ट जो अपने समय का सर्वोत्तम जरनैल था रूम सागर में स्थित Napoleon कारसीका (Corsica) Bonaparte द्वीप का निवासी था। वह 1769 ई० में उत्पन्न हुआ और फ्रांस के एक मिलिटरी स्कूल में शिक्षा प्राप्ति के बाद फ्रांस की सेना में भर्ती हो गया। फ्रांस की क्रांति के आरम्भ हो जान पर उसे शीघ्र ही एक उच्च सैनिक पद मिल गया।

Napoleon

1798 ई० में वह भारत-विजय के

मिश्वार से मिश्र पहुँचा। परन्तु नेलसन ने उसे *नील की लड़ाई* में परास्त किया और उसे फ्रांस लौट जाना पड़ा। फ्रांस पहुँच कर वह देश का प्रमुख शासक (First Consul) बन गया।

1804 ई० में नैपोलियन ने फ्रांस के सम्राट् होने की घोषणा कर दी और इंगलैंड पर आक्रमण करने की बड़े वेग से तैयारी की। परन्तु 1805 ई० में नैलसन ने *ट्रैफ़ल्गर की लड़ाई* में फ्रांसीसी बेड़े पर विजय प्राप्त की जिस से नैपोलियन अपने मनोरथों में सफल न हो सका। इसी वर्ष *आस्टर्लिट्ज़ की लड़ाई* में नैपोलियन ने इंगलैंड के साथियों रूस और आस्ट्रिया को पूरी तरह हराया। 1808 ई० तक नैपोलियन ने योरुप के लगभग समस्त देशों की शक्ति को तोड़ दिया और कई देशों पर अपने सम्बन्धियों को राजा बना दिया। केवल इंगलैंड बचा रहा। परन्तु *प्रायद्वीप के युद्ध (1808—1814)* में फ्रांस की शक्ति को बड़ा भारी धक्का लगा।

1812 ई० में नैपोलियन ने एक बड़ी भारी सेना के साथ रूस पर चढ़ाई की परन्तु उस में बड़ी भारी हानि उठानी पड़ी। यह देख कर उसके शत्रुओं का उत्साह बढ़ गया और *प्रशिया, आस्ट्रिया, रूस तथा इंगलैंड* ने उसे फ्रांस में चारों ओर से घेर लिया। अन्त में सामना करने की शक्ति अपने अन्दर न देख कर 1814 ई० में उसने सिंहासन त्याग दिया। उसे *ऐल्बा* (Elba) द्वीप में भेज दिया गया।

परन्तु 1815 ई० में वह वहाँ से भाग कर फिर फ्रांस आ गया और लोगों ने पुनः उसे अपना सम्राट् स्वीकार कर लिया। उस ने कोई एक *सौ दिन* शासन किया। अन्त में 18 जून 1815 ई० को *ड्यूक आफ़ वैलिंगटन* ने प्रशियन जनरल *ब्लूकर* की सहायता से उसे *वाटरलू* (Waterloo) के स्थान पर मुँह तोड़ हार दी। नैपोलियन ने अपने आपको अंग्रेजों को सौंप दिया। अबकी बार उसे *सेंट हैलीना* (St. Helena) टापू में देश निकाला दिया गया जहाँ वह 5 मई 1821 ई० को मर गया।

चरित्र—नैपोलियन अपने समय का सबसे बड़ा जरनैल था और वास्तविक बात यह है कि संसार में बहुत थोड़े मनुष्य उसकी कोटि के मिलते हैं। वह बड़ा दृढ़ स्वभाव, वीर और परिश्रमी था और किसी काम को असम्भव नहीं समझता था। वह कहा करता था कि *"असम्भव शब्द केवल मूर्खों के कोष में मिलता है।"* उस में कुछ ऐसा आकर्षण था कि उसकी सेना के सैनिक उसके लिए प्राण तक निछावर करने के लिये तैयार थे। नैपोलियन एक योग्य प्रबन्धक भी था। उसने देश के लिए कानूनों का एक विधान बनाया जिसे Code Napoleon कहते हैं जो आज तक फ्रांस में प्रचलित है। नैपोलियन प्रत्येक दृष्टि से एक असाधारण व्यक्तित्व का स्वामी था। परन्तु उसमें कई दोष भी थे। *वह शक्ति का बड़ा लोभी था और योरुप का एक मात्र शासक बनना चाहता था।* उसकी यह इच्छा अन्ततः उसके नाश का कारण बनी। नैपोलियन वस्तुतः एक असाधारण पुरुष था।

जार्ज चतुर्थ
GEORGE IV
1820—1830

जार्ज चतुर्थ, जार्ज तृतीय का सब से बड़ा पुत्र था। चूँकि जार्ज तृतीय अपने शासन काल के अन्तिम भाग में अन्धा, बहरा तथा पागल हो गया था इसलिये 1811 ई० से लेकर जार्ज चतुर्थ रीजैंट (Regent) के रूप में काम करता रहा। अन्त में 1820 ई० में अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् वह सिंहासनारूढ़ हुआ।

सिंहासनारोहण तथा चरित्र

जार्ज चतुर्थ के सिंहासनारूढ़ होते ही देश में *सुधार का चक्र चलना आरम्भ हो गया।* इसका कारण यह था कि अब क्रान्तिकारी फ्रांस के विरुद्ध युद्ध समाप्त हो चुका था और देश में पुनः शान्ति की स्थापना हो

Period of Reforms

चुकी थी। इसलिए वे सम्पूर्ण सुधार, जो फ्रांस की क्रान्ति के आरम्भ होने के कारण स्थगित करने पड़े थे, अब आरम्भ कर दिये गये।

सुधारों का यह काल जार्ज चतुर्थ के उत्तराधिकारी *विलियम चतुर्थ* के समय में भी चलता रहा और बहुत से लाभदायक सुधार किये गये। *यही कारण है कि जार्ज चतुर्थ तथा विलियम चतुर्थ के शासन-काल को* सुधार-काल (Period of Reforms) *कहते हैं।*

☞Q Give a brief account of the reforms during the reign of George IV (P U 1943-50) (Important)

प्रश्न—जार्ज चतुर्थ के राज्यकाल के सुधारों का वर्णन करो।

जार्ज चतुर्थ के सुधार

जार्ज चतुर्थ के शासन काल के सुधार निम्नलिखित थे :—

१ दण्ड विधान का सुधार—उस समय जो दण्ड *विधान* देश में प्रचलित था वह इंगलैंड के नाम पर एक कलंक था। *लगभग दो सौ अपराधों का दण्ड मृत्यु था जिनमें से बहुत से अपराध साधारण प्रकार के थे,* यथा जेब कतरना, किसी निषिद्ध स्थान से मछली पकड़ना, छोटे छोटे वृक्ष काटना, धमकी के पत्र लिखना, पाँच शिलिंग की वस्तु चुराना, झूठे हस्ताक्षर करना, खरगोश मारना, इत्यादि, का दण्ड मृत्यु हुआ करता था। उन दिनों *सर राबर्ट पील* (Sir Robert Peel) इंगलैंड का होम सेक्रेटरी था। उसने इस कठोरता को बुरी तरह अनुभव किया और *लगभग सौ अपराधों के लिये मृत्यु दण्ड हटा दिया।* इस प्रकार दण्ड विधान का संशोधन किया गया। धीरे-धीरे कानून अधिक नरम हो गये।

1 Reform of the Penal Code 1823—27

२ पुलिस का सुधार—सर राबर्ट पील ने *लण्डन की पुलिस*

का भी सुधार किया। उसने पुराने और अयोग्य पहरेदारों को नौकरी से हटा दिया और उनके स्थान पर कर्त्तव्यपरायण सुदृढ़ सिपाहियों को भर्ती किया, जिससे अपराधों की संख्या बहुत घट गई। इन सिपाहियों को पील के नाम पर Peelers और Bobby कहा करते थे। *इस समय लण्डन की पोलीस सारे संसार में उत्तम मानी जाती है।*

2 Reform of the Police, 1829

३ टैस्ट ऐक्ट की मनसूखी—चार्ल्स द्वितीय के राज्यकाल में Test Act पास हुआ था *जिससे चर्च आफ़ इंगलैंड के न मानने वालों का सरकारी नौकरियाँ नहीं मिल सकती थीं।* 1828 ई० में यह ऐक्ट हटा दिया गया और उन्हें सरकारी नौकरियाँ मिलने लग गईं। परन्तु अभी भी वह पार्लिमेंट के मेम्बर नहीं बन सकते थे और उन पर कुछ और भी पाबन्दियाँ थीं।

3 Repeal of Test Act, 1828

४ कैथोलिक रिलीफ़ ऐक्ट—रोमन कैथोलिक लोगों का प्रोटैस्टट लोगों के बराबर अधिकार प्राप्त न थे। उन पर कई प्रकार की रुकावटें लगी हुई थीं। Test Act तो हट गया था परन्तु इस पर भी वे पार्लिमेंट के मेम्बर नहीं बन सकते थे और न यूनिवर्सिटियों और वकालत में ही जा सकते थे। यंगर पिट ने कैथोलिक *रिलीफ़ ऐक्ट पास करके ये रुकावटें भी दूर करवा दीं।*

4 ☞ Catholic Relief Act, 1829

यंगर पिट ने Irish Act of Union के समय कैथोलिक लोगों से प्रतिज्ञा की थी कि वह उन पर से सब रुकावटें हटवाकर उन्हें प्रोटैस्टैंट लोगों के बराबर अधिकार दिलवा देगा। परन्तु जार्ज तृतीय के विरोध के कारण वह अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण न कर सका।

परन्तु इसके बाद रोमन कैथोलिक लोगों में समानाधिकार प्राप्ति का विचार उत्पन्न हो गया। इसलिये 1823 ई० में आयरलैंड के एक प्रसिद्ध वकील *डैनियल ओकानैल* (Daniel O connell) के

नतृत्व में इस उद्देश्य के लिय आन्दोलन आरम्भ हुआ और शीघ्र ही इस आन्दोलन ने बहुत बल पकड़ लिया।

1828 ई० में ओकानैल इंग्लैंड की पार्लिमेंट के लिए मेम्बर चुना गया। परन्तु चूँकि वह कैथोलिक था इसलिए उसे पार्लिमेंट में बैठने की आज्ञा न दी गई। इस पर कैथोलिक लोग बहुत खटपटाये और भय हो गया कि यदि रोमन कैथोलिक लोगों की माँग कुछ काल और पूरी न की गई तो सम्भव है कि घरेलू युद्ध छिड़ जाय। ड्यूक आफ वैलिंगटन (Duke of Wellington) जो उस समय प्रधान मन्त्री था, रोमन कैथोलिक लोगों को कुछ भी अधिकार देने के विरुद्ध था। परन्तु जब उसने देखा कि घरेलू युद्ध आरम्भ हो जायेगा तो 1829 ई० में उस ने एक बिल पास कराया जिसे Catholic Relief (Emancipation) Act कहते हैं। इसके अनुसार *कैथोलिक लोगों को प्रोटेस्टैंट लोगों के समान अधिकार मिल गये और उन पर से सम्पूर्ण रुकावटें हटा ली गईं*। परन्तु राजा, प्रिंस आफ वेल्स और लार्ड चांसलर के लिये *अब भी अनिवार्य है कि वे चर्च आफ इंग्लैंड के अनुयायी हों*।

५ जेलों का सुधार—चिरकाल से इंगलैंड में जेलों की दशा बहुत भयानक थी। एक तो स्वास्थ्य-रक्षा का कोई

5 Jail Reform

विचार न था जिसके कारण बहुत से रोग जेलों में फैले रहते थे। दूसरे, नये अपराधियों को भी अभ्यस्त अपराधियों के साथ ही रखा जाता था जिससे उनका आचार बिगड़ जाता था। *तीसरे* कैदियों के साथ बड़ी कठोरता का बर्ताव किया जाता था, और जब तक कि व जेलर की फीस न चुका देवें छुटकारे की आज्ञा होते हुए भी उन्हें मुक्त नहीं किया जाता था। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में एक पवित्र हृदय अंग्रेज *जान हावर्ड* (John Howard) ने कैदियों की दशा सुधारने का बीड़ा उठाया। उसने समस्त योरुप का भ्रमण करके जेलों की बुरी अवस्था को अपनी आँखों से देखा, और फिर उनके सुधार की आवश्यकता को दर्शाने के लिए एक पुस्तक (The State of Prisons) लिखी। इसका फल यह हुआ

कि पार्लिमेंट ने जेलों के सुधार के लिए दो नये कानून पास किए। एक के अनुसार जेलों में हवा, रोशनी तथा सफाई का प्रबन्ध किया गया और दूसरे के अनुसार जेलर की फ़ीस का प्रबन्ध सरकार की ओर से किया गया। हावर्ड की मृत्यु के पश्चात् एक सुहृदय स्त्री ऐलिजबैथ फ्राई (Elizabeth Fry) ने कैदी स्त्रियों की अवस्था सुधारने की चेष्टा की और धीरे-धीरे जेलों की अवस्था सुधर गई। सच तो यह है कि सुधार का यह कार्य आज तक भी चालू है और इसका श्रेय जान हावर्ड को ही प्राप्त है।

विलियम चतुर्थ

(WILLIAM IV)

1830—1837

☞Q Give an account of the reign of William IV with special reference to the reforms that were carried out during his reign.

(P U 1935-39-43-50) (Important

प्रश्न—*विलियम चतुर्थ के शासनकाल का ब्यौरा और विशेषतया उसके समय के सुधारों का वर्णन करो।*

विलियम चतुर्थ — विलियम चतुर्थ अपने भाई जार्ज चतुर्थ की मृत्यु के बाद राजगद्दी पर बैठा। वह बड़ा मिलनसार, सरल प्रकृति तथा सर्वप्रिय राजा था। इसके शासन काल में सुधार चक्र चलता रहा और सात वर्ष के थोड़े से समय में देश में कई सुधार हुए जिन में सर्वप्रसिद्ध पार्लिमेंट का सुधार अर्थात् पहला रिफ़ार्म बिल (First Reform Bill) का पास होना है।

सुधार—विलियम चतुर्थ के शासनकाल के निम्नलिखित सुधार वर्णनीय हैं :—

पार्लिमेंट का सुधार—उस समय पार्लिमेंट के चुनाव की रीति में कई दोष थे, जिससे वह देश की वास्तविक रूप से प्रतिनिधि सभा न थी। शिल्पक्रान्ति के कारण जो नये नगर बस गये थे उन्हें अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार न था, परन्तु कई उजड़े हुए प्रदेशों से नियमानुसार मेम्बर चुने जाते थे। इसके अतिरिक्त वोटरों की संख्या बहुत थोड़ी थी और पार्लिमेंट में जमींदारों की पार्टी का प्रभाव था। साधारण लोगों को देश के राज काज में अधिकार प्राप्त न था। लार्ड ग्रे (Lord Grey) के मन्त्रित्व में *पहिला रिफ़ार्म बिल* (First Reform Bill) पेश हुआ था जिसका उद्देश्य यह था कि उजड़े हुए प्रदेशों से प्रतिनिधि भेजने का अधिकार छीन कर नये बसे हुए प्रदेशों को दे दिया जाय और पार्लिमेंट को प्रतिनिधि सभा बनाया जाय। 1832 ई० में यह बिल पास हो गया जिसका प्रभाव यह हुआ कि पार्लिमेंट *पहले की अपेक्षा अधिक प्रतिनिधि सभा बन गई*, और मध्य *श्रेणी* (Middle Class) *तथा व्यापारी लोगों का देश के प्रबन्ध में अधिक भाग प्राप्त हो गया।*

Reform of Parliament, 1832

☞ इस सुधरी हुई पार्लिमेंट ने लोगों की भलाई के लिये निम्नलिखित कानून (Beneficial Measures) पास किये —

१ दासता का अन्त—दासों का *व्यापार* रानी एलिज़बेथ के समय में अंग्रेजी जलयान वाहक *जान हाकिन्ज़* (John Hawkins) ने आरम्भ किया था। इन दासों के साथ पशुओं का सा बर्ताव किया जाता था। इसलिये जार्ज तृतीय के शासनकाल में इस घृणित व्यापार को रोकने के लिये एक सभा स्थापित की गई जिस के नेता *विलबरफ़ोर्स* (Wilberforce) और *क्लार्कसन* (Clarkson) थे। विलबरफोर्स पार्लिमेंट का मेम्बर था, इस लिए उस ने वहाँ भी दासता के विरुद्ध

1 Abolition of Slavery, 1832

प्रदान की। इन लोगों के यत्नों से इतना तो हो गया कि 1807 ई० में पार्लिमेंट ने दासों का व्यापार निषिद्ध ठहराया, परन्तु जो दास स्वामियों के पास पहले से थे वे पहले की भाँति दास ही रहे, उन्हें न छोड़ा गया। इसलिये विल्बरफ़ोर्स ने अपना काम जारी रखा। अंत में 1833 में इस सुधरी हुई पार्लिमेंट ने एक कानून पास किया जिसके अनुसार *ब्रिटिश साम्राज्य में दासों को सर्वथा स्वतन्त्र कर दिया गया और उनके स्वामियों को दो करोड़ पौंड हानिपूर्ति के रूप में दिया गया।* इस बिल के पास होने से कुछ दिन पूर्व विल्बरफ़ोर्स की मृत्यु हो गई।

2. Factory Act, 1833

२ फ़ैक्टरी ऐक्ट—उन दिनों शिल्पालयों के स्वामी अधिक लाभ के लोभ से पाँच-पाँच, छः-छः वर्ष की आयु के बालकों को भी शिल्पालयों में रख लेते थे और उन बालकों को बारह बारह, चौदह चौदह घण्टे दिन में काम करना पड़ता था। इससे उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता था और कई बिन आई मौत मर जाते थे। 1833 ई० में पार्लिमेंट ने एक कानून पास किया जिसे Factory Act कहते हैं। *इसके अनुसार नौ वर्ष से कम आयु के बालकों को शिल्पालयों में नौकर रखना निषिद्ध ठहराया गया और काम के घण्टे भी कम कर दिये गये। साथ ही इन्सपैक्टर भी नियत किये गये जो देखें कि इन नियमों पर भली प्रकार आचरण किया जाता है।*

3 Education Act, 1833

३ शिक्षा का कानून—फ़ैक्टरी ऐक्ट के पास हो जाने से बहुत से छोटे-छोटे बच्चे शिल्पालयों में काम करने के लिये नहीं जा सकते थे अतः गवर्नमेंट को उनकी शिक्षा का प्रबन्ध करना आवश्यक हो गया। 1833 ई० में *शिक्षा कानून* पास किया गया जिसके अनुसार *निर्धन बालकों की प्रारम्भिक शिक्षा के लिये सरकार ने प्रति वर्ष एक प्रचुर धनराशि (£20,000) व्यय करना स्वीकार किया।* इंगलैंड के इतिहास में यह पहला अवसर था कि सरकार ने शिक्षा के लिये रुपया

व्यय करना आरम्भ किया।

४ निर्धनों के कानून का संशोधन—पुराने Poor Law के अनुसार उन निर्धन लोगों को भी सहायता दी जाती थी जो शारीरिक दृष्टि से सुदृढ़ थे, परन्तु अपने परिश्रम से अपना और अपने बाल बच्चों का निर्वाह नहीं कर सकते थे। इससे आलसी पुरुष काम से जी चुराते थे, क्योंकि वे जानते थे कि गवर्नमेंट उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये अवश्य सहायता देगी। परन्तु अब इस कानून में परिवर्तन कर दिया गया, और निश्चय हुआ कि *केवल उन निर्धनों की सहायता की जाय, जो बूढ़े अपाहिज और काम करने के अयोग्य हों और स्वस्थ निर्धनों के लिये केवल काम ढूँढ दिया जावे।*

4 Amendment of Poor Law Act, 1834

५ कार्पोरेशन ऐक्ट—उन दिनों में भिन्न भिन्न नगरों का प्रबन्ध करने के लिये जो कमेटियाँ थीं उनके मेम्बर वास्तविक रूप में चुने हुये न होते थे, क्योंकि बहुत थोड़े नागरिकों को वोट का अधिकार था। इस कानून के अनुसार *समस्त कर दाता नागरिकों को अपने अपने नगर की म्युनिसिपल कमेटियों के लिये मम्बर चुनने का अधिकार दे दिया गया, जिससे वे कमेटियाँ लोगों की प्रतिनिधि बन गईं।*

5 Municipal Corporation Act, 1835

☞ Q Explain how Parliament was reformed in 1832. Or, What do you understand by Parliamentary Reform? When and why was the First Reform Act passed and what did it achieve? (P U 1925-29-32 34-36-44-46-48-50-51-52-55-56) (V Important)

प्रश्न—स्पष्टतया वर्णन करो कि 1832 ई० में पार्लिमेंट का सुधार किस प्रकार हुआ था। या बताओ कि पार्लिमेंटरी रिफ़ार्म से क्या तात्पर्य

है। *पहिला रिफ़ार्म ऐक्ट कब और क्यों पास हुआ और उससे क्या लाभ हुआ ?*

पहला रिफ़ार्म ऐक्ट
(FIRST REFORM ACT)
1832

पार्लिमेंट का सुधार
Parliamentary Reform

विलियम चतुर्थ के शासन काल से पूर्व पार्लिमेंट देश की वास्तविक अर्थों में प्रतिनिधि सभा न था। उसके चुनाव में कई दोष थे जिनका सुधार आवश्यक था। गत सवा सौ वर्षों में समय-समय पर इन दोषों को दूर करने के लिये कई कानून पास होते रहे हैं, जिससे धीरे-धीरे पार्लिमेंट देश की प्रतिनिधि सभा बन गई है। *पार्लिमेंट के इस सुधार को पार्लिमेंटरी रिफ़ार्म कहते हैं।*

First Reform Act, 1832

इन कानूनों में पहला रिफ़ार्म ऐक्ट (First Reform Act) बहुत प्रसिद्ध है क्योंकि *इसने पश्चात् के रिफ़ार्म* ऐक्टों के *लिये मार्ग खोल दिया*। यह ऐक्ट 1832 ई० में पास हुआ। इसके पास होने का कारण यह था कि उस समय की पार्लिमेंट में निम्नलिखित दोष थे और उनको ठीक करना आवश्यक था।

दोष
Defects

१—शिल्पक्रान्ति के कारण कई नये नगर बस गये थे और कई रौनक वाले तथा घने बसे हुये नगर सर्वथा उजाड़ हो गये थे, परन्तु पार्लिमेंट के चुनाव की *पुरानी रीति में अभी तक कोई परिवर्तन नहीं किया गया था*, इसलिये *मानचेस्टर* (Manchester) *बर्मिंगहम* (Birmingham) और *लीड्स* (Leeds) जैसे घने बसे नगरों को, जो नये बसे थे, पार्लिमेंट में एक भी प्रतिनिधि भेजने का अधिकार न था। परन्तु इसके प्रतिकूल कई नगर और उपनगर, जो उजाड़ तथा बेरौनक हो गये थे पहले की भाँति पार्लिमेंट में अपने दो दो प्रतिनिधि भेजते थे। उदाहरण स्वरूप ओल्ड सेरम

३—बड़े बड़े नगरों यथा *मानचेस्टर, बरमिंघम*, आदि को मेम्बर भेजने का अधिकार दिया गया।

४—वोटरों के लिये एक से नियम बनाये गये। नगरों में प्रत्येक उस पुरुष को वोट देने का अधिकार दिया गया जो दस पौंड अथवा उससे अधिक वार्षिक मकान का किराया देता हो, अथवा इतने किराये वाले मकान का स्वामी हो, और *ग्रामों* में प्रत्येक उस पुरुष को वोट देने का अधिकार दिया गया जो दस पौंड वार्षिक लगान वाली ज़मीन का स्थायी कृषिकार हो अथवा पचास पौंड वार्षिक ज़मीन का लगान देता हो।

महत्त्व (Importance)

१—*इस ऐक्ट के पास होने से राजकीय शक्ति धनाढ्यों तथा ज़मींदारों के हाथों से निकल गई और मध्यम श्रेणी* (Middle Class) *के लोगों के हाथों में आ गई।*

२—वोटरों के लिए शर्तें एक सी कर दी गईं।

३—*राटन बरोज़* (*Rotten Boroughs*) और पाकिट बरोज़ (Pocket Boroughs) का अन्त कर दिया गया।

४—वाटरों की सख्या लगभग दुगनी हो गई जिससे पार्लिमेंट पहले की अपेक्षा अधिक प्रतिनिधि-सभा बन गई। इससे पाँच लाख नये वोटर बन गये। अब प्रत्येक २४ मनुष्यों में से एक मनुष्य को वोट का हक मिल गया।

५—*यह बिल देश में प्रजातन्त्र शासन* को स्थापित करने की ओर *पहला पग था।*

६—इस ऐक्ट के पास होने के पश्चात् कई अन्य सुधार हुए।

नोट—इस बिल में एक त्रुटि यह रह गई थी कि इस से मज़दूरों को कोई अधिकार प्राप्त न हुए। इससे राजशक्ति ज़मींदारों के हाथों से निकल कर मध्यम श्रेणी के लोगों के हाथों में तो आ गई परन्तु पूर्ण प्रजातन्त्र शासन स्थापित न हुआ।

महारानी विक्टोरिया
VICTORIA
1837—1901

विक्टोरिया जार्ज तृतीय के चौथे पुत्र एडवर्ड ड्यूक आफ़ केंट (Edward Duke of Kent) की इकलौती पुत्री थी। वह 1819 ई० में

विक्टोरिया का सिंहासनारूढ़ होना

Victoria

उत्पन्न हुई और अभी वह आठ मास की थी कि उसके पिता की छत्रछाया उस के सिर से उठ गई और यतः जार्ज तृतीय के बड़े पुत्र निस्सन्तान मर गए थे इस लिये विलियम चतुर्थ के पश्चात् विक्टोरिया ही राज्याधिकारिणी थी। उसकी विधवा माता ने उसे आरम्भ से ही सुचारु रूप से शिक्षा दिलवाई थी।

1837 ई० में महारानी विक्टोरिया राजगद्दी पर बैठी। उस समय उसकी आयु अठारह वर्ष की थी। *उसके सिंहासनारोहण का एक महत्त्वशाली परिणाम यह हुआ कि हैनोवर का प्रदेश इंगलैंड से पृथक् हो गया,* क्योंकि उस देश के कानून (Salic Law) के अनुसार कोई स्त्री उस देश को शासक नहीं हो सकती थी। महारानी विक्टोरिया ने लगभग चौंसठ वर्ष राज्य किया। वह बड़ी शुद्ध हृदय तथा ईश्वरोपासिका थी और आज तक लोग उसे *शुद्ध हृदय विक्टोरिया* (Victoria the Good) के नाम से याद करते हैं।

विक्टोरिया के राज्य-काल के पहले चार वर्षों में लार्ड मैल्बूर्न (Lord Melbourne) इंगलैंड का प्रधान मन्त्री था। वह बड़ा कर्त्तव्यपरायण तथा सुहृदय मन्त्री था। उसने साम्राज्य का प्रबन्ध करने में महारानी की बड़ी सहायता की। उसके मन्त्रित्व काल की सब

प्रसिद्ध घटना यह है कि एक पुरुष सर रोलैंड हिल (Sir Rowland Hill) के परामर्श से 1839 ई० में पैनी पोस्टेज (Penny Postage) की स्कीम प्रचलित की गई जिससे एक पैनी के टिकट पर देश में प्रत्येक स्थान पर पत्र भेजने का प्रबन्ध हो गया और पत्र-व्यवहार में सुगमता हो गई। इससे पहले पत्र भेजने का व्यय दूरी के अनुसार देना पड़ता था।

विक्टोरिया का विवाह

सिंहासनारोहण के तीन वर्ष पश्चात 1840 ई० में विक्टोरिया ने अपने मातुलजात भ्राता सेक्सेकोबर्ग के प्रिंस ऐल्बर्ट (Prince Albert of Saxe Coburg) से विवाह कर लिया। प्रिंस ऐल्बर्ट बड़े उच्च आचार का पुरुष था और देश का सर्वोत्तम हितैषी तथा परामर्श दाता सिद्ध हुआ परन्तु अंग्रेजों में वह सर्वप्रिय न हुआ। 1861 ई० में जब उसकी मृत्यु हुई तो विक्टोरिया को अत्यधिक शोक हुआ।

विक्टोरिया के आरम्भिक काल की कठिनाइयाँ

महारानी विक्टोरिया के राज्य-काल के आरम्भिक वर्षों में देश की अवस्था कुछ सन्तोषजनक न थी। निम्नश्रेणी के लोगों की दशा बड़ी शोचनीय थी। शिल्पक्रान्ति के कारण मजदूरी सस्ती हो गई थी और हजारों मजदूर बेकार बैठे थे। उधर अन्न सम्बन्धी कानूनों (Corn Laws) के अनुसार बाहर से आने वाले अन्न पर भारी कर लगा हुआ था, जिससे रोटी बहुत महँगी हो गई थी और देश में हलचल मची हुई थी। *चार्टिस्ट आन्दोलन तथा अन्न के कानूनों के विरोध के आन्दोलन वेग पर थे।*

☞ Q Give a brief account of the Chartist Movement. (P U 1927-30-36-40-43-45 49-53-55)
(V Important)

प्रश्न—*चार्टिस्ट आन्दोलन के सम्बन्ध में तुम क्या जानते हो?*

चार्टिस्ट आन्दोलन
(CHARTIST MOVEMENT)

चार्टिस्ट आन्दोलन—1832 ई० के रिफार्म बिल से मध्यम श्रेणी के लोगों की दशा तो कुछ सुधर गई थी परन्तु

चार्टिस्ट आन्दोलन
Chartist
Movement

निर्धनों तथा मजदूरों की दशा बहुत बुरी थी। उन्हें तो पेट भरना भी कठिन हो रहा था। इसका कारण यह था कि एक तो शिल्पक्रांति के कारण उनकी आय बहुत कम हो गई थी और दूसरे बाहर से आने वाले अन्न पर भारी कर लगाने के कारण रोटी महँगी थी। कई लोगों का विचार था कि यदि उन्हें पार्लिमेंट में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिल जाये तो उनकी दशा अच्छी हो सकती है, इसलिये उन लोगों ने 1838 ई० में (Feargus O' Conner नामक लीडर के नेतृत्व में) एक प्रार्थना पत्र तैयार किया जो People's Charter के नाम से प्रसिद्ध है। इस आन्दोलन को Chartist Movement और उसके चलाने वालों को चार्टिस्ट्स (Chartists) कहते थे।

माँगें (Demands)—चार्टिस्ट्स की छः माँगें थीं :—

१—प्रत्येक बालिग मनुष्य को वोट देने का अधिकार प्राप्त हो।
२—पार्लिमेंट का चुनाव प्रतिवर्ष हुआ करे।
३—वोट गुप्त रूप से दिया जावे।
४—पार्लिमेंट का मेम्बर बनने के लिये सम्पत्ति की शर्त उड़ा दी जाये।
५—पार्लिमेंट के मेम्बरों को भलाउँस मिला करे।
६—देश को समान जनसंख्या के चुनाव के प्रदेशों में विभक्त किया जावे।

आन्दोलन का अन्त—चार्टिस्ट्स ने अपनी माँगों को स्वीकार कराने के लिये पार्लिमेंट में कई प्रार्थना पत्र दिये, परन्तु उन पर किसी ने कान न धरे। इस पर लोगों ने देश में कई स्थानों पर बलवे और दंगे कर दिये। परन्तु सरकार ने उनके बड़े-बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया जिससे यह आन्दोलन कुछ काल के लिये दब गया। अन्त में 1846 ई० में जब विदेशों से आने वाले अन्न से कर हटा दिया गया और रोटी सस्ती हो गई तो यह आन्दोलन कुछ काल के पश्चात् अपने आप समाप्त हो गया।

नोट—यद्यपि उस समय तो गवर्नमेंट ने चार्टिस्ट्स लोगों की माँगें स्वीकार न कीं परन्तु आजकल पार्लिमेंट के वार्षिक चुनाव के सिवा शेष सम्पूर्ण माँगें पूरी हो चुकी हैं वरन् स्त्रियों को भी प्रतिनिधित्व का अधिकार मिल गया है।

☞Q What were the Corn Laws and how were they repealed? (P U 1925-34-43) (Important)

प्रश्न—अन्न के कानून क्या थे और वे किस प्रकार रद्द हुये?

अन्न के कानून (Corn Laws) वे कानून थे जिनके अनुसार *इंगलैंड में बाहर से आने वाले अन्न पर भारी कर लगाया जाता था।* इसका उद्देश्य यह था कि बाहर से आया हुआ अन्न देश के अपने अन्न की अपेक्षा सस्ता न बिक सके, जिससे देश के जमींदारों का हानि न हो। अन्न के इन कानूनों से इंगलैंड के जमींदारों को बहुत लाभ हुआ, परन्तु अन्न के महँगा हो जाने के कारण निर्धनों को पेट भरना कठिन हो गया। अन्त में कुछ बुद्धिमान् लोगों ने इस बात को अनुभव किया कि जब तक अन्न पर से कर का कानून हटाया न जायेगा तब तक निर्धनों की दशा अच्छी नहीं हो सकती।

अन्न के कानूनों का हटाया जाना 1846

इसलिये 1838 ई० में *मानचेस्टर* में एक सभा स्थापित हुई जिसे ☞अन्न के कानूनों की विरोधी सभा (☞Anti Corn Law League) कहते हैं। *इस लीग का उद्देश्य यह था कि गवर्नमेंट पर दबाव डाला जाये कि वह बाहर से आने वाले अन्न पर से कर हटा दे जिससे अन्न सस्ता हो जावे।* इस सभा के मुख्य सभासद् रिचर्ड कावडन (Richard Cobden) तथा जान ब्राईट (John Bright) थे। उन्होंने सारे देश में भ्रमण किया। स्थान स्थान पर जलसे करके व्याख्यान दिये गुटके बाँटे और इस प्रकार सर्वसाधारण में इन करों के विरुद्ध भाव उत्पन्न हो गया और अन्न के कानूनों को हटाये जाने का आन्दोलन वेग पकड़ गया।

इस समय इंगलैंड का प्रधान मन्त्री *सर राबर्ट पील* (Sir Robert Peel) *था और चूँकि वह कान्सर्वेटिव था इसलिये उसे इस आन्दोलन से कोई विशेष सहानुभूति न थी।* परन्तु 1845 ई० में आयरलैंड में आलू की खेती सर्वथा नष्ट हो गई। यही वहाँ के लोगों का बड़ा आहार था। इसलिये अकाल पड़ गया और हजारों लोग भूख से मरने लगे। अब

पील के लिए इसके अतिरिक्त और कोई उपाय न रहा कि अन्न से कर हटा कर उसे सस्ता कर दे जिससे निर्धनों तथा अकाल पीड़ितों को भोजन प्राप्त हो सके। इसलिये 1846 ई० में उसने बिल पेश किया कि अन्न पर कर तत्काल कम कर दिये जायें और तीन वर्ष के बाद सर्वथा हटा दिये जायें। यद्यपि उसकी अपनी पार्टी के बहुत से मेम्बर (जिन में डिज़रेली का नाम विशेषकर प्रसिद्ध है) उसके विरुद्ध हो गये तथापि पील लिबरल पार्टी की सहायता से इस बिल को पास कराने में सफल हो गया और 1849 ई० तक ये कर सर्वथा हट गये।

☞Q What do you know about Sir Robert Peel? Give a brief account of his administration
(P U 1927-35-38-43-48 50-52-54) (Important)

प्रश्न—सर राबर्ट पील के सम्बन्ध में तुम क्या जानते हो? उसके मन्त्रित्व काल का संक्षिप्त वर्णन करो।

सर राबर्ट पील
(SIR ROBERT PEEL)

आरम्भिक जीवन—सर राबर्ट पील विक्टोरिया के राज्यकाल के आरम्भिक भाग में एक प्रसिद्ध महामन्त्री हुआ है। वह लंकाशायर के एक करोड़पति व्यापारी का पुत्र था। उसका जन्म 1788 ई० में हुआ। उस के पिता ने उसे बड़ी उच्चकोटि की शिक्षा दिलवाई थी। वह 1809 ई० में पार्लिमेंट का मैम्बर बना और शीघ्र ही अपनी योग्यता के कारण अति प्रसिद्ध हो गया।

Sir Robert Peel

Sir Robert Peel

वह कुछ काल के लिए इंग्लैंड का होम सेक्रेटरी (Home Secretary)

भी रहा। इस पद पर रहते हुए उसने (१) दण्ड विधान को बहुत सीमा तक नर्म कर दिया और लगभग एक सौ अपराधों के लिये मृत्यु दण्ड हटा दिया। (२) इसके अतिरिक्त उसने लण्डन की पुलिस का भी सुधार किया जो इस समय सारे संसार में उत्तम गिनी जाती है।

पील कन्ज़र्वेटिव था, परन्तु उसमें एक बड़ा गुण यह था कि वह कन्ज़र्वेटिव होते हुए भी देश की भलाई के लिये सब प्रकार के क्रियात्मक सुधार का पक्षपाती था। सच तो यह है कि वह अपनी पार्टी की अपेक्षा अपने देश का अधिक हितचिन्तक था। वह पहली बार 1834 ई० में कुछ काल के लिए और दूसरी बार 1841 ई० से 1846 ई० तक पाँच साल के लिए महामन्त्री रहा। उसके मन्त्रित्व काल की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित हैं —

मन्त्रित्व काल
1841—46

१ पील की आर्थिक नीति (Financial Policy)—वाल पोल की भाँति पील भी आर्थिक विषयों का बड़ा जानकार था। उसने अनुभव करना आरम्भ किया कि विदेशीय वस्तुओं पर बड़ भारी कर लगाने से देश का हानि पहुँचती है। अतः शनैः शनैः वह खुले व्यापार के पक्ष में हो गया। इसलिये उसने बहुत सी आयात वस्तुओं पर से कर हटा दिया और कई एक पर घटा दिया और इस घाटे को पूरा करने के लिये इन्कम टैक्स (Income Tax) लगाया। इससे देश की अवस्था बहुत सुधर गई।

२ सामाजिक सुधार—पील ने खानों (Mines) में काम करने वाले मजदूरों की अवस्था को सुधारने के लिये भी एक कानून पास किया। इस कानून से उन्हें कई सुविधायें प्राप्त हो गई।

३ अन्न के कानूनों का हटाया जाना (Repeal of the Corn Laws)—पील के मन्त्रित्व काल की सबप्रसिद्ध घटना अन्न के कानूनों का हटाया जाना है। इन कानूनों के अनुसार विदेशी अन्न पर भारी कर लगाया जाता था, जिससे अन्न बहुत महँगा हो गया था और निर्धन बचारे अपने बाल बच्चों का पेट नहीं पाल सकते थे। पील

कन्जर्वेटिव होने के कारण आरम्भ में तो इन कानूनों के हटाये जाने के पक्ष में न था। परन्तु 1845 ई० में जब आयरलैंड में आलू की खेती नष्ट हो जाने के कारण भयकर अकाल पड़ गया तब पील ने अपने विचार बदल लिये और 1846 ई० में उसने अन्न के कानूनों के हटाये जाने के लिये एक बिल पेश किया। इस बिल के पेश होने से पील की पार्टी में फूट पड़ गई। परन्तु पील लिबरल पार्टी की सहायता से इस बिल के पास कराने में सफल हो गया। इसके विरोधियों में डिजरैली (Disraeli) का नाम विशेष रूप से गणनीय है।

इस बिल के पास होने के शीघ्र ही पीछे पील को त्याग-पत्र देना पड़ा, क्योंकि पार्लिमेंट में उसके पक्ष में बहुसंख्या न रही थी। चार वर्ष पीछे अर्थात् 1850 ई० में पील घोड़े पर से गिरने के कारण मर गया।

पील इंगलैंड का एक अति योग्य मन्त्री था। उसकी गणना इंगलैंड के अति बुद्धिमान् राजनीतिज्ञों में होती है। ☞उसने *दण्ड विधान को नर्म किया, लंडन की पुलिस का सुधार किया, कर कम कर के व्यापार को बढ़ाया, मजदूरों की अवस्था को सुधारा और अन्न के कानूनों का हटा कर निर्धनों की अवस्था को अच्छा किया।*

☞Q Describe the causes, main events and results of the Crimean War
(P U 1927 36-42-45 50-52-55) (V Important)

प्रश्न—*क्राइमियन युद्ध के कारण, प्रसिद्ध घटनाओं तथा परिणाम का वर्णन करो।*

क्राइमियन युद्ध
(THE CRIMEAN WAR)
1854—56

Crimean War 1854—1856

क्राइमियन युद्ध 1854 से 1856 ई० तक रहा। इस में एक ओर रूस (Russia) और दूसरी ओर टर्की, इंगलैंड, फ्रांस तथा इटली थे। इस युद्ध की प्रसिद्ध लड़ाइयाँ रूस के एक प्रायद्वीप क्राइमिया (Crimea) में लड़ी गई थीं, इसलिये इस युद्ध का क्राइमियन युद्ध कहते हैं।

१—इस युद्ध का वास्तविक कारण यह था कि रूस के पड़ोसी टर्की का राज्य अधोगति की ओर जा रहा था और रूस का ज़ार (Tsar) इस से लाभ उठा कर अपनी शक्ति को बढ़ाना चाहता था, परन्तु इंगलैंड और फ्रांस इसके कट्टर विरोधी थे।

कारण
Causes

२—रूस का ज़ार (Tsar) अपने देश के वाणिज्य व्यापार के लिये कृष्ण सागर (Black Sea) से होकर बाहर जाने वाला खुला मार्ग चाहता था और वर्तमान इस्तम्बोल* (Istanbul) नगर पर आशायें लगाये बैठा था, परन्तु इस पर टर्की का अधिकार था। इसलिये रूस का ज़ार (Nicholas I) टर्की के निर्बल राज्य को जिसे वह *योरुप का रोगी* (The Sickman of Europe) कहता था विजय करना चाहता था।

३—टर्की के सुल्तान का राज्य बलकान की ईसाई रियासतों पर भी था और उस की ईसाई प्रजा को यह शिकायत थी कि उन के साथ उचित बर्ताव नहीं होता। इस पर रूस के ज़ार ने टर्की से यह माँग की कि उसे टर्की में रहने वाले सम्पूर्ण ईसाइयों का रक्षक स्वीकार किया जाए। परन्तु टर्की के सुल्तान ने ज़ार की इस माँग को स्वीकार न किया। इस पर ज़ार ने 1854 ई० में टर्की के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और उसके दो प्रान्तों‡ पर अधिकार कर लिया।

परन्तु यह युद्ध केवल रूस और टर्की में ही न रहा। टर्की की सहायता पर इंगलैंड भी उतारू हो गया क्योंकि उसका विचार था कि रूस की शक्ति के बढ़ जाने से भारत में अंग्रेज़ी साम्राज्य के लिए भय उत्पन्न हो जाएगा। फ्रांस और इटली भी टर्की की ओर हो गए। इस प्रकार एक ओर रूस था और दूसरी ओर टर्की, इंगलैंड, फ्रांस तथा इटली थे।

पक्ष
Parties

---

*उन दिनों इस नगर का नाम Constantinople था।
‡Moldavia और Walachia.

THE CRIMEAN WAR

1854 — 1856
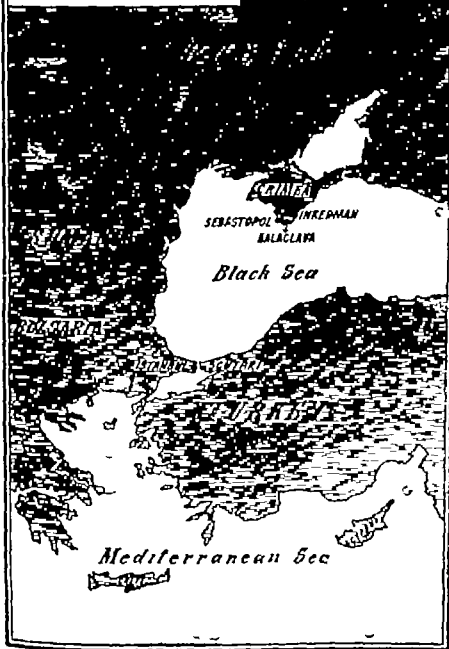
१ आलमा (Alma) की लड़ाई—अब युद्ध क्राइमिया में आरम्भ हुआ। 1854 ई० में संगी शक्तियों ने रूसियों को आलमा (Alma) नदी के युद्ध में पराजित किया और सेबस्टोपाल का घेरा कर लिया।

घटनाएँ
Events

२ सेबस्टोपोल (Sebastopole) का घेरा—सेबस्टोपोल का दृढ़ दुर्ग क्राइमिया के दक्षिणी तट पर रूसियों की शक्ति का केन्द्र था। संगियों (Allies) का विचार था कि यह गढ़ विजय कर लिया गया तो युद्ध समाप्त हो जावेगा। इसलिए उन्होंने उस दुर्ग का घेरा कर लिया। परन्तु संगियों के विलम्ब के कारण रूसियों को तैयारी का अवसर मिल गया और घेरा लगभग एक वर्ष जारी रहा।

३ बालाक्लावा तथा इन्करमैन की लड़ाइयाँ—इसी बीच में बालाक्लावा (Balaclava) और इन्करमैन (Inkerman) के स्थानों पर रूसियों की पराजयें हुईं। बालाक्लावा की लड़ाई बड़ी प्रसिद्ध है, क्योंकि इसमें अंग्रेजी सेना के दस्ते (Light Brigade) ने जिसमें लगभग सात सौ (700) सवार थे, रूसी तोपखाने पर ऐसी वीरता से धावा किया जिसका उदाहरण इतिहास में कम मिलता है और यद्यपि उन में से केवल १९५ सैनिक जीवित रहे परन्तु तोपखाने को एक बार अंग्रेजों ने ले लिया। सैनिकों की इस वीरता का वर्णन लार्ड टेनिसन (Lord Tennyson) ने अपने काव्य 'Charge of the Light Brigade' में बड़ी सुन्दरता से किया है।

४ क्राइमिया की शीत—सेबस्टोपाल का घेरा अभी हो रहा था कि शीत की ऋतु आरम्भ हो गई और इस बार शीत भी असाधारण थी। संगियों के सैनिकों को जो इतना कठिन शीत के अभ्यस्त न थे, बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और बहुत से रोगी हो गये। एक अवसर पर तो आधी से अधिक सेना स्कूटरी (Scutari*) के

*आजकल इस नगर को उसकुदर (Uskudar) कहते हैं।

अस्पताल में बीमार पड़ी थी। इन घायल तथा रोगी सैनिकों के इलाज का कोई विशप प्रबन्ध न था। दुर्भाग्य से कुछ अङ्गरेजी जहाज जो कपड़े और भोजन सामग्री ला रहे थे मार्ग में ही समुद्र में डूब गये। इससे सैनिकों का कष्ट और भी अधिक हो गया। इसके अतिरिक्त इंगलैंड में युद्ध के सम्बन्ध में बड़ी असावधानता से काम लिया जा रहा था। एक समय सारे बूट जो जहाज से उतारे गये बायें पाँव के ही निकले। अन्त में मिस फलोरेंस नाइटिंगेल (Miss Florence Nightingale) इंगलैंड से कुछ शिक्षित दाइयों को लेकर स्कुतरी के अस्पताल में पहुँची और उसने घायल सैनिकों के इलाज का सन्तोषजनक प्रबन्ध किया जिससे हजारों सैनिकों की जानें बच गई। जब सेना के नाश और आपत्ति की कहानी इंगलैंड पहुँची तो लार्ड पामस्टन (Lord Palmerston) को प्रधान मन्त्री नियुक्त किया गया।

५ सेवस्टोपोल की विजय—पामर्स्टन ने युद्ध के काम को बड़े उत्साह और बल से आरम्भ किया और सेना की दशा सुधर गई। अन्त में सितम्बर 1855 ई० में लगभग एक वर्ष के घेरे के बाद सेवस्टोपोल विजय कर लिया गया और कुछ काल पश्चात् युद्ध समाप्त हो गया।

1856 ई० में पेरिस का सन्धिपत्र हुआ जिसकी महत्वशाली धाराएँ निम्नलिखित थीं —

Treaty of Paris

१—टर्की को एक स्वतन्त्र साम्राज्य मान लिया गया और टर्की के सुल्तान ने प्रतिज्ञा की कि वह अपनी ईसाई प्रजा के साथ अच्छा बर्ताव करेगा।

२—रूस के जार को सेवस्टोपोल लौटा दिया गया और उसने प्रतिज्ञा की कि वह सेवस्टोपोल की पुनः किलाबन्दी न करेगा।

३—जार ने टर्की में रहने वाले ईसाइयों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने की माँग त्याग दी।

४—यह भी निश्चय हुआ कि कृष्ण सागर (Black Sea) में कोई जाति अपना सैनिक बेड़ा न रक्खेगी।

नोट—क्राइमियन युद्ध एक अति व्यर्थ युद्ध था। इससे विजेताओं को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ और न रूस की शक्ति ही तोड़ी जा सकी। इस सन्धि की कोई भी शर्त चिरस्थाई सिद्ध न हुई। सुल्तान पहले की भाँति अपनी प्रजा पर अत्याचार करता रहा और ज़ार भी पीड़ित ईसाईयों की सहायता करता रहा। कुछ वर्ष बाद ज़ार अपना सैनिक बेड़ा भी कृष्ण सागर में रखने लग गया और इस युद्ध की समाप्ति के बीस वर्ष बाद टर्की के राज्य के टुकड़े २ हो गये।

Q Briefly describe the career and work of Lord Palmerston (P U 1936-44-49-51-54-56) (Important)

प्रश्न—लार्ड पामर्स्टन के जीवन तथा काम का संक्षिप्त वर्णन करो।

लार्ड पामर्स्टन

(LORD PALMERSTON)

लार्ड पामर्स्टन विक्टोरिया के शासन काल में इंगलैंड का एक उच्चकोटि का राजनीतिज्ञ था। वह 1784 ई० में उत्पन्न हुआ और 1806 में पार्लिमेंट का मेम्बर बना और लगभग ६० वर्ष पार्लिमेंट का मेम्बर रहा। वह एक *उच्चकोटि का विदेश मन्त्री* (Foreign Minister) हुआ है।

Lord Palmerston

Palmerston

विदेशी नीति (Foreign Policy)—पामर्स्टन को विदेशी विषयों में विशेष रुचि थी। वह कई वर्षों तक विदेशी विभाग का मन्त्री रहा और इस पद पर रहते हुये उसने अपने देश के नाम और मान को बहुत ऊँचा कर दिया। वह एक प्रसिद्ध *इम्पीरियलिस्ट* (Imperialist) था और वह अपने देश की शक्ति को बढ़ाने का प्रबल इच्छुक था। इस उद्देश्य के लिये वह दूसरे देशों को छोटी-छोटी बातों पर युद्ध की धमकी देने में भी संकोच नहीं करता था।

उसके दिल में योरुप की पद-दलित जातियों के प्रति सहानुभूति थी और वह उनको स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने में सहायता देने के लिये सदा तैयार रहता था। उसकी बाह्य नीति की प्रसिद्ध घटनाएँ निम्नलिखित हैं —

१ *बैलजियम की स्वतन्त्रता*—बैलजियम के देश पर उन दिनों डचों का राज्य था परन्तु बैलजियम के लोगों ने 1830 ई० में डच राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। पामर्स्टन ने योरुप की बड़ी शक्तियों इङ्गलैंड, फ्रांस, रूस, प्रशिया, इत्यादि की एक कान्फ्रेंस लण्डन में बुलाई और वहाँ बैलजियम को स्वतन्त्र राज्य मान लिया गया।

२ *रूस से विरोध*—उन दिनों टर्की का राज्य बड़ा कमजोर था। रूस उसका शीघ्र ही अन्त करना चाहता था परन्तु पामर्स्टन रूस की इस नीति के विरुद्ध था क्योंकि उसका विचार था कि टर्की का अन्त हो जाने से रूस भारतवर्ष के लिये स्थायी भय का कारण बन जायेगा। अतः वह सदा रूस के विरुद्ध और टर्की के पक्ष में रहा।

३ *महमत अली की पराजय*—महमत अली टर्की के सुल्तान की ओर से उसके एक प्रान्त मिश्र (Egypt) का वाइसराय था। उस ने सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। पामर्स्टन टर्की को कमजोर होते नहीं देख सकता था। इसलिए उसने अङ्गरेजी सेना भेजी जिस ने महमत अली को पराजित किया।

४ *चीन से युद्ध*—बहुत से अंग्रेज व्यापारी चीन में बस गये थे और अफ़ीम आदि वस्तुओं का व्यापार करते थे। चीनी लोग अफ़ीम के व्यापार को पसन्द नहीं करते थ। इसके अतिरिक्त वे इन विदेशियों से घृणा करते थे। अन्ततः चीन से युद्ध छिड़ गया जो 1840 से 1842 तक रहा। पामर्स्टन ने सेना भेजी। चीनियों को पराजय हुई और उन्होंने युद्ध की हानि पूर्ति देना तथा योरुप के देशों को अपने साथ व्यापार करने की आज्ञा देना स्वीकार कर लिया। उन्हों ने हाँगकाँग द्वीप (Hong Kong) अंग्रेजों को दे दिया।

५ *1848 ई० की क्रांति की ओर व्यवहार*—1848 ई० सारे

डारबी (Earl of Derby) था परन्तु इस बिल का पेश करने वाला डिज़रेली (Disraeli) था। इस ऐक्ट की प्रसिद्ध धाराएँ ये थीं :—

१—नगरों में समस्त गृह स्वामियों को वोट देने का अधिकार प्राप्त हो गया।

२— ग्रामों में उन सब लोगों को जो १० पौंड वार्षिक किराया देते थे, वोट देने का अधिकार मिल गया।

महत्व—इस एक्ट के पास हो जाने से नगरों में रहने वाले प्राय समस्त शिल्पकारों और मजदूरों को वोट देने का अधिकार मिल गया, और वे भी राजनीति के कामों में भाग लेने लगे। इस से दस लाख नये वोटर बन गये। अब प्रत्येक १२ मनुष्यों में से एक को वोट का अधिकार मिल गया। केवल ग्रामों में रहने वाले मज़दूरों को वोट का अधिकार मिलना शेष रह गया।

Third Reform Act, 1884

तीसरा रिफ़ार्म ऐक्ट प्रधान मन्त्री ग्लैडस्टोन (Gladstone) ने महारानी विक्टोरिया के राज्य काल में 1884 ई० में पास कराया। इससे वह कमी जो दूसरे ऐक्ट में रह गई थी पूरी हो गई, अर्थात् ग्रामों में रहने वाले समस्त गृह-स्वामियों को वोट देने का अधिकार मिल गया।

महत्व—इस ऐक्ट के अनुसार ग्रामों के मज़दूरों को भी वोट देने का अधिकार मिल गया। नगर के मज़दूरों को तो दूसरे रिफ़ार्म ऐक्ट से ही वोट का अधिकार प्राप्त हो चुका था। इसलिये इंगलैंड में मज़दूर पार्टी (Labour Party) की नींव पड़ गई। इस ऐक्ट के पास हो जाने से बहुत हद तक डेमोक्रेसी स्थापित हो गई। अब प्रत्येक सात मनुष्यों में से एक को वोट का अधिकार प्राप्त हो गया।

☞Q Give a brief account of the career and work of Benjamin Disraeli as Prime Minister (V Important)
(P U 1935-38-45-47) Or,

Describe the changes introduced in English government and foreign policy by Lord Beaconsfield

प्रश्न—बैंजमिन डिज़रेली के विषय में तुम क्या जानते हो? उसके मन्त्रित्व काल का ब्यौरा भी लिखो।

बेंजेमिन डिज़रेली

(BENJAMIN DISRAELI)

आरम्भिक जीवन—बेंजेमिन डिज़रेली जो बाद में *लार्ड बीकन्स फ़ील्ड* (Lord Beaconsfield) के नाम से प्रसिद्ध हुआ, *महारानी विक्टोरिया के राज्यकाल* का सर्वप्रसिद्ध कन्ज़र्वेटिव प्रधान मन्त्री तथा *उच्चकोटि का राजनीतिज्ञ था*। वह जाति से यहूदी था, परन्तु ईसाई धर्म का अनुयायी था और आरम्भ में अपने पोलिटिकल उपन्यासों तथा अद्भुत वस्त्रों के कारण प्रसिद्ध था।

Benjamin Disraeli

डिज़रेली का जन्म 1804 ई० में हुआ। उसने किसी स्कूल या यूनीवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त नहीं की तो भी वह बड़ा विद्वान् था। 1837 ई० में वह पार्लिमेंट का मेम्बर बना। पार्लिमेंट में उसका पहला भाषण सर्वथा असफल रहा और उसकी बड़ी हँसी हुई। परन्तु वह निराश नहीं हुआ। बैठने से पहले उसने कहा "I shall sit down now but the time will come when you will hear me." और सत्य यह है कि डिज़रेली शीघ्र ही एक सुवक्ता बन गया। आरम्भ में वह सर राबर्ट पील का प्रबल पक्षपाती था, परन्तु जब पील ने अन्न के क़ानूनों (Corn Laws) को हटाने का बिल पेश किया तो डिज़रेली ने उसका घोर विरोध किया और इसी विरोध के कारण वह अति प्रसिद्ध हो गया। परन्तु इसके साथ ही टोरी पार्टी नष्ट हो गई। इसके पश्चात् डिज़रेली ने शनैः शनैः अपनी पार्टी को सगठित करना आरम्भ किया और उस में वह सफल हुआ। उस ने *वर्तमान कन्ज़र्वेटिव पार्टी स्थापित की और उस पार्टी के लिये एक कार्य-क्रम निश्चित किया। यह उसके जीवन का एक अति प्रसिद्ध काम था।*

प्रधान मन्त्री—डिज़रेली दो बार प्रधान मन्त्री रहा। पहली बार 1868 ई० में डिज़रेली कुछ मासों के लिये प्रधान मन्त्री रहा। उसके पश्चात् वह 1874 से 1880 तक प्रधान मन्त्री रहा। प्रधान मन्त्री के रूप में उसके तीन उद्देश्य थे। (i) वह *अपनी विदेशी नीति* से

अंग्रेज़ी प्रभुत्व को बढ़ाना चाहता था। (ii) अंग्रेज़ों के दिलों में अपने साम्राज्य के लिये मान का भाव उत्पन्न करना चाहता था। (iii) वह देश में सोशल सुधार करना चाहता था।

Home Policy

आन्तरिक नीति में यद्यपि डिज़रेली कन्सर्वेटिव था फिर भी वह मज़दूरों और निर्धन लोगों की उन्नति का इच्छुक था और उनकी सहायता से अपनी पार्टी दृढ़ करना चाहता था। मज़दूरों और निर्धनों को प्रसन्न करने के लिए उसने निम्न-लिखित कार्यवाहियाँ कीं :—

Lord Beaconsfield

१—1867 ई० में उसने दूसरा रिफार्म ऐक्ट (Second Reform Act) पास कराया (यद्यपि वह उस समय महामन्त्री नहीं था)। इससे नागरिक मज़दूरों को वोट का अधिकार मिल गया।

२—अपने मन्त्रित्व काल में उसने मज़दूरों के मकानों का कानून (Artisans' Dwellings Act) पास कराया जिसके अनुसार मज़दूरों के लिए खुले और हवादार मकान बनाये गये और उनकी चिकित्सा के लिए डाक्टरों का प्रबन्ध किया गया।

३—उसने फैक्टरी ऐक्ट (Factory Act) पास कराया जिस से छोटे बच्चों का शिल्पालयों में काम करना निषिद्ध कर दिया गया और कारखानों की देख-भाल के लिये इन्सपैक्टर नियुक्त किये गए।

४—एक और नियम Employers' and Workmen Act के अनुसार मज़दूरों को अपने व्यवसाय संघ के (Trade Unions) स्थापित करने की आज्ञा मिल गई।

डिज़रेली इम्पीरियलिस्ट (Imperialist) था, अर्थात् वह साम्राज्य के बढ़ाने का बड़ा इच्छुक था और चाहता था कि

अपने देश की शक्ति का सिक्का दूसरे देशों से मनवाये, चाहे इसके लिये उसे युद्ध भी करना पड़े। यही कारण है कि उसने पर देशीय समस्याओं में पर्याप्त भाग लिया और उसी के कारण संसार इंगलैंड का लोहा मानने लगा। उस की बाह्य नीति की प्रसिद्ध घटनायें निम्नलिखित हैं :—

Foreign Policy

१ स्वेज नहर के भाग मोल लेना—1875 ई० में डिज़रेली ने मिश्र के खदीव *इस्माईल पाशा* से जो प्राय: दिवालिया हो चुका था उसके सम्पूर्ण भाग जो स्वेज़ नहर में थे चालीस लाख पौंड के बदले ब्रिटिश सरकार के लिये मोल ले लिये। इस से *इंगलैंड की स्थिति* स्वेज़ नहर पर जो *आजकल ब्रतानिया के साम्राज्य का विख्याततम राजमार्ग है* दृढ़ हो गई। *यह डिज़रेली का अत्यन्त दूरदर्शिता का काम था।*

२ विक्टोरिया का भारत की महारानी बनना—1876 ई० में Royal Titles Act पास हुआ। इसके अनुसार विक्टोरिया ने *भारत की महारानी* (Empress of India) का उपनाम ग्रहण करना स्वीकार कर लिया। प्रथम जनवरी 1877 ई० को इस बात की घोषणा देहली में एक बड़े दरबार में की गई। इससे *अंग्रेज़ी शासन की सत्ता भारत में स्थापित हो गई।*

३ बर्लिन का सन्धि पत्र-1877 ई० में रूस के ज़ार ने टर्की से इस कारण युद्ध छेड़ दिया कि तुर्कों ने अपनी ईसाई प्रजा पर घोर अत्याचार किये थे। इस युद्ध में टर्की की पराजय हुई और रूस के ज़ार ने टर्की से ऐसी शर्तें मनवा ली जिनसे टर्की की शक्ति की प्राय समाप्ति ही हो जाती। डिज़रेली टर्की की शक्ति की दुर्बलता और रूस की प्रबलता को इंगलैंड के लिये हानिकारक समझता था। इसलिये उसने माँग की कि टर्की तथा रूस के बीच सन्धि की शर्तें तै करने में योरुप की दूसरी शक्तियों की राय लेनी चाहिए। रूस को यह माँग स्वीकार करनी पड़ी और 1878 ई० में बर्लिन (Berlin) के स्थान पर सन्धि-पत्र को दुहराया गया। इसमें डिज़रेली स्वयं सम्मिलित था और वह सन्तोषजनक शर्तों के तै कराने में सफल हो गया। इंगलैंड

को रोम सागर में स्थित साइप्रस (Cyprus) का टापू मिल गया जिससे पूर्व में अंग्रेजी स्थिति अधिक सुरक्षित हो गई। इस सन्धि-पत्र के दोहराये जाने से रूस की मान-मर्यादा को बड़ा धक्का लगा। डिज़रेली अपनी इस सफलता पर बड़ा गर्व किया करता था और बर्लिन के सन्धि-पत्र को इंगलैंड के लिए एक प्रतिष्ठापूर्वक समझौता (Peace with honour) कहा करता था।

४ मिश्र पर सॉझा अधिकार—मिश्र की सरकार ने बहुत सा रुपया इंग्लैंड तथा फ्रांस से ऋण लिया हुआ था। परन्तु अब उसकी आर्थिक दशा बड़ी शिथिल थी। इसलिए डिज़रेली ने फ्रांस की सरकार को साथ मिला कर मिश्र पर सॉझा अधिकार (Dual Control) स्थापित कर लिया।

५ ट्रॉसवाल पर अधिकार—ट्रॉसवाल दक्षिणी अफ्रीका का एक प्रान्त था जहाँ डच कृषक जिन्हें बोअर (Boer) कहते थे रहा करते थे। अंग्रेजों ने इस प्रान्त का 1877 में अपने अधिकार में कर लिया।

६ ज़ुलूलैंड तथा अफ़ग़ानिस्तान से युद्ध—डिज़रेली के मन्त्रित्व में दक्षिणी अफ्रीका में स्थित ज़ुलूलैंड तथा एशिया में स्थित अफ़ग़ानिस्तान में भी युद्ध हुए और यद्यपि इन युद्धों में अन्ततः विजय अङ्गरेज़ों की हुई तथापि कई एक स्थानों पर हानि उठाने के कारण अङ्गरेज़ों के मान को बड़ा धक्का लगा। इसके अतिरिक्त ग्लैडस्टान ने देश में भ्रमण करके अपने व्याख्यानों द्वारा डिज़रेली की नीति की घोर निन्दा की जिससे इङ्गलैंड की जनता डिज़रेली से असंतुष्ट हो गई।

डिज़रेली की मृत्यु—1880 ई० के नये चुनाव में डिज़रेली की हार हुई और वह इस हार के अगले ही वर्ष अर्थात् 1881 ई० में मर गया। डिज़रेली अपने समय का एक अत्यन्त योग्य नीतिज्ञ और उच्च कोटि का पार्टी लीडर था। उसने अपनी बाह्य नीति से अङ्गरेज़ी प्रभुत्व को बहुत बढ़ा दिया, रूस की शक्ति को कम कर दिया और साइप्रस (Cyprus) का टापू लेकर पूर्व में अङ्गरेज़ी साम्राज्य को अधिक सुरक्षित कर दिया। उसे इङ्गलैंड पर इतना अधिकार प्राप्त था कि जर्मनी

के मन्त्री बिस्मार्क (Bismarck) ने कहा था कि 'Disraeli is England

☞ Q Give a brief account of the career and work of Gladstone
(P U 1933-36-37 40-42-44-46-49-51-53)
(V Important)

प्रश्न—ग्लैडस्टोन के सम्बन्ध में तुम क्या जानते हो ? उसके मन्त्रित्व काल का संक्षिप्त ब्यौरा लिखो।

ग्लैडस्टोन

(GLADSTONE)

आरम्भिक जीवन—ग्लैडस्टोन महारानी विक्टोरिया के समय में एक अति प्रसिद्ध लिबरल Gladstone प्रधान मन्त्री और उच्च कोटि का राजनीतिज्ञ था। यह लिवरपूल (Liverpool) के एक धनी व्यापारी के यहाँ 1809 ई० में उत्पन्न हुआ। उसने ईटन (Eton) और आक्सफ़ोर्ड में शिक्षा प्राप्त की थी। वह 1833 ई० में पार्लिमेंट का मेम्बर बना। आरम्भ में तो वह कन्ज़र्वेटिव था, परन्तु धीरे धीरे विचार परिवर्तन के कारण वह लिबरल बन गया।

Gladstone

आर्थिक नीति—ग्लैडस्टोन आर्थिक विषयों (Finance) में विशेष रूप से निपुण था। वह कुछ वर्षों के लिये इंगलैंड का आर्थिक मन्त्री (Chancellor of the Exchequer) रहा और इस रूप में उसने अपने देश की बड़ी सेवा की। वह स्वतन्त्र व्यापार की नीति (Free Trade Policy) का अनुयायी था। अत उसने बहुत सी आयात वस्तुओं पर कर कम कर दिये और कई वस्तुओं पर सर्वथा

हटा दिये। इसका परिणाम यह हुआ कि देश का व्यापार बढ़ गया और निर्धन लोग भी अधिक सुखी हो गये।

महामन्त्री के रूप में—ग्लैडस्टोन चार बार प्रधान मन्त्री बना। प्रधान मन्त्री के रूप में उसकी सबसे बड़ी इच्छा यह थी कि किसी प्रकार आयरिश लोगों की शिकायतों को दूर किया जाये और पर्याप्त सीमा तक वह इस उद्देश्य में सफल भी हुआ। उसने देश में भी कई सुधार किये।

एक बात जिसके कारण ग्लैडस्टोन एक विशेष स्थान रखता था वह थी कि डिज़रेली की भाँति वह *इम्पीरियलिस्ट नहीं था*, अर्थात् साम्राज्य के प्रत्येक सम्भव प्रकार से विस्तार के विरुद्ध था।

१ ग्लैडस्टोन का प्रथम मन्त्रित्व
1868—1874

1868 ई० में ग्लैडस्टोन पहली बार प्रधान मन्त्री बना और 1874 ई० तक इस पद पर रहा। इस काल में उसने इंगलैंड और आयरलैंड में कई सुधार किये, परन्तु उसकी बाह्य नीति सफल न थी।

आन्तरिक नीति
Home Policy

१—Disestablishment and Disendowment of the Irish Church Act, 1869—आयरलैंड की जनसंख्या का अधिक भाग रोमन कैथोलिक है, परन्तु वहाँ का सरकारी चर्च प्रोटेस्टेंट था और उन कैथोलिक लोगों को प्रोटेस्टेंट चर्च के लिये टैक्स देना पड़ता था जिससे ये लोग बड़े अप्रसन्न थे। 1869 ई० में ग्लैडस्टोन ने एक कानून पास कराया जिसके अनुसार प्रोटेस्टेंट चर्च का सम्बन्ध शासन के साथ तोड़ दिया गया, और इस चर्च की बहुत सी सम्पत्ति छीन ली गई। इस कानून को Disestablishment and Disendowment Act कहते हैं।

२—First Irish Land Act, 1870—आयरलैंड के खेतिहर प्रायः रोमन कैथोलिक थे, परन्तु जमीन के स्वामी प्रोटेस्टेंट थे। ये स्वामी अपने कृषकों को कई बार जमीन से निकाल देते थे। ग्लैडस्टोन ने 1870 ई० में First Irish Land Act पास कराया जिसके

अनुसार निश्चय हुआ कि जमीन के स्वामी यदि कृषकों को ज़मीन से निकाल दें तो वे उन बातों के लिये जो कृषकों ने ज़मीन की दशा अच्छी बनाने के लिये की हों, बदले में धन दें।

३—Elementary Education Act, 1870—इस समय तक प्रायः सारी आरम्भिक शिक्षा चर्च के हाथों में थी। 1870 ई० में एक कानून पास हुआ जिसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि स्कूल बोर्ड (School Boards) स्थापित किये जायें और ये बोर्ड टैक्स तथा गवर्नमेंट ग्रांट से वहाँ स्कूल खोलें जहाँ चर्च का कोई स्कूल न हो। यह भी निश्चय हुआ कि यदि कोई बोर्ड चाहे तो अपने प्रान्त में बच्चों को स्कूल में अनिवार्य रूप से भरती कराये।

४—University Tests Act, 1871—इस ऐक्ट के अनुसार आक्सफ़ोर्ड तथा केम्ब्रिज के विश्वविद्यालयों में प्रत्येक मत के विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने की आज्ञा मिल गई। इस से पूर्व केवल चर्च आफ़ इंगलैंड के धर्मानुयायी विद्यार्थियों को ही इन विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था।

५—Ballot Act—1872 ई० में बैलट ऐक्ट (Ballot Act) पास हुआ। इस कानून के अनुसार यह निश्चय हुआ कि वोटर अपना वोट गुप्त रीति से दिया करें।

६—Army Reform—क्राइमिया के युद्ध से यह बात स्पष्ट हो गई थी कि अङ्गरेज़ी सेना के सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है। अतः ग्लैडस्टोन ने सेना का भी सुधार किया और उसकी त्रुटियों को दूर किया गया।

बाह्य नीति Foreign Policy

ग्लैडस्टोन की बाह्य नीति कोई सफल न थी। (१) उसके इस मन्त्रित्व में 1870 और 1871 ई० में फ्रांस और प्रशिया के बीच युद्ध छिड़ गया जिसमें अन्ततः फ्रांस की हार हुई। ग्लैडस्टोन ने इंगलैंड को निष्पक्ष रखा और इस युद्ध से कोई लाभ न उठाया।

(२) रूस के ज़ार ने इस युद्ध से लाभ उठा कर पैरिस

के सन्धि-पत्र की कुछ धाराओं को भंग कर दिया और अपने सैनिक जहाज कृष्ण सागर (Black Sea) में रखने लग गया। *इंगलैंड ने इसके विरुद्ध प्रोटेस्ट किया परन्तु ज़ार ने कोई ध्यान न दिया।*

(३) अलाबामा (Alabama) जहाज का मामला (देखें पृष्ठ २४१) पंचों को सौंपा गया और उनके निर्णय के अनुसार *इंगलैंड को हानि पूर्ति देनी पड़ी।*

ग्लैडस्टोन के सुधारों से सब लोग विशेषतया कन्जर्वेटिव तंग आ गये थे। इसके अतिरिक्त उसकी बाह्य नीति कुछ सफल न थी। इसलिये नये चुनाव में उसे पराजय हुई।

२ ग्लैडस्टोन का द्वितीय मन्त्रित्व

1880—1885

1880 ई० में ग्लैडस्टोन दूसरी बार प्रधान मन्त्री बना और पाँच वर्ष तक इस पद पर रहा। उसने इस मन्त्रित्व में भी कई सुधार किये परन्तु उसकी बाह्य नीति सफल न थी।

आन्तरिक नीति
Home Policy

१ Second Irish Land Act, 1881–आयरलैंड के ज़मींदार कृषकों से बहुत ज्यादा लगान लिया करते थे जिससे कृषकों के लिये पेट भरना कठिन हो जाता था। ग्लैडस्टोन ने आयरलैंड के लिये Second Irish Land Act पास किया *जिसके अनुसार ज़मीनों पर उचित लगान नियत करने के लिये एक विशेष न्यायालय* (Land Court) *स्थापित किया गया।*

२ Education Act, 1881—इस कानून द्वारा *आरम्भिक शिक्षा सब बच्चों के लिये अनिवार्य कर दी गई* अर्थात् प्रत्येक बच्चे के लिये जो स्कूल जाने योग्य हो, स्कूल जाना अनिवार्य हो गया।

३ Third Reform Act—1884 ई० में तीसरा रिफार्म ऐक्ट पास हुआ। इसके अनुसार *ग्रामों में रहने वाले प्रत्येक गृहस्वामी को वोट का अधिकार मिल गया।*

४ Re-distribution Act, 1885 ई०—इस ऐक्ट के अनुसार देश को प्रायः समान जनसंख्या के प्रदेशों में विभक्त किया गया और प्रत्येक प्रदेश को पार्लिमेंट में एक मेम्बर भेजने का अधिकार दिया गया।

ग्लैडस्टोन के इस मन्त्रित्व में कई एक विदेशी विषयों में अंग्रेजी गवर्नमेंट को उलझना पड़ा।

बाह्य नीति
Foreign Policy

१ ट्रांसवाल में विद्रोह—अंग्रेजों ने बोअरों† की बस्ती ट्रांसवाल (Transvaal) को अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर रखा था। बोअरों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और 1881 ई० में अंग्रेजी सेना को मजूबा हिल (Majuba Hill) के स्थान पर पराजय दी। ग्लैडस्टोन ने ट्रांसवाल की स्वतन्त्रता स्वीकार कर ली।

२ मिश्र में विद्रोह—मिश्री सेनाओं के एक सैनिक अफसर अर्बी पाशा (Arabi Pasha) ने मिश्र में अंग्रेजी प्रभुत्व के विरुद्ध विद्रोह किया परन्तु अंग्रेजी सेना ने Tel-el Kabir के स्थान पर उसे पराजय दी और इस विद्रोह को दबा दिया।

३ सूडान में विद्रोह—सूडान में भी एक व्यक्ति मुहम्मद अहमद ने जो अपने आप को 'मेहदी' कहता था अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। जैनरल गार्डन (General Gordon) को 1885 ई० में इस विद्रोह को दबाने के लिये सेना देकर भेजा गया परन्तु वह असफल रहा। वह खरतूम के स्थान पर घिर गया और वहीं वध कर दिया गया।

इस असफल बाह्य नीति का परिणाम यह हुआ कि ग्लैडस्टोन के मन्त्रित्व का 1885 ई० में अन्त हो गया।

३ ग्लडस्टोन का तीसरा मन्त्रित्व
1886

1886 ई० में ग्लैडस्टोन तीसरी बार प्रधान मन्त्री बना और उसने आयरलैंड के लिये प्रथम होम रूल बिल (First Home

†बोअर हालैंड के किसानों को कहते हैं।

Rule Bill) पेश किया, जिसका अभिप्राय यह था कि *आयरलैंड को पृथक् पार्लिमेंट दी जाये और उसे अपनी आन्तरिक नीति में स्वतन्त्रता दी जाये।* परन्तु उसकी अपनी पार्टी के ही मेम्बर इसके विरुद्ध थे। इसलिये यह बिल पास न हो सका और ग्लैडस्टोन को त्याग-पत्र देना पड़ा।

४ ग्लैडस्टोन का चौथा मन्त्रित्व

1892—1894

1892 ई० में ग्लैडस्टोन चौथी और अन्तिम बार प्रधान मन्त्री बना और 1893 ई० में उसने पुनः *आयरिश होम रूल बिल* पेश किया। हाउस आफ कामन्स में तो यह बिल पास हो गया, परन्तु हाउस आफ लार्ड्स ने उसे रद्द कर दिया। इस पर ग्लैडस्टोन ने 1894 ई० में त्याग पत्र दे दिया और राजनैतिक विषयों से सर्वथा पृथक् हो गया।

ग्लैडस्टोन की मृत्यु—इसके चार वर्ष पीछे 1898 ई० में ग्लैडस्टोन का देहान्त हो गया। *निस्सन्देह वह इंगलैंड का एक उच्चकोटि का राजनीतिज्ञ तथा सुवक्ता था। उसे आयरलैंड से विशेष सहानुभूति थी।* उसने एक बार कहा था, "My mission is to pacify Ireland"। *वह बड़ा शान्तिप्रिय मन्त्री था और आर्थिक विषयों का बड़ा जानकार था। उसमें काम करने की बड़ी शक्ति थी और उसे अपने धर्म से बड़ा प्रेम था।* उसने देश में कई सुधार किये परन्तु उसकी विदेशी नीति असफल रही। उस के अन्तिम वर्षों में लोग उसे Grand Old Man (G O M) कहा करते थे।

Q Give a brief account of the progress made by England in the reign of Queen Victoria.

प्रश्न—*महारानी विक्टोरिया के समय में इंगलैंड की उन्नति का संक्षिप्त वर्णन करो।*

22 जनवरी 1901 ई० को महारानी विक्टोरिया का देहान्त हुआ। उसने लगभग ६४ वर्ष शासन किया। इंगलैंड के किसी और शासक ने इतने लम्बे समय के लिये शासन नहीं किया। विक्टोरिया के समय में इंगलैंड ने सब प्रकार से आश्चर्यजनक उन्नति की।

विक्टोरिया के शासन काल में उन्नति

१ साम्राज्य विस्तार—द्वीपसमूह बर्तानिया की जनसंख्या पहले की अपेक्षा तिगुनी हो गई और इंगलैंड के अधिकृत देशों का क्षेत्रफल चार गुना बढ़ गया। बर्तानिया के साम्राज्य में कई प्रदेश सम्मिलित हुये। भारतवर्ष, मिस्र, तथा दक्षिणी अफ्रीका में अंग्रेजी राज्य स्थापित हो गया। इस साम्राज्य विस्तार के कारण यह कहावत प्रसिद्ध हो गई कि *"बर्तानिया के साम्राज्य पर सूर्य कभी अस्त नहीं होता।"*

२ विद्या तथा साहित्य—बहुत से कवि, उपन्यासकार तथा लेखक इस काल में हुये।

वर्ड्सवर्थ (Wordsworth) और *टैनिसन* (Tennyson) प्रसिद्ध कवि थे, *डिकन्ज़* (Dickens) और *थैकरे* (Thackeray) उपन्यासकार थे, *मिल* (Mill) और *स्पैन्सर* (Spencer) प्रसिद्ध दार्शनिक थे और *रसकिन* (Ruskin) और *कारलाइल* (Carlyle) उच्चकोटि के लेखक थे। मैकाले (Macaulay) इस काल का अति प्रसिद्ध इतिहास लेखक था। सारांश यह कि *विद्या तथा साहित्य की दृष्टि से यह समय ऐलिज़बैथ के समय से कम न था।*

३ विज्ञानोन्नति—विक्टोरिया के समय में विज्ञान ने भी बड़ी उन्नति की। क्लोरोफार्म तथा ऐक्सरे (X ray) के आविष्कार ने चीर फाड़ की विद्या में क्रान्ति कर दी। फोटो का कैमरा, टेलीफोन और बिजली का प्रकाश भी इसी समय हुआ।

४ आवागमन के साधनों में उन्नति—आवागमन के साधनों

में आश्चर्यजनक उन्नति हुई। रेलों का जाल बिछ गया, बाईसिकल का रिवाज बहुत बढ़ गया। मोटरकार भी आरम्भ हो गई। बिजली की तारों (Telegraph) ने समाचार भेजने का कार्य सुगम बना दिया। दूसरे देशों को सामुद्रिक मार्गों द्वारा समाचार जाने लगे। भाप से चलने वाले जहाज बनने आरम्भ हुये। सर रोलैंड हिल (Sir Rowland Hill) ने पैनी पोस्टेज (Penny Postage) की स्कीम तैयार की अर्थात् एक पैनी के टिकट में लिफाफे भेजे जाने का प्रबन्ध आरम्भ हुआ। आवागमन के साधनों के बढ़ जाने से व्यापार में बड़ी उन्नति हुई।

५ पोलिटिकल उन्नति—कई कानून ऐसे पास हुए जिन से मजदूरों तथा कृषकों की दशा उत्तम हो गई। दूसरे तथा तीसरे रिफार्म ऐक्ट के पास होने से प्रत्येक गृह स्वामी पुरुष को वोट देने का अधिकार मिल गया जिससे पार्लिमेंट देश की प्रतिनिधि सभा बन गई। 1881 ई० में प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य और 1891 ई० में प्रारम्भिक शिक्षा मुफ्त देने का निश्चय हो गया। आयरलैंड की दशा का उत्तम बनाने के लिये यत्न किया गया। कैनेडा, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड को सैल्फ गवर्नमेंट प्रदान की गई।

वर्तमान राजवंश
विन्ज़र राजवंश
HOUSE OF WINDSOR

१—ऐडवर्ड सप्तम	1901—1910
२—जार्ज पंचम	1910—1936
३—ऐडवर्ड अष्टम	1936—1936
४—जार्ज षष्टम	1936—1952
५—ऐलिज़बेथ द्वितीय	1952—

वंशावली

महारानी विक्टोरिया = एल्बर्ट आफ़ कोबर्ग

१ ऐडवर्ड सप्तम
1901 से 1910 ई०

२ जार्ज पंचम
1910 से 1936 ई०

३ ऐडवर्ड अष्टम
1936

४ जार्ज षष्टम
1936 से 1952

५ ऐलिज़बेथ द्वितीय
1952—

नोट—ऐडवर्ड सप्तम के सिंहासनारूढ़ होने से House of Saxe-Coburg का आरम्भ हुआ, परन्तु 1917 ई० से इस वंश का नाम House of Windsor रखा गया।

एडवर्ड सप्तम
EDWARD VII
1901—1910

एडवर्ड सप्तम महारानी विक्टोरिया का सब से बड़ा पुत्र था।

सिंहासनारोहण तथा चरित्र — यह 1901 ई० में अपनी माता की मृत्यु के पश्चात् इंगलैंड का राजा बना। उस समय उसकी आयु 60 वर्ष की थी। उसने अनेक देशों का भ्रमण किया हुआ था, इसलिये उसका ज्ञान बहुत विस्तृत था। यह बड़ा दयालु स्वभाव, हँसमुख और अतिथि सेवा करने वाला था और अपनी प्रजा में बड़ा सर्वप्रिय था। इतिहास में यह *शान्ति-कारक एडवर्ड* (Edward the Peacemaker) के नाम से प्रसिद्ध है।

एडवर्ड के सिंहासनारूढ़ होने से इंगलैंड में एक नये राजवंश का आरम्भ हुआ, जिसका नाम सैक्स-कोबर्ग (Saxe-Coburg) था, परन्तु महान् युद्ध के बीच में इस घर का नाम *विन्डसर* (Windsor) रखा गया।

☞Q Explain why Edward VII is called the Peacemaker Give a brief account of the important events of his reign (P. U 1936-38-40) (Important)

प्रश्न—एडवर्ड सप्तम को शान्तिकारक एडवर्ड क्यों कहते हैं। उस के शासनकाल की प्रसिद्ध घटनाओं का वर्णन करो।

Edward VII

Edward the Peacemaker — एडवर्ड अपनी माता महारानी विक्टोरिया की मृत्यु के पश्चात् 60 वर्ष की आयु में राजा बना। यह बड़ा दूरदर्शी तथा बुद्धिमान् था। उस ने सिंहासनारूढ़ होते ही इस बात को भाँप लिया था कि योरुप के देशों के सम्बन्ध परस्पर अच्छे नहीं हैं और महाद्वीप पर धड़े बन्दियाँ हैं। जर्मनी, आस्ट्रिया तथा इटली का आपस में गठजोड़ है। और रूस

तथा फ्रांस परस्पर घनिष्ट मित्रता रखते हैं, और कोई देश भी इंग्लैंड का साथी नहीं है। *इंग्लैंड का फ्रांस के साथ* मिश्र और मराको के सम्बंध में झगड़ा था। फ्रांसीसी अंग्रेज़ों का आधिपत्य मिश्र (Egypt) पर मानने को तैयार न थे और अंग्रेज़ उन्हें मराक्को (Morocco) में अपनी मनमानी नहीं करने देते थे। उधर रूसी ईरान और अफ़ग़ानिस्तान में अपना अधिकार बढ़ा रहे थे। इंगलैंड इसे अच्छा नहीं समझता था। इस कारण *इंग्लैंड और रूस में भी बैर-भाव था। जर्मनी के साथ भी व्यापारी* और बस्ती *सम्बन्धी ईर्ष्या थी*। इन बातों से इंग्लैंड की पोज़ीशन दृढ़ न थी। इसलिये ऐडवर्ड ने राजगद्दी पर बैठते ही अन्य देशों से सम्बन्ध स्थापित करने चाहे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये वह योरुप के कई देशों में जाकर वहाँ के शासकों से मिला और उन से मित्रता के कई सम्बन्ध स्थापित किये।

१ फ्रांस से मित्रता, 1904 ई०—1904 ई० में अंग्रेज़ों तथा फ्रांसीसियों के बीच संधिपत्र हुआ जिससे इन दोनों देशों के बीच जो विरोध था वह दूर हो गया। *मिश्र* (Egypt) देश अंग्रेज़ों के अधीन मान लिया गया और उसके बदले *मराको* (Morocco) फ्रांस के अधीन माना गया।

२ जापान से सन्धिपत्र, 1905 ई०—1905 ई० में इंग्लैंड और जापान के बीच एक सन्धिपत्र हुआ जिसके अनुसार दोनों देशों ने युद्ध में एक दूसरे की सहायता की प्रतिज्ञा की। इससे पूर्व (East) में अंग्रेज़ों की पोज़ीशन दृढ़ हो गई। इसी संधिपत्र के अनुसार जापान ने प्रथम महान् युद्ध में इंग्लैंड की सहायता की थी।

३ रूस से सन्धि, 1907 ई०—1907 ई० में इंग्लैंड तथा रूस के बीच प्रतिज्ञा पत्र लिखा गया जिसके अनुसार दोनों देशों में *अफ़ग़ानिस्तान तथा ईरान* के सम्बन्ध में जो झगड़ा था वह शांत हो गया अर्थात् अफ़ग़ानिस्तान अंग्रेज़ों के प्रभावाधीन (Sphere of Influence में) माना गया और ईरान का उत्तरी भाग रूसियों के और दक्षिणी भाग अङ्गरेज़ों के प्रभावाधीन माना गया।

४ शान्ति स्थापना कान्फ्रेंसें—इन मित्रताओं तथा सन्धिपत्रों के अतिरिक्त ऐडवर्ड सप्तम के यत्नों से योरुप में कई कान्फ्रेंसें हुईं

जिनमें योरुप महाद्वीप में शान्ति की स्थापना के लिये योजनायें की गईं। इस प्रकार उसके प्रयत्नों से योरुप कुछ वर्षों तक युद्ध की भयानक आपत्तियों से बचा रहा। इन्हीं कारणों के आधार पर एडवर्ड को *शान्तिकारक ऐडवर्ड* (Edward the Peacemaker) कहते हैं।

ऐडवर्ड सप्तम के समय की प्रसिद्ध घटनाएँ निम्नलिखित हैं :—

१ शिक्षा का कानून Education Act, 1902

1902 ई० में शिक्षा का कानून पास किया गया। इसके अनुसार ग्लैडस्टोन के स्थापित किये हुए स्कूल बोर्ड हटा दिये गये और स्कूलों का प्रबन्ध कौंटी कौंसिलों (County Councils) को सौंप दिया गया। अपितु इन कौंसिलों को उच्च शिक्षा की उन्नति के लिये भी कुछ अधिकार दिये गये।

२. महसूल के कानून का सुधार Tariff Reform

जोजफ चेम्बरलेन (Joseph Chamberlain) जो उस समय बस्तियों का मन्त्री (Colonial Secretary) था स्वतन्त्र व्यापार (Free Trade) की नीति को देश के लिये लाभदायक न समझता था। उस ने टैरिफ रिफ़ार्म बिल पेश किया जिसका उद्देश्य यह था कि विदेशी माल पर टैक्स लगाया जाय, परन्तु बस्तियों को इसमें कुछ सुविधा दी जाये और वह इस प्रकार कि उनके माल पर *विदेशी माल की अपेक्षा महसूल थोड़ा लगाया जाय जिस से उन के सम्बन्ध इंगलैंड के साथ दृढ़ हो जायें।* इस नीति को *'बस्तियों की सुविधा'* अथवा Imperial Preference कहते हैं परन्तु उसका यह प्रस्ताव स्वीकार न किया गया और उसने 1903 ई० में त्याग पत्र दे दिया।

1908 ई० में मिस्टर ऐसक्विथ (Mr Asquith) प्रधान मन्त्री बना। वह लिबरल पार्टी से सम्बन्ध रखता था। उसके मन्त्रित्व काल में कई सुधार हुए :—

३ सामाजिक सुधार Social Reforms

१—बूढ़ों की पैंशन का कानून, 1908 ई०—1908 ई० में Old Age Pensions Act पास हुआ जिसके अनुसार सत्तर वर्ष से अधिक आयु वाले निर्धन लोगों को जिनकी आय इक्कीस पौंड वार्षिक से कम थी, पाँच

शिलिंग प्रति सप्ताह सरकार की ओर से दिये जाने का निश्चय हुआ।

२—*खानिकों का कानून*, 1908 ई०—1908 ई० में Miners' Act पास हुआ। इससे निश्चय हुआ कि खानों में काम करने वाले मजदूरों से प्रतिदिन आठ घण्टों से अधिक काम न लिया जाय।

३—*शिशु रक्षा कानून* 1908 ई०—1908 ई० में Protection of Children Act पास हुआ जिसके अनुसार अल्पायु बच्चों के लिये खुले रूप से तम्बाकू पीना निषिद्ध ठहरा दिया गया।

४—*नैशनल इन्श्योरेन्स ऐक्ट*, 1910 ई०—इस कानून के अनुसार निर्धन मजदूरों के लिये यह अनिवार्य हो गया कि वे बीमारी और बेकारी के विरुद्ध बीमा करायें। बीमे का रुपया देने में उन के स्वामी और सरकार भी उनकी सहायता करते थे।

५—*सेना सुधार*—इन सुधारों के अतिरिक्त सेना तथा सामुद्रिक शक्ति को भी नये सिरे से संगठित किया गया।

४—Budget 1909

बूढ़ों की पैंशन तथा सामुद्रिक सेना संगठन के कारण गवर्नमेंट के व्यय का बढ़ जाना अनिवार्य था। इसलिये 1909 ई० के बजट में व्यय आय की अपेक्षा अधिक था। इस भारी व्यय को पूरा करने के लिये लायड जार्ज (Lloyd George) अर्थ मन्त्री ने इन्कम टैक्स तथा भूमि कर बढ़ाने का प्रस्ताव किया। हाउस आफ कामन्स ने तो इस बजट को पास कर दिया, परन्तु हाउस आफ लार्डस के अधिकांश मेम्बर जमींदार थे और भूमि के लगान तथा इन्कम टैक्स के बढ़ने से उनकी अपनी हानि थी। इसलिये हाउस आफ लार्डस ने इस बजट को अस्वीकार कर दिया। इस पर यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि *क्या देश की प्रतिनिधि सभा अर्थात् हाउस आफ कामन्स के पास किये हुये बजट को रोकने का अधिकार हाउस आफ लार्डस को होना चाहिए अथवा नहीं*। इस लिये Asquith ने पार्लिमेंट को तोड़ दिया। 1910 ई० के नये चुनाव में फिर ऐसक्रिथ की पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ और अब हाउस आफ लार्डस ने इस बजट को पास कर दिया। इसके पश्चात् Mr Asquith ने पार्लिमेंट में एक बिल पेश

किया जिसका उद्देश्य यह था कि हाउस आफ़ लार्ड्स के अधिकारों को कम कर दिया जाये, जिससे कि वह हाउस आफ कामन्ज के पास किये हुये कानूनों को रोक न सके परन्तु अभी इस बिल पर वाद विवाद हो रहा था कि ऐडवर्ड सप्तम 6 मई 1910 ई० को मर गया और उसके स्थान पर जार्ज पंचम राजा बना। अन्त में 1911 ई० के Parliament Act के अनुसार हाउस आफ लार्ड्स के अधिकार घटा दिये गये।

जार्ज पंचम
(GEORGE V)
1910—1936

ऐडवर्ड सप्तम की मृत्यु के पश्चात् 1910 ई० में उसका पुत्र जार्ज पंचम राजा बना। 1917 ई० में उसने अपने वंश का नाम *हाउस आफ़ विन्ज़र* (House of Windsor) रखा। उसके समय की सब प्रसिद्ध घटना प्रथम *महान् युद्ध है*। 1935 ई० में जब कि उसे सिंहासनारूढ़ हुये पच्चीस वर्ष हो चुके थे समस्त साम्राज्य में उसकी *सिलवर जुबिली* (Silver Jubilee) बड़ी धूम धाम से मनाई गई थी।

सिंहासनारोहण

☞ Q Write a short note on the Parliament Act of 1911 (P U 1926-35-37-40-43-45-47-49-51-52-53-55)
(V Important)

प्रश्न—*पार्लिमेंट ऐक्ट 1911 ई० पर संक्षिप्त नोट लिखो।*

पार्लिमेंट ऐक्ट
(PARLIAMENT ACT)

पार्लिमेंट ऐक्ट जार्ज पंचम के समय में 1911 ई० में पास हुआ। उस समय ऐस्क्विथ (Asquith) प्रधान मन्त्री था।

Parliament Act, 1911

कारण—1909 ई० के बजट को जिसे हाउस आफ कामन्ज ने पास कर दिया था हाउस आफ लार्ड्स

ने अस्वीकार कर दिया। इस पर कामन्स को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने लार्ड्स के अधिकारों को कम करना चाहा। इस उद्देश्य के लिए पार्लिमेंट में एक बिल पेश किया गया जो 1911 ई० में पास होकर ऐक्ट बन गया। इसे पार्लिमेंट ऐक्ट (Parliament Act) कहते हैं।

धाराएं (Provisions)—१—हाउस आफ लार्डज़ को किसी बजट अथवा Money Bill को जो हाउस आफ कामन्ज़ में पास हो चुका हो रद्द करने का अधिकार नहीं।

२—यदि कोई और बिल तीन वर्ष निरन्तर हाउस आफ कामन्स में पास हो जाए तो वह कानून बन जायगा चाहे हाउस आफ लार्डस उसके विरुद्ध ही क्यों न हों।

३—पार्लिमेंट की अवधि आगे के लिये सात वर्ष के स्थान पर पांच वर्ष नियत कर दी गई।

महत्व (Importance)—इस ऐक्ट के पास हो जाने से हाउस आफ लार्डज़ के अधिकार कम हो गए और कानून पास करने की सारी शक्ति हाउस आफ़ कामन्ज के हाथों में आ गई। हाउस आफ लार्डस अधिक से अधिक एक बिल को दो वर्ष तक पास होने से रोक सकता है। अब राज-कार्य में हाउस आफ़ कामन्स का प्रभुत्व हो गया।

नोट—दिसम्बर 1949 ई० में एक और कानून पास हुआ जिसके अनुसार हाउस आफ़ लार्डस किसी बिल को अधिक से अधिक एक वर्ष तक रोक सकता है।

☞Q Give a short and clear account of the causes, main events and results of the First Great War Also account for the success of the Allies in this war (P U 1944 49-54-56) (V Important)

प्रश्न—प्रथम महान् युद्ध के कारण, घटनाएँ तथा परिणाम संक्षिप्त किन्तु स्पष्ट रूप से वर्णन करो और संगियों की इस युद्ध में विजय के कारण वर्णन करो।

प्रथम महान् युद्ध
(FIRST GREAT WAR)
1914—18

प्रथम महान् युद्ध जार्ज पंचम के समय में 1914 ई० से 1918

First Great War 1914—1918

ई० तक हुआ। इस युद्ध में संसार की लगभग सम्पूर्ण बड़ी बड़ी जातियों ने भाग लिया। इस से पूर्व संसार के इतिहास में इतना बड़ा और भयंकर युद्ध कभी नहीं हुआ था। यही कारण है कि इसे महा-युद्ध कहते हैं।

इस युद्ध के बड़े बड़े कारण निम्नलिखित थे :—

१ जर्मनी का उत्थान—उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में जर्मनी का वर्तमान देश कई छोटी छोटी रियासतों में बँटा हुआ था, जिनमें से *प्रशिया* (Prussia) की रियासत बड़ी प्रभावशाली थी। परन्तु इसी शताब्दी के पिछले आधे भाग में प्रशिया के मन्त्री बिसमार्क (Bismarck) ने, जो बड़ा योग्य राजनीतिज्ञ था इन सब रियासतों को मिला कर जर्मन साम्राज्य स्थापित किया। शीघ्र ही इस जर्मन देश ने कला-कौशल और व्यापार में आश्चर्यजनक उन्नति कर ली। उसकी शिल्पों और जन-संख्या में विशेष वृद्धि होने लगी। जर्मनी के इस उत्थान से योरुप के बाकी देशों में कुछ भय सा उत्पन्न हो गया।

२ क़ैसर विलियम द्वितीय की इच्छाएँ—1888 ई० में William II जर्मनी का राजा बना। वह एक असाधारण व्यक्ति था। वह शक्ति का बड़ा इच्छुक था और जर्मनी को योरुप की सब से प्रभावशाली शक्ति बनाने के स्वप्न ले रहा था। वह अपनी शिल्पों तथा जन संख्या के लिये नई बस्तियाँ प्राप्त करना चाहता था। परन्तु उस समय संसार की सर्वोत्तम बस्तियों पर इंगलैंड तथा फ्रांस

William Kaiser

का अधिकार था और युद्ध के बिना जर्मनी इनको प्राप्त नहीं कर सकता था। अतः विलियम ने युद्ध की तैयारियाँ करनी आरम्भ कर दीं। उस ने अपनी स्थल तथा जल-शक्ति को बहुत उत्तम बना लिया और शीघ्र ही जर्मनी योरुप की सबसे भयानक यौद्धिक शक्ति बन गया। जर्मनी ने टर्की में भी अपना प्रभाव जमाना चाहा ताकि पूर्व की ओर बढ़ना सुगम हो जाये। इन्हों ने बर्लिन को बग़दाद के साथ रेल द्वारा मिलाने का भी विचार किया। इसके अतिरिक्त जर्मनी ने नहर कील (Kiel) को भी गहरा कर दिया ताकि बड़े-बड़े जहाज़ वहाँ ठहर सकें। उधर इंगलैंड, फ्रांस और रूस ने भी युद्ध का सामान अधिक बनाना आरम्भ कर दिया।

३ योरुप की जातियों में पारस्परिक डाह—उस समय योरुप के भिन्न-भिन्न देशों में पारस्परिक द्वेष तथा डाह थी :—

(i) जर्मनी ने फ्रांस से आलसास (Alsace) तथा लोरेन (Lorraine) के प्रान्त छीन रक्खे थे। फ्रांस उन्हें वापस लेने की चिन्ता में था परन्तु जर्मनी उन्हें अपने अधीन रखने पर तुला हुआ था।

(ii) आस्ट्रिया बलकान की रियासतों पर अपना अधिकार जमाना चाहता था, परन्तु रूस उनका सजातीय होने के कारण उन्हें अपने प्रभाव में रखना चाहता था। इस कारण रूस और आस्ट्रिया में भी डाह थी।

(iii) इंगलैंड को जर्मनी की बढ़ती हुई शक्ति से भय हो रहा था और वह उससे ईर्ष्या करने लग गया था।

४ योरुप में दो विरोधी दल—परस्पर के द्वेष तथा बिसमार्क की नीति के कारण योरुप की जातियाँ दो सैनिक दलों में विभक्त हो गई थीं। जर्मनी ने आस्ट्रिया तथा इटली को साथ मिला कर त्रयमेल (Triple Alliance) स्थापित कर लिया था और दूसरी ओर फ्रांस, रूस तथा इंगलैंड ने परस्पर मेल (Triple Entente) किया हुआ था। ये दोनों सैनिक दल भीतर ही भीतर युद्ध की तैयारियों में

पूर्णतया संलग्न थे और जर्मनी जो शक्ति के मद में चूर हो रहा था युद्ध के लिए कोई साधारण सा बहाना ही चाहता था।

५ तत्कालीन कारण—*आस्ट्रिया के युवराज का वध*—28 जून 1914 ई० को *आस्ट्रिया का युवराज आर्चड्यूक फर्डीनेंड* सराजीवो (Serajevo) के नगर में जो बोसनिया की राजधानी है वध कर दिया गया। वधिक सर्विया की जाति का एक पुरुष था। इसलिए आस्ट्रिया ने सर्विया (Servia) की गवर्नमेंट को इस वध का अपराधी ठहराया और उसे अपमानजनक अल्टीमेटम भेज दिया, और जब सर्विया ने उसकी कुछ एक शर्तों को मानने से इनकार किया, तो आस्ट्रिया ने जर्मनी की राह पाकर सर्विया के विरुद्ध 28 जुलाई 1914 ई० को युद्ध घोषणा कर दी। *इस प्रकार आस्ट्रिया और सर्विया में युद्ध* आरम्भ हो गया।

दूसरे देशों का सम्मिलित होना

रूस (Russia) ने सर्विया का साथ दिया क्योंकि वह उसका सजातीय था। जर्मनी (Germany) ट्रैमेस के अनुसार आस्ट्रिया से मिल गया। फ्रांस (France) ने अपने मित्र रूस की सहायता की और जब जर्मनी ने फ्रांस पर आक्रमण करने के लिए अपनी सेनायें बेल्जियम से जिसकी निष्पक्षता का स्थिर रखने की उसने प्रतिज्ञा की हुई थी गुजारीं तो इंगलैंड ने भी 4 अगस्त 1914 ई० को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। इसके पश्चात् और भी कई शक्तियाँ युद्ध में सम्मिलित हो गईं और इस प्रकार यह युद्ध संसार व्यापी युद्ध बन गया।

दोनों पक्ष

इस युद्ध में एक ओर *जर्मनी, आस्ट्रिया, टर्की और बल्गेरिया थे और* दूसरी ओर *इंगलैंड, फ्रांस, सर्विया, रूस, बेल्जियम जापान, इटली, अमरीका, आदि* थे। *इंगलैंड,*

फ्रांस तथा उनके साथियों को *संगियों* (Allies) के नाम से पुकारा जाता था। जर्मनी और उसके साथियों को *मध्य शक्तियाँ* (Central Powers) कहते थे।

जर्मनी की स्कीम यह थी कि सब से पहले फ्रांस को विजय किया जाय और फिर रूस की शक्ति को मलियामेट किया जाय और उसके बाद योरुप पर अधिकार स्थापित किया जाये। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने थोड़ी सी सेना रूसी सीमा की ओर भेजी और शेष सारी सेना को फ्रांस की ओर भेज दिया।

जर्मनी की स्कीम

घटनायें (Events) –इस युद्ध की घटनायें भिन्न भिन्न भागों में बाँटी जा सकती हैं।

१—पश्चिमी मोर्चे पर युद्ध। २—पूर्वी मोर्चे पर युद्ध।

३—टर्की से युद्ध। ४—योरुप से बाहर युद्ध। ५—सामुद्रिक युद्ध।

१ पश्चिमी (फ्रांसीसी) मोर्चे पर युद्ध (Western Front)– जर्मन सेनाओं ने बैल्जियम का नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और बढ़ती हुई पेरिस के अति समीप पहुँच गई। परन्तु अंग्रेजी तथा फ्रांसीसी सेनाओं ने उन्हें **मार्न** (Marne) *नदी की लड़ाई में पराजित किया* और उनकी उमड़ी हुई बाढ़ दब गई। *जर्मनी की इस पराजय से फ्रांस नष्ट-भ्रष्ट होने से बच गया और जर्मनी की शीघ्र ही विजय पा लेने की आशाओं पर पानी फिर गया।*

मार्न के युद्ध के पश्चात् दोनों पक्षों ने सैंकड़ों मीलों की लम्बाई में खाइयाँ खोद कर लड़ना आरम्भ किया। *खाइयों की लड़ाई* (Trench Warfare) लगभग चार वर्ष रही। दोनों ओर के लाखों मनुष्य काम आये, परन्तु कोई पक्ष आगे न बढ़ सका।

२ पूर्वी (रूसी) मोर्चे पर युद्ध (Eastern Front)–पश्चिमी मोर्चे पर कोई विशेष सफलता न होते देख कर जर्मनी ने अपनी कुछ सेना पूर्व में रूस के विरुद्ध भेज दी। पूर्वी मोर्चे पर प्रारम्भ में रूस

का पल्ला भारी रहा और रूसी सेनाओं ने जर्मनी तथा आस्ट्रिया का कुछ भाग भी विजय कर लिया, परन्तु शीघ्र ही जर्मनी के सर्वोत्तम सेनापति (Marshal Von Hindenburg) ने रूसी सेनाओं को टैननबर्ग (Tannenberg) के स्थान पर हरा कर पीछे धकेल दिया और उन्हें निरंतर कई पराजयें दीं। अन्त में 1917 ई० में रूस में क्रान्ति हो गई। रूस का जार अपने परिवार सहित वध कर दिया गया और सम्पूर्ण शक्ति बालशिवकों के हाथ में आ गई, जिन्होंने देश में प्रजातन्त्र शासन जिसे *सोवियट* (Soviet) गवर्नमेंट कहते हैं, स्थापित कर लिया और जर्मनी से संधि कर ली।

३ टर्की से युद्ध (War with Turkey)—टर्की भी जर्मनी के पक्ष में मिल गया था इसलिए मित्रियों ने जल-डमरू मध्य *डार्डनेलीज* (Dardanelles) के मार्ग से *कुस्तुनतुनिया* (इस्तम्बोल) पर अधिकार करना चाहा परन्तु सफलता न हुई। फिर स्थल के मार्ग से वहाँ तक पहुँचने की चेष्टा की, परन्तु प्रायद्वीप *गैलीपोली* (Gallipoli) में उन्हें असफलता हुई।

भारतवर्ष से एक सेना फारस की खाड़ी के मार्ग से टर्की के एक प्रांत *मैसोपोटेमिया* (इराक) को विजय करने के लिये भेजी गई। इस सेना ने *बसरा* (Basra) को विजय कर लिया। परन्तु *कुतल अमारा* (Kut-el Amara) के स्थान पर उसे पराजय हुई। अगले वर्ष अंग्रेजी सेना ने आ कर कुतल अमारा विजय कर लिया और *बग़दाद* (Baghdad) भी ले लिया। इधर *यरोशलम* (Jerusalem) भी विजय हो गया।

४ योरुप से बाहर युद्ध (War outside Europe)-योरुप के बाहर जर्मनी के जितने भी अधिकृत प्रदेश थे सब अंग्रेजों, फ्रांसीसियों तथा जापानियों ने छीन लिये। (जर्मनी के अधिकृत प्रदेश अफ्रीका में केमरून, टोगोलैंड, जर्मन पूर्वी अफ्रीका और जर्मन दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका थे। एशिया में क्याचो और शान्त महासागर में कई द्वीप थे)।

५ सामुद्रिक युद्ध (Naval Warfare)—युद्ध के आरम्भ में जर्मनी को सामुद्रिक युद्ध में कुछ सफलता प्राप्त हुई। परन्तु 1916 ई० में जटलैंड (Jutland) की सामुद्रिक लड़ाई में अंग्रेज़ी बेड़े ने जर्मन बेड़े को पराजय दी। इस के पश्चात् जर्मन बेड़े को अंग्रेज़ी बेड़े के मुकाबले में आने का कभी साहस न हुआ।

जर्मन डुबकनी नावें (Submarines) इसके बाद भी संगियों तथा निष्पक्ष देशों के व्यापारिक और सैनिक जहाज़ों को नष्ट करती रहीं। अंग्रेज़ी फ़ील्ड मार्शल किचनर (Kitchener) भी जब वह रूस जा रहा था समुद्र में डुबो दिया गया।

Kitchener

अमेरिका के प्रधान डाक्टर वुडरो विलसन (Dr Woodrow Wilson) ने जर्मनी की इस नीति के विरुद्ध प्रोटैस्ट किया और जब जर्मनी ने सर्वथा उसकी उपेक्षा की तो 1917 ई० में अमेरिका भी संगियों के साथ मिल गया।

६ जर्मनी की अन्तिम चेष्टा (Germany s Last Effort)–1918 ई० के अगस्त में जर्मन सेनाओं ने पश्चिमी मार्चे पर एक अन्तिम तथा प्रबल चेष्टा की और पैरिस के अति समीप आ पहुँचीं। परन्तु इस समय संगियों ने फ्रांसीसी जनरल फ़ोश (Foch) को जो बड़ा अनुभवी तथा युद्ध निपुण था सर्वोपरि सेनापति नियुक्त

Foch

(v) इस युद्ध के जीतने में फ्रांसीसी जरनैल फ़ोश (Foch) और इंगलैंड के महामन्त्री लायड जार्ज (Lloyd George) ने अमूल्य कार्य किये।

(vi) संगियों का प्रापेगण्डा और उनका गुप्तचर विभाग जिसकी सहायता से वे शत्रु के भेद का पता लगा सकते थे युद्ध जीतने में बड़े उपयोगी सिद्ध हुए।

☞ Q Write a short note on the League of Nations (P U 1927-33 34 35-40-43-45-48-50-53) (V Important)

प्रश्न—लीग आफ नेशन्ज़ पर नोट लिखो।

लीग आफ़ नेशन्ज़

(LEAGUE OF NATIONS)

League of Nations लीग आफ नेशन्ज संसार की भिन्न भिन्न जातियों की एक सभा थी जिसका उद्देश्य संसार में शान्ति स्थापित करना, भविष्य में युद्ध को रोकना और सब प्रकार से मानव जाति के कल्याण के लिये यत्न करना था।

स्थापना—इस लीग की स्थापना महायुद्ध के पश्चात् अमेरिका के प्रधान डाक्टर वुडरो विल्सन (Dr Woodrow Wilson) के संकेत पर हुई। संसार के सब बड़े बड़े देश कुछ एक का छोड़ कर (यथा अमेरिका, जर्मनी, जापान) इसके मेम्बर थे। इस लीग का कार्यालय स्थायी रूप से स्विट्ज़रलैंड में स्थित जैनीवा (Geneva) में था जहाँ प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर विचार करने के लिये सितम्बर मास में लीग का एक अधिवेशन होता था।

प्रोग्राम—लीग ने अपने उद्देश्य की प्राप्ति अथवा संसार में शान्ति तथा सुख स्थापित करने के लिये यह निश्चय किया कि (i) मेम्बर जातियाँ आपस में गुप्त सन्धि-पत्र न करें, (ii) आवश्यकता से अधिक युद्ध सामग्री, सेना, समुद्री बेड़ा, आदि न रखें, (iii) नियत हुए प्रतिज्ञा पत्रों पर पूर्ण रूप से आचरण करें, (iv) यदि किन्हीं मेम्बर जातियों में झगड़ा उठ खड़ा हो तो वे उसे लीग के सामने रखें जिस से

सम्मान पूर्वक समझौता कराया जा सके और (v) यदि कोई जाति लीग के निर्णय को न माने तो उसका व्यापारिक तथा सामाजिक बहिष्कार किया जावे।

कार्य—इसमें सन्देह नहीं कि लीग ने कुछ एक सम्मानपूर्वक समझौते भी कराये और मानव जाति के कल्याण के लिये कई कार्य किये। मजदूरों की दशा को भी सुधारा। परन्तु पश्चात् की घटनाओं ने इसके प्रभाव तथा शक्ति को मलियामेट कर दिया। जापान ने बल पूर्वक चीन पर चढ़ाई कर दी। इटली ने ऐबेसिनिया को कृपाण की शक्ति से अपने अधिकार में कर लिया। जर्मनी ने प्रायः सारे संसार को एक भयानक युद्ध में धकेल दिया। इन सब घटनाओं के कारण लीग अपने शान्ति स्थापित करने के मनोरथ में सर्वथा असफल रही। 1946 से यह लीग United Nations Organisation में परिवर्तित हो गई है।

असफलता के कारण—लीग की असफलता के कई कारण थे। एक तो यू० ऐस० ए० जैसा शक्तिशाली देश इसका मेम्बर न था। दूसरे लीग के पास अपने निर्णयों पर आचरण करवाने के लिये कोई सेना न थी। *तीसरे* वर्सेय का सन्धिपत्र न्याय पर आश्रित न था और लीग के अन्दर एकता न थी। लीग के कुछ मेम्बर इसे इंगलैंड तथा फ्रांस की एक स्वार्थी सभा समझते थे।

Q Write a note on the Representation of the People Act, 1918

प्रश्न—1918 ई० के ऐक्ट पर नोट *लिखो*।

Representation of the People Act, 1918

1918 में गवर्नमेंट ने एक ऐक्ट पास किया जिसे Franchise Act अथवा Representation of the People Act कहते हैं। उस समय लायड जार्ज (Mr Lloyd George) प्रधान मन्त्री था। इस ऐक्ट के अनुसार:—

१—प्रत्येक पुरुष को जिसकी आयु इक्कीस वर्ष

या अधिक थी वोट देने का अधिकार मिल गया।

२—तीस वर्ष से अधिक आयु वाली स्त्रियों को भी वोट देने का अधिकार मिल गया।

यह ऐक्ट गवर्नमेंट ने पुरुषों तथा स्त्रियों की उन सेवाओं के पलट में पास किया था जो उन्होंने महायुद्ध में की थीं। स्त्रियों को वोट का अधिकार दिये जाने का एक कारण यह था कि स्त्रियों के प्रतिनिधित्व के अधिकार का आन्दोलन कई वर्षों से हो रहा था और 1908 ई० से लकर तो इस आन्दोलन की नेता स्त्रियों ने देश में ऊधम मचा दिया था।

नोट—1928 ई० में एक और कानून पास हुआ जिसके अनुसार ३० वर्ष के स्थान पर २१ वर्ष की आयु वाली स्त्रियों को वोट देने का अधिकार मिल गया। अब आजकल इंगलैंड में इक्कीस वर्ष की आयु वाले पुरुषों तथा स्त्रियों को वोट देने का अधिकार प्राप्त है। *इससे इंगलैंड सच्चे अर्थों में democracy बन गया।*

☞Q How did England become a democracy ?

Or,

How was the House of Commons reformed in the nineteenth and twentieth centuries ? Or,

Trace the history of Parliamentary reform in England in the nineteenth century (1953) Or,

Trace the progress of Parliamentary Reform from 1832 to 1911 (P U 1951) (V Important)

प्रश्न—इंगलैंड में प्रजातन्त्र कैसे स्थापित हुआ ? या

उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी में हाउस आफ़ कामन्स का सुधार कैसे हुआ ? या

1832 से 1911 तक पार्लिमेंट के सुधार का *हाल लिखो।*

इंगलैंड में डैमोक्रेसी
(DEMOCRACY IN ENGLAND)

डैमोक्रेसी की स्थापना

डैमोक्रेसी (Democracy) शासन की उस प्रणाली को कहते हैं जिस में प्रजा के निर्वाचित प्रतिनिधि देश का प्रबन्ध करें। इङ्गलैंड एक बहुत प्रसिद्ध डैमोक्रेसी है, सारे अधिकार लोगों से निर्वाचित प्रतिनिधियों की सभा अर्थात् पार्लिमेंट के हाथों में हैं और राजा केवल नाम मात्र ही है।

उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व पार्लिमेंट में ज़मींदारों और लार्डों का प्रभाव था और मध्यम श्रेणी (Middle Class) और मज़दूर लोगों (Labourers) को प्रतिनिधित्व का अधिकार प्राप्त न था और वोटरों की संख्या बहुत ही थोड़ी थी। परन्तु उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में कई कानून पास हुए जिनसे हाउस आफ़ कामन्ज़ का सुधार भी हुआ और प्रभाव भी बढ़ गया और पार्लिमेंट वास्तव में देश की प्रतिनिधि सभा बन गई।

१ पहला रिफ़ार्म ऐक्ट (First Reform Act), 1832— यह ऐक्ट 1832 ई० में लार्ड ग्रे (Lord Grey) के मन्त्रित्व काल में पास हुआ। इसके पास होने से वोटरों की संख्या बढ़ गई। वोटर बनने की शर्तें भी बहुत सीमा तक एक जैसी कर दी गईं और उजड़े हुये प्रदेशों से जहाँ ज़मीदारों तथा लार्ड लोगों का प्रभाव था, प्रतिनिधित्व का अधिकार छीनकर नये बसे हुए नगरों को दे दिया गया। अब प्रत्येक २४ मनुष्यों में से एक को वोट का अधिकार मिल गया। इसका परिणाम यह हुआ कि *मध्यम श्रेणी के लोगों* (Middle Class) *को भी प्रतिनिधित्व का अधिकार मिल गया।* अब केवल कारीगरों और मज़दूरों को जिन में नगरवासी और ग्रामवासी दोनों प्रकार के मज़दूर थे, प्रतिनिधित्व का अधिकार मिलना शेष रह गया। *इस एक्ट से ज़मींदारों के प्रभाव का अन्त हो गया।*

२ दूसरा रिफार्म ऐक्ट (Second Reform Act), 1867 ई०—यह एक्ट 1867 ई० में बैंजेमिन डिज़रेली (Benjamin Disraeli) ने लार्ड डार्बी (Lord Derby) के मन्त्रित्व काल में पास कराया। इसके अनुसार नगरवासी प्रत्येक मनुष्य को जिसका अपना मकान था या जो 10 पौंड वार्षिक कराया देता था वोट का अधिकार मिल गया। इससे नगरवासी मजदूरों और शिल्पकारों को भी प्रतिनिधित्व का अधिकार मिल गया, क्योंकि उनमें बहुत से मकानों के स्वामी थे। ग्रामों में उन लोगों को वोट का हक मिल गया जो 12 पौंड वार्षिक लगान देते थे। इस प्रकार प्रत्येक १२ मनुष्यों में से एक को वोट का अधिकार मिल गया। अब केवल ग्रामवासी मजदूर ही प्रतिनिधित्व के अधिकार के बिना रह गये।

३ बैलट ऐक्ट (Ballot Act), 1872—यह एक्ट ग्लैडस्टोन के मन्त्रित्व काल में 1872 में पास हुआ। इससे वोटरों को गुप्त रूप से वोट देने का अधिकार मिल गया, जो कि वास्तविक डैमाक्रेसी के लिए अति आवश्यक है।

४ तीसरा रिफार्म ऐक्ट (Third Reform Act), 1884 यह एक्ट 1884 ई० में ग्लैडस्टोन (Gladstone) के मन्त्रित्व काल में पास हुआ। इससे प्रत्येक ग्रामवासी को जो मकान का स्वामी था वोट का अधिकार मिल गया। इसका परिणाम यह हुआ कि ग्रामवासी मजदूरों (किसानों) को भी प्रतिनिधित्व का अधिकार मिल गया। इस से प्रत्येक ७ मनुष्यों में से एक को वोट का अधिकार हो गया। अब पार्लिमेंट वास्तविक रूप से जातीय सभा बन गई।

५ पार्लिमेंट ऐक्ट (Parliament Act) 1911—यह ऐक्ट 1911 ई० में ऐसक्विथ (Asquith) के मन्त्रित्व काल में पास हुआ। इससे हाउस आफ कामन्स के अधिकार बढ़ गए। इसकी प्रसिद्ध धाराएँ ये थीं कि हाउस आफ कामन्स यदि किसी बिल को निरन्तर तीन बार पास कर दे तो वह बिल हाउस आफ लार्डज़ के

विरुद्ध होते हुए भी कानून बन सकता है। इसके अतिरिक्त हाउस आफ लार्ड्स को किसी बजट को रद्द करने का अधिकार न रहा। इसका परिणाम यह हुआ *कि कानून बनाने के सारे अधिकार हाउस आफ कामन्ज़ के हाथों में आ गये।*

६ फ्रैंचाइज़ ऐक्ट (Franchise Act) 1918—*यह* ऐक्ट 1918 ई० में *लायड जार्ज* (Lloyd George) के मन्त्रित्व काल में पास हुआ। इसके अनुसार प्रत्येक मनुष्य को जिसकी आयु २१ वर्ष या इससे अधिक थी और प्रत्येक स्त्री को जिसकी आयु तीस वर्ष या इससे अधिक थी वोट का अधिकार मिल गया। *इस कानून से स्त्रियों को भी देश के राज्य प्रबन्ध में भाग लेने का अधिकार हो गया।* इसके अतिरिक्त इस कानून की एक धारा के अनुसार पार्लिमेंट का मैम्बर बनने के लिए जायदाद की शर्त हटा दी गई।

७ ऐक्ट 1928—यह ऐक्ट 1928 ई० में बालड्विन (Baldwin) के मन्त्रित्व काल में पास हुआ। इसके अनुसार प्रत्येक स्त्री को जिस की आयु इक्कीस वर्ष या इससे अधिक हो वोट देने का अधिकार मिल गया। *अतः आजकल इंगलैंड में प्रत्येक मनुष्य तथा स्त्री को जिसकी आयु २१ वर्ष या अधिक है वोट देने का अधिकार है।* इस प्रकार प्रत्येक पाँच मनुष्यों में से तीन को वोट का अधिकार प्राप्त है। इससे *इंगलैंड वास्तविक रूप में डैमोक्रेसी बन गया।*

८ ऐक्ट 1949—यह ऐक्ट 1949 ई० में *मि० ऐटली* (Attlee) के मन्त्रित्व काल में पास हुआ। इससे पास हुआ कि *हाउस आफ लार्ड्ज अधिक से अधिक एक कानून को एक वर्ष तक रोक सकता है।* इससे हाउस आफ कामन्ज की शक्ति और भी बढ़ गई।

उपरिलिखित कानूनों का परिणाम यह हुआ कि हाउस आफ कामन्ज़ पूर्ण रूप से देश की प्रतिनिधि सभा बन गया। *अब कानून बनाने के सारे अधिकार इसे प्राप्त हैं और मन्त्रि-मण्डल इसके आगे उत्तरदायी है।* इस प्रकार इंगलैंड वास्तव में प्रजातन्त्र राज्य (Democracy) बन गया है।

नोट—"उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में हाउस आफ कामन्ज" के

सुधार का हाल लिखने के लिये उपरिलिखित उत्तर का पहला पैराग्राफ छोड़ दो।

"1832 से 1911 तक पार्लिमेंट के सुधार" का हाल लिखने के लिये पहला पैराग्राफ और 1911 के बाद के कानूनों का वर्णन छोड़ दो।

Q Explain the causes of discontent in Ireland during the nineteenth century How did the English Government try to remove them ?

प्रश्न—उन्नीसवीं शताब्दी में आयरलैंड में अशान्ति के क्या कारण थे ? अंग्रेजी सरकार ने इन कारणों को दूर करने के लिये क्या काम किया ?

आयरलैंड में अशान्ति

(DISCONTENT IN IRELAND)

आयरलैंड में अशान्ति

आयरलैंड के देश में १६ वीं शताब्दी में बड़ी अशान्ति फैली हुई थी। वहाँ के निवासी अंग्रेजी सरकार के साथ कई कारणों से अप्रसन्न थे। इस अशान्ति के बड़े-बड़े कारण निम्नलिखित थे :—

१ धार्मिक रोष—आयरलैंड के लगभग 90% लोग रोमन कैथोलिक थे परन्तु यहाँ का सरकारी चर्च प्रोटैस्टैंट था। इन कैथोलिक लोगों को इस चर्च के लिये टैक्स देने पड़ते थे, इस कारण ये बड़े अप्रसन्न थे।

२ भूमि समस्या—आयरलैंड के भूमिपतियों को इङ्गलैंड के शासकों ने उनकी भूमियों से वंचित कर रखा था और उनकी भूमियाँ अङ्गरेजों को दे दी गई थीं और ये केवल कृषक रूप से काम करने वाले रह गये थे। अङ्गरेज भूमिपति इङ्गलैंड में रहते थे। उन्हें इन कृषकों के साथ कोई सहानुभूति न थी, उन्होंने अपनी इन भूमियों का प्रबन्ध अपने कार्य कर्ताओं (agents) को सम्भाल रखा था। ये कार्यकर्ता इन आयरिश कृषकों से न केवल बड़े भारी किराये ही

लेते थे अपितु छोटे छोटे बहानों पर उन्हें भूमियों से बेदखल भी कर देते थे तथा जो कुछ व्यय उन्होंने भूमियों के सुधार के लिये किया होता था यह भी नहीं देते थे।

३ राजनैतिक समस्या—इस अशान्ति का तीसरा बड़ा कारण यह था कि 1800 ई० में Irish Act of Union के अनुसार आयरलैंड की पृथक् पार्लिमेंट तोड़ दी गई थी और उसको इङ्गलैंड की पार्लिमेंट के अधीन कर दिया गया था परन्तु इस संयुक्त पार्लिमेंट में आयरलैंड के कैथोलिक लोगों को सदस्य बनने का अधिकार न था। इस से आयरलैंड के लोग असन्तुष्ट थे तथा वे अपने देश के लिए पृथक् पार्लिमेंट अर्थात् Home Rule लेना चाहते थे।

अङ्गरेजी सरकार ने आयरलैंड की इस अशान्ति को दूर करने के लिए भिन्न भिन्न समयों पर भिन्न भिन्न पालिसी से काम लिया। कभी तो दमन की नीति का प्रयोग किया और कभी नरमी से काम लिया परन्तु यह अशान्ति दूर न हुई। अन्ततः जब ग्लैडस्टोन (Gladstone) इङ्गलैंड का प्रधान मन्त्री बना तो उसने पूरी तरह से अपना ध्यान आयरलैंड को प्रसन्न करने की ओर लगाया। उसको आयरलैंड से पूर्ण सहानुभूति थी। उसने एक बार कहा था, "My mission is to pacify Ireland."

अङ्गरेजी सरकार का प्रयत्न

१ धार्मिक समस्या का समाधान—ग्लैडस्टोन ने अपने पहले मन्त्रित्व में आयरलैंड की धार्मिक समस्या का पूर्णतया समाधान कर दिया। उसने 1869 ई० में एक कानून (Disestablishment and Disendowment Act) पास कर के आयरलैंड के प्रोटेस्टेंट चर्च का सम्बन्ध सरकार से तोड़ दिया।

२ भूमि समस्या का समाधान—ग्लैडस्टोन ने 1870 ई० में पहला आयरिश लैण्ड ऐक्ट (First Irish Land Act) पास किया जिस से निश्चय हुआ कि यदि किसी आयरिश कृषक को भूमि का

किराया न देने के अतिरिक्त किसी अन्य कारण से भूमि से बेदखल कर दिया जाय तो भूमिपति को उसे वह धन देना पड़ेगा जो कृषक ने भूमि सुधार के लिए व्यय किया हो। परन्तु आयरिश लोग इससे सन्तुष्ट न हुए। इसलिये उन्होंने एक *भूमि सभा* (Land League) बनाई जिसने और सुविधायें प्राप्त करने के लिये आन्दोलन जारी रखा। इस लीग ने अङ्गरेज भूमिपतियों को बहुत कष्ट दिये और कई एक का वध भी कर दिया। अन्ततः ग्लैडस्टोन ने 1881 ई० में दूसरा आयरिश लैंड ऐक्ट (Second Irish Land Act) पास किया जिस से निश्चय हुआ कि भूमियों का किराया सरकार नियत किया करेगी। ग्लैडस्टोन के इन दो कानूनों ने आयरिश कृषकों की अवस्था को पर्याप्त सुधार दिया तथापि कृषक इतने से संतुष्ट न थे। लीग ने अपना संघर्ष जारी रखा। (अन्ततः बीसवीं शताब्दी में कुछ और कानून पास किये गये और कृषकों को सरकार की ओर से ऋण दिया गया जिस से कृषकों ने अपनी भूमियाँ मोल ले लीं)।

२ राजनैतिक समस्या का समाधान—आयरलैंड के एक व्यक्ति *डेनियल ओकान्नेल* (Daniel O Connell) ने आयरिश कैथोलिक लोगों के लिए प्रोटैस्टैंट्स के समान अधिकार प्राप्त करने के लिये आन्दोलन किया। इस से 1829 ई० में एक कानून Catholic Relief Act पास हुआ जिस से कैथोलिक लोगों पर से समस्त प्रतिबन्ध हटा दिये गये और उन्हें पार्लिमेंट के सदस्य बनने का अधिकार प्राप्त हो गया। परन्तु आयरिश लोग इस से प्रसन्न न थे। वे तो अपनी पृथक् पार्लिमेंट अर्थात् Home Rule लेना चाहते थे। उन्होंने इसके लिए बड़ा आन्दोलन किया। अङ्गरेजी सरकार ने दमन की नीति अपनाई परन्तु यह आन्दोलन चलता ही रहा। अन्ततः ग्लैडस्टोन ने अनुभव किया कि उन्हें होम रूल दे देना चाहिये। अतः उसने अपने तीसरे मन्त्रित्व में 1886 ई० में *पहला होम रूल बिल* (First Irish Home Rule Bill) पेश किया परन्तु यह अस्वीकृत हो गया और ग्लैडस्टोन ने त्यागपत्र दे दिया। 1893 ई०

में ग्लैडस्टोन ने अपने चौथे मन्त्रित्व में दूसरा *होम रूल बिल* (Second Home Rule Bill) पेश किया। इसे कामन्स ने तो पास कर दिया किन्तु लार्डज़ ने रद्द कर दिया। इस पर ग्लैडस्टान ने त्याग पत्र दे दिया और आयरलैंड को उन्नीसवीं शताब्दी में होम रूल न मिल सका। (परन्तु २० सवीं शताब्दी में अर्थात् 1922 में आयरलैंड को होम रूल दे दिया गया।)

☞ Q How did the movement to grant Home Rule to Ireland start ? Fxplain the events that led to the formation of the Irish Free State
(P U 1941-42 50-52-55 56) (V Important)

प्रश्न—आयरलैंड को होमरूल दिये जाने का आन्दोलन कैसे आरम्भ हुआ और बताओ कि आयरिश फ्री स्टेट किस प्रकार स्थापित हुई?

आयरलैंड और होमरूल
(IRELAND AND HOME RULE)
1800—1922

Ireland and Home Rule

1800 ई० तक आयरलैंड की अपनी पृथक् पार्लिमेंट थी जो आयरलैंड की राजधानी डबलिन (Dublin) में बैठती थी, परन्तु कोई कैथोलिक इसका मैम्बर नहीं हो सकता था। 1800 ई० में आयरलैंड के ऐक्ट आफ़ यूनियन (Act of Union) के अनुसार आयरलैंड का मेल इंगलैंड से हो गया था, अर्थात् आयरलैंड की अपनी पृथक् पार्लिमेंट तोड़ दी गई थी और उसके स्थान पर आयरलैंड को इंगलैंड की पार्लिमेंट में अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया था। अब यही पार्लिमेंट आयरलैंड के लिए भी क़ानून पास करती थी। पहले पहल तो कैथोलिक लोग इस के मैम्बर नहीं बन सकते थे, परन्तु 1829 ई० में कैथोलिक लोगों को मैम्बर बनने का अधिकार मिल गया था। फिर भी आयरलैंड के लोग इस मेल से प्रसन्न न थे। व अपने देश के लिये *होम रूल* अर्थात् पृथक् पार्लिमेंट चाहते थे। इस की प्राप्ति के लिये उन्होंने समय समय पर कई आन्दोलन किये।

१ ओकानैल का आन्दोलन—सब से प्रथम *डेनियल ओकानैल* (Daniel O Connell) नाम के एक नेता ने इस मेल का समाप्त करने के लिये आन्दोलन आरम्भ किया परन्तु देश के नवयुवक उस के वैधानिक तरीकों को पसन्द न करते थ।

२ यंग आयरलैंड—अतः उन्हों ने *यंग आयरलैंड* (Young Ireland) पार्टी स्थापित की। इस पार्टी का नेता एक पुरुष *स्मिथ ओब्रीन* (Smith O'Brien) था। यह पार्टी सख्ती से अपने उद्देश को प्राप्त करना चाहती थी। इसन 1848 ई० में एक विद्रोह किया परन्तु यह असफल रही। इसके नेताओं को बन्दी बना दिया गया और कई देश-निर्वासित कर दिय गय।

३ फ़ीनियनज़—यंग आयरलैंड के कुछ वर्ष पश्चात् अमेरिका में रहने वाले आयरिश लोगों ने एक गुप्त क्रांतिकारी पार्टी स्थापित की जिसे *फ़ीनियनज़* (Fenians) कहते थे। इस पार्टी का उद्देश्य आयरलैंड में भय उत्पन्न करके वहाँ स्वतन्त्र रिपब्लिक स्थापित करना था। परन्तु यह पार्टी भी असफल रही।

४ आयरिश नैशनेलिस्ट पार्टी—इसके पश्चात 1870 ई० में *आयरिश नेशनेलिस्ट* (Irish Nationalist) नाम की एक पालिटिकल पार्टी स्थापित हुई। इसका *उद्देश्य आयरलैंड के लिये होमरूल प्राप्त करना था*। शीघ्र ही पार्टी की बागडोर *पारनैल* (Parnell) नाम के एक व्यक्ति के हाथ में आ गई जो आयरलैंड का एक सच्चा देश भक्त और अपने समय का एक प्रसिद्ध लीडर था। *उसकी नीति यह थी कि पार्लिमेंट के हर काम में जिसका सम्बन्ध आयरलैंड से न हो रुकावट डाली जाय, ताकि पार्लिमेंट तंग आकर आयरलैंड को होमरूल दे दे*।

५ ग्लैडस्टोन का यत्न—अन्त में प्रधान मन्त्री *ग्लैडस्टोन* (Gladstone) ने *अनुभव किया कि आयरलैंड को होम रूल दे देना चाहिये*। उसन 1886 ई० में *पहला होमरूल बिल* (First Home Rule Bill) पेश किया जिसका उद्देश्य यह था कि आयरलैंड को होमरूल दे दिया जाय परन्तु यह बिल पास न हो सका। ग्लैडस्टोन

ने 1893 ई० में *दूसरा होमरूल बिल* (Second Home Rule Bill) पेश किया। यह बिल हाउस आफ कामन्स में तो पास हो गया, परन्तु लार्डस ने उसे रद्द कर दिया। अतः ग्लैडस्टोन उनकी राजनैतिक शिकायतों को दूर न कर सका। इस पर ग्लैडस्टोन ने त्याग पत्र दे दिया।

६ सिनफीन—ग्लैडस्टोन के त्याग-पत्र के बाद कुछ वर्षों के लिए होमरूल आन्दोलन का ज़ोर कम हो गया। परन्तु 1904 ई० में *सिनफीन* (Sinn Fein) नाम की एक पार्टी स्थापित हुई जिस का उद्देश्य आयरलैंड के लिये पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करना था। इस पार्टी ने बड़े उत्साह से अपना प्रोपेगण्डा आरम्भ किया।

७ होमरूल का पास होना—इसके बाद 1912 ई० में जार्ज पंचम के समय में प्रधान मन्त्री *ऐसक्विथ* (Mr Asquith) ने *तीसरा होमरूल बिल* (Third Home Rule Bill) पेश किया जो हाउस आफ कामन्स में तीन बार निरन्तर पास हो गया और लार्डज के हर बार अस्वीकार करने पर भी 1914 ई० में एक्ट बन गया और निश्चय हुआ कि आयरलैंड को होमरूल दे दिया जाय।

८ अल्स्टर की अड़चन—परन्तु इस समय एक बड़ी कठिनाई पेश आई। वह यह कि आयरलैंड के उत्तरी प्रांत *अल्स्टर* (Ulster) के लोग जो अधिकतर प्रोटैस्टैंट थे आरम्भ से ही होमरूल के विरुद्ध थे, क्योंकि उन्हें भय था कि इससे उन्हें रोमन कैथालिक की बहुसंख्या के अधीन रहना पड़ेगा। परन्तु दूसरी ओर आयरलैंड के दक्षिणी भाग के लोग डटे हुये थे कि होमरूल लेकर रहेंगे। इस बात का भय उत्पन्न हो गया था कि देश में घरेलू युद्ध आरम्भ हो जायगा कि इतने में योरुप का युद्ध आरम्भ हो गया और दोनों पार्टियाँ इस बात पर तैयार हो गईं कि युद्ध की समाप्ति तक इस एक्ट पर कार्य करना बन्द रखा जाये। परन्तु युद्ध-काल में भी सिनफीन विद्रोह करते रहे।

९ आयरिश फ्री स्टेट की स्थापना—युद्ध के अनन्तर आयर-

लैंड के होमरूल का प्रश्न फिर छिड़ गया और इसका समाधान इस प्रकार हुआ कि आयरलैंड के दो भाग किये गये—(१) अलस्टर, (२) दक्षिणी आयरलैंड। अलस्टर तो पहले की भाँति अंग्रेजी शासन के अधीन ही रहा। परन्तु दक्षिणी आयरलैंड को 1922 ई० में होमरूल दे दिया गया और Mr Cosgrave इसका प्रथम प्रधान बना। दक्षिणी आयरलैंड का नाम आजकल Irish Free State है। आयरलैंड वाले अपने देश को Eire कहते हैं। इस समय आयरलैंड प्राय सब प्रकार से स्वतन्त्र है, यहाँ तक कि गत महायुद्ध में वह निष्पक्ष रहा था। 1948 ई० से आयरलैंड ब्रिटिश साम्राज्य से सर्वथा पृथक् हो गया है।

ऐडवर्ड अष्टम
EDWARD VIII
1936

जनवरी 1936 को जार्ज पंचम की मृत्यु हो गई और उस के पश्चात् उसका सब से बड़ा पुत्र ऐडवर्ड अष्टम राजा बना। उसने युवराज अवस्था में भिन्न भिन्न देशों की यात्रा की थी और उसे देशीय विषयों में पर्याप्त अनुभव था। परन्तु उसे देर तक राज्य करने का अवसर न मिला।

राजा बनने के शीघ्र ही पीछे उसने एक अमेरिकन स्त्री Mrs Simpson से जो दो बार तलाक ले चुकी थी, विवाह करने का संकल्प किया परन्तु इंगलैंड के मन्त्रियों ने इस विवाह का घोर विरोध किया जिससे राजा तथा मन्त्रियों के बीच घोर झगड़ा शुरू हो गया और अन्त में दिसम्बर 1936 ई० को ऐडवर्ड अष्टम राजसिंहासन से पृथक् हो गया और थोड़े ही महीनों पीछे उसने मिसिज़ सिम्पसन (Mrs Simpson) से विवाह कर लिया। राजत्याग के बाद उसे Duke of Windsor बना दिया गया।

जार्ज षष्ठम
GEORGE VI
1936—1952

ऐडवर्ड षष्ठम के सिंहासन त्याग के पीछे उसका छोटा भाई जार्ज षष्ठम राजा बना। उसके समय की सबसे प्रसिद्ध घटना दूसरा महायुद्ध (The Second Great War) है।

George VI

दूसरा महायुद्ध 1939–1945

यह युद्ध 1939 ई० से आरम्भ होकर 1945 ई० तक अर्थात् छः वर्ष रहा। यह ससार का सबसे भयानक और रक्तपूर्ण युद्ध था। ससार की बहुत सी जातियों ने इस में भाग लिया।

कारण—इस युद्ध के बड़े बड़े कारण निम्नलिखित थे :—

१ देश हथियाने की लालसा—पहला महायुद्ध वर्सेय (Versailles) की सन्धि से समाप्त हुआ था। इस सन्धिपत्र की धारा के अनुसार एक League of Nations अर्थात् अन्तर्जातीय सभा स्थापित की गई थी जिसका उद्देश्य ससार में भविष्यत् युद्धों को रोकना और विविध देशों में शान्ति व मित्रता फैलाना था। परन्तु यह सभा (लीग) विविध देशों के प्रदेश जीतने की लालसा का दूर न कर सकी।

२ जर्मनीका रोष—जर्मनी और इटली के देश वर्सेय के सन्धि-पत्र को घृणा की दृष्टि से देखते थे। जर्मनी को दुःख था कि इस सन्धि-पत्र के अनुसार उनके कुछ अपने प्रदेश और सारे विदेशी अधिकृत प्रदेश उनसे छीन लिये गये हैं और उनके साथ सभ्य जातियों का

सा बर्ताव नहीं किया गया वरन् उनको ऐसा दबाया गया कि वे फिर कभी न उठ सकें। इटली वालों को यह दुख था कि जो प्रतिज्ञायें संगियों (Allies) ने उनके साथ पहले महायुद्ध के समय उन्हें युद्ध में सम्मिलित करने के लिये की थीं वर्सेय की सन्धि रचते समय उनका ध्यान नहीं किया गया था।

३ हिटलर की उन्नति—जर्मनी की इस शोचनीय दशा को देखकर एक व्यक्ति हिटलर के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि जर्मनी को वही उच्च पदवी प्राप्त होनी चाहिये जो उसको युद्ध से पहले थी। वह जर्मनी की नाज़ी (Nazi) पार्टी में शामिल हो गया। शीघ्र ही हिटलर इस पार्टी का लीडर बन गया। इस नाज़ी पार्टी का उद्देश्य यह था कि समस्त जर्मन लोगों को जो अन्य देशों की प्रजा थे जर्मन झंडे के नीचे लाया जाये, वर्सेय की सन्धि को स्थगित किया जाय, जर्मनी से अजर्मन जातियों के लोगों को निकाला जाय, और जर्मनी में अजर्मन लोगों का प्रवेश बन्द कर दिया जाए, इत्यादि। 1933 ई० में हिटलर जर्मनी का चांसलर (Chancellor) अर्थात् महामन्त्री नियुक्त हुआ और अगले वर्ष जर्मनी के प्रधान की मृत्यु हुई तो हिटलर ने प्रधान का पद भी सम्भाल लिया और अब हिटलर सर्वाधीश अर्थात् डिक्टेटर बन गया। शक्ति पकड़ते ही उसने वर्सेय की सन्धि की उन सब धाराओं को जिन्हें वह अपने देश के लिये अपमान कारक समझता था एक एक करके तोड़ना आरम्भ किया। इसके पश्चात उसने एक एक करके आस्ट्रिया (Austria), स्यूडेटनलैंड (Sudetenland), चैकोस्लोवाकिया (Czechoslovakia) के देशों पर बलात्कार अधिकार जमा लिया।

४ म्युसुलिनी का आगमन—जो काम हिटलर ने जर्मनी में किया वैसा ही काम इटली में एक व्यक्ति म्युसुलिनी ने किया। म्युसुलिनी ने देश में फासिस्ट पार्टी (Fascist Party) की नींव डाली और यद्यपि इटली में राजा था परन्तु म्युसुलिनी सर्वाधीश डिक्टेटर बन गया। उसकी यह प्रबल इच्छा थी कि वह पुरातन रोमन साम्राज्य

को फिर से स्थापित करे। परन्तु रूम सागर में अंग्रेजी प्रभाव उसके मार्ग में रुकावट था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये इटली ने पहले एबेसिनिया पर और फिर कुछ वर्ष पश्चात् अल्बानिया पर अधिकार कर लिया। म्युसुलिनी और हिटलर के उद्देश्य एक जैसे ही थे इसलिये दोनों देशों में मित्रता हो गई और दोनों की संयुक्त नीति का नाम Berlin-Rome Axis पड़ गया।

५ संगियों का प्रोटैस्ट–जिस काल में जर्मनी और इटली देश छीनने के पीछे पड़े थे, संगी प्रोटैस्ट तो करते रहे, परन्तु उन्होंने युद्ध की घोषणा न की। सम्भवतः ये युद्ध के लिये तैयार न थे।

६ तत्कालीन कारण—अगस्त 1939 ई० में हिटलर ने पालैंड से Corridor और Danzig जो वर्सैय की संधि के अनुसार जर्मनी से लेकर उसे दिये गये थे माँगे, और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही पहली सितम्बर 1939 को पोलैंड पर चढ़ाई कर दी। इस प्रकार जर्मनी और पोलैंड में युद्ध छिड़ गया।

७ संगियों का प्रवेश—इंगलैंड और फ्रांस दोनों ने पोलैंड को वचन दे रखा था कि यदि जर्मनी ने उस पर आक्रमण किया तो वे उसकी सहायता करेंगे। अतः उन्होंने 3 सितम्बर 1939 को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस प्रकार एक ओर पोलैंड, इंगलैंड और फ्रांस हो गये और दूसरी ओर जर्मनी हो गया। युद्ध आरम्भ होने से कुछ दिन पहले रूस ने भी जर्मनी से सन्धि कर ली थी। प्रारम्भ में इटली युद्ध से पृथक् रहा, परन्तु जून 1940 ई० में वह भी युद्ध में जर्मनी के साथ मिल गया।

घटनायें–इस युद्ध की घटनाओं को निम्नलिखित भागों में विभक्त किया जा सकता है :—

१ पोलैंड से युद्ध, २ पश्चिमी मोर्चे पर युद्ध, ३ इटली से युद्ध, ४ रूस से युद्ध, ५ जल तथा हवाई युद्ध, ६ अमेरिका से युद्ध, ७ जापान से युद्ध।

१ पोलैंड से युद्ध—जर्मन सेना ने पहली सितम्बर 1939 को पोलैंड पर हल्ला बोल दिया। इंगलैंड और फ्रांस उसकी सहायता न कर सके। अतः पोलैंड वालों ने स्वयं ही बड़ी वीरता से जर्मनी का सामना किया परन्तु उन्हें पराजय हुई। उधर पूर्व की ओर से रूस ने भी पोलैंड पर आक्रमण कर दिया और अन्त में पोलैंड का लगभग आधा भाग रूस ने और आधा भाग जर्मनी ने अपने अधिकार में कर लिया। इस प्रकार कोई १८ दिनों में ही पोलैंड की समाप्ति हो गई।

२ पश्चिमी मोर्चे पर युद्ध—पोलैंड के युद्ध के साथ ही पश्चिमी मोर्चे पर अर्थात् फ्रांस के साथ युद्ध आरम्भ हो गया। अङ्गरेजों ने भी अपनी सेनायें फ्रांस में भेज दीं। कुछ काल तो उस मोर्चे पर युद्ध की चाल धीमी रही, परन्तु इसके पश्चात् युद्ध वेग से आरम्भ हो गया। जर्मनी ने जून 1940 तक डनमार्क, नार्वे, हालैंड और पैरिस तक फ्रांस का देश विजय कर लिया और अङ्गरेजी सेना बहुत सी हानि के पश्चात् डनकर्क (Dunkirk) की बन्दरगाह से वापिस इंगलैंड चली आई। जर्मनी की इन सफलताओं से इंगलैंड की जनता का विचार महामन्त्री Mr Chamberlain के विरुद्ध हो गया। अतः उस ने मई 1940 में त्याग पत्र दे दिया और उसके स्थान पर Mr Churchill महामन्त्री नियुक्त हुआ।

३ इटली से युद्ध—फ्रांस को युद्ध में बुरी तरह फँसा हुआ देखकर इटली ने भी संगियों के विरुद्ध जून 1940 ई० में युद्ध की घोषणा कर दी और फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। फ्रांस में इतनी शक्ति नहीं थी कि वह अकेला जर्मनी और इटली का मुकाबला कर सकता। अतः 22 जून 1940 ई० को उसने हथियार डाल दिये और सन्धि कर ली। इस प्रकार फ्रांस युद्ध से पृथक् हो गया।

फ्रांस की हार के साथ समस्त मध्य और पश्चिमी योरुप पर जर्मनी का अधिकार हो गया। अब हिटलर ने इंगलैंड पर आक्रमण करने की तैयारियाँ कीं, परन्तु वह अपने इस उद्देश्य में असफल रहा।

इसके पश्चात् जर्मनी और इटली ने नहर स्वेज़ (Suez) पर अधिकार करने के लिये एक स्कीम तैयार की। इस उद्देश्य से इटली ने एक ओर अलबानिया की राह यूनान पर और दूसरी ओर लिबिया के मार्ग से मिस्र पर आक्रमण कर दिया। परन्तु उसे दोनों मोर्चों पर हार हुई। अप्रैल 1941 ई० में जर्मनी उसकी सहायता को आ पहुँचा।

जर्मनों ने यूनान जीत लिया और मिस्र में भी उन्हें सफलता हुई। परन्तु धीरे धीरे अङ्गरेज़ों ने मिस्र में अपनी सेनाएँ एकत्र कर लीं और जर्मनी का खूब मुकाबला किया। अन्त में 1942 ई० की शरद् ऋतु में जमनी को करारी हार हुई और जर्मन सेनायें पश्चिम को हटती चली गईं। उधर से अमरीकन और अङ्गरेज़ी सेनायें मराको और अलजेरिया की विजय करती हुईं ट्यूनिशिया में प्रविष्ट हो गईं। इस तरह जर्मन सेना ट्यूनिशिया में घिर गई और भयानक युद्ध के पश्चात् उसे अफ्रीका खाली करते ही बनी। इस बीच में इटली के दूसरे अफ्रीकी प्रदेश भी अङ्गरेज़ों के अधिकार में आ चुके थे। इस प्रकार अफ्रीका से इटली के साम्राज्य का अन्त हो गया और परिणाम स्वरूप रूम सागर में अङ्गरेज़ों की शक्ति दृढ़ हो गई।

अब सगी सेनाओं ने आगे बढ़ कर इटली पर आक्रमण करना चाहा। उन्होंने रोम सागर में *सिसली* (Sicily) का टापू भी ले लिया और इटली के दक्षिणी तट पर सेनाएँ उतार दीं। इटली ने साधारण से युद्ध के पश्चात् हथियार डाल दिये और सन्धि कर ली। जर्मनों ने अपनी सेनायें वहाँ भेज दीं। इटली में सगियों और जर्मनों में भयंकर युद्ध हुआ। म्युसुलिनी को अपने ही लोगों ने पकड़ कर गोली से मार दिया। पहली मई 1945 ई० को इटली की जर्मन सेनाओं न हथियार डाल दिये।

४ रूस से युद्ध—युद्ध आरम्भ होने से पहले जर्मनी और रूस में मैत्री का सम्बन्ध हो गया था। परन्तु कारणवश यह मैत्री बहुत देर तक न निभ सकी और 22 जून 1941 को जर्मनी ने रूस पर आक्रमण कर दिया। जर्मन सेनायें रूसियों को पीछे धकेलती हुई

बहुत दूर तक रूस में घुस गई। उत्तर में *मास्को* तक और दक्षिण में यूक्रेन के उपजाऊ प्रान्त को लाँघ कर *काकेशस पर्वत* तक वे जा पहुँचीं। परन्तु रूसी बड़ी वीरता से मुकाबले पर डटे रहे और जर्मनों का अपने देश से निकालने का भरसक प्रयत्न करते रहे। इस बीच में रूसियों ने जर्मनों को कई लड़ाइयों में करारी हारें दीं और उनकी चाल को सफल न होने दिया। उनमें से *स्टालिनग्राड* (Stalingrad) की लड़ाई अति प्रसिद्ध है जिसने युद्ध का पाँसा पलट दिया। इङ्गलैंड और अमेरिका यथाशक्ति रूस की सहायता करते रहे। जर्मनों को रूस में करारी हारें हुईं और उन्हें रूस का देश खाली कर वापस जाना पड़ा।

५ जलीय और हवाई युद्ध—युद्ध आरम्भ होते ही समुद्र और वायु में भी दोनों पक्षों में युद्ध छिड़ गया। दोनों ने एक दूसरे के कई जहाज डुबो दिये और एक दूसरे के देशों पर बम फेंके। जर्मनों ने बमों द्वारा लण्डन को बहुत हानि पहुँचाई, परन्तु अङ्गरेजों ने भी पर्याप्त बदला लिया और जर्मनी के नगरों पर बम फेंके।

६ अमेरिका से युद्ध—अमेरिका की सहानुभूति प्रारम्भ से ही अंग्रेजों के साथ रही। पहले तो वह युद्ध में सम्मिलित हुये बिना इङ्गलैंड की सहायता करता रहा, परन्तु 1941 में अमेरिका ने जर्मनों के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी और इङ्गलैंड की बहुत सहायता की। उसकी सहायता से अङ्गरेज जर्मनों को उत्तरी अफ्रीका से निकाल सके। *अमेरिका ने जापान के विरुद्ध भी बड़ी वीरता से युद्ध किया।*

७ जापान से युद्ध—जापान भी एशिया में अपना साम्राज्य बढ़ाने का इच्छुक था इसलिये उसने गुप्त रूप से युद्ध की तैयारी कर रखी थी। एकाएक 7 दिसम्बर 1941 ई० को उसने इंगलैंड और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। आरम्भ में उसे पर्याप्त सफलता हुई। थोड़े ही समय में उसने *हाँगकाँग, फिलिपाइन, डच ईस्टइण्डीज, सिंगापुर, अन्डमान, मलाया, इण्डोचाइना* और *बर्मा* पर अधिकार कर लिया। जापानियों ने इन प्रदेशों पर अपना शासन सुदृढ़ करना

आरम्भ कर दिया और मार्च 1944 ई० में वे आसाम की रियासत मनीपुर में प्रविष्ट हो गये। परन्तु यहाँ से पाँसा पलटना शुरू हो गया। अङ्गरेजों ने उन्हें यहाँ से निकाल दिया। जापानियों की हारें होने लगीं और उन्होंने ब्रह्मा भी खाली कर दिया परन्तु थोड़े से टापुओं में व मुकाबला करते रहे।

८ जर्मनी से युद्ध की समाप्ति—अन्तत जर्मनी के विरुद्ध एक दूसरा मोर्चा खोला गया। संगियों ने 1944 ई० में फ्रांस के उत्तरी प्रान्त नारमण्डी (Normandy) पर आक्रमण किया। इसके कोई दो तीन महीने बाद फ्रांस पर दक्षिण से आक्रमण कर दिया गया। इस प्रकार जर्मनी सब ओरों से घिर गया। हिटलर ने अब इंगलैंड पर उड़न बम भेजने आरम्भ किये परन्तु संगी डटे रहे और जर्मनी में प्रवेश कर गये। जर्मनों ने बड़ी वीरता से मुकाबला किया परन्तु कुछ सफलता न हुई। हिटलर का कुछ पता न लगा। मई 7, 1945 ई० को जर्मनों ने हथियार डाल दिये।

९ जापान से युद्ध की समाप्ति—अब संगियों को केवल जापान से ही लड़ना बाकी था। जापान की शक्ति पहले ही दुर्बल हो रही थी, परन्तु परमाणु बम (Atomic Bomb) ने उसके भाग्य का निर्णय कर दिया। *हीरोशीमा और नागासाकी* के नगरों पर परमाणु बम फेंके गये। उधर रूस ने भी जापान पर चढ़ाई कर दी। अन्ततः 14 अगस्त 1945 ई० को जापान ने हार मान ली और इस भयानक रक्त-पूर्ण युद्ध का अन्त हो गया।

Q Write a short note on U N O

प्रश्न—यू० ऐन० ओ० पर *संक्षिप्त नोट लिखो।*

प्रथम महायुद्ध के पश्चात् जो लीग आफ नेशन्स स्थापित हुई थी वह दूसरे महायुद्ध के बाद समाप्त हो गई। उसके स्थान 24 अक्तूबर 1945 ई० से एक नवीन सभा स्थापित हुई। इसका नाम U N O यू० ऐन० ओ० (संयुक्त राष्ट्र संस्था) है। इसका स्थायी कार्यालय न्यूयार्क (New York) में है।

यू० ऐन० ओ०
U N O

इस सभा के उद्देश्य भी यही हैं जो लीग आफ़ नेशन्ज़ के थे अर्थात् संसार में शान्ति स्थापित करना, मेम्बर जातियों में तथा अन्य देशों में मित्रता स्थापित करना, सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य प्रजाहितार्थ कामों में भिन्न भिन्न देशों में मेल स्थापित करना, इत्यादि। इस सभा का पहिला अधिवेशन 1946 ई० में लण्डन में हुआ था। ६० के लगभग देश इसके मेम्बर हैं।

यह सभा लीग आफ़ नेशन्ज़ की अपेक्षा अधिक प्रतिनिधि है। इस में यू० ऐस० ए० भी सम्मिलित है। परन्तु यह सभा त्रुटियों से रहित नहीं। इस में दो ग्रुप हैं जो एक दूसरे के विरोधी हैं। एक ग्रुप में यू० ऐस० ए०, ब्रिटेन और उनके साथी हैं और दूसरे ग्रुप का लीडर रूस है। हमें आशा करनी चाहिये कि यह सभा संसार में शान्ति स्थापित करने में सफल होगी।

रानी ऐलिजबैथ द्वितीय
ELIZABETH II
1952 से—

1952 में जार्ज षष्टम की मृत्यु हुई। उसका कोई पुत्र नहीं था। इसलिये उसके बाद उसकी बड़ी पुत्री ऐलिजबैथ द्वितीय सिंहासन पर बैठी।

Elizabeth II

ऐलिजबैथ का जन्म 1926 ई० में हुआ था। इस समय उसकी आयु ३० वर्ष के लगभग है। युवा होने पर उस का विवाह ड्यूक आफ़ एडिनबरा (Duke of Edinburgh) के साथ हुआ। इस समय तक उसके यहाँ एक पुत्र और एक पुत्री है। उसका राज्याभिषेक जून 1953 ई० में बड़ी सज धज से हुआ था।

परिशिष्ट

प्रसिद्ध नोट

डी वलेरा वर्तमान आयरलैंड का निर्माता (Maker of Modern Ireland) है। वह एक बड़ा

De Valera योग्य नेता और सच्चा देश भक्त है। वह हस्पानवी पिता तथा आयरिश माता का सुपुत्र है। उसका जन्म 1882 ई० में हुआ था। उस समय आयरलैंड अङ्ग्रेज़ी राज्य के अधीन था। डी वलेरा बचपन से ही अंग्रेज़ी राज्य से घृणा करता था। बड़े हो कर उसने अपने देश की स्वतन्त्रता के लिये बड़ा काम किया और घोर आपत्तियाँ सहन कीं। अन्ततः 1922 ई० में दक्षिणी आयरलैंड

De Valera

को ब्रिटिश कामनवैल्थ के अधीन होम रूल दिया गया परन्तु डी वलेरा इस से सन्तुष्ट नहीं था। वह इङ्गलैंड से पूर्ण सम्बन्ध विच्छेद करने के पक्ष में था। अतः उसने अपना काम जारी रखा और अपने देश को इङ्गलैंड से पूर्ण रूप से स्वतन्त्र कराने में सफल हो गया। वह कई बार Irish Free State का प्रधान मन्त्री रहा है।

जार्ज वाशिंगटन संयुक्त राज्य अमेरिका (U S A.) का सच्चा देश भक्त और सब से

George Washington पहला प्रेज़ीडेंट था। वह 1732 ई० में उत्पन्न हुआ और 1799 ई० में उसकी मृत्यु हुई। अमेरिका की स्वतन्त्रता के युद्ध में वह कमाण्डर इन-चीफ़ था और देश की स्वतन्त्रता का सेहरा उसी के सिर है। जब अमेरिका की स्वतन्त्रता को स्वीकार कर

George Washington

लिया गया तो वह पहला प्रधान चुना गया। वाशिंगटन की गणना अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्तियों में की जाती है। उसका कथन था कि *यदि आप शान्ति चाहते हैं तो युद्ध के लिये तयार रहें* (If you want Peace be prepared for War)। उसके विषय में प्रसिद्ध है कि *वह युद्ध करने में भी प्रथम था और शान्ति में भी प्रथम था और देश वासियों के हृदय में भी वह सर्व प्रथम ही था*—

"He was first in war, first in peace and first in the hearts of his countrymen"

विलबरफोर्स एक बड़ा पुण्यात्मा तथा देवता स्वरूप अंग्रेज था। उसकी ख्याति का सब से बड़ा कारण यह है कि *उसने पार्लिमेंट में दासता के हटाने का आन्दोलन प्रारम्भ किया*। उसे दासों के साथ असीम सहानुभूति थी और वह दासता को संसार की सबसे बुरी नीचता समझता था। उसने अपने *प्रबल* तथा चमत्कार पूर्ण भाषणों से दासता के विरुद्ध भाव उत्पन्न कर दिया और अन्त में उसकी चेष्टाएँ सफल हुई। 1833 ई० में दासता हटा दी गई। उसी वर्ष इस पुण्यात्मा पुरुष का देहान्त हुआ। अपने इस शुभ कार्य के कारण वह लोगों में The good Wilberforce के नाम से प्रसिद्ध था।

Wilberforce (1915-53-56)

जान हावर्ड एक पुण्यात्मा ईश्वर भक्त अंग्रेज था। उसका नाम जेलों के सुधार के लिये सदैव स्मरण रहेगा। उन दिनों जेलों की अवस्था अकथनीय थी और कैदियों को बहुत कष्टों से दो चार होना पड़ता था। इसलिये हावर्ड ने उनकी दशा उत्तम बनाने का दृढ़ संकल्प किया। उसने यारुप के भिन्न भिन्न देशों की जेलों का निरीक्षण किया और लोगों का ध्यान जेल के सुधार की ओर आकर्षित करने के लिये कई पुस्तकें लिखीं। हावर्ड 1790 ई० में मर गया परन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात् भी यह शुभ कार्य होता रहा और धीरे धीरे इङ्गलैंड की सरकार ने जेलों में कई सुधार कर दिये।

John Howard

मिस फ्लोरेंस नाईटिंगेल का नाम क्राइमिया के युद्ध में घायल सैनिकों तथा रोगियों के सेवा कार्य के लिये सदा सुप्रसिद्ध रहेगा। वह एक अंग्रेजी महिला थी,

Florence Nightingale (1949-52-53-56)

परन्तु उसका जन्म इटली के नगर फ्लोरेंस (Florence) में हुआ था। उस ने अपने आरम्भिक जीवन में इंगलैंड, जर्मनी तथा फ्रांस में रोगियों की सेवा शुश्रूषा की शिक्षा प्राप्त की। जब क्राइमिया Florence Nightingale के युद्ध में आपद्ग्रस्त सैनिकों की कहानी प्रकाशित हुई तो नाईटिंगेल दाइयों का एक दस्ता साथ लेकर स्कूटरी पहुँची। वहाँ उसने डेढ़ वर्ष के लगभग अत्यन्त परिश्रम से काम किया जिससे हजारों सैनिकों की जानें बच गईं। *किसी एक अन्य व्यक्ति ने रोगियों का दुःख दूर करने में इतना कार्य आज तक नहीं किया।* वह रात्रि के समय लैम्प हाथ में लिये रोगियों की सेवा के लिए वार्डों में चक्कर लगाती रहती थी जिस से वह 'The Lady with the Lamp' के नाम से प्रसिद्ध हो गई थी। 1910 ई० में ९० वर्ष की आयु में इस पुण्यात्मा देवी की मृत्यु हो गई। उसकी सेवा स्मरणार्थ लण्डन में उसका एक मूर्ति बनाई हुई है जिस के हाथ में लैम्प है।

लायड जार्ज वेल्स का रहने वाला था और इंगलैंड के राजनीतिज्ञों की प्रथम पंक्ति में उसका नाम था। वह अपनी ईश्वर प्रदत्त योग्यता से एक साधारण स्थिति से उन्नति करते करते देश में सर्वोच्च पद पर जा पहुँचा।

Lloyd George (P U 1953)

1909 ई० में जब कि वह अर्थ मन्त्री था, उस ने अपना प्रसिद्ध बजट पेश किया। हाउस आफ लार्ड्स ने इस बजट को रद्द कर दिया जिसका अन्तिम परिणाम यह हुआ कि 1911 ई० में

पार्लिमेंट ऐक्ट पास किया गया जिस से लार्ड्स के अधिकार सीमित हो गये। 1916 ई० से 1922 तक वह प्रधान मन्त्री रहा और उस ने घोर परिश्रम करके अपने कर्त्तव्यों को निभाया। महायुद्ध में संगियों की विजय अधिकांश में उसी के अथक यत्नों का परिणाम थी। उस के मंत्रित्व काल में (१) *महायुद्ध की समाप्ति हुई।* (२) 1919 ई० में *गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया ऐक्ट पास हुआ।* (३) 1922 ई० में *आयरिश फ्री स्टेट की स्थापना हुई।* 1945 ई० में ८२ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई।

Woodrow Wilson (P U 1953)

वुडरो विलसन 1913 ई० से 1921 ई० तक U S A. का प्रैज़ीडैंट था। प्रथम महायुद्ध के समय में उसने बड़ी ख्याति प्राप्त की। जब जर्मन डुबकनी नौकायें सब देशों के जहाज़ों को डुबो रही थीं तो उसने घोर विरोध किया। अन्त में 1917 ई० में उसने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। युद्ध की समाप्ति पर सन्धि की शर्तें निश्चित करते समय वह भी विद्यमान था। लीग आफ़ नेशन्ज़ उसी के मस्तिष्क का परिणाम था। वह समस्त संसार में शान्ति स्थापित करना चाहता था, परन्तु U S A. स्वयं लीग आफ़ नेशन्ज़ का मेम्बर न बना। 1924 ई० में विलसन की मृत्यु हो गई।

Winston Churchill

विन्सटन चर्चिल इंगलैंड का भूतपूर्व प्रधान मन्त्री है। वह आन चर्चिल ड्यूक आफ़ मार्लबरो की सन्तान है। वह एक उच्च कोटि का राजनीतिज्ञ और कनज़र्वेटिव पार्टी का लीडर है। प्रथम महायुद्ध में अंग्रेज़ों की सफलता कुछ सीमा तक उसके कारण थी। 1940 ई० में वह प्रधान मन्त्री बना और उसने दूसरे महायुद्ध के काम को अपनी पूरी शक्ति से चलाया। सत्य यह है कि गत महायुद्ध में संगियों की विजय बहुत

Winston Churchill

सीमा तक उसी के कारण हुई थी। अमेरिका के प्रधान के साथ मिलकर उसने Atlantic Charter प्रकाशित किया। विन्सटन चर्चिल न केवल नीतिज्ञ ही है वरन् उच्च कोटि का लेखक और सुवक्ता भी है। उसमें भारी गुण यह है कि जो हृदय में होता है वह बोल देता है। वह 1940 ई० से 1945 ई० तक प्रधान मन्त्री रहा और 1951 में वह फिर प्रधान मन्त्री बना। परन्तु गत वर्ष से वह इस कार्य से पृथक् हो गया है। उसकी आयु ८० वर्ष से कुछ अधिक है।

हर हिटलर संसार के प्रसिद्ध व्यक्तियों में से था। वह ११ वर्ष तक जर्मनी का डिक्टेटर

Herr Hitler रहा। वह 1889 ई० में आस्ट्रिया में उत्पन्न हुआ परन्तु बाद में वह जर्मनी में रहने लग गया। उसका आरम्भिक जीवन दरिद्रता में व्यतीत हुआ। पहले महायुद्ध में वह एक सैनिक के रूप में भर्ती हुआ था और उस युद्ध की समाप्ति पर उसने जर्मनी को पुनः दृढ़ शक्ति बनाने का दृढ़ संकल्प कर लिया और इस

Herr Hitler

उद्देश्य के लिये वह एक पार्टी में सम्मिलित हुआ, जो पीछे नाज़ी पार्टी (Nazi Party) के नाम से प्रसिद्ध हुई। 1933 ई० में वह जर्मनी का चांसलर अर्थात् प्रधान मन्त्री बना और उससे अगले वर्ष जब जर्मनी के प्रैज़ीडेंट हिंडनबर्ग (Hindenburg) की मृत्यु हो गई तो हिटलर प्रैज़ीडेंट बन गया।

हिटलर यहूदियों का कट्टर शत्रु था और जर्मनी को संसार की सर्वोत्तम शक्ति बनाने का प्रबल इच्छुक था। वह चाहता था कि सब जर्मन एक साम्राज्य में सम्मिलित हों। अधिकार प्राप्त करते ही उसने यहूदियों पर अत्याचार ढाए और वर्सेय के सन्धि-पत्र की शर्तों को जिसे वह जर्मनी के लिये अपमानजनक समझता था एक एक करके

सोचना आरम्भ कर दिया। थोड़े समय में उसने आस्ट्रिया (Austria) सुडेटनलैंड (Sudetenland), चैकोस्लोवाकिया (Czechoslovakia) और कई अन्य देशों पर अधिकार कर लिया और सितम्बर 1939 ई० में उसने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया। इस कारण इंगलैंड और फ्रांस ने उसके विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी। हिटलर ने इस युद्ध में बड़ी वीरता दिखाई। परन्तु अन्त में 1945 ई० में उसे हार हुई। पराजय के पश्चात् उसका कुछ पता नहीं चला। अनुमान है कि वह मर चुका है। हिटलर को Fuhrer भी कहते थे जिसके अर्थ विश्वास-पात्र नेता के हैं।

म्युसुलिनी Mussolini इटली का डिक्टेटर था और उसने इटली के राजा को भी पीछे डाल दिया था। वह एक लोहार का लड़का था और 1883 ई० में उत्पन्न हुआ था। वह कुछ काल स्कूल मास्टर रहा और उसके बाद एक समाचार पत्र का सम्पादक बन गया। प्रथम महायुद्ध में वह सैनिक के रूप में लड़ा और घायल भी हुआ। युद्ध की समाप्ति पर उस ने फासिस्ट पार्टी (Fascist Party) की नींव डाली जिस का उद्देश्य इटली को उन्नति के उस उच्च शिखर पर पहुँचाना था जहाँ प्राचीन रोमन साम्राज्य पहुँच चुका था।

इस उद्देश्य के लिये उसने ऐबेसीनिया और अलबानिया का विजय करके अपने अधिकार में कर लिया। उसने हिटलर के साथ दृढ़ मित्रता स्थापित की जिसे Rome Berlin Axis कहते थे। 1940 ई० में उसने संगियों के विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी, परन्तु उसे सफलता न हुई। 1945 ई० में इटली के राजा ने उसे पदच्युत कर दिया। वह पकड़ा गया। उस पर अभियोग चला और उसे गोली से उड़ा दिया गया। म्युसुलिनी को Duce (ड्यूचे) भी कहते थे जिसके अर्थ नेता के हैं।

जोजफ स्टालिन रूस का वीर डिक्टेटर था। वह 1879 ई०

...में जाजिया देश में एक
...osef Stalin मोची के घर में उत्पन्न
हुआ। आरम्भिक
...जीवन में वह रूसी क्रांतिकारियों में था,
और उसे कई बार कैद भी भुगतनी पड़ी।
1917 ई० में रूस के विप्लव के पश्चात्
...ह क्रांतिकारी नेताओं में हो गया, और
...फिर वीर देश का सबसे बड़ा नेता बन
...गया। अधिकार प्राप्ति के पश्चात् उसने
...एक एक करके तीन पंच वर्षीय स्कीमें
तैयार करके रूस को पर्याप्त उन्नति दी।

Josef Stalin

...ह एक बुद्धिमान् राजनीतिज्ञ था। गत महायुद्ध में पहले पहल वह
जर्मनी का साथी था परन्तु जून 1941 ई० में हिटलर ने रूस के विरुद्ध
युद्ध घोषणा कर दी तो स्टालिन ने बड़ी वीरता से जर्मनी का मुकाबला
किया, और उस को पराजय दी। जर्मन हार का एक बड़ा कारण रूस
की वीरता थी। स्टालिन की गणना संसार के उच्चतम व्यक्तियों में की
जाती है। 1953 ई० में उसका देहान्त हो गया।

प्रसिद्ध संवत्

ट्यूडर वंश से लेकर

1485 ई०	(१) बासवर्थ का युद्ध (२) गुलाब के युद्धों की समाप्ति (३) ट्यूडर वंश का आरम्भ।	1600 ई०	ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना।
		1605 ई०	गन पाउडर प्लाट
		1620 ई०	पिलग्रिम फ़ादर्स का अमेरिका को प्रस्थान
1517 ई०	मार्टिन लूथर ने जर्मनी में पोप के विरुद्ध प्रचार आरम्भ किया।	1628 ई०	Petition of Right की स्वीकृति
1534 ई०	ऐक्ट आफ़ सुप्रेमेसी। पोप का इङ्गलैंड से सम्बन्ध विच्छेद।	1640 ई०	लॉंग पार्लिमेंट का अधिवेशन।
1536 ई० से 1539 ई०	विहारों का गिराया जाना।	1649 ई०	चार्ल्स प्रथम का वध कामनवैल्थ का आरम्भ होना।
1558 ई०	कैले का अङ्गरेजों के हाथ से निकल जाना		
1577 ई० से 1580 ई०	ड्रेक की संसार के गिर्द सामुद्रिक यात्रा		
1587 ई०	रानी मेरी आफ़ स्काटलैंड का वध।	1660 ई०	रेस्टोरेशन, राजत्व की पुनः स्थापना, चार्ल्स द्वितीय का राजा बनना।
1588 ई०	स्पेन के आरमेडा की पराजय।		

1665 ई०	लण्डन में प्लेग।
1666 ई०	लण्डन में भयंकर आग।
1670 ई०	डोवर का गुप्त संधि-पत्र।
1673 ई०	टैस्ट ऐक्ट का पास होना।
1679 ई०	हैबियस कार्पस ऐक्ट का पास होना।
1685 ई०	मनमथ का विद्रोह।
1688 ई०	शानदार क्रांति।
1689 ई०	बिल आफ़ राइट्स, विलियम तथा मेरी का राजत्व ग्रहण।
1701 ई०	ऐक्ट आफ़ सैटलमैंट।
1707 ई०	स्काटलैंड तथा इंगलैंड का मिलाप।
1715 ई०	जेकोबाइट्स का प्रथम विद्रोह।
1720 ई०	साउथ सी कम्पनी का टूट जाना।
1745 ई०	जेकोबाइट्स का दूसरा विद्रोह।
1776 ई०	अमेरिका की स्वाधीनता की घोषणा।
1783 ई०	वर्सैय का सन्धि-पत्र, अमेरिका की स्वतंत्रता के युद्ध की समाप्ति।
1789 ई०	फ्रांस की क्रांति का आरम्भ।
1798 ई०	नील की लड़ाई। नैलसन की नैपोलियन पर विजय।
1800 ई०	आयरलैंड तथा ग्रेट-ब्रिटेन का मिलाप।
1805 ई०	ट्रैफ़ल्गार की लड़ाई, नैलसन की मृत्यु।
1815 ई०	वाटरलू की लड़ाई।
1829 ई०	कैथोलिक एमैंसीपेशन ऐक्ट।
1832 ई०	पहला रिफ़ार्म ऐक्ट।
1833 ई०	दासता का हटाया जाना।
1846 ई०	अन्न के कानूनों का हटाया जाना।
1857 ई०	भारत में राज विद्रोह।
1867 ई०	दूसरा रिफ़ार्म ऐक्ट।
1884 ई०	तीसरा रिफ़ार्म ऐक्ट।
1911 ई०	पार्लिमेंट ऐक्ट का पास होना।

1914 ई०	आयरिश होम-रूल ऐक्ट का पास होना, प्रथम महायुद्ध का आरम्भ।	1928 ई०	२१ वर्ष से अधिक आयु वाली स्त्रियों को प्रतिनिधित्व का अधिकार।
1918 ई०	सर्वसाधारण के प्रतिनिधित्व का कानून। ११ नवम्बर को प्रथम महायुद्ध की समाप्ति।	1935 ई०	जार्ज पंचम की सिलवर जुबली।
		1936 ई०	एडवर्ड अष्टम का राजत्याग।
1919 ई०	वर्सेय का सन्धि पत्र गवर्नमेंट आफ इंडिया ऐक्ट।	1939 ई०	जर्मनी के विरुद्ध युद्ध घोषणा।
		1945 ई०	दूसरे महायुद्ध की समाप्ति।
1922 ई०	आयरलैंड को होम रूल दिया जाना।	1952 ई०	एलिज़बैथ द्वितीय का सिंहासनारोहण।

Printed by Pt Kashmiri Lal at
Bombay Machine Press Jullundur City
and Published by Pt Kashmiri Lal & Sons
Mai Hiran Gate Jullundur City